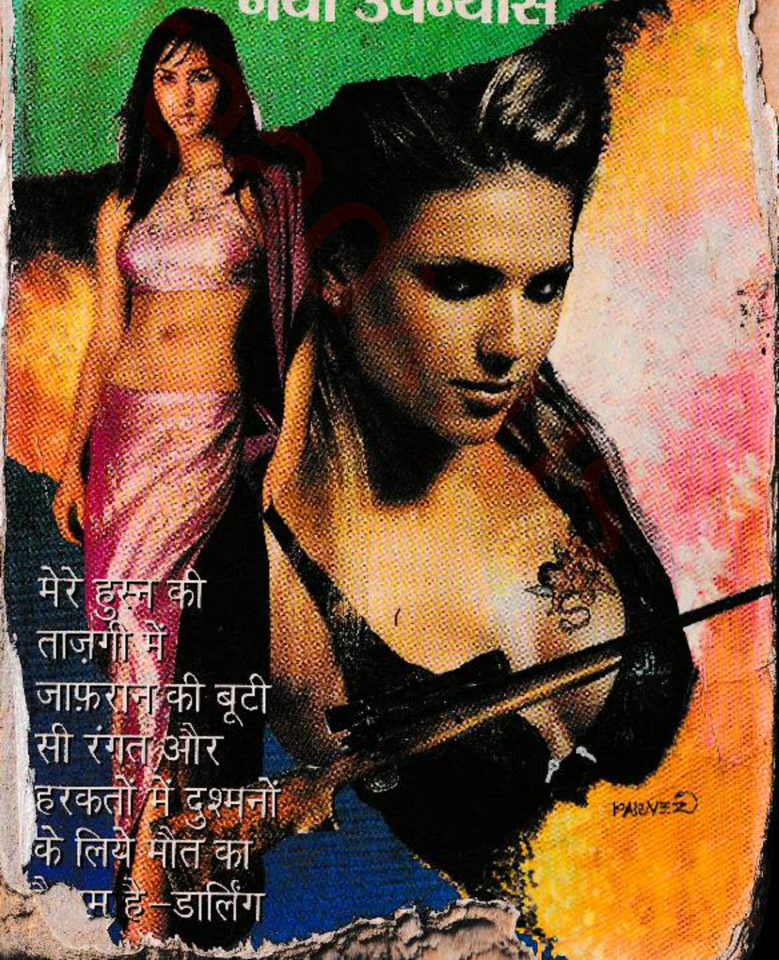
डार्लिंग

जाफ़रान की बूटी

नया उपन्यास



ूटी क्वीन

डार्लिंग

के अब तक प्रकाशित उपन्यास

- मेरी बहन के हत्यारे
- खूबसूरत नागिन
- आफत की पुड़िया
- मिसरी की डली
- जंगली बिल्ली
- शहद की परी
- तीन फुट का बौना
- बिजली
- हुस्न की चाश्नी
- लाल परी
- खूनी मकड़ी
- चंचल चिड़िया
- गुलाब जामुन
- दुधारी तलवार
- कत्ल की दावत
- चालाक लोमड़ी
- अंगूर की बेटी
- सावन की फुहार
- काली मिर्च
- भांग की गोली (विशेषांक)
- घायल हिरनी
- जादूगरनी
- मस्त शेरनी
- कली कचनार की
- अक्ल की कच्ची
- एटम बम
- खट्टी-मीठी
- जाफ़रान की बूटी (प्रस्तुत उपन्यास)

प्रकाशक : तुलसी पेपर बुक्स
K-1264, शास्त्रीनगर, मेरठ-250004।
फोन : (0121) 2774961

टाइप सैटिंग : जतिन कम्प्यूटर्स, मेरठ।

मुद्रक : दुर्गा ऑफसैट प्रिन्टर्स, मेरठ।

जाफ़रान की बूटी : उपन्यास : डार्लिंग

[redacted]

इस उपन्यास के नाम, पात्र, स्थान, घटनाएं सभी काल्पनिक है।

7

जाफ़रान की बूटी

डार्लिंग

डार्लिंग के मदमाते उपन्यासों का आज
कौन दीवाना नहीं है?

वेद प्रकाश शर्मा

के अपने प्रकाशन

तुलसी

पेपर बुक्स

सितारों की संस्था

की ओपेनिंग सेरेमनी पर दी गई

डार्लिंग

की शुभकामनाएं

'तुलसी' और डार्लिंग का साथ चोली-दामन का साथ है। श्री वेद प्रकाश शर्मा जी के सुपुत्र शगुन के 'तुलसी पेपर बुक्स' शुरू करते ही डार्लिंग का जुड़ाव फिर तुलसी से हो गया। डार्लिंग की ओर से शगुन और 'तुलसी पेपर बुक्स' को कोटिशः हार्दिक शुभकामनाएं!

मेरी कलम की चाशनी

अजीज पाठको!

आज मैंने कुछ खास बात कहने के लिए कलम उठाई है। दिल के जज्बात हैं जो कलम की रवानी में ढलकर कागज पर उतरना चाहते हैं। मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं कि आठ साल पहले 'तुलसी' के माध्यम से आज के उपन्यास-जगत के ध्रुव तारे सा मुकाम रखने वाले **श्री वेद प्रकाश शर्मा** से, लेखनी के माध्यम से मेरा सम्बन्ध बना था। मेरे उपन्यास आप पाठकों तक पहुंचते रहे, और मेरे नाम को एक अच्छा मुकाम हासिल कराते रहे।

फरवरी 2004 का पहला सप्ताह आया। वेद जी ने अचानक ही अपने सुपुत्र शगुन शर्मा के सामने लाकर कहा, 'शगुन पब्लिकेशन करना चाहता है।' मैंने अचरज से पूछा—'पायलट शगुन, पब्लिशर?' (मेरी जानकारी में यह बात थी कि शगुन पायलट की ट्रेनिंग में है।) वेद जी बोले—'लिखने का भी शौक है।' बेटे के प्रति बाप का स्नेह बोल रहा था या वंशानुगत प्रतिभा पल्लवित होकर सामने आ रही थी, इस बात को समझने के लिए मैंने प्रश्न दृष्टि उठायी। शगुन ने पाण्डुलिपि मेरे सामने रख दी। मैं चौंकी भी और आनन्द और सन्तुष्टि भी प्राप्त की, क्योंकि पिता ने अपना सबसे मजबूत किरदार 'केशव पण्डित' कुछ वर्ष पहले उभारा था, उसे शगुन ने बड़ी आन-बान से पृष्ठों पर उभारा था—यानि केशव पण्डित पात्र पर आधारित उपन्यास लिख डाला था शगुन ने। जो लिखा था—खूब लिखा था। मेरे होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कान आयी। शगुन को शाबाशी देने के लिए हाथ खुद-ब-खुद उसके कांधे पर पहुंच गये—और कहा—'फिर तो जरूर पब्लिशर बनो। बाप की विरासत को आगे बढ़ाना ही पुत्र की योग्यता का मापदण्ड होता है।'

इस प्रकार **'तुलसी पेपर बुक्स'** की योजना बनी और मुझे एक नयी कर्मभूमि मिली। एक युवा, हौंसलेमन्द, लेखन प्रतिभा के जन्मजात गुण सम्पन्न के साथ अपनी कलम की ताजगी को आप

पाठकों तक पहुंचाने का सुअवसर मिला।

उपन्यास **'जाफरान की बूटी'** एक युवा प्रकाशक के साज श्रृंगार का भी नमूना है। कथानक पर कुछ डिस्कशन भी हुआ है, मैं पूर्णतयः सन्तुष्ट हूं कि इस डिस्कशन ने नये जमाने की कुछ नयी बातें भी दी हैं। उपन्यास की चाशनी में मिठास वही है जो आप पाठक मेरे उपन्यासों में पाते रहे हैं। कथानक सशक्त और विषय क़ी नवीनता को समेटे हुए है। फैसला आप करेंगे कि आपके मनोरंजन का पहले से बेहतर माध्यम यह उपन्यास बन पाया या नहीं। आपके पत्र, आपकी सम्मतियां मेरे कथानक की प्रेरणा बनते हैं।

आपके पत्रों ने 'गुलाब जामुन' व 'खट्टी-मीठी' में पेश किये गये अश्विनी परमार उर्फ आशू को फिर डार्लिंग के साथ पेश करने का आग्रह किया है। मैं आपको यकीन दिलाना चाहती हूं कि जल्द ही डार्लिंग के साथ आप पुनः आशू को एक नये जोशो-खरोश के साथ देखेंगे।

उपन्यास 'जाफरान की बूटी' के सम्बन्ध में आपकी सम्मतियों की प्रतीक्षा के साथ !

सदा आपकी,

डार्लिंग

तुलसी पेपर बुक्स
K-1264, शास्त्री नगर
मेरठ-250 002

जाफ़रान की बूटी

ब्यूटी क्वीन डार्लिंग इन दिनों छुट्टियों का भरपूर लुत्फ उठाने के मूड में थी। वह धरती का स्वर्ग कहे जाने वाले काश्मीर में थी। काश्मीर के लगभग आधे से ज्यादा दर्शनीय स्थलों की दिलकशी का लुत्फ उठाकर उस समय वह डल झील के प्लेटफार्म के करीब पहुंच रही थी।

उसकी शोख निगाहें इस अन्दाज में इधर-उधर भटक रही थीं जैसे मनचाहे किसी गाइड की तलाश हो।

वहां, प्लेटफार्म के तट से लगी लाल-पीले कपड़ों से, दुल्हन का शृंगार किये किश्तियों का जाल-सा बिछा हुआ था। रंग-बिरंगी, सजी-सजाई, आरामदेह किश्तियां डल झील का ख़ास आकर्षण थीं—पर्यटकों का मन मोहती थीं।

ब्यूटी क्वीन की निगाहें तट के मोहक-मनोरम दृश्यावलियों में खोयी हुयी थीं। और, उसके तट पर पहुंचते ही, जिसकी निगाह सबसे ज्यादा आकर्षक भाव में उस पर अटकीं वह एक षोडशी बाला थी। कश्मीरी षोडशी बाला, जिसकी सुन्दरता युवाओं के दिलों के तारों को झंकृत करने की कशिश रखती थी...जिसके हुस्न का अक्स डल झील के निर्मल जल में पड़ भर जाए तो शान्त लहरों में हलचल मच सकती थी।

वह मृगनयनी थी। कपोल इस तरह गुलाबी थे जैसे दूध में जाफरान की रंगत घोल दी गयी हो। जिस्म भरा-भरा। संगमरमर सा तराशा हुआ शफ्फाफ बदन था उसका। जिस्म पर कश्मीरी लबादा था। आंखों में इस बात की चमक और आस थी कि वह रईस सैलानी, जो अकेली थी...सबमें अलग-थलग थी, उसकी

ओर आकर्षित हो जाए तो उसकी किश्ती की किस्मत चमक जाए। और उसे अपनी ओर आकर्षित करने के लिए ही वह वहां जलवा अफरोज हुई थी।

प्लेटफार्म पर आये सैलानियों पर रोजी कमाने की उम्मीद भरी नजरें दौड़ाने वाले वहां किश्ती वाले मर्द भी थे, युवा और कुछ युवतियां भी। उनमें एक वह षोडशी बाला थी, जिसकी निगाहें खास तौर पर डार्लिंग की ओर, अपने कस्टमर के रूप में पाने की होड़ में लगी हुई थीं।

वह कुछ झिझक, कुछ संकोच, कुछ नाजो-अदा के साथ आगे बढ़ी, दूसरी किश्ती वाली युवतियों से नजरें बचाती हुई, आगे बढ़ जाने की चाह में भरी हुई अपनी मनचाही कस्टमर के करीब पहुंच गयी। अपनी तरन्नुम में डूबी हुई आवाज में बोली—

"मेम साहब, क्या आप झील की सैर करना पसंद करेंगी...?"

षोडशी बाला के सरगमी आवाज के जादू ने ब्यूटी क्वीन का ध्यान अपनी ओर खींचा।

ब्यूटी क्वीन घूम पड़ी, आवाज की मधुरता में डूबी हुई। उसे यूं लगा था जैसे निशात और शालीमार की समस्त ताजगी को, उसे सम्बोधित करने वाली ने अपने में समेट रखा है।

और, घूमने पर उसने पाया था—हां, ठीक वह वैसी ही थी जैसे एक क्षण में उस आवाज के तरन्नुम को सुन, उसके जेहन में उसकी आकृति खिंची थी।

वह उसकी कल्पना से कहीं ज्यादह खूबसूरत थी। लम्बा कद, सोलह साल की उम्र, कश्मीरी सुन्दरता की चाशनी में लिपटा हसीन गोरा-चिट्टा मुखड़ा। चेहरे पर भोलापन अल्हड़ता में डूब उसके देखने का अन्दाज।

उसका बदन, कश्मीरी लबादे में इस तरह सिमटा-सिकुड़ा हुआ था जैसे चौदहवीं के चांद के गिर्द स्याह बादलों का घेरा।

"हां, मैं झील की सैर के लिए ही आयी हूं...और शिकारे पर ठहरने के लिए भी...।" डार्लिंग ने पूरी तवज्जो उस पर देते हुए मुस्कराकर कहा।

"मेरे पास किश्ती भी है मेम साहब और मेरा शिकारा भी है...।" षोडशी बाला ने पूरे उत्साह के साथ कहा।

उसके चेहरे पर उम्मीद की चमक बढ़ गयी थी। अब उसे पूरी उम्मीद नहीं लगभग यकीन भी हो गया था कि मनचाहा कस्टमर पाने जा रही है।

"तुम्हारा अपना शिकारा भी है...?" डार्लिंग ने खुश होकर पूछा।

"जी हां, मेम साहब...।" षोडशी बाला ने पूछा—"आप अकेली हैं...?"

"हां, मुझे अकेले ही सय्याही का शौक है...। लेकिन तुम्हें मेरे अकेले होने का कोई नुकसान न उठाना पड़ेगा। मैं झील की सैर के लिए अकेले ही किश्ती का पूरा भाड़ा चुकाऊंगी...शिकारे के अपार्टमेंट में अकेले ही ठहरूंगी और उसका भी पूरा किराया चुकाऊंगी...।"

"मेरी किश्ती पर कोई दूसरा पैसेंजर नहीं मेम साहब...और सीजन ढीला हो जाने की वजह से शिकारा भी इन दिनों पूरी तरह खाली है।"

"गुड...।" डार्लिंग ने कहा। वह आगे बढ़ी।

षोडशी बाला ने वहां से कुछ फासले पर लहरों पर धीरे-धीरे हिचकोले खाती अपनी किश्ती की ओर डार्लिंग का ध्यान आकृष्ट कराया। किश्ती पर अंग्रेजी में हसीन अक्षरों में शब्द अंकित थे—'RESHMA'।

"अच्छा नाम है...।" डार्लिंग के होठों से बरबस निकला।

"किसका...?"

"किश्ती का...।"

"मेरा नाम भी रेशमा है और मेरे शिकारे का भी।" षोडशी बाला ने जरा शरमाकर कहा।

"फिर तो मैं कहूंगी और भी अच्छा है...।" कहते हुए डार्लिंग ने रेशमा के कांधे पर बेतकल्लुफी से हाथ रख दिया।

रेशमा जरा-सा सिमट-सिकुड़ गयी।

"क्या तुम्हीं झील की सैर कराने में मेरे लिए गाइड का काम करोगी रेशमा...?" ब्यूटी क्वीन ने प्यार से पूछा।

"मैं झील की सैर कराने के गाइड का काम भी करूंगी और चप्पू भी चलाऊंगी मेम साहब...।" रेशमा ने उत्साहित स्वर में,

अपनी स्वप्नीली और लजीली निगाहों से उसे देखा।

ब्यूटी क्वीन का दिल उस पर फिदा हो गया।

वह ठीक उसकी चाहत के अनुरूप थी।

वह ठीक उसकी छोटी दोस्त गजाला जैसी ही टीनेजर और शर्मीली थी।

काश्मीर के आधे से ज्यादा दर्शनीय पर्यटन स्थलों को देख चुकी थी वह। एक सप्ताह का समय गुजर गया। वहां की धरती पर अभी तक एक भी ऐसा चेहरा उसे नजर न आ सका था जिसे वह अपने थकान से चूर हो रहे जिस्म की ताजगी का साधन बना पाती।

जिसके साथ वह अपने दिल के साज मिला सकती। उसके साथ हम बिस्तर होकर जिन्दगी की वह ताजगी हासिल कर सकती जो वह मुम्बई में रहते हुए, छुट्टियों के दरम्यान गजाला के साथ हासिल किया करती थी।

गजाला उसके थके हुए जिस्म और दिमाग का पुरलुत्फ टॉनिक थी...। उसे साथ न लाकर पछता रही थी।

रेशमा को देखते ही, उसके दिल के तार झंकृत हो उठे थे।

हां, वह ठीक वैसी थी...गजाला सी। उससे भी कहीं ज्यादा हसीन, दिलकश, मोहिनी रूप वाला। उसकी उठती हुई जवानी में फूलों के पराग की भरपूर खुशबू थी—तितली बन उसकी जवानी पर मंडरा कर वह उसके अनछुए पराग का लुत्फ उठाने का मन भी बना चुकी थी। और मूड भी।

उसके कांधे पर हाथ रखते ही उसका सिमटना-सिकुड़ना और हल्के से लजा जाने का अन्दाज डार्लिंग को पूरी तरह से भा गया था। वह उसे अपने आईने में पूरी तरह उतार सकती थी, इस बात का यकीन हो गया था।

कुछ पलों बाद,

रेशमा के साथ वह उसकी किश्ती पर थी।

रेशमा, चप्पू चलाती हुई किश्ती को धीरे-धीरे किनारे से बढ़ाती हुई झील के साफ-शफ्फाफ पानी में बढ़ा लायी थी।

रेशमा के शोला-बदन हुस्न की तरह उसकी किश्ती भी खूब सजी हुई थी। वह आरामदेह भी थी और मोहकता से भरपूर भी।

फर्श पर उम्दा गालीचा था। गद्देदार बेंच टाइप कुर्सियां दोनों साइडों में थीं। कुर्सियों की संख्या छः थी—मगर मुसाफिर के रूप में वह अकेली थी। उसने पूरी किश्ती का भाड़ा देना तय किया था। सिर्फ किश्ती ही नहीं उसके शिकारे पर भी अकेली मुसाफिर के रूप में ठहरने की बात उसने तय कर ली थी।

कुर्सी पर बैठने के बजाय ब्यूटी क्वीन ने गालीचे युक्त फर्श पर स्थान संभाला—बैठने के बाद पैर नीचे टिका रखे थे ताकि चप्पू चलाती रेशमा से बातें करने और उसके साथ जल्द से निकटता की पेंगें बढ़ा लेने की सुविधा रहे।

"क्या अपने नाम की इस किश्ती को हमेशा तुम ही चलाती हो रेशमा...?" बातों की शुरूआत करते हुए डार्लिंग ने पूछा।

उस समय तक किश्ती किनारे से काफी आगे निकल आयी थी।

"हां...।" रेशमा की सरगमी आवाज का जादू उभरा—"बशर्ते आप जैसी जनानी सवारी या सवारियां मिल जाएं मेम साहब...।" रेशमा ने उसकी ओर मुस्कराकर देखा।

उन दिनों वहां का सीजन डल चल रहा था। झील के सीने पर हलचल मचाती किश्तियों की संख्या अंगुलियों पर गिनी जाने लायक थी। इक्की-दुक्की किश्तियां होड़ में आगे निकल गयी थीं। उन पर ध्यान देने की आवश्यकता डार्लिंग ने न समझी थी। उसकी ख्वाहिश थी कि उसकी किश्ती धीमी से धीमी रफ्तार में आगे बढ़ती रहे ताकि उसे जल्द से जल्द रेशमा से बेतकल्लुफ हो जाने का मौका मिल सके।

उसने कहा भी—

"आराम से चप्पू चलाओ...मैं यहां के मनोरम दृश्यों को पूरी दिलकशी के साथ देखना चाहती हूं...साथ ही तुमसे ढेर-सी बातें भी...। मैं तुम्हारे साथ आ जाती हूं...।" कहते हुए डार्लिंग अपना स्थान छोड़ उसके बगल में आ गयी।

रेशमा उसकी ख्वाहिश का ध्यान कर, धीरे-धीरे चप्पू चलाने लगी थी। उससे सटकर बैठते हुए ब्यूटी क्वीन ने बात जारी रखते हुए पूछा—"तुम अपनी किश्ती में सिर्फ जनानी सवारियां ही बैठाती हो...?"

"हां...।" रेशमा ने बताया—"जनानी सवारियां भी चाहती हैं कि उनकी किश्ती चलाने वाली कोई औरत या लड़की हो...।" वह कहती रही—"वैसे ऐसी सवारियां कम ही आती हैं जिनके साथ मर्द न हो। दो-दो, चार-चार, छः-छः की टुकड़ी में कुछ जनानी सवारियां आ भी जाती हैं—तो उनके लिए यहां की चार-छः युवतियां सेवा के लिए होती हैं...।"

"उनमें एक तुम भी हो...।" डार्लिंग ने धीरे से हाथ उसकी कमर पर रखा।

"हां...।" रेशमा अपनी रौ में कहती रही—"वैसे किश्तियां चलाने का काम ज्यादातर हमारे घरों में मर्द ही करते हैं। लेकिन यहां की सभी लड़कियां भी बचपन से ही इस काम को सीख जाती हैं। मेरे अब्बू की ओर से मुझे इस बात की इजाजत मिली हुई है कि अगर कोई जनानी सवारी मिले तो उसे मैं अपने कस्टमर के रूप में तय कर सकती हूं...।"

"जैसी कि मैं...।" डार्लिंग का हाथ धीमे से कुछ और सरगोशी कर गया।

रेशमा चुप रही थी...। हल्के से लजाने का भाव उसके गुलाबी गाल की चमक बढ़ा गया।

"'अब्बू' तुम अपने फादर को कहती हो...?" ब्यूटी क्वीन ने बातों को बढ़ाने के इरादे से पूछा।

"जी हां...।"

"अब्बू के अलावा तुम्हारे परिवार में और कितने सदस्य हैं रेशमा...?"

"अम्मी...बस...।" रेशमा ने कहा। 'बस' कहते समय उसके स्वर में कुछ नमी तैर आयी डार्लिंग ने महसूस की थी।

"अम्मी, अब्बू, बस...?" डार्लिंग ने हमदर्दी भरे स्वर में पूछा।

"एक भाई भी था...। मुझसे पांच साल बड़ा...।" रेशमा के स्वर की नमी आर्द्रता में बदल गयी—"जो पिछले साल जुनूनी जंगजुओं की गोली का शिकार हो गया।"

डार्लिंग ने देखा—इस बात को कहते हुए रेशमा की आंखें पूरी तरह नम हो आयी हैं, स्वर भर्रा उठा।

'जुनूनी जंगजुओं' शब्द का आशय वह फौरन समझ गयी। तेजी से अपना हाथ उसके कांधे पर रख गहरी हमदर्दी भरे स्वर में कहा—

"ओह! आयम सॉरी...।" कांधे पर रखे हाथ को धीरे से थपकी दी...।

उसके हमदर्दी भरे हाथ की गर्मी कुछ इस शिद्दत से रेशमा ने महसूस की कि उसकी रतनारी आंखों के कोरों से अश्रुमोती टपक पड़े।

"न रेशमा...।" उसका कांधा दबा अपनी ओर समेटते हुए डार्लिंग ने कहा—"मुझे वादिये काश्मीर के सारे हालात की जानकारी है, अखबारी खबरों और टी० वी० न्यूज के जरिये पढ़ती सुनती रही हूं...।"

उसे सीने से लगा लेने का पूरा मौका मिल गया। हाथों को उसकी पीठ पर रख दिया था। धीरे-धीरे सहलाव बढ़ा गहरी हमदर्दी जताती हुई...उसके यौवन की खुशबू से सराबोर होने लगी थी।

रेशमा उसके सीने से सिमटती और सुबकती चली जा रही थी।

उसके आंखों से उबल पड़े अश्रुकणों को पोंछने के बहाने डार्लिंग का हाथ उसकी रतनारी आंखों और कपोलों पर पहुंचने में कामयाब रहा था।

"रेशमा रोते नहीं...। सब्र करो...। मुझे मालूम है कि किसी 'अपने' के बिछुड़ने का गम क्या होता है...। इस बात को सोचकर सब्र करो कि तुम अकेले इस दुःख का बोझ नहीं उठा रही हो। जुनूनी सिरफिरों ने यहां के हजारों कश्मीरी भाइयों को उनकी बहनों, बीवियों और मांओं से छीन लिया। हर कोई जानता है कि यहां कितनी बहनों का प्यार लुटा। पत्नियों का सुहाग, मांओं की गोदें सूनी हुईं।

जो गुजर गया, उसे भुलाना तो होगा ही।

जो दर्द मिला उसे सहना तो होगा ही। क्योंकि, कुछ सालों के लिए जुनून का जो शैतान सिरफिरों पर सवार हुआ था, वह शैतान अब धीरे-धीरे दम तोड़ रहा है।"

अपनी बात कहती हुई ब्यूटी क्वीन उसे धीरे-धीरे थपकती रही...। उससे दोस्ती की नींव को रखने का उसे आधार मिल गया था।

आंसू पोंछते हुए रेशमा ने धीरे से सिर उठाया। उसने सुबकी भरे स्वर में कहा—"लेकिन, बरसों से सुलगी आग का धुआं कभी-कभी अब भी दिखाई पड़ जाता है...तो दिल थर्रा जाता है मेम साहब...भाई का लहूलुहान चेहरा आंखों के सामने आ जाता है...।"

"वह धुआं भी दम तोड़ जायेगा रेशमा...मुझे यकीन है...।"

"अल्लाह करे ऐसा ही हो...।" अपने आंसुओं को पूरी तरह खुश्क करते हुए रेशमा ने फिर चप्पू सम्भाल लिया।

डार्लिंग ने हाथ उसके कांधे पर रखा रहने दिया।

रेशमा फिर चप्पू चलाने और कहने लगी—

"भाई रेहान की मौत ने अब्बू की कमर तोड़ दी मेम साहब...।"

डार्लिंग की हमदर्दी पाकर रेशमा अधिक भावुक हो उठी थी।

अब उसकी झिझक काफी कम हो गयी थी।

"स्वाभाविक है।" डार्लिंग ने उसका कांधा थपका—"एक बाप के लिए इससे बड़ा बोझ इस दुनिया में दूसरा नहीं होता कि उसे अपने जवान बेटे का जनाजा अपने कांधों पर उठाना पड़े।"

रेशमा अब भी भावुक थी। बोली—"बिगड़े हालात ने हम कश्मीरियों को फाकाकशी पर मजबूर कर दिया था। सैलानियों ने वादिये काश्मीर की ओर से पूरी तरह से मुंह मोड़ लिया था क्योंकि हर किसी को अपनी जान का खतरा होता था। लोग कहते हैं काश्मीर धरती की जन्नत है, हम जन्नत के रहने वाले भुखमरी की कगार पर पहुंच गये थे।"

"लेकिन इस साल तो यहां सैलानी आये....?" डार्लिंग ने रेशमा को तसल्ली देने वाले स्वर में पूछा।

"सैलानी आये...कई सालों से खोयी आमदनी भी हुई। होने वाली आमदनी से अब्बू ने शिकारे को सजाया-संवारा। आगे की उम्मीद संजोयी कि धरती की इस जन्नत में फिर से खुशहाली लौट

आयेगी...।"

"खुशहाली लौटकर आयेगी रेशमा...और पहले से ज्यादा आयेगी। कुदरत का नियम है कि बाढ़ का पानी फसलों की बरबादी करके जब उतरता है तो नयी फसलें और भी ज्यादा लहलहाती हैं, क्योंकि आयी हुई बाढ़ अपने पीछे धरती पर खनिज, लवण और दूसरे ऐसे तत्व छोड़ जाती है जो नयी फसल के लिए अधिक पोषक होते हैं। हर डूबता सूरज नये सवेरा का पैगाम देकर जाता है रेशमा...।"

"आपकी बातें भी आपकी तरह अच्छी हैं मेम साहब...।" रेशमा भाव-विभोर होकर बोली।

"अगर मैं तुमसे कहूं कि तुम मुझे मेम साहब न कहोगी तो क्या तुम मान जाओगी रेशमा...?" डार्लिंग ने उसे अपने करीब करते हुए उसकी कमर में दोस्ती भरा हाथ डाल दिया।

"आपको मेम साहब न कहूं तो और क्या कहूं...?" रेशमा ने भोलेपन से पूछा।

"मुझे मेरे नाम से पुकारो...जैसे कि मैं तुम्हें तुम्हारे नाम से पुकारती हूं...रेशमा! मेरा नाम है डार्लिंग...।"

"डार्लिंग!" रेशमा के होंठों से फूटा।

और उसी के साथ उसने चौंककर सिर उभारा।

सिर उभारने की वजह यह थी कि उसके बायें कपोल और कांधे पर ठण्डे पानी के कुछ छींटें टकरा गये थे।

उसने मन ही मन सोचा—'अच्छा यह था कि उन छींटों का एहसास उसकी कस्टमर को न हो पाया था, क्योंकि वह उसके दायीं ओर थी।'

उसने सिर उभारते ही देखा था—एक किश्ती उसके बायीं ओर से अभी-अभी उस समय तीर की तरह से गुजर गयी थी जब उसने कस्टमर का नाम दोहराया था—'डार्लिंग'!

गुजर जाने वाली किश्ती पर कुछ युवा थे।

वे नई उमर की किलोल और अपनी मस्ती में डूबे हुए थे।

गुजर जाने वालों ने पलट-पलट कर देखा भी था उसे। जिसके लिए उसने 'डार्लिंग' को सम्बोधित किया था।

रेशमा के तेवरों में बल पड़े थे। बुरा लगा था...बहुत ज्यादा

बुरा। उसने मन ही मन सोचा—'निश्चित रूप से किश्ती वाले को इस बात की जानकारी न होगी कि उसकी किश्ती के सवार उसकी किश्ती पर पानी के छींटें उड़ा गये हैं। जानकारी में बात आने पर उसकी ओर से अवश्य ही विरोध होता।'

फिर उसकी अगली सोच उभरी—'उसकी कस्टमर का अजीब नाम है न डार्लिंग!

महबूब अपनी महबूबा के लिए बड़े प्यार से डार्लिंग का सम्बोधन करता है।

क्या उन युवकों में, उसके होठों से फूटे, अपनी कस्टमर के लिए डार्लिंग का सम्बोधन सुन छेड़खानी की भावना उभरी, या कुछ पीछे से ही उन दोनों के बीच निकटता देख छेड़खानी का विचार करके किश्ती बढ़ायी थी?'

रेशमा कुछ और सोच पाती, इससे पहले ही डार्लिंग का लापरवाही में डूबा बिंदास स्वर उभरा—

"जाने भी दो रेशमा जान, भंवरों से उनके गुनगुनाने का हक फूलों या कलियों की ओर से नहीं छीना जाता...।"

रेशमा ने मुंह फाड़कर हैरत से डार्लिंग को देखा। उसके देखने के अन्दाज में यह भाव भी था कि फूलों और कलियों की बात किसके लिये है?

डार्लिंग खिलखिलाकर हंसी। उसकी ओर अंगुली उठाकर बोली—"तुम कली, मैं फूल...।"

रेशमा के रसीले अधरों पर चाशनी में लिपटी हल्की-सी मुस्कान रेंग गयी।

रेशमा की मुस्कान के साथ, डार्लिंग ने इस बात को भी देखा था कि मुस्कराते समय उसके कपोलों पर हल्के गड्ढे पड़कर उसके हुस्न को और भी दोबाला करते हैं।

"मैं तो शुक्र मनाना चाहती हूं उन नौजवानों का, जिनकी शोख शरारत की वजह से तुम्हारे कुम्हला उठे चेहरे पर मुस्कराहट के फूल फिर से खिल उठे।"

रेशमा की गजाली आंखों में जवानी की ताजगी से भरपूर हया की लाली उभरी और लाली के भार से पलकें झुक गयीं। उसके गोरे मुखड़े पर अठखेलियां कर उठे, शर्मीले भावों को अपने

स्याह आंचल में ले लेने के लिए उसकी घनेरी जुल्फें रुखसार पर फिसल पड़ीं।

यूं लगा जैसे ख्वाबों की किन्हीं हसीन वादियों में वह गुम होती चली जा रही है।

"रेशमा...।" डार्लिंग ने उसके कांधे पर आहिस्ता से हाथ रखा। जरा-सा उसकी ओर सरक आती हुई राजदाराना स्वर में बुदबुदायी—"तुमने मेरी बात का बुरा तो नहीं माना रेशमा...?"

कांधे पर आये डार्लिंग के हाथ के स्पर्श ने न जाने कैसा जादुई स्पन्दन जगाया रेशमा के तन-मन में, कि कली ने एकदम से अपना मुखड़ा फूल के सीने के आंचल में छुपा दिया।

"अब मेरा आगे जाने का मन नहीं रेशमा...।" डार्लिंग ने कहा—"सुबह से खूब घूमी हूं, अब आराम को जी चाहता है...।"

रेशमा ने सिर उभारा। चप्पुओं को सम्भालकर हौले से बोली—"शिकारा पर चलती हूं...।"

डार्लिंग ने धीरे से गरदन हिला हामी भरी।

रेशमा ने किश्ती का रुख मोड़ दिया।

रात की स्याही में उस घाटी में सिर छुपाए कुछ लोगों में गहरी बेचैनी थी।

घाटी खासी बीहड़ थी। उस स्थान की बीहड़ता को उसमें मौजूद लोगों ने उसे खन्दक का रूप देकर कुछ और बढ़ा रखा। खन्दक के रूप में पत्थरों से निर्मित वह कक्ष आराम और सुख-सुविधाओं के आवश्यक सामानों से युक्त था। वहां हथियारों का जखीरा भी था तथा सैनिक, अर्द्ध सैनिक बलों तथा सिविल पुलिस की वर्दियां भी। मगर वे वर्दियां जिन जिस्मों पर, समय-समय पर धारण की जाती थीं वे फर्जी होते थे।

उस समय उस खन्दकनुमा कक्ष में चार चेहरे थे। मटमैले प्रकाश देने वाले गैस पैट्रोमेक्स की रोशनी में उन चारों चेहरों पर बेचैनी की छाया साफ नजर आती थी। चार में से दो पूरी तरह से युवा थे। उनकी उम्र बीस से बाईस के बीच थी। शेष दो तीस

से पैंतीस वर्ष के आसपास के थे।

एक पैंतीस वर्षीय, घनी मूंछें और खिचड़ी दाढ़ी वाले व्यक्ति ने हाथ में थमा मोबाइल कान से लगा रखा था तथा उस पर किसी से पूरी गम्भीरता के साथ बातें कर रहा था।

उसने मोबाइल ऑफ कर जेब के हवाले किया। अपनी पूरी तवज्जो सामने मौजूद दोनों नौजवानों पर केन्द्रित कर, एक से सम्बोधित हुआ।

"यस बकाउल्ला! तुम्हारी रिपोर्ट पूरी तरह सही साबित हुई...। 'रेशमा' शिकारे पर इस समय ठहरी हुई यंग लेडी कोई और नहीं मिस डार्लिंग भटनागर ही है। रेशमा शिकारे पर हमारे आदमी ने खुफिया ट्रांसमीटर रिसीवर लगाया। ट्रांसमीटर पर रेशमा के परिवार के सदस्यों और टूरिस्ट यंग लेडी की बातचीत को टेप किया।

उस टेप को हमारे आदमी ने हमें सुनाया। टेप को सुनने के बाद अब बात पूरी तरह साफ होकर आ गयी है कि वह केन्द्रीय खुफिया विभाग रॉ की टॉप वन रैंक इण्डियन स्पाई डार्लिंग भटनागर ही है।"

जिसे घनी दाढ़ी-मूंछ वाले ने बकाउल्ला के नाम से सम्बोधित किया था, वह बाईस वर्षीय हृष्ट-पुष्ट कद-काठी का क्लीन शेव्ड गोरा-चिट्टा नौजवान था। उसने उत्साहित स्वर में कहा—

"यस कमाण्डर! मैंने आपको उसी समय इस बात की रिपोर्ट दे दी थी जबकि इण्डियन स्पाई डार्लिंग को डल लेक के किनारे पर पर्यटक के रूप में देखा था। मैंने दर्जनों बार उसकी तस्वीरें अखबारों में छपी हुई तथा हैडक्वार्टर के रिकार्ड में फाइल हुई देखी हैं। इसलिए उसे पहचानने में मुझसे कोई गलती न हो सकती थी।"

"बका की ओर से संकेत पाकर मैंने उसको फालो किया था कमाण्डर...।" दूसरे बीस वर्षीय नौजवान ने अपने साथी बकाउल्ला से भी ज्यादा उत्साहित भाव का प्रदर्शन करते हुए कहा—"इसे अच्छा इत्तफाक कह सकता हूं कि मैंने उसके करीब से गुजरते हुए उसका नाम खुद उसके मुंह से सुना। उसने किश्ती वाली को अपना नाम 'डार्लिंग' बताया था। पूरी तसल्ली के लिए मैंने किश्ती

वाली पर, पानी के छींटे उड़ाये थे ताकि वह डार्लिंग के सामने से हट जाए तो उसका पूरा चेहरा मेरे सामने आ जाए। उसका चेहरा मेरे सामने आया और मैंने भी पहचाना कि वह इण्डियन स्पाई डार्लिंग ही है...।"

"यस नूरू तुमने भी सही रिपोर्ट दी थी...।" कमाण्डर ने प्रभावशाली स्वर में कहा—"तीसरी रिपोर्ट भी पूरी तरह प्रमाणित होकर सामने आ गयी कि आफत की परकाला कहलाने वाली इण्डियन स्पाई डार्लिंग ही है...।" फिर उसके चेहरे पर सोचपूर्ण भाव आये। वह बुदबुदाया—"मगर, सवाल यह उठता है कि वह कश्मीर में कर क्या रही है...?"

"मौज-मस्ती, ऐश...सैलानी बनकर छुट्टियां गुजारना...।" चौथे ने कहा। वह अब तक खामोश रहा था। उसकी उम्र तीस वर्ष के आस-पास थीं। छः फुटे कद का वह इन्सान था। जिस्म दुबला-पतला लेकिन हड्डियां चौड़ी थीं। सिर के बाल बड़े और बेतरतीबी से बिखरे हुए थे। उसकी गड्ढे में धंसी आंखें, किसी कातिल की सुर्खी सी समेटे हुए थीं। उसके बाएं हाथ की तीन बीच की अंगुलियां आधी-आधी गायब थीं। उसके निकट के लोग इस बात को जानते थे कि वह बारूद एक्सपर्ट है तथा अपने इसी फन के कारण उसने अपनी अंगुलियां गंवायी हैं। उसका असली नाम न जाने कब से उसका साथ छोड़ गया था। बारूद एक्सपर्ट होने के कारण अब बारूद अली कहलाने लगा था। जहां अपने बारूद फन में वह माहिर था वहीं उसमें इस बात का जबर्दस्त ऐब था कि वह ज्यादातर समय चरस के नशे में डूबा रहना पसन्द करता था।

उसने कमाण्डर के सामने अपनी राय व्यक्त कर डाली थी। लेकिन कमाण्डर ने एक सिरे से मगर नम्र लहजे में उसकी राय खारिज कर देते हुए कहा—

"नहीं बारूद अली, यह बात उस हर्राफा जासूस के खसलत के खिलाफ है कि वह कहीं बेमकसद देखी जाए। सैर-तफरीह, मौज-मस्ती, सैलानी शौक तो वह किसी मिशन में लगे होने पर ही पूरा कर लेती है। डार्लिंग नाम उस बला का है जो अपना घर छोड़ती है तो उसका मकसद शिकार करना ही होता है।"

"फिर...?" बारूद अली ने अपनी नशे में डूबी मिचमिचाती आंखों को कमाण्डर पर जमाते हुए सवाल दागा।

"शिकार! शेरनी का शिकार। इससे पहले कि डार्लिंग रूपी नागिन के विषदंश से हम प्रभावित हो सकें, उसका सिर कुचल देना ही अक्लमंदी है...।" कमाण्डर ने जोशीले स्वर में कहा।

"लेकिन, तुम इस बात को भूल रहे हो कमाण्डर कि हमें सिर्फ उसी लक्ष्य पर काम करने की इजाजत है, जो ऊपर से मिलता है। ऐसा ना हो कि अपनी राह चली जा रही नागिन पर हम वार करें, हमारे हमले में एक परसेण्ट भी उसके बच जाने के चांस सामने आयें, और वह पलटकर डस जाने का कारनामा कर दिखाये...ऐसा होने पर ऊपर की जवाबदेही हमारे लिए बहुत भारी पड़ जायेगी...।" बारूद अली ने पूरी गम्भीरता के साथ अपनी राय पेश की।

"यानि हमें इसके लिए ऊपर से इजाजत लेनी होगी...?" कमाण्डर सोचपूर्ण स्वर में बोला।

"मेरी राय यही है...।"

"ओ० के०।" कमाण्डर सन्तुष्ट स्वर में बोला—"ऊपर वाले इस खबर को सुनकर खुश हो जायेंगे। आफत की परकाला डार्लिंग को यहां खोज निकाला जाना हमारे लिए एक बड़ी उपलब्धि मानी जायेगी...।"

"अगर यह उपलब्धि है तो इसे ऊपर पहुंचाया जाना हमारे लिए और भी जरूरी हो जाता है...।" बारूद अली ने कहा।

बारूद अली की राय से इत्तफाक करते हुए कमाण्डर ने अपना स्थान छोड़ा। वह उत्साहित भाव में बढ़कर कक्ष के एक कोने में पहुंचा।

उस कोने में एक छोटा अत्याधुनिक रेडियो वायरलेस सैट मौजूद था।

उसने रेडियो वायरलेस को सक्रिय किया।

दूसरी ओर सिगनल जाने लगा था।

कुछ पलों बाद दूसरी ओर से सम्बन्ध बनने पर कमाण्डर ने उत्साहित स्वर में कहा—

"हैलो...हैलो...नार्थ जोन एरिया कमाण्डर हिजबुल मुरसलीन

जावेद अली...। मैं एक जरूरी रिपोर्ट पेश करना चाहता हूं...ओवर...।"

"एरिया कमाण्डर जावेद अली, अपनी रिपोर्ट दो...ओवर...।" दूसरी ओर से भर्राई हुई आवाज उभरी।

"यहां डल लेक पर, इण्डियन स्पाई रॉ की डार्लिंग देखी गयी है...। उसकी गतिविधियां संदिग्ध हैं...।" कमाण्डर ने अपनी ओर से डार्लिंग के मामले में कुछ अतिरिक्त रंग भरते हुए बताया—"उसके मामले में हम हेडक्वार्टर से हुक्मनामा चाहते हैं...ओवर...।"

"इण्डियन स्पाई डार्लिंग...श्रीनगर में...?" दूसरी ओर से चौंकता हुआ स्वर उभरा—"जहरीली नागिन अपने बिल से बाहर आ गयी है। यह तो बहुत अच्छी बात हुई। उसने हमारे न जाने कितने मिलिटेण्टों को डसा है। उसकी गतिविधियां संदिग्ध हैं या सामान्य, इस पर विचार किये बगैर उसे 'देखो और मार दो' का हुक्म दिया जाता है...। उसे मार दो और लाश हमारे सामने ले आओ...यह तुम्हारा एक बड़ा कारनामा माना जाएगा जावेद अली...।"

"यस चीफ कमाण्डर, ऐसा ही होगा...ओवर...।"

"चौबीस घण्टे के अन्दर इस काम को पूरा हो जाना चाहिए...। पूरी होशियारी के साथ...। शिकार जख्मी होकर हाथ से निकलना न चाहिए...ओवर...।"

"ऐसा ही होगा चीफ कमाण्डर...ओवर...।"

"दोबारा इस बात पर ध्यान दो कि चौबीस घण्टे के अन्दर काम पूरा होना चाहिए...। तुम्हारी इस खबर ने सनसनी फैला दी है। क्या उसे हमारे मामले की सूंघ लग गयी है? पूरी होशियारी से काम हो। कामयाबी मिलने पर इस मिशन में शामिल मुजाहदीनों का ओहदा बढ़ाया जाएगा। ओवर एण्ड आल...।"

दूसरी ओर से कहा गया।

सम्बन्ध विच्छेद हुआ।

बारूद अली तथा अपने दो अन्य मिलिटेण्ट साथियों की ओर आते हुए स्वयं कमाण्डर की रगों में सनसनी दौड़ गयी थी। उसके जेहन में बार-बार एक ही बात गूंज रही थी—'क्या डार्लिंग को मामले की सूंघ लग गयी है?'

ब्यूटी क्वीन को रेशमा के शिकारे का घरेलू माहौल बेहद खुशनुमा लगा।

रेशमा की बूढ़ी मां और बाप का झुर्रियों भरा चेहरा उनके बुढ़ापे, गरीबी और फाकामस्ती की तस्वीर डार्लिंग की नजरों में पहली ही नजर में पेश कर गया था। सबसे भला डार्लिंग को यह लगा था कि वे सादगी पसन्द तथा बातचीत द्वारा पूरी आवभगत करने वाले साबित हुए थे।

'रेशमा' शिकारा भी शानदार था—उसमें एक वक्त में छः पर्यटकों के ठहरने की सुविधा थी। शिकारे के बैडरूम सजावटी थे। बाथरूम और टॉयलेट सुसज्जित थे। किचन उम्दा था। डार्लिंग ने खाने-पीने की जिम्मेदारी रेशमा की मां फात्मा बी और पिता नूरुद्दीन पर डाल दी थी।

उसने घूमने-फिरने, खाने-पीने, शिकारे पर रहने के भाड़े की रकम पेशगी अदा कर दी थी—ऐसे में आर्थिक तंगी से जूझते उस परिवार के सदस्यों को और चाहिए ही क्या था?

ब्यूटी क्वीन ने यूं तो रेशमा से, चौबीस घण्टे ही शिकारे पर ठहरने की बात कही थी, पर शिकारे पर आकर ठहरने और वहां का घरेलू माहौल और व्यवहार पाकर वह बातों ही बातों में इस बात का इजहार भी कर गयी थी कि—मन लगने की बात है, वह अधिक दिन भी वहां रुक सकती है। और अब रेशमा के रूप में जो जलवा उसे हासिल हो गया था उसका पूरा लुत्फ हासिल करने की खातिर उसने और अधिक दिनों तक वहां ठहरने का मन बना लिया था।

दूसरी ओर, ठण्डे पड़ चुके सीजन में उस परिवार को आय का अतिरिक्त स्रोत मिल रहा था। उसे वे बड़ी बात मान रहे थे। वे इस बात की कोशिशों में जुड़ गये थे कि शाही अन्दाज में खर्च करने वाली उस सैलानी का वहां पूरी तरह मन लग जाए तो वह अधिक दिन रुककर उनकी आमदनी में और इजाफा करा जाए।

सबसे अच्छी बात यह थी फात्मा बी और नूरुद्दीन के लिए

उनकी लाडली बेटी रेशमा से वह नयी सैलानी, सहेली जैसा बर्ताव कर रही थी। उसके साथ चाय-नाश्ता लेना, खाना-पीना, एक साथ बिस्तर पर बैठकर ढेरों बातें करना—ये सारी बातें ऐसी थीं जो उन्हें बड़ी सहज लग रही थीं और बहुत पसंद आ रही थीं।

यही वजह थी कि सोने का वक्त आने पर जब डार्लिंग ने इस बात का इसरार किया कि वह रेशमा के साथ काश्मीर के अन्य दार्शनिक स्थलों पर ढेरों बातें करना और बातें करते-करते सो जाना चाहती है, तो रेशमा के मां-बाप को कोई ऐतराज न हुआ।

ऐतराज की बात भी न थी—अकेली सैलानी, रेशमा के सहारे ही तो वहां ठहरने आयी थी।

चारों ओर, पहाड़ियों से आच्छादित काश्मीर की वादियों में शाम जल्दी घिर आती है...। खाना खाकर रेशमा को साथ लिये हुए डार्लिंग बैडरूम में समा गयी।

दो जवानियों के बीच, अकेले, बन्द कमरे के बैड पर बातों का सिलसिला चला तो न जाने कहां-कहां ख्वाबी दुनिया में भटकता रहा।

और फिर वह भी वक्त आया, जबकि उस बैड के सनील के लिहाफ और टर्किश ब्लैंकेट के बीच रेशमा अपना आधा धड़ पेवस्त किये जमुहाइयां लेने लगी। उसकी गजाली आंखों के पपोटे भारी पड़ने लगे, शरीर शिथिल होने लगा, कोहनियां ऐमल के मुलायम, साफ-शफ्फाफ सफेद तकिये के बीच धंस उठीं, तो डार्लिंग को प्यार से उसके कांधे पर हाथ रखकर कहना पड़ा—

"मैं समझ गयी, तुम्हें अब नींद आ रही है रेशमा...सो जाओ...।"

"आं...नहीं...।" रेशमा ने कमर सीधी करने की औपचारिकता निभानी चाही।

"न...न...तकल्लुफ नहीं...।" डार्लिंग ने उसके कांधे पर रखे हाथ पर ज्यादा दबाव डाला। फिर लिहाफ के दूसरे कोने को पकड़कर अपने ऊपर खींचा और खुद भीतर समा गयी।

लिहाफ के आवरण में खुद होते और रेशमा को लेते ही, हुस्न परी ने जोरदार करवट रेशमा की ओर बदली...।

उसे सिल्कन नाइट गाउन से युक्त अपनी बांहों में समेटा—

और फिर जैसे, कली खिले पुष्प के भार में उलझकर कसमसा उठी।

उसकी कसमसाहट की लज्जत, ब्यूटी क्वीन की रूह को पूरी तरह से ताजगी बख्शने वाली थी।

उस समय तो, कली की कुनमुनाहट की बेताबी का आलम और भी बढ़ गया जबकि ब्यूटी क्वीन ने उसे पूरी तरह समेट कर अपने सीने से लगाया।

"हाय अल्लाह।" चिहुंकते हुए अन्दाज में, गहरी-गहरी सांसों का तूफान छोड़ती हुई रेशमा बुदबुदा उठी।

"क्या हुआ जान...!" उसके रसीले, संतरे सी फांक वाले अधरों से लेकर कश्मीर सेब सी सुर्खी वाले गालों पर तर्जनी अंगुली फेरकर डार्लिंग बोली—"क्या तुम्हें अच्छा नहीं लगा...?"

डार्लिंग की आवाज फुसफुसाहट में भरी मगर पूरी तरह सरगमी साज का जादू जगाने वाली थी।

"मुझे न जाने कैसा लगा...।" रेशमा की आवाज जैसे कहीं दूर, हजार चांदी की बजती हुई घण्टियों की रागिनी में डूबी हुई धीमे से उभरी। उसने गहराई से अपनी सांस क्षणेक के लिए रोकी, फिर वाहियात अन्दाज में छोड़ती हुई बोली—"कुछ यूं लगा जैसे दिल की धड़कनों ने तूफानी रफ्तार पकड़ ली हो...धक्...धक्...धक्...धक्...।"

"अच्छा! देखूं तो जरा...।" डार्लिंग शोखी में भरकर बोली...और उसने, कली को बचाव का कोई मौका दिये बगैर उसकी ओर हाथ बढ़ा दिया।

रेशमा का रोम-रोम यूं थपथपाया जैसे गुलमर्ग की बर्फीली हवाओं के थपेड़े, यकबारगी उसके रोम-रोम से टकरा गये हों...।

ब्यूटी क्वीन का शोखी और शरारत में डूबा हाथ आगे बढ़ता रहा। जिसके आनन्द की दीवानगी में भरकर, वह अपनी प्यारी छोटी दोस्त गजाला के साथ घण्टों अठखेलियां करते हुए गुजारा करती थी। जिसकी निकटता पाकर वह अपने खतरनाक से खतरनाक मिशन के हफ्तों और महीनों की थकान कुछ पलों में उतार डालती थी।

गजाला उसकी जिन्दगी की दिलकश टॉनिक थी। काम के बोझ से तनाव युक्त जेहन के लिए ताजगी थी।

गजाला वहां न थी—बांहों में उस समय रेशमा थी। गजाला की ही उम्र की, मगर बदन में उससे जरा छरहरी...। मगर रंग में उससे कहीं चटख चांदनी! उसका मुखड़ा दूध में घुले जाफरान की रंगत का नक्शा आंखों के सामने खींचता था। उसके मरमरी कांधों की चिकनाहट में भी जाफरानी रंगत घुली हुई थी।

और, छरहरे बदन की उस षोडशी बाला के सिमटते-सिकुड़ते अन्दाज को देख, ब्यूटी क्वीन की कल्पना में यह बात उभर रही थी—वह सिर्फ जाफरानी रंगत की ही नहीं, बल्कि वह पूरी-पूरी जाफरान की बूटी है।

उसके हाथ गुदाज, मखमली, स्निग्ध और जिन्दगी की तरंगों से भरपूर लज्जत को समेटते रहे।

उसकी जाफरानी रंगत को वह उसकी रग-रग में, अंग-अंग में, हर उस जगह घोल देने, पहुंचा देने को आतुर हो गयी जहां-जहां उस रंगत से अभी वह अछूती थी।

उसके हाथों का स्पर्श पाते ही रेशमा...इस तरह शर्मायी कि उसका पूरा वजूद सिमटकर ब्यूटी क्वीन के सीने में सिमट आया।

सांसें गर्म, तन में थिरकन, रोम-रोम में जगता नशा...और अंग-अंग में फड़कन...ये सब कुछ ऐसा अनोखा एहसास था, जिसकी लज्जत से रेशमा अब तक मीलों दूर रही थी...।

और उस समय, उसे जब सब कुछ अनचाहा ही मिल गया था तो महसूस कर रही थी कि वह आकाश की बुलन्दी पर उड़ती चली जा रही है।

उसे न अपने तन का होश है न वसन का। न जज्बातों पर उसे काबू है न होशो-हवाश पर।

वह ब्यूटी क्वीन के तन से इस तरह लिपटती और सिमटती रही जैसे हवाओं के तेज थपेड़े खाने वाली लता, सहारा पाने के लिए पेड़ और उसकी शाखों में उलझती चली जाती है...। और लता को इस बात का आभास नहीं रहता कि उसने पेड़ के किस-किस हिस्से को अपने लिपटने का सहारा बनाया है।

सुबह की धूप की छन-छन आती, गुनगुन करती गुनगुनाहट ने रेशमा के चेहरे पर अठखेलियां कीं, तो उसने हड़बड़ाकर आंखें खोल दीं।

आंखें खोलते ही वह हड़बड़ाकर उठी। कनखियों से बिस्तर के बगल के हिस्से में देखा—जहां देखते हुए भी उसे संकोच हो रहा था—पर वहां डार्लिंग न थी।

उसकी आहट बाथरूम से आ रही थी।

'मैं आज कितनी देर सोई...।' मन ही मन मुदित भाव में रेशमा बुदबुदायी—'मुझे डार्लिंग के लिए नाश्ते का इन्तजाम चटपट करना चाहिए...।'

इस सोच के साथ वह कुलांचे भरती हिरनी की तरह बैडरूम से बाहर निकल गयी।

फिर, तब—जबकि डार्लिंग अपने बालों को ड्रायर से सुखाती हुई ड्रेसिंग टेबिल के सामने बैठी खिड़की के झरोखों से छन-छन करके आती धूप का लुत्फ उठा रही थी, रेशमा ने नाश्ते की ट्रॉली के साथ वहीं प्रवेश किया।

"आपको नाश्ते में देर तो नहीं हुई डार्लिंग...!" रेशमा ने संकोची भाव में पूछा।

"मैं अपने हिस्से का स्वादिष्ट नाश्ता रात को ही चट कर गयी हूं...।" डार्लिंग ने उस पर शरारती नजरें डालकर कहा।

रेशमा के होठों पर मंद-मंद मुस्कान और भीगी-भीगी झेंप थिरकी। वह झुकी-झुकी निगाहों के साथ ट्रॉली सरकाकर बढ़ती हुई बोली—

"जल्दी से नाश्ता कर लो...क्योंकि कल के आपके तय किये गये प्रोग्राम के मुताबिक हमें सुबह की धूप खिलने के साथ ही झील से लगे दूसरे सैलानी स्थलों को देखने निकल जाना था...।"

"प्रोग्राम मेरा ही तय किया हुआ था, प्रोग्राम में मैं ही रद्दोबदल करती हूं...।"

"अंय...।" रेशमा चौंकी।

"यस रेशमा जान—इस समय मुझे पहाड़ियों के दामन को छूकर आती धूप, इस कदर भा रही है कि मैं इसका घण्टों लुत्फ उठाना चाहती हूं। कम से कम दोपहर तक मैं आज की खिली धूप का सेवन करूंगी। दोपहर बाद हम घूमने-फिरने निकलेंगे...।"

"दोपहर को तो लंच का समय हो जाएगा।"

"हो जाने दो, लंच के बाद सही...।"

"तब तो दो-तीन बज जायेंगे और घूमने जाने वाली जगहों पर पहुंचने में ही शाम का झुटपुटा छा जाएगा...।"

"छा जाने दो, मुझे कौन-सी जल्दी है...।" डार्लिंग ने लापरवाही से कंधे उचकाकर कहा—"मैंने अभी-अभी फैसला किया है कि मैं आगे उस समय तक यहां रुकूंगी जब तक मेरा पूरी तरह दिल न भर जाएगा।" फिर धीमे से राजदाराना बुदबुदाहट के साथ वह बोली—"इस बहाने और भी रातें तुम्हारे हुस्न की पुरकशिश वादियों के बीच गुजारने का मुझे मौका मिल जाएगा।"

रेशमा, उसके नशीली चितवन के अन्दाज पर सकुचाकर पैर के अंगूठे से फर्श का गालीचा कुरेदने लगी। साथ ही साथ वह सुबह का नाश्ता डायनिंग टेबिल पर सजाती चली जा रही थी।

शिकारे से निकलकर जल विहार और निशात बाग घूमने जाने का प्रोग्राम बना, अपना वैनेटी बैग कांधे पर डाल थ्रिल क्वीन बैडरूम की खुली विण्डो बन्द करने के लिए बढ़ी।

उस समय तक रेशमा शिकारे से बंधी नौका पर पहुंच गयी थी।

खुली खिड़की बन्द करने की सूझ उसे इसलिए हुई थी क्योंकि धूप का रुख बदल चुका था, अब खुली खिड़की से धूप के बजाए सर्द हवाओं की सरसराहट का गुजर हो रहा था।

उसने एक पट बन्द करने के बाद जैसे ही दूसरा पट बन्द करना चाहा, यकायक वह चौंकी—आंखें विस्मय से फैलीं।

विण्डो की चौखट के पास ट्रांसपैरेण्ट टेप से चिपकी उसे एक ऐसी चीज नजर आ गयी थी...जिसने उसके स्पाई मस्तिष्क को एकदम से सक्रिय कर दिया।

उसकी छ ठी इन्द्रिय ने उसे खतरे का संकेत दे दिया था।

वह झटके से पीछे हटी। फुर्ती से वैनेटी बैग में हाथ डाला।

वैनेटी बैग के एक अन्दरूनी खाने में मौजूद, मुट्ठी में दबाए हुए डिटेक्टर यंत्र निकाला।

वह डिटेक्टर यंत्र मर्दानी गोल रिस्टवॉच आकार का था, मगर उसकी सुइयां दिशा सूचक यंत्र की तरह थीं।

उसने डिटेक्टर के बैटरी सेल को एक्टिव करने वाले बटन को दबाया।

डिटेक्टर में छोटी-बड़ी एक दर्जन सुइयां थीं। सुइयां हरकत करने लगी थीं।

डार्लिंग डिटेक्टर को, चौखट के नीचे, टेप से चिपकी चीज के करीब ले गयी। वह चीज सेल टॉर्च के बल्ब के आकार की थी।

सुइयों ने अपनी हरकत द्वारा उसे झट इस बात की जानकारी दे डाली कि सेल टॉर्च बल्ब आकार वाली वह चीज बल्ब नहीं बल्कि माइक्रो ट्रांसमीटर साउण्ड रिसीवर है।

डिटेक्टर की सुइयों ने इस बात की भी स्पाई क्वीन को जानकारी दे डाली कि वह उस समय भी एक्टिव था।

वह तार रहित था, मगर खासा संवेदी था।

थ्रिल क्वीन की स्पाई नसें फड़क उठीं।

उसने तेजी के साथ विचार किया—'कौन उसकी जासूसी कर रहा है?'

उस माइक्रो ट्रांसमीटर की फ्रीक्वेन्सी रेंज कम-से-कम पांच सौ मीटर की थी। कोई पांच सौ मीटर के क्षेत्रफल में मौजूद उसकी बातचीत, प्रोग्राम नोट कर रहा था।

माइक्रो ट्रांसमीटर की बनावट के आधार पर वह यह भी जान गयी थी कि वह अमेरिका, जापान, फ्रांस या जर्मनी में से किसी मुल्क का बना हुआ है। उपरोक्त मुल्कों की इलेक्ट्रानिक टेक्नालॉजी अन्य देशों के मुकाबले कहीं ज्यादा विकसित है।

और फिर,

अगले मिनट ही स्पाई क्वीन को यह बात भी ध्यान में आ गयी कि पिछले दिनों, भारत सेना के जवानों ने कारगिल ऑपरेशन के समय, सीमा मोर्चा पर कुछ खन्दकों से माइक्रो ट्रांसमीटर की बरामदगी, मारे गये मिलिटेण्टों के अन्य साजो-सामानों के साथ की थी।

अपनी छोटी बनावट और हाई फ्रीक्वेन्सी के कारण वो खासे चर्चा में आये थे।

विद्युत धारा से मस्तिष्क में उभरते विचारों के साथ, स्पाई क्वीन इस सम्भावना पर भी विचार किये बगैर न रही कि क्या किसी मिलिटेण्ट ग्रुप द्वारा उसकी जासूसी करायी जा रही है?

क्या किसी आतंकवादी गिरोह की निगाह में वह है?

पर किसके?

उसमें किसे दिलचस्पी हो सकती है और क्यों...?

सवाल अनगिनत थे, मगर जवाब एक का भी उसके पास न था। उसने लापरवाही से कंधे उचकाए। खिड़की बन्द की। होठों ही होठों में दिलकश मुस्कान समेटे उसने बाहर की ओर कदम उठाए। उसके होठों की मुस्कान इसलिए थी क्योंकि मौत उसकी दासी थी और जंगजू उसका स्वभाव। जिस प्रकार किसी पर्वतारोही को पर्वत पर चढ़ना ही उसका सबसे आनन्ददायक शौक होता है, कार रेसर की, कार रेस रैली में तेज से तेज रफ्तार से कार दौड़ाने के लिए भुजाएं फड़कती रहती हैं, ठीक उसी तरह थ्रिल क्वीन को अपने दुश्मनों के साथ मौत और जिन्दगी के खेल में उलझने में ही सबसे अधिक आनन्द आता था।

होठों पर दिलकश मुस्कान लिए वह शिकारे से उतरकर किश्ती में सवार हुई।

"किधर का रुख करूं डार्लिंग...?" रेशमा ने बेतकल्लुफ स्वर में पूछा।

'मेम साहब' के बजाय 'डार्लिंग' का सम्बोधन देने का अधिकार ब्यूटी क्वीन ने रेशमा को दे डाला था।

"उधर चलो जिधर जिन्दगी की भरपूर दिलकशी हो...।" डार्लिंग ने लापरवाह स्वर में कहा—"जहां मैं हूं और तुम हो तीसरा कोई न हो। मैं तुमसे और तुम मुझसे ढेरों बातें करती रहो और कोई तीसरा सुनने वाला न हो...।"

ब्यूटी क्वीन के कहने के बिंदास भरे ढंग और उसकी ओर देखने की मधुरता ने रेशमा के तन-मन में गुदगुदी जगा दी।

उसकी आंखों के सामने डार्लिंग के साथ बैडरूम में गुजारे लम्हों के दृश्य सजीव हो उठे...। उसने मुस्कराकर किश्ती को खेना शुरू किया।

उसने किश्ती का रुख उस ओर मोड़ा, जहां से आगे की

मंजिल, शिकारे पर पहुंचने के कारण ठहर गयी थी।

"हां, तुम खूबसूरत होने के साथ-साथ समझदार भी हो रेशमा...।" डार्लिंग ने हर्षित स्वर में कहा—"वाकई मैं पूरी डल झील की सैर का आनन्द उठाना चाहती हूं। एक सिरे से उस दूसरे सिरे को देखना चाहती हूं जहां तक यह झील फैली हुई है...।"

"इसके लिए अगर कुछ घण्टे और पहले प्रोग्राम बनाती तो ज्यादा बेहतर था...।"

"क्यों भला...?"

"दूसरे सिरे तक पहुंचते-पहुंचते ही अंधेरा घिर आएगा...।" रेशमा ने 'क्यों' का जवाब दिया।

"क्या अंधेरा घिरने से तुम्हें डर लगता है...?" डार्लिंग ने छेड़छाड़ के स्वर में पूछा।

"अंधेरे और उजाले दोनों के हम लोग आदी होते हैं.... । कुछ सैलानी सारी रात नौका विहार करते हैं और हम कराते हैं...।"

"मैं समझी...।" डार्लिंग मुस्कराकर बोली—"मैंने एक से और अधिक दिनों तक तुम्हारे साथ ठहरने का इरादा कर लिया है रेशमा...अंब समय की कोई पाबन्दी मेरे सामने नहीं। मेरा जब तक जी चाहेगा यहां ठहरूंगी।"

रेशमा शायद इसी बात का स्पष्टीकरण चाहती थी। एक से अधिक दिनों तक ठहरने की बात पर उसका चेहरा खिल उठा।

वह चप्पू खेती रही—किश्ती झील की शान्त लहरों पर सफर तय करती रही।

धीरे-धीरे, झील के सीने पर होड़ मचाकर बढ़ती किश्तियों का सिलसिला पीछे छूटता चला गया।

ब्यूटी क्वीन की आंखों के सामने, देवदार के पेड़ के लम्बे साये सिमटते हुए नजर आने लगे...। सांझ के झुटपुटे ने अपने पंख फैलाने शुरू कर दिये थे। पहाड़ियों और वादियों के खिले फूलों और वृक्षों की हरियाली, अपना मनोरम दृश्य पेश कर रही थी।

किश्ती, हल्के-हल्के झील की शान्त धारा पर किसी हंस की तरह डोलती हुई आगे बढ़ती चली जा रही थी।

अचानक थ्रिल क्वीन चौंकी!

झील की शान्त धारा में दाईं ओर कोई गैर जरूरी हलचल हुई। उसे लगा था किसी मगरमच्छ ने तेजी से पानी के ऊपर सिर उभारा है...और तेजी के साथ सतह में बैठता चला गया है।

लेकिन, मगरमच्छ का मामला स्पाई क्वीन ने दृष्टिभ्रम समझा...। पर, उसकी छठी इन्द्रिय ने तेजी के साथ उसे खतरे का संकेत दे डाला।

और इससे पहले कि थ्रिल क्वीन खतरे के बारे में कुछ समझ पाती—यकायक रेशमा की हड़बड़ी, घबराहट और विस्मय भरी आवाज उभरी।

"अरे....! किश्ती में तेजी से पानी भर रहा है...।"

"क्या...?" डार्लिंग फुर्ती से आगे झुकी...।

उसने झुकते ही देखा—रेशमा का विस्मय और घबराहट बेमाने न थी...किश्ती में बुलबुलों के साथ तेजी से पानी भर रहा था। पानी भरने का एहसास रेशमा को शायद तब हुआ था जब उसके किश्ती की सतह पर टिके पैरों ने पानी का स्पर्श किया था।

झुकते ही थ्रिल क्वीन समझ गयी थी कि किश्ती में चार इंच के आसपास का छेद हुआ है...। देखते ही देखते अन्दर तीन इंच करीब पानी भर आया था।

और उसी क्षण,

"धांय...!"

फायर की जोरदार आवाज कौंधी।

गोली सनसनाती हुई थ्रिल क्वीन की गरदन के ऊपर से गुजर गयी।

किश्ती में पानी भरने से घबरायी हुई रेशमा, फायर की आवाज पर चीख पड़ी।

थ्रिल क्वीन ने इसे अपनी खुशकिस्मती माना कि वह बाल-बाल बची थी...। फायर करने वाले ने अपनी ओर से कोई कमी नहीं छोड़ी थी—निशाना ठीक उसकी कनपटी थी...। इसे थ्रिल क्वीन इत्तफाक कह सकती थी या अपनी खुशकिस्मती कि वह किश्ती में पानी भरता देखने के लिए रेशमा के साथ झुक गयी थी, जिसकी वजह से फायर उसके साथ-साथ रेशमा की भी गरदन के ऊपर

से गुजर गया था।

"घबराओ मत...।" थ्रिल क्वीन रेशमा के कांधे को दबोच, धप्प से चप्पू वाली सीट से नीचे, बचाव युक्ति के लिए स्लिप हुई। हिम्मत बंधाते स्वर में रेशमा ने कहा—"तुम मेरे साथ हो रेशमा! मैं तुम्हारा बाल भी बांका न होने दूंगी....।"

किश्ती में अब थ्रिल क्वीन घुटने डूबे पानी में थी...हालांकि पानी करीब छः इंच भरा था, मगर रेशमा सहित नीचे पानी भरते स्थान पर स्लिप होकर पोजीशन लेती हुई डार्लिंग के न सिर्फ घुटने बल्कि कमर तक, किश्ती में भर आये पानी में डूब चुके थे।

"ब...ऽऽ...चाऽऽ ओऽऽ!" सहायता के लिए रेशमा के कंठ से चीख उबली थी—लेकिन, उसके मुंह पर हाथ रख थ्रिल क्वीन ने उसकी चीख को गूंजने से रोक दिया।

और अब तक, थ्रिल क्वीन अपने वैनेटी बैग से रिवॉल्वर खींच चुकी थी।

वह रेशमा को अपने साथ समेटे और दबोचे हुए किश्ती के दाएं किनारे उस ओर धीरे से सरकी जिस दिशा से उस पर फायर किया गया था।

"नाव डूब रही है...।" आतंकित स्वर में रेशमा की फंसी-फंसी आवाज उभरी।

"तुम तैरना तो जानती हो...?" डार्लिंग ने पूछा।

"बहुत अच्छी तरह...।"

"मेरी फिक्र मत करो...क्योंकि तैराकी का मामला हो तो मैं इंग्लिश चैनल पार कर सकती हूं...।" डार्लिंग ने विश्वासपूर्ण स्वर में कहा।

उसके कम्प्यूटरीकृत मस्तिष्क में दुश्मन की करतूत का सारा नक्शा तैर चुका था।

उसकी समझ में आ चुका था कि किश्ती में पानी भरने की शुरूआत और फायर होने से पूर्व उसने मगरमच्छ की सी आकृति की जो झलक देखी थी, वह वास्तव में गोता-खोरी की पोशाक में वह दुश्मन था, जिसने फायर करके उसे निशाना बनाना चाहा था।

वे उसकी घात में थे।

थ्रिल क्वीन यह भी जान चुकी थी कि दुश्मन एक से ज्यादा

हैं...। कम से कम एक तो वह ही था, जिसने फायर किया था—दूसरा वह जिसने किश्ती में नीचे से किश्ती डुबाने की योजना के तहत सूराख कर दिया था।

थ्रिल क्वीन ने यह भी सोचा, दुश्मन दो से भी अधिक हो सकते हैं...। उसने मन ही मन यह भी सोचा कि वे जितने भी हों, सबके सब गोताखोरी की पोशाक में हैं...।

उनका फर्स्ट अटैक असफल हो गया था।

थ्रिल क्वीन तेजी से सोच रही थी—उनकी योजना रही होगी किश्ती में पानी भरते देखते ही वह बदहवाश होकर किश्ती छोड़ पानी में छलांग लगायेगी...और उस सूरत में घात में लगे मगरमच्छ उसे झट-पट हड़प कर जायेंगे...।

लेकिन, डूबती किश्ती को न छोड़ते हुए उसका रेशमा सहित नीचे स्लिप कर जाना, उनकी योजना को असफल कर गया था।

स्पाई क्वीन इस बात को जानती थी कि दुश्मन की फर्स्ट अटैक योजना असफल हो जाए तो उसका बौखला जाना स्वाभाविक होता है।-उसकी अगली हरकतें बगैर योजना के उल्टी-सीधी होती हैं।

वह गोली, जो चलकर खाली गयी थी, वही उनका अमोघ अस्त्र थी....। और अब स्थिति को अपने पक्ष में करने के लिए थ्रिल क्वीन पूरी तरह कटिबद्ध थी।

दाएं किनारे की ओर सरकती डार्लिंग ने बाएं हाथ से किश्ती का किनारा थामते हुए रेशमा से धीमी आवाज में कहा—

"किश्ती डूबने का इन्तजार करना रेशमा...और जैसे ही किश्ती डूबे...पानी में गोता मारना—बस तुम्हें पहला प्रयास यही करना है...आगे मैं सारा मामला देख लूंगी...। पानी के ऊपर जिस्म का कोई भी हिस्सा होने पर गोली अपना काम कर सकती है...पानी के अन्दर नहीं। यदि दुश्मन के पास वाटरगन होती तो वे किश्ती डुबोने का प्रयास करते हुए फायर झोंकने की मूर्खता न करते...।"

रेशमा बुरी तरह से बदहवाश और भयभीत निगाहों से डार्लिंग को देख रही थी—उसके चेहरे की निश्चिंतता पर वह

विस्मित थी। डार्लिंग घबराहट या बदहवाशी का लेशमात्र शिकार हुए बगैर, इस अन्दाज में उत्साहित थी जैसे ऐसे खतरों से खेलना उसका प्रिय खेल हो।

डार्लिंग के सुझाव पर उसने तेजी से गर्दन हिलायी।

किश्ती में अब पानी कमर से भी ऊपर भर चुका था। पानी के भार से वह बैठना आरम्भ हो चुकी थी। उसे पूरी तरह से डूब जाने में शायद दस सेकण्ड भी न लगने जा रहे थे।

रेशमा की गरदन हिलने के साथ ही बाएं हाथ में किश्ती का किनारा तथा दाएं हाथ में रिवॉल्वर थामे, थ्रिल क्वीन ने एक झटके से अपना सिर उभारा।

सिर उभारने के साथ उसे पानी पर ठीक उसी स्थान पर काला धब्बा नजर आया जहां से फायर किया गया था।

वह काला धब्बा पानी में उछला...। उसके हाथ में रिवॉल्वर की झलक डार्लिंग ने देखी। अवश्य ही डार्लिंग की तरह उसने भी अपने शिकार को देख लिया था।

वह गोताखोरी की पोशाक में था...। आंखों पर वाटर ग्लास और चेहरे पर गैस मास्क चढ़ाए होने के कारण उसकी आकृति धब्बे या मगरमच्छ सी थी...।

उसका रिवॉल्वर वाला हाथ सीधा हुआ।

"धांय...धांय...।"

शोले डार्लिंग के हाथ में थमे रिवॉल्वर से चमके।

पहला शोला—गैस मास्क वाले के रिवॉल्वर युक्त हाथ पर तथा दूसरा उसके वाटर ग्लास के मध्य समाकर—उसके माथे में तीसरी आंख बना गया।

वह पानी पर पूरी ताकत से उछला...।

माथे ने रक्त फुहार छोड़ दी थी।

झील के साफ-शफ्फाफ पानी पर दुश्मन के रक्त के छींटों ने सुर्खी दौड़ा दी।

अचूक निशाने की धनी स्पाई क्वीन ने दुश्मन को कोई मौका न दिया था—ना ही दूसरा फायर करने का, ना ही बचाव कर पाने का, यहां तक कि उसे चीख तक न गुंजा पाने का।

उसका जिस्म लहरों पर फड़फड़ाया....। और मृत्यु-शैया

पर फैल गया।

"डाइव...।" डार्लिंग ने अगला निर्देश रेशमा को दिया...। उस समय किश्ती पानी में गर्क होने से सिर्फ चार इंच बाकी रह गयी थी...। उनके जिस्म किश्ती में भरे पानी में तैर उठे थे...। अब सिर्फ सेकण्ड-दो सेकण्ड की बात थी जबकि किश्ती पूरी तरह पानी में लुप्त हो जाने वाली थी।

डार्लिंग द्वारा दुश्मन को, लहरों की मृत्यु-शैया पर लिटा देतें देख, रेशमा अब उसकी ओर से न सिर्फ आश्वस्त बल्कि उत्साहित थी।

मौत की आशंका में घिर जाने पर हर किसी में असीम बल और साहस का संचार हो जाता है। पैरों के नीचे आने पर पिस जाने की आशंका ग्रस्त चींटी भी पैर में काटने से पीछे नहीं रहती।

मौत से संघर्ष का ऐसा ही साहस रेशमा में भी सिमट आया। रेशमा ने, डार्लिंग को, दोनों हाथों को हवा में लहराकर किसी डाल्फिन के से अन्दाज में, अर्द्धचन्द्राकार शरीर के मोड़ के साथ, किश्ती से उछाल ले लहरों में गोताखोरी के लिए जाते देखा तो खुद भी डाल्फिन का रूप अपना लिया।

और,

साफ-शफ्फाफ लहरों पर गोता मारते समय रेशमा की निगाह अपनी गर्क होती किश्ती पर पड़े बगैर न रही। लेकिन, उस समय उसके सामने किश्ती को खोने का नहीं, जिन्दगी बचाने का प्रश्न प्रमुख था।

दूसरी ओर,

थ्रिल क्वीन डार्लिंग!

दुश्मनों के लिए मौत की देवी, आफत की परकाला की यह विलक्षण खूबी थी कि ऐसे अवसरों पर जिन्दगी और मौत के संघर्ष की बाजी मे सिर्फ दुश्मन की अगली रणनीति को तोड़ने और उससे फायदा उठाने की ही कला का इस्तेमाल करती थी।

लहरों पर डाइव मारने के साथ ही वह अनुमान लगा चुकी थी कि दुश्मन की अगली चाल क्या हो सकती है...।

लहरों में कई फुट गहराई से समाने के साथ ही वह जलपरी सी तेज तैराकी करके उस स्थान से दूर हुई, जहां पर उसने गोताखोरी की थी।

करीव पन्द्रह मीटर के फासले के बाद वह पलटी। पानी के अन्दर वह इस बात को साफ तौर पर न देख सकती थी कि दुश्मन या दुश्मनों की स्थिति क्या है, मगर लहरों की हलचल के आधार पर वह जान सकती थी कि दुश्मन उससे कितना दूर या पास है...।

तैराकी के बाद पलटते और ठहरते ही उसने किसी के तेजी से अपनी ओर लपकने की आहट और फिर नजदीक आने पर झलक पायी।

वह किसी जलजीव की तरह उसकी ओर झपटा था...।

उसके हाथ लपलपाते खंजर की लपक थ्रिल क्वीन ने देखी....।

वह पूरे वेग से उससे टकराया—उसका खंजर वाला हाथ उठा—पसलियों में पैवस्त होने के लिए लहराया।

बिजली की चमक बनकर थ्रिल क्वीन लहरायी...।

चमका हुआ खंजर उसकी बगल से गुजर गया...।

बस, यही मौका था जबकि थ्रिल क्वीन ने पूरी मजबूती से उसकी खंजर वाली कलाई पर बायां हाथ डाल दिया।

वह छूटने के लिए फड़फड़ाया।

थ्रिल क्वीन ने हल्की उछाल ली, उसके हाथ पर बाएं हाथ का दबाव बनाए हुए दाएं हाथ की खड़ी हथेली का वार उसकी गरदन पर जड़ दिया।

"हॉक...।" दुश्मन के कंठ से चीख गूंजी।

उसकी पकड़ में आया हाथ, गरदन पर पड़ने वाली चोट के साथ ही ढीला पड़ा।

एक बार फिर, डाल्फिन के से अन्दाज में लहरा कर कलाबाजी खाते हुए थ्रिल क्वीन ने दायां हाथ खंजर की मूठ पर लपकाया—दुश्मन की ढीली पड़ चुकी पकड़ का फायदा उठाते हुए खंजर छीना...और खंजर वाला हाथ सीधा किया...।

अपनी ही झोंक में लहरों पर कलाबाजी खाता दुश्मन खंजर की नोंक पर अपना सीना दे बैठा।

एक ही वार में हमलावर का सीना रक्तरंजित हो गया।

सीने से फूटती रक्त फुहार पानी में सुर्खी दौड़ाने लगी।

उसके चेहरे से गैस मास्क उतर चुका था। उसके कंठ से गुडुप-गुडुप की आवाज रक्त युक्त बुलबुले छोड़ती सांस के साथ फूटने लगी थी।

थ्रिल क्वीन ने गैस मास्क नहीं, उसका वाटर ग्लास झपटा...अपनी आंखों पर चढ़ाया।

वाटर ग्लास उस समय उसकी सबसे बड़ी आवश्यकता थी...।

वह आम तैराकों से कहीं ज्यादा देर तक, पानी के अन्दर सांस रोके रह सकती थी...इसके लिए उसकी प्राणायाम योग-साधना पूरी तरह सहायक थी—मगर वाटर ग्लास के बगैर वह दुश्मन की सही स्थिति को सिर्फ निकट आने पर ही देख-समझ सकती थी।

वाटर ग्लास आंखों पर चढ़ाते ही उसने चारों ओर फुर्ती के साथ देखा—।

उसे झील की तलहटी में बैठ चुकी रेशमा की किश्ती नजर आयी और उसी क्षण उसने तलहटी किश्ती के करीब से रेशमा को, तेजी से तैराकी करके झील के बायें सिरे की ओर लपकते हुए देखा।

लेकिन वह अकेली न थी। उसके पीछे गोताखोरी की पोशाक धारण किये दो राक्षस थे...।

"रेशमा!" थ्रिल क्वीन के होंठों से बलात् चीख कौंधी...।

लहरों के स्पन्दन ने उसकी ध्वनि तरंग बेहद तेजी के साथ रेशमा तक पहुंचायी।

उसने जिस मकसद से ध्वनि तरंग उभारी थी...वह कारगर साबित हुई।

ध्वनि तरंग की दिशा में रेशमा एकदम फुर्ती से पलटी।

उसने डाइव मारी।

यह रेशमा की बचाव कला थी या फिर तैराकी का जन्मजात गुण...इस बात को डार्लिंग सही प्रकार से समझ न सकी। लेकिन इससे उसका मकसद पूरा हो गया था।

वह रेशमा का, बचाव मकसद से ध्यान बंटाना चाहती थी, उसका ध्यान बंट गया था।

दरअसल, उस समय अपने से कोई तीस फुट के फासले पर डार्लिंग ने रेशमा को तथा रेशमा के पीछे दो दुश्मनों को देखा था।

अपने दुश्मनों के हमलावर इरादे से रेशमा पूरी तरह बेखबर थी। उन तक पलक झपकते पहुंच जाना डार्लिंग के लिए असम्भव था। वह जब तक तीर की सी रफ्तार पकड़ कर उन तक पहुंचने का प्रयास करती, दोनों दुश्मन रेशमा का काम तमाम कर सकते थे।

खुशकिस्मती! उसकी आवाज पर पलट कर और डाइव लेकर रेशमा ने न सिर्फ दिशा ही बदली थी बल्कि उन दोनों से उसकी दूरी भी बढ़ गयी थी।

और बस,

थ्रिल क्वीन को इतना अवसर मिल गया था कि तेजी से रेशमा तक पहुंच, दुश्मनों के सामने रेशमा की ढाल बन जाती।

ठीक वैसा ही हुआ—उस तक रेशमा नहीं बल्कि रेशमा तक टाइग्रेस फिश की रफ्तार से डार्लिंग पहुंची।

उसने रेशमा का हाथ थाम, उसे खींच कर अपने पीछे किया।

रेशमा के पीछे झपट चुके एक हमलावर के सामने ढाल बन गयी। दुश्मन के हाथ में भी खंजर था। डार्लिंग ने खंजर वाले के हाथ पर अपना खंजर चलाया।

सामने वाले ने कुशलता से वार बचाने का प्रयास किया। उसका सीना तो बच गया—लेकिन खंजर के वार से बांह को जख्मी होने से वह रोक न पाया।

डार्लिंग ने अपना जिस्म उछाला। उसने पैरों की खड़ी ठोकर सामने वाले के सीने पर जड़ी।

उसी एक्शन में पानी में स्लिप होती वह दूसरे खंजर वाले दुश्मन की ओर लपकी, जो जरा घूम कर रेशमा पर प्रहार करने के लिए लपक चुका था। थ्रिल क्वीन ने सामने वाले को जख्मी कर दिया था, घूमकर आने वाले के लिए तत्क्षण पलटने का उसने फैसला लिया था क्योंकि वह रेशमा तक पहुंच जाने वाला था।

सामने वाले के सीने पर पैरों की ठोकर मार स्लिप होने वाली थ्रिल क्वीन बेहद तेजी से दूसरे वाले के सीने से जा टकरायी...।

उसे कोई अवसर दिये और अपने हाथ को उठाए बगैर, उसने दुश्मन से टकराते ही नीचे ही नीचे उसकी जांघ में खंजर को पूरी ताकत से उतार दिया।

जांघ में पेवस्त होने वाला खंजर एक ही झटके में छः इंच से भी ज्यादा गहरा घाव लगा उसे बिलबिला जाने को मजबूर कर गया।

जख्मी होकर उसने कलाबाजी खायी।

दुश्मन की ओर से कोई वार हो पाता, इस बात का मौका दिये बगैर स्विम क्वीन ने जबर्दस्त तैराकी कला का प्रदर्शन किया। वह थोड़ा उछली। कलाबाजी खाकर सीधी हुई और दुश्मन के कंधे पर अगला वार किया...।

दुश्मन की हंसुली की हड्डी को काटता हुआ खंजर उसके सीने को फाड़ता हुआ बाहर गुजर आया।

उस दोहरे और घातक जख्म ने जैसे दुश्मन की सारी शक्ति छीन ली। उसके हाथ से न सिर्फ खंजर छूट गया, बल्कि जख्मों की पीड़ा भरी फड़फड़ाहट में उसके चेहरे का गैस मास्क और वाटर ग्लास भी उसका साथ छोड़ गया।

उसके वाटर ग्लास को झपट, रेशमा की ओर बढ़ाते हुए डार्लिंग ने निर्देश दिया—

"इसे आंखों पर चढ़ाओ रेशमा...।"

अगले सेकण्ड रेशमा की आंखों पर वाटर ग्लास था। वह अब आसानी से कुछ अधिक दूर तक देख सकती थी।

वाटर ग्लास आंखों पर चढ़ाते ही रेशमा ने देखा—एक की लाश झील की तलहटी में गोते खा रही है...। दूसरा जख्मी झील की स्वच्छ जल धारा में अपनी जख्मी बांह के लहू की लाली छोड़ता तैरता हुआ तेजी से भाग रहा है।

और तीसरे पर डार्लिंग ने पूरी तरह से काबू पा लिया है। डार्लिंग उसके कालर पर हाथ डाल उसे उलटाए हुए किनारे की ओर तैरना आरम्भ कर चुकी थी।

रेशमा के दिल की धड़कनें तेज थीं...कलेजा मुंह को आ रहा था...।

फेफड़ों में रोकी हुई सांस फटकर बाहर आ जाना चाहती

थी...। उस समय, उसके सामने, डार्लिंग के निर्देश के बगैर इस बात पर अमल करने के अलावा कोई चारा न था कि वह डार्लिंग के पीछे तैराकी करते हुए जल्द से जल्द किनारा थामे।

जल्द ही,

लम्बी-लम्बी घासों और झाड़-झंकाड़ों से युक्त झील के निर्जन किनारे को, डार्लिंग और रेशमा ने साथ-साथ थामा।

कांधे और जांघ के जख्मों से चूर दुश्मन, बेहोश हो चुका था...मगर उसकी चलती हुई सांसें डार्लिंग के सामने इस बात की गवाही दे रही थीं कि वह अभी मौत के मुंह में नहीं पहुंचा है।

"इसके पैरों को थामो और समतल स्थान पर पहुंचाने में मदद करो रेशमा...।" डार्लिंग ने अचेत दुश्मन को बाजुओं से थामते हुए रेशमा को निर्देश दिया।

झाड़-झंकाड़ों के बीच से दुश्मन के अचेत शरीर को खींचना काफी दुष्कर कार्य था।

रेशमा स्तब्ध थी। मूक थी। वह डार्लिंग की ऐसी लेडी के रूप में कल्पना कर रही थी जो उसकी सोच से परे थी।

उसने न सिर्फ उसकी जान बचायी थी बल्कि दो दुश्मनों को खत्म कर, तीसरे को जख्मी अवस्था में भागने पर मजबूर और चौथे को अपने काबू में कर लिया था।

वह उसके आदेश या निर्देश को यंत्रवत् मान रही थी। कुछ बोलने या कहने के लिए जैसे उसके पास शब्द न रह गये थे।

डार्लिंग का सहयोग करते हुए उसने अचेत जख्मी को झाड़-झंकाड़ से दूर कर, समतल स्थान पर घने दरख्तों के साये में पहुंचाया। वह जगह पूरी तरह से निर्जन थी। अंधेरे की चादर फैलकर गाढ़ी होती जा रही थी।

थ्रिल क्वीन ने जख्मी का शरीर उलटा।

वह उसके पेट पर दबाव डाल, पानी निकालने तथा उसे होश में लाने का प्रयास करने लगी।

डार्लिंग का प्रयास जल्द ही उस समय कारगर साबित होता नजर आया जबकि जख्मी के होठों से हल्की कराह फूटी।

डार्लिंग ने उसे सीधा किया। करीब के दरख्त के तने तक उसे खींचकर ले गयी। उसकी पीठ को तने से टिकाकर बैठा दिया।

जख्मी ने आंखें खोल दीं।

दर्द की असीम परछाइयां उसके चेहरे पर तैर रही थीं।

उसने सूनी-सूनी निगाहों से सामने देखा।

डार्लिंग अपने उग्र तेवर में थी। खंजर उसके सामने करके गुर्राहट भरे स्वर में कहा—

"जल्दी बको तुम कौन हो...। याद रक्खो, तुम इस समय इस कदर बेवस हो कि न भाग सकते हो न ही बचाव में कुछ कर सकते हो। तुम्हारी मौत और जिन्दगी सिर्फ मेरे हाथ में है...।"

जख्मी के होठों पर विषैली—साथ ही उपहासात्मक मुस्कान थिरकी। कुछ ऐसी मुस्कान जैसे मौत से उसे कोई खौफ नहीं, जिन्दगी से प्यार नहीं।

उसकी विषैली मुस्कान से थ्रिल क्वीन के रोम-रोम में सनसनी दौड़ गयी। गजबनाक दुःसाहस का परिचय वह दे रहा था। जख्मों से चूर था मगर मुस्करा रहा था।

"मैं तुम्हारी बोटियां-बोटियां काटकर फेंक दूंगी...अगर तुमने होठ सिल रखे।" डार्लिंग गुर्रायी।

"हिजबुल मुरसलीन के एरिया कमाण्डर जावेद अली की बोटियां-बोटियां काटकर फेंक देना तुम्हारे बश की बात नहीं मिस डार्लिंग भटनागर...।"

उसने बेहद गुरूर भरे स्वर में अपना मुंह खोला।

थ्रिल क्वीन एक बार फिर सनसनी में भर उठी। उसने चिहुंककर कहा—

"तुम मेरा नाम जानते हो...?"

"परिचय भी...।" हिजबुल मुरसलीन के एरिया कमाण्डर जावेद अली ने पूरी दिलेरी के साथ कहा—"तुम इण्डियन 'रॉ' की टॉप वन स्पाई हो...। तुम्हारे यहां कदम पड़ते ही पहचान लिया गया था। हेडक्वार्टर से फरमान पाने के बाद हमने तुम्हारी मौत का इन्तजाम किया था...।"

"हेडक्वार्टर...!" डार्लिंग ने तेजी से दोहराया—"कहां है तुम्हारा हेडक्वार्टर...?"

"यह तुम नहीं जान पाओगी...।" वह निर्भीकता भरे स्वर में बोला।

"मैं तुम्हारी रूह से भी इस बात को पूछकर रहूंगी...।" डार्लिंग दात पर दांत जमाकर गुर्रायी।

हाथ में थमी कटार उसके सीने के करीब कर दी।

वह पूरी तरह से मौत के भय से दूर रहा। उसने ठहाका लगाया...कमजोर-सा उपहास उड़ाने वाला ठहाका। हिम्मत संजोए मगर दर्द में डूबी आवाज में बोला—

"तुम मुझसे कुछ भी न पूछ सकोगी...। तुम सिर्फ उतना ही जान सकोगी जितना मैं बताना चाहूंगा...सुनो डार्लिंग...बहुत जल्द न तो तुम्हारे देश की पार्लियामेण्ट बची रहने वाली है ना ताजमहल और लाल किला...। आगरा से दिल्ली तक हीरोशिमा और नागासाकी जैसी तबाही फैलने वाली है कि हर इमारत खण्डहर और हर बस्ती श्मशान बन जाने वाली है। ऐसी तबाही, जिसमें बरसो-बरस तक हिन्दोस्तान की धरती पर पैदा होने वाली नस्लें, अपंगता का शिकार होती रहेंगी।"

"व्हॉट...!" डार्लिंग चिहुंककर गुर्रायी—"तब तो मैं पूछकर ही रहूंगी कि कौन करेगा यह सब...! कैसे होगा यह सब...? किसने ऐसी संहारक और दुःसाहस भरी योजना बना रखी है...?"

"कुछ भी न जान सकोगी...कुछ भी नहीं...।" वह खिल्ली उड़ाने वाले भाव में हंसा।

"कमीने...कुत्ते...! मेरा नाम डार्लिंग है...और मैं...।" थ्रिल क्वीन ने रणचण्डी रूप अपनाते हुए उसके बालों पर हाथ डाला— बालों को खींचते हुए गुर्रायी—"मैं मुर्दों का भी मुंह खुलवाना जानती हूं...।"

बालों पर हुए कसाव के कारण वह कराहा।

फिर उसने अपने सिर को एक तेज झटका दिया।

इस झटके में वह आगे को झुका।

और डार्लिंग जबर्दस्त रूप में रोमांच की सनसनी में भर उठी...। उसने जबर्दस्त धोखा ही नहीं, उसे मात दे दी थी...।

थ्रिल क्वीन डार्लिंग को मात।

उसने जो कुछ कर डाला था—डार्लिंग के शानो-गुमान में भी न था।

उसने सिर को झटका देते हुए अपना गला उस कटार की

नोंक पर रख दिया था जो डार्लिंग के हाथ में थमी उसके गले की सीध में तनी हुई थी।

झटके से गला कटार की धार पर रखे जाते ही पूरी की पूरी कटार उसके गले के पार उतर गयी थी।

जावेद अली का जिस्म फड़फड़ाया...! रक्त धार उबली...।

उसने अपना नरखटा काट डाला था।

डार्लिंग के हाथों से मौत छीनकर उसने अपने हाथ में ले ली थी।

उसके दुःसाहसिक खुदकशी की रोमांचक झुरझुरी में भरी थ्रिल क्वीन, आंखें फाड़े उसे देखती हुई पीछे हट गयी। उसकी बुदबुदाहट उभरी—

"आत्मघाती...।"

डार्लिंग के देखते ही देखते, जावेद अली का फड़फड़ाता जिस्म ज़मीन पर लुढ़ककर शान्त पड़ता चला जा रहा था।

थ्रिल क्वीन के मस्तिष्क में जावेद अली के छोड़े हुए चैलेंज भरे शब्द धमाके से कर रहे थे—'आगरा से दिल्ली तक हीरोशिमा और नागासाकी जैसी तबाही फैलने वाली है कि हर इमारत खण्डहर और हर बस्ती श्मशान बन जाने वाली है। ऐसी तबाही, जिसमें बरसो बरस तक हिन्दोस्तान की धरती पर पैदा होने वाली नस्लें, अपंगता की शिकार होती रहेंगी...।'

केन्द्रीय खुफिया विभाग 'रॉ' के चीफ ऑफ स्टाफ, सुधांशु थपलियाल उस समय अपनी कुर्सी की पुश्त से टिके बैटे थे।

थपलियाल पूरी तरह से गम्भीर थे। उन्नके होठों में सिगार दबा हुआ था। सुलगते हुए सिगार का बलखाता हुआ धुआं कमरे में फैल रहा था।

चीफ के सामने मौजूद थी 'रॉ' की सबसे सरगर्म, जांबाज स्पाई क्वीन डार्लिंग भटनागर। डार्लिंग चिंतित भाव में चीफ के सामने काश्मीर की घाटी में अपने साथ घटी घटना की रिपोर्ट दे रही थी।

चीफ की गम्भीरता इस बात को साबित कर रही थी जैसे वे डार्लिंग की रिपोर्ट की गुत्थी सुलझा रहे हों।

अपनी रिपोर्ट पूरी कर डार्लिंग ने कहा—

"वातावरण में एकदम छा उठी खामोशी जिस तरह तूफान आने की सूचक होती है...चीफ अंकल, उसी तरह वादिये काश्मीर में इन दिनों छा चुकी आतंकवादी गतिविधियों की खामोशी, देश पर किसी बड़ी और जबर्दस्त घटना की रचना की शक्ल अख़्तियार किये हुए दिखती है...।"

थपलियाल का सिर धीरे से हिला।

"डल झील का निर्मल जल आतंकवादियों के लहू से सुर्ख हुआ है। मुझ पर आत्मघाती हमला हुआ है। इस हमले के साथ इस बात का खुला चैलेंज दिया गया है कि आतंकवादी संगठन हिजबुल मुरसलीन की योजना आगरा से दिल्ली तक हीरोशिमा और नागासाकी जैसी तबाही फैलाने की है...। वे हर इमारत को खण्डहर और हर बस्ती को श्मशान बना देने वाले हैं...। वे ऐसा बड़ा दुःसाहसिक कदम उठाने वाले हैं जिसमें बरसों तक हिन्दोस्तान की धरती पर पैदा होने वाली नस्लें, अपंगता का शिकार होती रहेंगी...।"

"हूं...।" चीफ ने कहा।

उनका पूरा वजूद रिवॉल्विंग चेयर पर घूमा। घूमकर अपनी दायीं ओर मौजूद कम्प्यूटर के बटनों पर अंगुलियां चलायीं।

उन्होंने कम्प्यूटर प्रणाली पर आधारित, देश के खुफिया मामलों के सबसे सक्षम और गोपनीय विभाग की सुरक्षा प्रणाली से सम्बद्ध फाइलों की डिस्क खोली।

कम्प्यूटर स्क्रीन पर तेजी से कुछ नाम आने शुरू हुए।

उन्होंने अपने मतलब से ताल्लुक रखने वाले एक नाम के सामने आते ही बटन क्लिक किया।

कुछ क्षण प्रतीक्षा की।

फाइल कैबिनेट का लॉक खुल जाने का इत्मीनान कर चीफ ने होंटों पर दबे धीमा-धीमा धुआं छोड़ते, सिगार का एक जोरदार कश खींचा। सिगार के अंतिम सिरे की राख अंगार बनी। ढेर सा धुआं हवा में उगलते हुए वे कुर्सी सहित पूर्व मुद्रा में घूमे। सामने

मेज पर रखा रिमोट उठाया। रिमोट का बटन दबाकर बोले—

"जब तक देश की बेटी, हमारे विभाग की शान, डार्लिंग बेटी जिन्दा है, हमारे प्यारे मुल्क पर कोई भी तबाही और बरबादी देश के दुश्मनों द्वारा नहीं लादी जा सकती।

जो डार्लिंग, भारत की ओर का रुख करने वाले एटमबम का मुंह, दुश्मन देश के एटमी मुख्यालय में घुसकर उनके ही देश की ओर मोड़ सकती है—वह डार्लिंग बेटी, दुश्मन के अन्य कुत्सित संहारक प्रयास का भी मुंह तोड़ जवाब दे सकती है, मुझे इस बात का भरपूर यकीन है।"

(दुश्मन देश के एटमी मुख्यालय में घुसकर एटमबम का मुंह, उनके ही देश की ओर मोड़ने की घटना की जानकारी के लिए पढ़ें, डार्लिंग के जीवन का सबसे साहसिक और सनसनीखेज कारनामा-उपन्यास 'एटमबम'।)

चीफ थपलियाल का, अपने विभाग की टॉप वन स्पाई, डार्लिंग के प्रति कहे विश्वास भरे शब्द पूरे हुए ही थे कि उसी समय रिमोट बटन दबने के फलस्वरूप, रिकार्ड फाइल कैबिनेट से लेकर चल चुकी आटोमेटिक ट्रॉली, चीफ की सीट के साइड में आकर ठहरी।

चीफ ने ट्रॉली पर मौजूद फाइल उठायी। फाइल उठाकर मेज पर रखी। उस पर सरसरी निगाह डाली।

फाइल के मामले में सन्तुष्ट होकर उसका कवर पृष्ठ पलटा। फाइल को गहरी निगाहों से देखने लगे। कुछ पलों तक फाइल पर दृष्टि जमाए रखकर बोले—

"यस माय डॉल...। यू आर राइट। हिजबुल-मुरसलीन के, सातवें नम्बर के मोस्ट वाण्टेड आतंकवादी के रूप में एरिया कमाण्डर जावेद अली का नाम इस फाइल में मौजूद है।"

डार्लिंग का दिल उत्साह के साथ धड़का।

"आमतौर पर आतंकवादी मुखियाओं के कई-कई छद्म नाम होते हैं, पर जावेद अली का सिर्फ एक नाम जावेद अली ही हमारे देश की खुफिया एजेन्सियों के सामने आता रहा है। यह है उसकी फोटो...।" थपलियाल ने फाइल को डार्लिंग की ओर घुमा दी। बोले—"देखो और पहचानो—क्या इसी शख्स ने देश के

मामले में एक बड़ी धमकी तुम्हारे सामने लाते हुए अपनी गरदन तुम्हारी कटार की नोक पर रख दी थी...?"

डार्लिंग की निगाह फाइल पेपर के उस स्थान पर जमी, जहां चिपकी हुए फोटो पर चीफ थपलियाल ने उसका ध्यान आकृष्ट कराया था।

डार्लिंग ने देखा। एक ही नजर में फोटो को पहचानकर कहा—

"यस...यही था वह शख्स चीफ अंकल...।"

चीफ थपलियाल ने फाइल अपनी ओर घुमा ली। जावेद अली से सम्बन्धित खुफिया जानकारियों पर, जल्दी-जल्दी नजर डालते रहे। फिर बोले—

"इसके साथ, एक तीस-बत्तीस वर्षीय मिलिटेण्ट जमशेद अली उर्फ बारूद अली की मौजूदगी भी जावेद अली के साथ होने की रिपोर्ट है। फाइल रिकार्ड की जानकारियों के मुताबिक हिजबुल मुरसलीन के इस कमाण्डर जावेद अली के साथ, उसके दाएं हाथ के रूप में जमशेद अली उर्फ बारूद अली को हमेशा देखा जाता रहा है।

तुम्हारी रिपोर्ट के मुताबिक डल लेक में संघर्ष करते हुए तुमने जिन दो हमलावरों को मौत की नींद सुलाया उनकी उम्र बीस से बाईस के बीच थी। उनके हुलिया और कद-काठी किसी भी तरह जमशेद अली उर्फ बारूद अली की नहीं हो सकती। वे हिजबुल मुरसलीन में भर्ती हुए नए मिलिटेण्ट रहे होंगे। उनका कोई रिकार्ड फाइल में नहीं। हमारे रिकार्ड में मोस्ट वाण्टेड नम्बर वन टू टेन तक की सूची है। वन टू टेन सूची के सभी सदस्यों की उम्र तीस से कम नहीं।" चीफ कहते रहे—"यहां मैं यह भी बता देना आवश्यक समझता हूं कि इस संगठन के वन, टू, थ्री, मोस्ट वाण्टेड सरगना, पिछले दिनों, कारगिल ऑपरेशन में हमारे सेना के जवानों द्वारा मारे जा चुके हैं। फर्स्ट रॉ के टॉप थ्री ओहदेदारों के मारे जाने के बाद समझा यह जा रहा था कि इस संगठन की कमर पूरी तरह टूट गयी है और संगठन बिखर गया है। इसके बचे हुए मिलिटेण्ट दूसरे आतंकवादी संगठनों में जा शामिल हुए हैं...। लेकिन डल लेक की घटना के बाद यह बात सामने आ चुकी

है यह संगठन बिखरा या खत्म नहीं हुआ है। इसकी कमान मिलिटेण्टों ने मजबूती से संभाल रखी है। और अपने शीर्ष तीन मुखियाओं की मौत का बदला लेने के लिए ये भारत के विरुद्ध कोई जबर्दस्त षड्यन्त्रकारी योजना को अंजाम देकर अपने संगठन के वर्चस्व को दुनिया के शीर्ष आतंकवादी संगठनों की सूची में दर्ज कराने के लिए कटिबद्ध हैं...।"

"मैं इस संगठन की जड़ को खोदकर उसमें मट्ठा भर दूंगी चीफ अंकल! इससे पहले कि उनका मंसूबा कुछ भी आगे बढ़ सके मैं इनका वजूद नेस्तनाबूद कर दूंगी...।" डार्लिंग ने सख्त तेवर के साथ मुट्ठी भींचकर कहा।

"मुझे यकीन है—ऐसा ही होगा...।" चीफ थपलियाल सहज स्वर में बोले—"अब हम वहां आते हैं, जहां से मैंने जावेद अली के दाहिने हाथ जमशेद अली उर्फ बारूद अली की बात छोड़ी थी...।"

"मैं समझ गयी...।" डार्लिंग ने कहा—"अच्छी तैराकी और भगोड़ेपन का परिचय देते हुए, बांह पर जख्म खाने के बाद जो व्यक्ति जान बचाकर निकल जाने में सफल रहा, वह व्यक्ति बारूद अली ही था।"

"मगर उसकी कोई फोटो हमें उपलब्ध नहीं।" चीफ ने बताया।

"मैंने भागते हुए उस व्यक्ति का चेहरा और हुलिया देख लिया था...।"

"गुड...।" चीफ ने कहा—"वह लम्बे कद, चौड़ी हड्डियों, इकहरे बदन का, ज्यादातर समय चरस के नशे में डूबा रहने वाला इन्सान है। उसकी खूबी अपने संगठन में इस बात की है कि वह बारूद एक्सपर्ट है इसीलिए वह 'बारूद अली' के नाम से जाना जाने लगा है। वह मौके पर ही तरह-तरह के विस्फोट और घातक क्षमता वाले बारूद को कुछ मिनटों में बनाकर मिलिटेण्टों को मुहैया कराने की खूबी रखता है।"

"यानि बारूद अली की खूबी मिलिटेण्टों के लिए अलग तरह की है...।" डार्लिंग ने कहा।

"हां, उसका पिछला रिकार्ड अन्य मिलिटेण्टों से अलग तरह

का है।" चीफ ने बताया—"वह एम० एस-सी० (केमिस्ट्री) गोल्ड मेडलिस्ट स्कालर रहा है। वह पी० डी० आर० ए० अर्थात् पाकिस्तान डिफेन्स रिसर्च आर्टीलरी में सम्मानजनक नौकरी में लगा। वहां कुछ समय अपनी अच्छी सेवा उपलब्धि दी। पर जल्द ही आर्टीलरी वालों की जानकारी में यह बात उजागर हुई कि वह ड्रग एडिक्ट है। नशे की हालत में, एक्सप्लोटिव रिसर्च कार्य में लगे रहने के कारण उसे नेगलीजेन्स ऑफ ड्यूटी के कारण वार्निंग मिली। उसकी आदत और स्वभाव में बदलाव न आने के कारण उसे सर्विस से निकाल दिया गया।

सेवा से बरखास्तगी के बाद कई महीनों तक गायब रहा फिर यकायक वह आतंकी संगठनों के बीच पाया जाने लगा...।"

बारूद अली के बारे में चीफ की ओर से दी जाने वाली जानकारी को पूरी दिलचस्पी के साथ सुनते हुए डार्लिंग ने कुतूहल भाव से पूछा—

"यानि हिजबुल मुरसलीन में शामिल हो गया...?"

"सीधे हिजबुल मुरसलीन में नहीं, बल्कि पाकिस्तान के प्रथम और सबसे शक्तिशाली आतंकी संगठन हिजबुल मुसलमीन में वह शामिल हुआ। बाद में हिजबुल मुसलमीन के तितर-बितर होने और उसकी शक्ति कमजोर पाकर उससे अलग होने वाले हिजबुल मुरसलीन के साथ आया और तब से उन्हीं के साथ है।

हिजबुल मुरसलीन के साथ में जमेशद अली उर्फ बारूद अली के आने से संगठन को काफी मजबूती मिली। यहां आकर वह बाकायदा बारूद अली कहलाने लगा—संगठन में उसका मुख्य कार्य मिलिटेण्टों के लिए विस्फोटक बारूद मुहैया कराना और जरूरत के समय तुरन्त विस्फोटक तैयार कर लेना है। बारूदों से खेलने के अपने इस शौक और पेशे के कारण एक मौके पर उसे अपने बाएं हाथ की तीन अंगुलियां गंवानी पड़ी हैं...।"

"दूसरे शब्दों में उसका स्वभाव पूरी तरह से विध्वंसक है...।" डार्लिंग बुदबुदायी।

"हां, उसे ऐसा ही पाया गया है...।" चीफ बोले।

"हिजबुल मुरसलीन का नेचर ऑफ वर्क क्या है?" डार्लिंग ने पूछा।

"हां, उसके बारे में पूरी रिपोर्ट इस फाइल में मौजूद है।" चीफ ने बताया—"पाकिस्तान में सिर उठाने वाले अन्य आतंकी संगठनों और हिजबुल मुरसलीन में बुनियादी फर्क यह है कि उसे अल-कायदा का पॉकेट आर्गनाइजेशन अर्थात् जेबी संगठन माना जाता है। उसे आर्थिक, ट्रेनिंग और हथियारों की सहायता अलकायदा से मिलने के सबूत सामने आते रहे हैं। इस तरह कहा जा सकता है कि पाक अधिकृत काश्मीर को उसने अपनी शरण स्थली जरूर बना रखी है मगर उसके तार अलकायदा से जुड़े हुए हैं।"

स्पाई क्वीन खासी गम्भीरता के साथ सोचपूर्ण स्वर में बोली—"इसका मतलब—आत्मघात करने से पूर्व जावेद अली के मुंह से निकली भारत के विरुद्ध धमकी को सामान्य रूप से नहीं लिया जा सकता...।"

"मेरी भी यही सोच है...।" चीफ ने, होंटों के बीच सुलगते सिगार को सामने मौजूद ऐशट्रे पर टिकाया। अपने सामने रखी फाइल डार्लिंग की ओर बढ़ा दी। बोले—"मेरा विचार है कि अब इस फाइल का तुम अध्ययन कर लो डार्लिंग बेटी...।"

फाइल सामने आते ही थ्रिल क्वीन शीघ्रता से उस पर निगाहें दौड़ाने लगी।

उसके कम्प्यूटरीकृत मस्तिष्क के एक-एक कोने में फाइल में मौजूद रिपोर्ट, फीड होती चली जा रही थी।

कुछ देर पूरी फाइल का अध्ययन करने के उपरांत डार्लिंग ने निर्णायक स्वर में कहा—

"मैं इस्लामाबाद के लिए शीघ्र से शीघ्र फ्लाइट पकड़ना चाहती हूं चीफ अंकल...।"

"मैं भी तुम्हें यही आदेश देने वाला था डार्लिंग बेटी...।" चीफ ने कहा।

"यस चीफ अंकल...।" डार्लिंग बोली—"यह एक स्वाभाविक सच्चाई है कि जख्मी होने वाला सर्प अपने बिल की ओर, सिंह गुफा की ओर और इन्सान अपने घर की ओर भागता है।" वह कहती रही—"चूंकि जावेद्र अली के आत्मघात से पूर्व मुंह से निकली धमकी की गम्भीरता को किसी भी रूप में हल्केपन से नहीं लिया जा सकता। बारूद अली की कछार में घुसकर उसे दबोचना

और जावेद अली के कथन की सच्चाई पर से परदा उठाना मैं अपना पहला फर्ज समझती हूं।"

"यस...।" चीफ बोले—"एशियाई देशों की इस समय की, हलचल के बीच मैं स्वयं भी इस बात को आवश्यक समझता हूं।" चीफ ने स्वीकृति दी।

"और, इन बातों के साथ मैं रेशमा और उसके मां-बाप के सुरक्षा विषय पर भी आंख नहीं मूंदना चाहती। यद्यपि जम्मू-कश्मीर की स्थानीय पुलिस की ओर से मुझे रेशमा परिवार की सुरक्षा का आश्वासन मिला है। लेकिन यहां आकर, यह जानने के बाद कि कितने बड़े खूंखार आतंकवादी संगठन के निशाने पर रेशमा और उसका परिवार आ चुका है, मैं चाहती हूं कि उस परिवार की सुरक्षा का मामला आप अपने स्तर से देखें...।"

"मैं तुम्हारी बात अच्छी तरह से समझता हूं बेटी...।" चीफ ने कहा—"मैंने तुम्हारी ओर से उस मामले की रिपोर्ट जम्मू कश्मीर से पाते ही, गृह सचिव से इस बाबत बात कर ली थी। उधर से मुझे आश्वस्त कराया गया है कि केन्द्र स्तर पर भी उस परिवार की सुरक्षा व्यवस्था की कार्रवाई अमल में लायी जा रही है...।"

"थैंक्स चीफ अंकल...।" डार्लिंग के चेहरे से चिंता की लकीरें मिटीं।

और फिर,

चीफ थपलियाल पूरी गम्भीरता के साथ डार्लिंग को इस्लामाबाद मिशन की रूपरेखा समझाने लगे।

स्पाई क्वीन डार्लिंग बदले हुए मेकअप के साथ होटल 'गाजी' में पहुंची।

उस समय रात के दस बज रहे थे। इस्लामाबाद की सड़कों पर जिन्दगी की हलचल अपने शबाब पर थी।

पाकिस्तान की राजधानी के वैभवशाली इलाके में आबाद होटल गाजी, फाइव स्टार होटल था। राजधानी का सबसे महंगा

होटल। वहां की सुख-सुविधाएं असीम थीं। विदेशी पर्यटकों के लिए वह खास आकर्षण का केन्द्र था। जिन्दगी की हर ऐश वहां मुहैया थी। भारत से दुबई और दुबई से पाकिस्तान एयर लाइन्स की फ्लाइट पकड़कर वहां पहुंचने वाली डार्लिंग के पासपोर्ट में नाम दर्ज था नूर बानो!

डार्लिंग उर्फ नूर बानो अपनी शख्सियत में ऐसी दिलकशी समेटकर होटल पहुंची थी, जिसका दुबई में फैंसी गारमेण्ट्स का करोड़ों का व्यापार फैला हुआ था। जिसके वैनेटी बैग में पाकिस्तानी नोट नहीं, रखे हुए अमेरिकी डालर खुले हाथों से खर्च करने की ताकत रखते थे।

जिसके हाथों से डॉलर की खुशबू उड़ रही हो उसके लिए होटल गाजी में अपने ठहरने के लिए शानदार सूट की व्यवस्था कर पाना और होटल के बावर्दी, तहजीब याफ्ता कर्मचारियों को अपनी जी-हुजूरी में लगा लेना साधारण बात थी।

होटल के सेकेण्ड फ्लोर के सूट नम्बर ए-103 में डार्लिंग ने कदम रखा। होटल के सूट को उसने उच्च स्तरीय और अपनी सुख-सुविधा के मिजाज के अनुरूप पाया।

उसने लम्बे सफर की थकान से फ्रैश होने के लिये शॉवर कर डिनर के साथ एक लार्ज पैग व्हिस्की ली।

अपने अल्ट्रा माडर्न लेडी होने का नमूना, होटल के सर्विस ब्वॉय के सामने पेश किया। और फिर अपने बेशकीमती ख्वाबी लिबास में उसने नींद की आगोश में डूबने का प्रोग्राम बनाया।

सर्विस ब्वॉय को खाने की ट्राली ले जाने के बाद ब्यूटी क्वीन ने दरवाजा बन्द किया। इत्मीनान के साथ बैड की ओर बढ़ी।

उसने नींद के आगोश में पहुंचने से पहले, पूर्व में तयशुदा प्रोग्राम के मुताबिक, चीफ को अपने यहां पहुंचने की इत्तला देना आवश्यक समझा।

उसने मोबाइल निकाला। चीफ थपलियाल का पर्सनल मोबाइल नम्बर मिलाया।

सम्बन्ध स्थापित होते ही कहा—

"यस अंकल...! मैं नूर बोल रही हूं।" उसने कोड नाम द्वारा परिचय दिया।

"यस बेटे...। बोलो—तुम्हारे नूर की रोशनी कहां तक फैली...?" चीफ का स्नेहिल स्वर उभरा।

"मैं होटल गाजी के सूट नम्बर ए-103 में इस समय अपने बैड पर हूं। यहां के माहौल में रच-बस गयी हूं...।"

"गुड।"

"उधर के बिजनेस की क्या रिपोर्ट है?" डार्लिंग ने कहा—"जो जिम्मेदारी मैं आपके सहारे छोड़कर आयी थी, उम्मीद है कि सहज रूप से चल रही होगी...।"

"आयम सॉरी बेटे...।" चीफ का स्वर एकदम विचलित हो उठा—"मैं तुम्हारी काल की प्रतीक्षा कर रहा था...।"

"व्हॉट सॉरी...।" डार्लिंग के लहजे में सहसा बेताबी दौड़ी।

"मुझे बताते हुए दुःख हो रहा है कि सब कुछ सहज नहीं रहा।"

"क्या सहज नहीं रहा...?"

"अभी-अभी, तुम्हारे कान्टेक्ट से कोई पन्द्रह मिनट पहले मुझे एक बुरी खबर मिली है...।" चीफ ने बहुत तेजी के साथ बताया—"दुश्मनों के छापामार हमले से वादिए डल झील थर्रा उठी है।" सैलानियों की टोली में डल लेक पर पहुंचे एक दर्जन से अधिक मिलिटेण्टों ने रेशमा तथा आसपास के शिकारों पर हैण्डग्रेनेडों, ए० के० छप्पन से ताबड़-तोड़ हमला करके जबर्दस्त दहशतगर्दी फैला दी। आठ औरतों, मर्द और युवाओं को ऑन द स्पॉट मौत के घाट उतारते हुए—'खून का बदला खून' का नारा लगाते हुए 'हिजबुल मुरसलीन, जिन्दाबाद' का नारा लगाया और अपनी बर्बरता की एक और रक्त रंजित गाथा लिख दी।

देश या परिवार की सुरक्षा में लगे चार स्थानीय पुलिस कर्मियों और छः केन्द्र के आदेश पर वहां तैनात अर्द्धसैनिक बलों ने हमलावरों के हमले का मुंह तोड़ जवाब दिया...पर हमलावरों द्वारा रेशमा को अपहृत कर ले जाने से वे रोक न सके...।"

"रेशमा...।" डार्लिंग का नूरानी चेहरा रोष और आक्रोश के साथ गहरी आशंका के साथ उस बुरी खबर पर स्याह पड़ गया। वह भावुक स्वर में बड़बड़ायी—"मिलिटेण्ट रेशमा को अपहृत कर ले गये? उसकी सुरक्षा न की जा सकी?" रुककर

गहरी-गहरी सांसों के साथ पूछा डार्लिंग ने, "और रेशमा के मां-बाप...?"

"उनके बारे में अभी कोई स्पष्ट तस्वीर नहीं...समझा यही जा रहा है कि आतंकवादियों के खूनी हमले में वे मारे गये।"

"रेशमा अपहृत हो गयी...उसके मां-बाप मारे गये।" डार्लिंग का स्वर आक्रोश भाव से कांप उठा था—"पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों की सुरक्षा में होने के बाद भी ऐसा हुआ...? चीफ अंकल मुझे इस मामले की आशंका पहले से ही थी...मैंने इसीलिए उस परिवार के लिए स्पेशल सुरक्षा का आग्रह आपसे किया था। यह क्या हो गया....?"

"उनकी सुरक्षा में कोई कमी न छोड़ी गयी थी। स्थानीय पुलिस के अलावा स्पेशल टास्क फोर्स लगायी गयी थी। मगर मिलिटेण्टों का हमला इतना आकस्मिक और उनकी योजनाबद्ध रणनीति के तहत हुआ कि हमारे जवानों की सुरक्षा काम न आ सकी...। हमारे जवानों ने पूरी बहादुरी से हमलावरों का मुकाबला किया—तीन जवान हमलावरों की गोलियों से जख्मी हुए—उनमें एक की हालत गम्भीर है।"

"चीफ अंकल...।" डार्लिंग का अधीरता भरा स्वर उभरा।

"अधीर होने की आवश्यकता नहीं बेटी डार्लिंग।" पूरी घाटी में हाई अलर्ट जारी कर दिया गया है। उधर मिलिटेण्टों को घेर लिया गया है। उनकी ओर से गोलाबारी अभी जारी है। हमारे सशस्त्र जवान दुश्मन की गोलियों का मुंहतोड़ जवाब दे रहे हैं—वे आत्मसमर्पण करेंगे या मार दिये जायेंगे। घिर जाने वाले ऐसे मिलिटेण्टों की संख्या छः के करीब बतायी जा रही है। रेड अलर्ट घोषित कर दिये जाने के बाद, रेशमा को अपहृत कर ले जाने वाले भी बच न सकेंगे। बी० एस० एफ० के जवान घेराबन्दी करके या तो उन्हें मार गिरायेंगे या वे आत्मसमर्पण के लिए मजबूर कर दिये जायेंगे। इस मामले में चिन्तित होने की...आवश्यकता नहीं बेटी...। रेशमा को किसी भी कीमत पर बचाने का आदेश गृहमंत्रालय से जारी कर दिया गया है।"

"रेशमा को अपहृत कर ले जाने वाले किधर और किन रास्तों पर गये हैं चीफ अंकल...?"

"अभी पूरी रिपोर्ट नहीं...सम्पर्क बना हुआ है। अभी गोलियां चल रही हैं...। घेराबन्दी कड़ी से कड़ी की जा रही है...। रिपोर्ट आ रही है...। आशा यही है कि इस दुःसाहसिक कदम को उठाने वाले सब के सब मारे जायेंगे...रेशमा को छुड़ा लिया जाएगा...। अगली रिपोर्ट की प्रतीक्षा करो बेटी...।"

"काश ऐसा ही हो अंकल...।" डार्लिंग के दिल की धड़कनें तेज थीं।

"अगली रिपोर्ट तक तुम्हें धीरज रखकर अपने उस मिशन पर ध्यान देना होगा डार्लिंग बेटी, जिस पर तुम्हें रवाना किया गया है।"

"मैं रेशमा की सलामती की दुआ करती हूं चीफ अंकल...।" डार्लिंग ने भर्राए हुए स्वर में कहा—"और अच्छी खबर का इन्तजार कर रही हूं...।"

"मिलिटेण्टों के विरुद्ध ऑपरेशन कार्यवाही पूरी होते ही मैं जल्द पूरी रिपोर्ट दूंगा बेटी...।"

"मुझे इन्तजार रहेगा अंकल...।" डार्लिंग ने कहा।

उसने सम्बन्ध विच्छेद किया।

सम्बन्ध विच्छेद करने के बाद उसकी मुट्ठी में दबा मोबाइल भिंच उठा। उसका चेहरा धुआं-धुआं हो रहा था।

मस्तिष्क में तूफान था, दिल में रेशमा पर आयी मुसीबत के लिए दर्द।

बेचैनी भाव में वह बैड से उतर पड़ी। कक्ष में इस अन्दाज में चहलकदमी करने लगी जैसे किसी सिंह के शिकार पर दूर जंगल में निकल जाने के पीछे, उसका शावक, शिकारियों द्वारा उठाकर गायब कर लिया जाए।

वह शावक के विछोह में व्याकुल सिंहनी की तरह ही बेचैन थी।

ब्यूटी क्वीन इस बात को क्षण भर के लिए भी नहीं भूल पा रही है कि रेशमा और उसके परिवार पर विपदा उसी के कारण आयी है।

डार्लिंग के दिल का दर्द इस बात के लिए भी वलवले खा रहा था कि बेचारी रेशमा, पहले भी अपने एक जवान भाई की

दर्दनाक मौत का गम खाए हुए है।

सोलह वर्षीय उम्र...जवान भाई के गम का बोझ सीने पर लिए हुए...नर भक्षियों के चंगुल में फंसी हुई...शायद मां-बाप की खून की छींटों से सराबोर लाशों को देखे हुए...। उस पर क्या गुजर रही होगी?

उसके वश की बात होती तो गरूड़राज बन उन रावणों के सिरों पर मंडरा उठती। उन रावणों पर, जिनके एक हाथ में हैण्ड ग्रेनेड, ए० के० 47 और ए० के० 56 थी तो दूसरे हाथ में एक अबला...षोडशी बाला...। जिसकी नजाकत को काश्मीर की हसीन वादियों ने संवारा था...जिसके हुस्न को, फूलों से महकती घाटियों ने दमकाया था...।

डार्लिंग कल्पना कर रही थी—जिसके नाजुक पैरों में शायद कभी कंकड़ भी न पड़े हों वह शैतानी पिशाचों द्वारा न जाने किस बेदर्दी के साथ ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों, नोकीले पत्थर से युक्त झाड़ियों में घिसटती हुई ले जायी जा रही हो...न जाने कहां-कहां किस-किस रूप में छुपायी और दुबकायी जा रही हो...।

व्यथित भाव में सोचती हुई डार्लिंग का मन रह-रहकर थरथराहट से भर उठता था।

वह मौत की देवी बनकर रेशमा के दुश्मनों पर टूट पड़ना चाहती थी। अंजाम की परवाह न कर रेशमा को बचाने का एक मात्र लक्ष्य सामने रखते हुए खुद को दुश्मनों के सामने झोंककर रेशमा के लिए ढाल बन जाना चाहती थी।

उस रेशमा की जिन्दगी की ढाल जिसकी एक रात की वह मेहमान बनी थी।

रेशमा और उसके परिवार के सदस्यों का कुसूर इसके अलावा और क्या था कि उसके यहां ठहरी थी। रेशमा के साथ रहते हुए, अपने ऊपर हुए हमले का जवाब दिया था। उसने तीन ऐसे आतताइयों को मौत के आगोश में उतार दिया था जो सिर्फ उसके नहीं, पूरी मानवता के अमन के दुश्मन थे।

आवेशपूर्ण भाव में, चहलकदमी करते-करते डार्लिंग ठहरी। दांत पीसकर गुर्रा उठी—

"मैं तुम्हें दुनिया के किसी भी कोने में भी छोड़ूंगी नहीं कुत्तों!

अगर तुम कब्र में भी सो जाओगे तब भी तुम्हारी लाशें खोद निकालूंगी। रेशमा के साथ ज्यादती का गिन-गिनकर बदला चुकाऊंगी...मैं तुम्हारे आतंकी संगठन को नेस्तनाबूद कर दो गज जमीन के नीचे जब तक दफना न दूंगी, चैन से न बैठूंगी...।"

उसकी आंखों में रोष की लाली और रगों में तेजाव की गरमी दौड़ रही थी। पर वह रुकी नहीं थी क्योंकि उसे चीफ की अगली रिपोर्ट की प्रतीक्षा थी।

रगों में दौड़ते उत्तेजना रूपी तेजाब की गरमी से बेचैन, वह बैड पर जा बैठी...। उसने हाथ बढ़ा फोन इन्स्ट्रूमेन्ट के साथ लगा इण्टरकॉम का बटन दबाया।

दूसरी ओर बजर बजा।

"यस मैडम...। सर्विस ब्वॉय आपकी सेवा में हाजिर होता है।" रिसैप्शन से आवाज उभरी।

रिसैप्शन काउण्टर पर लगे बोर्ड पर उसके नम्बर के कमरे का सुर्ख पाइंट जलते ही जान लिया गया था कि कस्टमर को किसी सेवा की आवश्यकता है।

"ओ०के०।" डार्लिंग ने कहा।

उसे अधिक देर तक प्रतीक्षा न करनी पड़ी।

दरवाजे पर नॉक उभरी।

"कम इन...।" डार्लिंग ने कहा।

सर्विस ब्वाय ने अन्दर कदम रखा।

"मार्टिनी फुल बॉटल...।" डार्लिंग ने आदेश दिया—"तुरन्त...।"

"यस मैडम...।" सर्विस ब्वॉय के स्वर में हैरानी थी।

हैरानी स्वाभाविक थी। कुछ देर पहले, जब कस्टमर के खाने की ट्रॉली लेकर वह वापस गया था उस समय उसके चेहरे पर उल्लास की चमक थी। अब वह गहरे तनाव में भरी हुई नजर आ रही थी।

उसने हल्के से कंधे उचकाए—सिर झुकाए बाहर निकल गया।

कुछ देर बाद ब्यूटी क्वीन के सामने मार्टिनी की सीलबन्द बॉटल थी और। उसे होठों से लगाए धीरे-धीरे कंठ से उतारती

डार्लिंग खुद को सुरूर में डूबता महसूस कर रही थी।

वह रगों में दौड़ते तेजाब की गरमी को अल्कोहल में डुबो देना चाहती थी।

कुछ देर बाद ही,

अल्कोहल का प्रभाव अपना असर दिखाना आरम्भ कर चुका था।

आंखें उनींदी और जिस्म शिथिलता से भरता चला जा रहा था।

धीरे-धीरे उसका जिस्म बिस्तर पर फैलता चला गया।

कुछ देर बाद,

नींद के आगोश में डूबती ब्यूटी क्वीन की आंखों के सामने रेशमा का हसीन मुखड़ा थिरक रहा था—उस समय का चेहरा जब उसके साथ बिस्तर पर रात गुजारने के बाद रेशमा उसके सामने आयी थी तो उसके चेहरे की झेंपी-झेंपी, शरमाई रंगत उसके सामने खिल रही थी...। और उस रंगत में वह रेशमा के चेहरे पर जाफरान की बूटी खिली हुई देख आनन्दित हो रही थी।

कल्पना में उभरता, आंखों के सामने तैरता दृश्य हसीन था, मोहक था, मादक था...नींद की गहरी खुमारी में डुबोने वाला था।

ब्यूटी क्वीन, ख्वाबों के हसीन झरोखों में डूबती चली जा रही थी।

भोर की लाली, चिड़ियों की मधुर चहचहाहट के सरगमी सुरों में घुलकर अपना सिर उठा रही थी।

डार्लिंग ने आंखें खोलीं।

उठ बैठी। बांहें उठा मस्त मादक अंगड़ाई ली।

ख्याल आया कि कहीं रात के किसी पहर में चीफ का फोन तो नहीं आया।

हालांकि उसने मानसिक थकान को मिटाने के लिए इस हद तक ड्रिंक्स का सहारा लिया था कि बेखबरी की नींद में डूब जाए। नींद बेखबरी की ही आयी थी—मगर, ऐसी बेखबरी उसके स्वभाव के विरुद्ध थी कि मोबाइल पर बीप उभरती और उसे

खबर न होती।

उसने हाथ उठा सिरहाने रखा मोबाइल उठाया।

कॉल चेक की।

इत्मीनान किया कि उसके सोने के बाद मोबाइल पर कोई काल न आयी थी।

उसने बैड छोड़ा।

बाथरूम की ओर बढ़ी।

फ्रैश और ताजा दम होकर बैडरूम में आयी तो उस दिन का अखबार दरवाजे से झांकता नजर आया। बढ़कर उसने अखबार उठाया।

'डेली डॉन।'

यह था अखबार का टाइटिल, जो डार्लिंग के हाथ में था। डेली डॉन सिर्फ पाकिस्तान में ही नहीं, एशियाई कई मुल्कों में सही पत्रकारिता की अच्छी प्रतिष्ठा रखता था।

डार्लिंग ने नाश्ते का आर्डर दिया और आराम के मूड में डेली डॉन सामने फैलाया। उसकी मुख्य-मुख्य खबरों पर निगाहें दौड़ाने का कार्य करने लगी।

इण्डियन न्यूज—अखबार के सेकेण्ड पेज की सब हेड लाइन थी।

डार्लिंग ने उस पृष्ठ पर दिलचस्पी भरी निगाहें दौड़ाईं।

इण्डियन न्यूज की सबसे प्रमुख खबर ने स्पाई क्वीन का फौरन ध्यान अपनी ओर खींचा। खबर का शीर्षक था—

काश्मीर की घाटी आतंकियों के धमाकों से थर्रायी।

डल झील पर आतंकियों से मुठभेड़ में चार भारतीय जवान घायल, तीन आतंकवादी ढेर! आतंकी फरार होते समय रेशमा नामक एक नौजवान लड़की को उठा ले गये।

उपरोक्त खबर और खबर के शीर्षक ने थ्रिल क्वीन की दिल की धड़कनें एक बार फिर बढ़ा दीं।

वह सांस रोककर एक ही सांस पूरी खबर पढ़ जाने को आतुर हुई।

खबर इस प्रकार थी—

"जम्मू कश्मीर। छः माह के बाद एक बार फिर कश्मीर की

घाटी में रक्त के छींटे उड़े। शान्त घाटी आतंकवादियों के हैण्डग्रेनेडों के धमाकों से और गोलियों की तड़तड़ाहट से थर्राई।

जम्मू पुलिस और केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बलों की कड़ी कार्रवाई करते हुए आतंकियों को मुंह तोड़ जवाब दिया। आतंकियों का साहस के साथ मुकाबला करते हुए चार भारतीय जवान जख्मी हुए हैं, उनमें से जम्मू पुलिस के जवान की हालत गम्भीर है। मुकाबले में भारतीय जवानों ने चार आतंकियों को मार गिराया, आतंकवादियों की गोलीबारी में चार नागरिकों के हताहत होने के समाचार हैं।

हमारे संवाददाता के अनुसार रात नौ बजकर दस मिनट के करीब, जबकि डल झील और आसपास का इलाका पूरी तरह से शान्त था। ऐसे समय में पर्यटकों की वेशभूषा में, एक दर्जन आतंकवादी, नौका द्वारा रेशमा नामक एक खास शिकारे को लक्ष्य बनाकर पहुंचे। शिकारे पर जबरन चढ़ते हुए दहशत फैलाने के इरादे से उन्होंने चारों ओर ताबड़तोड़ गोलियां चलायीं—'खून का बदला खून' तथा 'हिजबुल मुरसलीन—जिन्दाबाद' के नारे लगाए।

गोलियों के चलते ही घटनास्थल के आसपास के शिकारों में मौजूद दर्जनों लोगों को झील में कूदकर अपनी जान बचाने के लिए मजबूर होना पड़ा। आतंकी कार्रवाई में नूरुद्दीन और उसकी पत्नी फात्मा भी है। नूरुद्दीन और फात्मा उस शिकारे के परिवार के सदस्य हैं जिस पर आतंकियों ने बलात कब्जा कर दहशतगर्दी फैलाने का कार्य किया। ज्ञात हुआ है कि नूरुद्दीन और फात्मा की जवान बेटी रेशमा को ढाल बनाकर आठ आतंकियों को उस समय गोलियां चलाते निकल जाने का मौका मिल गया जब कि जम्मू और अर्द्धसैनिक भारतीय जवानों की जवाबी कार्रवाई में चार आतंकी मौके पर ही ढेर कर दिये।

संवाददाता द्वारा दिये गये समाचार के अनुसार रेशमा शिकारे पर आतंकी हमले की संभावना को निगाह में रखते हुए सुरक्षा में आधे दर्जन अर्द्धसैनिक बल के जवान और चार जम्मू पुलिस के सशस्त्र पुलिस घटना पर पहले से ही तैनात थे। खबरों के अनुसार इस बड़े आतंकी हमले से करीब चालीस घण्टे पूर्व, डल झील पर केन्द्रीय खुफिया विभाग रॉ की स्पाई एजेण्ट डार्लिंग भटनागर पर भी आतंकी हमला हुआ था। उस हमले के समय

डार्लिंग भटनागर रेशमा की नाव पर झील की सैर कर रही थी। अपने ऊपर होने वाले हमले को असफल करते हुए डार्लिंग ने न सिर्फ हिजबुल मुरसलीन के एरिया कमाण्डर जावेद अली सहित तीन कट्टर आतंकवादियों को मौत की नींद सुला दिया था बल्कि रेशमा को बचा लिया था।

समझा जाता है कि अपने एरिया कमाण्डर और दो साथियों की मौत से क्षुब्ध होकर डार्लिंग भटनागर को तलाश कर मौत के घाट उतार देने के उद्देश्य से आतंकियों की ओर से जबर्दस्त कार्रवाई की गयी—जिसमें वे नूरुद्दीन की बेटी रेशमा को अपहृत कर ले गये ताकि उससे जानकारी हासिल कर सकें कि उनके साथियों की कातिला डार्लिंग भटनागर कहां है।

जम्मू पुलिस प्रवक्ता के अनुसार रेशमा को अगुवा कर ले जाने वाले आठों आतंकियों को भारत-पाक सीमा को चोरी से पार करते समय, बार्डर सिक्योरिटी फोर्स की गोली बारी का सामना करना पड़ा। इस गोली बारी में किसी के हताहत होने की जानकारी नहीं, पर समझा जाता है कि भारत-पाक सीमा पर स्थित खुफिया दर्रों के रास्ते आतंकी, सीमा पार कर गये। बी० एस० एफ० की चौकसी बढ़ा दी गयी है।"

स्पाई क्वीन ने हाथों में थमा समाचार-पत्र एक ओर डाल दिया।

उससे आगे की खबर दिलचस्पी की न थी—इसकी वजह यह थी कि आगे की खबर में दुनिया में बढ़ते टेरेरिज्म के खतरे के प्रति समीक्षा, आलोचना और दो देशों के बीच बढ़ती मित्रता में दरार डालने के प्रयासों की राजनीति को समेटा गया था।

और डार्लिंग की निगाह में राजनीति की बातों के हकदार राजनीतिज्ञ ही थे....क्योंकि उन्हें भी अपनी रोजी-रोटी चलाने का अधिकार देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था में दिया गया था।

वह रेशमा के, आतताइयों द्वारा अगुवा कर ले जाने के मामले को लेकर बुरी तरह व्यथित थी—इस बात का एहसास उसे रह-रहकर कचोट रहा था कि रेशमा का अपहरण उसे तलाश करके मौत के घाट उतार देने की दृष्टि के उद्देश्य से हुआ है...ताकि आतंकी अपने साथियों की मौत का बदला, उसे मौत के घाट उतारकर ले सकते।

वह इस बात को सोच-सोच कर व्याकुल हो रही थी कि उसके बारे में रेशमा से पूछताछ करने के लिए उस पर न जाने क्या-क्या हथकण्डे आततायी अपना रहे हों। हो सकता है दरिन्दगी में भरे हुए वे उसकी इज्जत को पारा-पारा कर रहे हों।

बेचारी रेशमा को इसके अलावा और कुछ मालूम भी न था कि उसका नाम डार्लिंग और उसका सम्बन्ध केन्द्रीय खुफिया 'रॉ' से है।

वह सोच रही थी—काश, रेशमा को मालूम होता कि वह इस्लामाबाद की धरती पर, फाइव स्टार गाजी के उस सूट में ठहरी हुई है तो वह उन्हें इस बात को बताकर अपनी आबरू बचा जाती। उससे जानकारी पाकर दुश्मन उस तक आते—उसके बाद या तो वे होते या वह होती...पर रेशमा को उनके जुल्मो-सितम से मुक्ति तो मिल जाती।

विचारों की इसी उहापोह में डूबती-उतराती डार्लिंग ने कक्ष में मौजूद टी०वी० पर निगाह डाली।

फिर, उसकी दृष्टि वालक्लॉक पर गयी—सुबह के ठीक आठ बज रहे थे। उसके मस्तिष्क में विचार कौंधा—यह समय न्यूज का है।

उसने फुर्ती से अपना स्थान छोड़ा।

वह बढ़कर टी० वी० तक गयी। स्विच ऑन किया। रिमोट उठाया। सोफे पर पुनः आ बैठते हुए उसने न्यूज चैनल लगाया।

न्यूज चैनल की न्यूज रीडर न्यूज पढ़ रही थी—

"हमारे नामा निगार ने खबर दी है कि हिन्द-पाक सरहद पर गुजस्ता रात गोलियों और धमाकों की काफी दिनों से रुकी हुई हलचल तेज हुई। हिन्द के सरहद के सिपाहियों ने मुजाहदीनों का पीछा करने के बहाने, मरी सेक्टर के हसनपुरा इलाके में घुसने की नापाक कोशिश की, जिसे पाक के सरहदी सिपाहियों ने अपनी गनों का मुंह खोलते हुए हिन्द के सरहदी सिपाहियों के कदमों को पीछे सरकाने को मजबूर कर दिये...। जान-माल के नुकसान की कोई खबर नहीं।"

उपरोक्त पाकिस्तानी टी० वी० न्यूज ने, थ्रिल क्वीन का उत्साह बढ़ा दिया।

वह पूरी खबर न सुन पायी थी—पर जितनी भी सुनी थी, उससे इस नतीजे पर पहुंचना उसके लिए आसान था कि खबर उसी मामले से सम्बन्धित थी जो वह चीफ से रात को सुन और डेली डॉन में पढ़ चुकी थी।

अब यह बात दूसरी थी कि पाकिस्तानी टी० वी० उस खबर को अपने ढंग से फ्लैश कर रहा था।

पर, स्पाई क्वीन उस खबर से, अपने महत्व की सबसे काम की बातें निकाल चुकी थी।

वह टेरेरिस्टों के भारत सीमा से पाक अधिकृत कश्मीर में मरी सीमा से घुसने के स्थान के बारे में जानकारी पा चुकी थी।

सिर्फ सीमा स्थान के बारे में ही नहीं बल्कि उस इलाके के बारे में भी जो आतंकवादियों की इन दिनों शरणस्थली बना हुआ था।

उसके जेहन में बार-बार कौंध रहा था—मरी सीमा पार, हसनपुरा इलाके की आबादी।

और, भारत की धरती पर, रॉ ऑफिस में, हिजबुल मुरसलीन की जिस फाइल का वह अध्ययन करके आयी थी, उसमें हिजबुल मुरसलीन के संचालन का मुख्य कार्यक्षेत्र मरी का इलाका ही था...।

वह इस्लामाबाद से मरी की ओर प्रस्थान की योजना बनाकर ही आयी थी।

लेकिन,

हसनपुरा!

यह उसके लिए एक नयी खोज थी।

एक ऐसी खोज, जो कश्मीर घाटी के उन दर्रों से कम न थी, जिनसे गुजरकर, छुपते-छुपाते, बचते-बचाते कम से कम समय में पाक प्रायोजित आतंकवादी भारत सीमा में घुस आते थे।

वे शॉर्टकट रास्तों से, आसानी से, और कम से कम समय में भारतीय सीमा में पहुंच जाते थे और अपनी आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देकर उसी रास्ते से बच निकलने का मार्ग अपना लेते थे।

पाकिस्तानी आतंकवादियों जैसा ही उसके सामने एक शार्टकट प्रोग्राम 'हसनपुरा' आ गया था। और यह रास्ता उसे दिया था खुद पाकिस्तानी मीडिया ने।

डार्लिंग की रगों में नया जोश उबाल खाने लगा था।

दरवाजा नॉक हुआ।

आने वाला सर्विस ब्वॉय ही हो सकता है। डार्लिंग ने सोचा। वह अपने स्थान से उठी।

दरवाजे तक पहुंची।

बाहर मौजूद शख्स के बारे में सन्तुष्ट हुई। दरवाजा खोला।

आने वाला सर्विस ब्वॉय ही था। वह उस समय उसके दिये हुए ब्रेकफास्ट ऑर्डर के साथ हाजिर हुआ था।

डार्लिंग ने उसके लिए आत्मीयता के भाव चेहरे पर समेटे।

उसके नाश्ता लगा चुकने के बाद सर्विस ब्वॉय जाने लगा तो डार्लिंग ने नर्मी के साथ उसे रोकते हुए पूछा—

"मैं यहां से मरी घूमने जाना चाहती हूं—क्या वहां के बारे में तुमसे किसी प्रकार की जानकारी मिल सकती है...?"

"मरी...।" सर्विस ब्वॉय की आंखों में चमक उभरी। उसने कहा—"मैडम, मैं मरी का ही वाशिन्दा हूं। मरी मेरी जन्मभूमि है। सारे सगे अब भी वहीं रहते हैं। महीने दो महीने में वहां जाता रहता हूं...।"

"तब तो तुम वहां के बारे में किसी गाइड से भी बढ़िया जानकारी मुझे दे सकते हो...।"

"हां, क्यों नहीं मैडम...।"

डार्लिंग ने पर्स से पाकिस्तान मुद्रा में पांच सौ रुपये निकाल उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा—"यह तुम्हारे वक्त और जानकारी का इनाम है...। बैठ जाओ और वहां के बारे में मुझे ज्यादा से ज्यादा जानकारी दो।"

सर्विस ब्वाय के लिए उससे बढ़िया इनाम क्या हो सकता था। उसकी बांछें खिल गयी थीं। वह शिष्टता के साथ बैठकर मरी के बाबत जानकारी देने लगा था।

शहबाज खां!

उस शख्स का नाम था, जिसके बारे में कहा जाता था कि मरी इलाके का इलाकेदार था।

भारत के पड़ोसी देशों का मानचित्र देखने पर यह बात पहली ही नजर में सामने आ जाती है कि जो महत्त्व भारत के मानचित्र में जम्मू-कश्मीर में स्थित पुंछ क्षेत्र का है, वही महत्त्व पाकिस्तान के नक्शे में मरी का है। और पुंछ भारत का सीमावर्ती इलाका है तो मरी पाकिस्तान का।

बरसो-बरस से मरी सेक्टर में पाकिस्तान फौज को अपना भारी लाव-लश्कर सीमा की सुरक्षा के नाम पर रखना पड़ा है तो भारत को पुंछ में भारतीय फौज की तैनाती करनी पड़ी है।

लेकिन,

पिछले कुछ समय से फौजी जवानों की हलचल दोनों ओर कम थी। नागरिक जीवन की खुशहाली और रौनक लोगों के चेहरों पर देखी जाने लगी थी। अगर भारत में जम्मू-कश्मीर में देश विदेश से आने वाले पर्यटक कश्मीर के वाशिन्दों की आमदनी का जरिया बनने लगे थे, तो ठीक वैसी ही स्थिति पाकिस्तान के पर्वतीय और सीमावर्ती क्षेत्र मरी में लौटी थी।

इस पृष्ठ पर, मरी का जिक्र करने से पूर्व एक नाम का जिक्र किया गया है—शहबाज खां!

मरी का जिक्र किया जाए और मरी के 'इलाकेदार' 'शहबाज खा' का जिक्र न किया जाए तो बात कुछ ऐसी ही अधूरी रह जाती है कि किसी की अंगुली में पहनी अंगूठी की खूबसूरती की चर्चा की जाए और उस अगूंठी में जड़े नगीने का जिक्र छोड़ दिया जाए। अंगूठी के बारे में कुछ भी प्रशंसा करनी है तो इस बात को भी बताना अच्छा लगता है कि उसमें पुखराज जड़ा हुआ है, नीलम, फीरोजा, माणिक्य या मोती की आभा मौजूद है।

मरी इलाके में शहबाज खां वह हस्ती थी जिस पर जहां पाकिस्तानी पुलिस द्वारा सबसे ज्यादा आपराधिक मुकदमें दर्ज थे, वहीं वह मरी का सबसे प्रभावशाली दबदबे वाला इन्सान था। उसकी पाकिस्तान की सियासत में जबर्दस्त घुसपैठ थी। वह धनवान भी था और बाहुबलि भी।

मरी की पुलिस का कहना था—इलाके में अगर पत्ता भी खड़कता है तो शहबाज खां को खबर जरूर होती है।

छोटे-मोटे अपराध—चोरी, राहजनी, पॉकेटमारी, चाकूबाजी,

जैसे अपराध हों तो स्थानीय पुलिस की सरदर्दी है कि वह अपने स्तर से छुटभैया अपराधियों को दबोचे, पूछे, उगलवाए और अपने हथकण्डे अपनाए। लेकिन संगीन कत्ल, दुःसाहसिक अपहरण, बैंक लूट की घटना घटे तो पुलिस शहबाज खां की ओर आंख मूंदकर दौड़ पड़ती है। कभी इस फार्मूले के तहत कि इस काम में शहबाज खां के अलावा और किसी का हाथ नहीं हो सकता...तो कभी इस जानकारी को पाने के उद्देश्य से कि उसमें यदि शहबाज खां का हाथ नहीं तो शहबाज खां ही पुलिस को इस बात की निशानदेही कर सकता है कि उसमें किसका हाथ हो सकता है।

अपराध को सियासत के साथ जोड़कर और सियासत को अपराध के साथ दूध में पानी की तरह मिलाकर जोड़-तोड़ करने वाला ऐसा इन्सान था शहबाज खां कि छुटभैया अपराधियों को शहबाज खां की शरण लेनी पड़ती थी वहीं सियासतदानों को अपने सियासी मैदान के विरोधियों को पटखनी देने के लिए शहबाज खां से शरण पाते छुटभैया-बड़भैया जैसे अपराधियों की मदद लेनी पड़ती थी।

उसकी एक जेब में दस-बीस, सौ-पचास सियासी मोहरे भी पड़े रहते थे तो दूसरी जेब में अपराधियों के चेहरे भी।

यह थी हिस्ट्री ज्याग्राफी शहबाज खां की जिसे इस्लामाबाद से मरी के लिए कूच करने से पूर्व स्पाई क्वीन ने होटल के वेटर से हासिल कर लिया था।

यह भी कि शहबाज खां के लिए पैसा दीन भी है और ईमान भी। पैसों के लिए वह ऐसा सब कुछ कर गुजरता है जो दूसरों के लिए नामुमकिन होता है।

यह भी कि वह धंधे के प्रति निहायत ईमानदार और बात का धनी इन्सान है। और इसीलिए मरी ही नहीं आस-पास और दूर-दराज के इलाकों में उसकी शाख बनी हुई थी।

होटल के वेटर ने आगे यह भी बताया था—

हुस्न परस्ती की कमजोरी शहबाज खां को खानदानी विरासत में मिली हुई थी। उसके पुरखों ने मरी में, मुगलों और अंग्रेजों के जमाने में नवाबी की रईसाना ठाट-बाट के दिन गुजारे थे—नवाबी करते हुए कई-कई बेगमें रखी थीं। अपने बुजुर्गों की

परम्परा को शहबाज खां ने कायम कर रखी थी। उसने चार शादियां कर रखी थीं। चारों के लिए अलग-अलग हवेलियां बनवाई हुई थीं। चार बीवियों से कुल कितनी औलादें थीं....इसकी गिनती के लिए शहबाज खां को अक्सर अपनी डायरी के पन्ने पलटने पड़ जाते थे। चार निकाह में आयी बीवियों के अलावा, रखैलों की संख्या में भी घटत-बढ़त चलती रहती थी।

अपनी जिन्दगी की ऐश-परस्ती के लम्बे-चौड़े ताम-झाम को चलाने के लिए शहबाज खां ने लम्बे-चौड़े कारोबारी धंधे भी फैला रखे थे। ये कारोबारी धंधे उसकी स्थायी आमदनी का जरिया थे। उसके स्थायी आमदनी के जरिये से प्रतिद्वन्द्विता करने के लिए कोई दूसरा मैदान में न आता था।

इसे इस रूप में समझा जा सकता है कि शहबाज खां का मरी में तीन सितारा होटल रेस्टोरेन्ट, बार हाउस, और क्लब-घर एक ही लम्बी-चौड़ी इमारत के कैम्पस में चलता था, तो किसी दूसरे की हिम्मत न पड़ी थी कि मरी में तीन सितारा होटल बनवाए और उस होटल से सम्बन्धित रेस्टोरेंट, बार हाउस और क्लब-घर को एक ही कैम्पस में चलवाने की जुर्रत करे।

दूसरे शब्दों में, शहबाज खां जो करता था, दूसरे ठीक वैसा ही करने की हिम्मत न करते थे।

शहबाज खां के तीन सितारा होटल का नाम था—'शहनाज गुल'!

होटल शहनाज, शहबाज खां की ब्याहता बीवी के नाम पर चलने वाला कारोबार था। होटल शहनाज की पूरी आमदनी ब्याहता बीवी के हाथों में जाती थी।

स्पाई क्वीन ने होटल शहनाज के एक कमरे में आकर डेरा डाला।

अपने मेनका से रूप, लकदक वेशभूषा, बिंदास अदा से उसने बहुत जल्द होटल मैनेजमेन्ट, कर्मचारियों और वहां ठहरे हुए नाममात्र के दो-चार मुसाफिरों का ध्यान अपने पर केन्द्रित कर लिया।

उस समय संध्या ढलकर माहौल को खुशनुमा बनाना आरम्भ कर रही थी। अपने कमरे से निकलकर ब्यूटी क्वीन डार्लिंग होटल के क्लब-घर की ओर कदम बढ़ा बैठी।

लोग चौंक-चौंककर उसकी ओर देखने लगे। स्पाई क्वीन को इस बात की वजह जल्द ही समझ में आ गयी थी कि लोग उसके प्रति विस्मित क्यों हैं, जबकि वह लम्बे-चौड़े क्लब-घर के हॉल में पहुंची। वहां मर्द ही मर्द थे...। एक-से-एक छटे हुए बदमाश चेहरे।

क्लब-घर पूरी तरह से जुआघर के रंग में डूबा हुआ था। सिगरेट और स्मैक की गंध से हॉल धुएं से भर रहा था।

मर्द ही मर्द थे वहां, औरत नाम की कोई खूबसूरत शै तो दूर, बदसूरत नौकरानी भी वहां नजर न आ रही थी।

टेबिल पर ताश जुआ भी खेला जा रहा था और मशीनों पर नम्बर घुमाकर किस्मत आजमाने का दौर भी चल रहा था।

मर्दों की उस महफिल में डायना राजकुमारी-सी नजर आयी उस अनोखी चीज पर, सबकी नजरें जमनी लाजिमी थीं।

स्पाई क्वीन होठों ही होठों में मुस्कराती हुई, एक ऐसी मेज की ओर बढ़कर पहुंची जहां उसे सबसे छटे हुए बदमाशों की सूरत समझ में आयी थी। उस मेज पर फ्लश का जुआ चल रहा था। मोटी-मोटी रकमों का ढेर मेज पर नजर आ रहा था।

"मेरे लिए भी क्या कोई स्थान है यहां...?" डार्लिंग ने उस मेज पर मौजूद सभी मर्दों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हुए खनकदार आवाज में पूछा।

वैसे उस मेज पर और भी कुर्सियां खाली थीं। स्पाई क्वीन चाहती तो बिना पूछे बैठ सकती थी, मगर पहला मकसद था उसका उन सबका ध्यान आकृष्ट करना।

"नहीं...।" एक ग्रैण्डियल टाइप व्यक्ति गुर्रा उठा—"हम मर्दों की महफिल में किसी औरत का काम नहीं...।"

"क्या बात करते हो मिस्टर...।" डार्लिंग ने लापरवाह अंदाज में एक खाली कुर्सी सम्भाल ली—"औरत के बगैर तो मर्दों की जिन्दगी ही नहीं दुनिया भी सूनी होती है। हव्वा न होती तो आदम को जन्नत में खुदा की इबादत के अलावा कोई और काम

न होता—अब सोचिए जनाब, इबादत ही इबादत और वह भी अकेले रहकर इबादत। भला जिन्दगी का कोई लुत्फ होता उनकी जिन्दगी में। खुदा ने भी बैठे-बैठे सोचा, आदम की बोरियत को दूर करने के लिए बीवी हव्वा को पैदा किया जाए...। बीवी हव्वा पैदा हुई तो पूरी दुनिया का निजाम बदल गया...। रौनक, बहार, जिन्दगी की भागदौड़, दिलकशी सब कुछ औरत की वजह से होती है। और आप कहते हैं मर्दों की महफिल में औरत का कोई काम नहीं...।"

उसे शुष्क स्वर में टका-सा जवाब देने वाले का मुंह, विस्मय से खुल गया था...।

मगर, उसके विस्मय से मुंह खुलने की वजह, गुलबदन हसीना का जवाब नहीं कुछ और थी...उसने ब्यूटी क्वीन के पीछे मुस्कराते हुए आ खड़े होने वाले चेहरे को देखकर हैरत से मुंह खोल दिया था।

उसने तो जैसे डार्लिंग के व्याख्यान का एक शब्द भी सुना ही न था। उसकी एकटक दृष्टि उस इलाके के सबसे प्रभावशाली व्यक्ति के अकस्मात वहां आ धमकने की वजह से जमी थी, जिसकी वहां मौजूदगी की जरूरत बहुत खास मौकों पर ही देखी जाती थी। ऐसे खास मौके साल में शायद दो-चार बार ही आते थे।

वह भी तब, जब वहां झगड़ा-फसाद, चाकू और गोलीबारी चलती हो। हालात इतने हंगामी हो गये हों कि होटल मैनेजमेन्ट और स्टाफ के सम्भालने से न सम्भलते हों, तब उसे वहां खुद स्थिति को सम्भालने के लिये आना पड़ता था।

वह कोई और नहीं इलाके का शहन्शाह शहबाज खां था। शहबाज खां के चेहरे पर कोई तनाव न था...। होठों पर मुस्कान थी और पूरे दिलकश अन्दाज में वह उस गुलबकावली के ऐसे तर्क को सुन रहा था, जिसकी दुनिया में कोई काट न थी। हुस्न परी की बात पूरी हुई ही थी कि—शाहबाज खां ने पूरी गर्मजोशी से ताली बजायी...। प्रशंसा भरे स्वर में कहा—"खूब, बहुत खूब—माशा अल्लाह...जवाब नहीं...।"

डार्लिंग ने पलटकर देखा।

आंखों में चमक और दिल की उमंग की लहरें उमड़ पड़ीं।

वह वही था जिससे मिलने के इरादे से वह वहां आयी थी।

मन ही मन मुस्करायी थी डार्लिंग—सोचा चम्पा की कली खिलकर अपनी सुगन्ध बिखेरे और एक किलोमीटर दूर से भी सुगन्ध का पारखी खिंचा हुआ न चला आये तो चम्पा के पुष्प का खिलना ही बेकार होता है।

उसने वहां आकर जो अन्दाज अपनाया था उसमें उसके अन्दाज की छलक और रूप की चाशनी से शहबाज जैसा हुस्न परस्त बेखबर रहता यह तो हो ही न सकता था।

वन में कोई मृगया डार से बिछुड़कर अकेली रह जाए, सिंहराज उसकी खुशबू से दूर रहे यह तो नामुमकिन बात होती है।

हुस्न परी ने देखा...और मुस्कराकर कहा—

"शुक्रिया जनाब...शुक्रिया, कद्रदानी का शुक्रिया। मैं तो समझी थी मुर्दा इन्सानों की इस बस्ती में कोई भी शायद ऐसा नहीं जिसकी सांसों में जिन्दगी की ताजगी बाकी हो...।"

शहबाज उसे कुछ इस अन्दाज में देख रहा था जैसे हीरे की परख करता हुआ कोई पारखी हो। होठों पर मुस्कान, आंखों में दिलकशी लिए हुए वह एक कदम आगे बढ़ा, कद्रदानी भरे अन्दाज में बोला—

"मैं इस बात को साफ कर देना चाहता हूं यंग लेडी कि आप जिस जगह हैं वह मुर्दा इन्सानों की नहीं जवां मर्दों की बस्ती है। इनके दिलों में औरत के हुस्न को लेकर मुर्दनी की वजह यहां कायम किये गए मेरे सख्त उसूल हैं। मैंने अपने क्लब-घर में इस बात का उसूल कायम कर रखा है कि यहां न तो किसी औरत को अपने साथ कोई लेकर आ सकता है, ना ही कोई औरत खुद आकर जुए की मेजों पर अपनी किस्मत आजमाईश कर सकती है।"

"तब तो इस उसूल का कोई नोटिस बोर्ड क्लब-घर के बाहरी द्वार पर जरूर टंगा हुआ होना चाहिए था कि लेडीज आर नॉट परमीटेड...।" डार्लिंग ने कहा और कुर्सी छोड़ दी।

"मेरा ख्याल था कि बोर्ड टांगे बगैर भी, उस उसूल का जब

कड़ाई से पालन होता रहता है तो उसकी जरूरत भी क्या है।" रुककर उसने कहा—"लेकिन अब मैंने महसूस किया है कि ऐसा कोई नोटिस बोर्ड मुझे बाहर जरूर टंगवाना पड़ेगा।"

"तब तो मुझे ताश के पत्तों के साथ किस्मत आजमाईश का मौका हासिल किये बगैर यहां से बाहर जाना पड़ेगा...।" डार्लिंग ने नाउम्मीदी भरे स्वर में कहा।

"ऐसा मौका आप मेरे साथ हासिल कर सकती हैं...।"

"आपका परिचय...?"

"मुझे शहबाज खां के नाम से जाना जाता है...।" शहबाज ने कहा। उसके बोलचाल का अन्दाज जहां शिष्टता भरा था वहीं दबंगता से भरपूर भी था।

"ओह! मिस्टर शहबाज खां...।" ब्यूटी क्वीन ने चौंकने का अभिनय किया। झट उसकी ओर हाथ बढ़ाया। इस तरह खुशी का इजहार किया जैसे बॉलीवुड की नगरी में राह चलते किसी फैन को देवदास का हीरो शाहरूख खान मिल जाए—और उसका परिचय पाकर, सामने देखकर फूला न समाए।

शहबाज का हाथ उसके बढ़े हाथ में समा गया था।

"ग्लैड टू मीट यू...मुझे आपसे मिलकर बहुत-बहुत खुशी हुई...। आप होटल शहनाज गुल तथा इस पूरी बिल्डिंग के मालिक हैं...?"

"यस यंग लेडी। और मुझे इस बात की जानकारी मिल चुकी है कि आप मेरे होटल के रूम नम्बर तीस में पैसेन्जर के रूप में एक घण्टा पहले ही आकर ठहरी हैं...।"

"कहीं ऐसा तो नहीं कि आपके उसूल में यह बात भी शामिल हो कि होटल गुलनाज में लेडीज पैसेन्जरों को ठहरने की इजाजत नहीं दी जाती...।"

"ओह नो...।" शहबाज खिलखिलाकर हंसा।

"मैं तो आपके उसूल की बात सुनकर डर गयी थी कि कहीं आप मेरा टिकट अपने होटल के कमरे से भी तो नहीं कटा देने वाले हैं।"

"इस मामले में आप बेफिक्र रहिए...।" शहबाज ने मधुरता से कहा।

ब्यूटी क्वीन ने महसूस किया उसके नाजुक हाथ और मक्खनी त्वचा की गरमी का शहबाज, शिद्दत से एहसास कर चुका है...क्योंकि उसका हाथ, अब भी उसने अपने हाथ में ले रखा था और उसकी हथेली हल्की-सी भीग उठी थी।

"होटल काउण्टर रजिस्टर में मैंने आपका नाम नूर बानो देखा है।" शहबाज ने कहा।

"बिल्कुल सही आपने देखा है।"

"और इस समय भी बिल्कुल सही मैं देख रहा हूं...आप वाकई हुस्न का नूर हैं...।"

"शुक्रिया...।" डार्लिंग ने मर्द के मुंह से अपने हुस्न की प्रशंसा सुन, हया के बोझ से पलकें झुकाने का अभिनय किया।

और जब इस बार उसकी निगाहें उठीं तो साफ महसूस किया कि शहबाज पर उसका जादू चल गया है।

"कृपया आप मेरे साथ आइए...।" शहबाज ने इसरार किया—"मैं नहीं चाहता कि आपके नूर की चमक से यहां बैठे मर्दों की आंखें चौंधियाती रहें...हारने वाले जीतते चले जायें, जीतने वालों के हार का सिलसिला शुरू हो जाए...।"

"क्या आप जरूरत से कुछ ज्यादा मेरी तारीफ नहीं कर गये हैं?" डार्लिंग मुस्करायी।

"मैंने हकीकत बयान की है...। प्लीज कम विद मी...।" कहता हुआ शहबाज, डार्लिंग के साथ क्लब-घर हॉल से धीरे-धीरे बाहर की ओर कदम बढ़ाने लगा। डार्लिंग उसके साथ हो ली।

दूसरी ओर,

उस समय, जबकि ब्यूटी क्वीन चार जुआरियों की मेज के सामने पहुंचकर उनके साथ बैठ, जुआ खेलने के लिए तकरार कर उठी थी—तब हॉल में बैठे अन्य चेहरों में से एक ने बहुत खास तौर पर उसे देखा था।

उसकी नजरों में उस समय से पहले उतनी बोल्ड और दिलेर युवती पहले कभी नहीं गुजरी थी।

उस व्यक्ति के चेहरे पर लम्बी दाढ़ी थी। उम्र तीस के आस-पास थी। चेहरा खूबसूरत, हाथ-पैर और जिस्म जवां मर्दों के जलवों से भरपूर था।

"माशा अल्लाह!" वह मन ही मन बुदबुदाया था। अपनी लम्बी दाढ़ी पर हाथ फेर सोचा था—'यह कोई खास चीज ही है।'

फिर उसने जब शहबाज को उस तक पहुंचते और उसे अपने साथ ले जाते हुए देखा तब ब्यूटी क्वीन पर सबसे अधिक ध्यान देने का उसे मौका मिला।

ब्यूटी क्वीन की अल्हड़ता में भरी मस्ती भरी चाल ने दाढ़ी वाले के जेहन में तेजी से उस ब्यूटी क्वीन का वह नक्शा उभारा जिसकी खोज संगठन को बहुत शिद्दत से थी।

उसने शहबाज और ब्यूटी क्वीन के हॉल से बाहर निकल जाने के बाद शीघ्रता से अपनी सीट छोड़ दी।

वह बाहर की ओर लपका।

होटल कम्पाउण्ड से बाहर आकर वह वीरान और इत्मीनान की जगह पर पहुंचा। जेब से मोबाइल निकाल जल्दी-जल्दी नम्बर मिलाया।

दूसरी ओर से सम्बन्ध बनते ही कहा—

"मैं शहाब...। होटल शहनाज गुल से बोल रहा हूं। एक महत्वपूर्ण सूचना है...।"

"यस...सूचना दो...।" दूसरी ओर से कहा गया।

"यहां एक ऐसी युवती मैंने देखी है जो हमारे संगठन द्वारा वाण्टेड है...चाल-ढाल, कद-काठी और अपनी बेपनाह खूबसूरती के एतबार से वह इण्डियन स्पाई डार्लिंग ही हो सकती है।"

"इण्डियन स्पाई डार्लिंग...।" दूसरी ओर से चौंककर कहा गया—"हो सकती है से क्या मतलब? इस समय वह कहां और किस स्थिति में है?"

"शहबाज खां उसे अपने साथ लेकर अपने ऑफिस में पहुंच गया है...।" शहाब ने बताया।

"हिजबुल मुरसलीन के लिए वह मोस्ट वाण्टेड है। उसकी फोटो भेजो...एक से अधिक तस्वीरें। अगर वह वही है जिसे तुम बता रहे हो तो बहुत बड़ी सफलता हमारे हाथ लगने जा रही है।

शहाब...। तुम्हारा रैंक बढ़ा दिया जाएगा।"

"यस सर...! मैं उसकी तस्वीरों का इन्तजाम कर रहा हूं...।" शहाब नामक शख्स ने कहा।

"जल्दी...।" दूसरी ओर से निर्देश मिला और सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

अब, शहाब अपना रैंक बढ़ने के सुखद सपने में डूबकर और अधिक चुस्ती-फुर्ती में भर उठा था।

शहबाज खां के बारे में स्पाई क्वीन ने जैसा सुना था, वह उससे कहीं ज्यादा दबंगता भरी पर्सनाल्टी और हीमैन चेहरे वाला मर्द था। सात फुटे कद का स्वामी था। कद के अनुपात से ही उसकी जिस्मानी बनावट थी। उम्र पचास के आसपास थी, लेकिन जिस्म अब भी फौलाद की तरह सांचे में ढला हुआ था। पेट और कमर पर एक सूत भी चर्बी के चढ़े होने का नामोनिशान न था। सिंह की तरह कमर पतली, सीना चौड़ा और कांधे उठे हुए थे।

उसका रंग इतना गोरा-चिट्टा था कि चुटकी काटने पर खून छलक पड़ने का अंदेशा हो सकता था। आंखें खूबसूरत काली, जिन्दगी की ताजगी से भरपूर। चेहरा गोल-भारी और क्लीन शेव्ड! सिर के बाल घुंघराले, काले और मेंहदी की रंगत से रचे हुए चमकीले थे।

यही थी पर्सनाल्टी, जिसके बारे में डार्लिंग ने पहले से शहबाज के बारे में सुना था। यही था इलाकेदार, जिसका पुलिस-प्रशासन, गुण्डों और राजनीतिज्ञों पर दबदबा और उनसे घालमेल था।

जो अच्छी राजनीतिज्ञ सूझबूझ वाला, दबदबेदार इन्सान था। और अपने इलाके की इलाकेदारी पूरी कुशलता से सम्भालता था।

उसके बारे में डार्लिंग ने इससे भी आगे जो सुना और जाना था, वह यह कि पाकिस्तान के आसपास, मिलिटेण्टों के ट्रेनिंग सेन्टर और कैम्प चलते थे, लेकिन उनके आतंक से शहबाज़ कभी

प्रभावित नहीं हुआ था।

वे अपनी आतंकी संगठन, अपनी इलाकेदारी चलाते थे, शहबाज अपनी...।

क्लब-घर के हाल के बाहर निकल आने के बाद शहबाज ने कहा—

"इसे एक खूबसूरत इत्तफाक कहना चाहिए कि शाम के इस समय के दो घण्टे में वहां के बिजनेस की देखभाल में देता हूं...। मैं अपने ऑफिस में बैठा आमदनी और खर्च का हिसाब-किताब देख रहा था—ऐसे समय में मुझे आपके बारे में खबर मिली कि आपने अपने कमरे से निकलकर क्लब-घर का रुख किया है तो मुझे अपनी सीट छोड़नी पड़ी।"

शहबाज जो बता रहा था, इस बात की उसे पहले से जानकारी थी। उसी जानकारी के आधार पर डार्लिंग ने उसी समय होटल में आकर ठहरने का वक्त चुना था। योजनाबद्ध रूप से क्लब-घर का रुख किया था। जानती थी कि उसे क्लब-घर में प्रवेश पर रोका जाएगा।

वह तो इस बात के लिए तैयार थी कि यदि होटल स्टाफ ने उसे रोका तो वह कुछ इस ढंग से हंगामा करेगी कि शहबाज खां खुद सामने आ जाए।

अच्छा यह हुआ था कि हंगामे की नौबत आयी थी। शहबाज उसकी खुशबू पाकर आसानी से सामने आ गया था।

अब उसे अपने आइने में उतारने की युक्ति ब्यूटी क्वीन अपनाने पर विचार कर रही थी।

शहबाज के कथन के जवाब में डार्लिंग ने कहा—

"यानि मेरी वजह से आपको डिस्टर्ब होना पड़ा...।"

"बिजनेस संभालने की ड्यूटी में यह भी चलता है।"

"इस काम को तो होटल स्टाफ के कर्मचारी भी आपको इत्तला दिये बगैर कर सकते थे...। वे मुझे यहां के नियम की बात बताते मैं रुक जाती...।" डार्लिंग ने भोलेपन से कहा।

"मुझे इत्तला मिली थी। मैं उन्हें यही आदेश देता—लेकिन मैंने क्लोज सर्किट कैमरे में आपको देख लिया था...। आपको देखने के बाद एक लम्हे के लिए भी अपनी जगह पर रुक न

सका...। मेरे दिल ने कहा—इस ब्यूटी क्वीन को खुद मुझे बढ़कर अंजाम देना चाहिए।"

थ्रिल क्वीन को इस बात की नई जानकारी मिली कि वहां क्लोज सर्किट कैमरे भी लगे हुए हैं।

कुछ आगे बढ़ने के बाद, लम्बे-चौड़े बरामदे के सामने एक शानदार कांच के केबिन टाइप ऑफिस के सामने ठिठकते हुए शहबाज ने कहा—"यह मेरा ऑफिस है...। अगर आपको कहने और जाने की जल्दी न हो तो मेरा आग्रह है कि मेरे ऑफिस में मेरे साथ चलकर कुछ देर बैठें...मुझे मेहमाननवाजी का मौका दें...।"

"मेरे आपके साथ ऑफिस में चलकर बैठने से कहीं ऐसा तो न हो कि आपका हिसाब-किताब बिगड़ जाए...कुछ इसी तरह जैसे क्लब-घर में मेरी मौजूदगी की वजह से बकौल आपके खिलाड़ियों के हिसाब-किताब बिगड़ने लगे थे...जीतने वाले हारने, और हारने वाले जीतने लगे थे।"

डार्लिंग के इस कथन पर शहबाज ने खुलकर कहकहा लगाया। फिर बोला—

"यह एक सच्चाई है...और इस सच्चाई से बचने के लिए मैं आज का हिसाब-किताब वहीं पर रोक दूंगा, जहां तक आपको क्लोज सर्किट कैमरे द्वारा टी० वी० स्क्रीन पर देखने के बाद मैंने छोड़ दिया था...।"

"फिर तो यह नुकसानदेह बात होगी...।"

"इस तरह का नुकसान उठाने का मैं शौकीन हूं...।"

"तब मेरे लिए एतराज जैसी बात नहीं...।" डार्लिंग ने मुस्कराकर कहा।

शहबाज ने उत्साह के साथ बढ़कर दरवाजे की नॉब पर दबाव डाला। दरवाजा खोला—

"प्लीज वेलकम...।" शहबाज ने हाथ आगे बढ़ा, डार्लिंग को आगे बढ़ने का निमंत्रण दिया।

डार्लिंग ने अन्दर कदम रखने पर, पहली ही नजर में पाया कि शहबाज की ग्रैण्ड पर्सनाल्टी के समान ही उसके ऑफिस की साज-सजावट भी शानदार थी।

ऑफिस के साथ वह जगह विजिटर्स रूम के रूप में भी इस्तेमाल में आती थी। वहां सोफे भी थे। सोफे के सामने सजी बहुमूल्य मेज भी।

उसे सोफे पर बैठने का संकेत कर शहबाज ने सामने स्थान सम्भाला। घण्टी बजायी और बोला—"इस समय आप होटल की नहीं मेरी मेहमान हैं मिस नूर बानो...इसलिए बगैर औपचारिकता के मैं जानना चाहूंगा कि क्या आप मेरे साथ ड्रिंक लेना पसंद करेंगी...?"

"आपके इसरार को टालूंगी नहीं...।" हुस्न परी ने दिलफेंक मुस्कान के साथ कहा।

शहबाज का चेहरा खिल उठा।

घण्टी बजाने के आधे मिनट के अन्दर दो वर्दीधारी सर्वेण्ट ने अन्दर दाखिल होकर सैल्यूट बजाया।

शहबाज ने दिल खोलकर खाने के सामानों के साथ शैम्पियन का हुक्म सुनाया।

फिर कुछ देर बाद,

मेज ड्राई फ्रूट्स, ताजे फलों तथा डिलेशियर्स डिशेज से सज गयी थी। शहबाज शैम्पियन की बोतल खोल, पैग बनाने लगा था।

उसने बातों का सिलसिला शुरू करते हुए कहा—"एक बात पूछूं मिस नूर बानो...।"

डार्लिंग ने उसके चेहरे पर प्रश्नसूचक निगाहें जमाकर कहा—"आप जो भी चाहें बेझिझक पूछ सकते हैं।"

"क्या वाकई आप क्लब-घर में जुआ खेलने का उद्देश्य लेकर ही गयी थीं...?"

डार्लिंग के कान खड़े हुए। उसने शहबाज की भाव-भंगिमा पढ़ी...उसके चेहरे के भाव स्पष्ट थे।

"हां, जुआ खेलना मेरा शौक है...।" डार्लिंग ने कहा।

"मैंने जो बात पूछी, उसका सही जवाब मुझे नहीं मिला।" शहबाज मुस्कराया। उसने पैग बढ़ाकर कहा—"खैर, लीजिए शौक फरमाइए...।"

डार्लिंग के हाथ में शैम्पियन का पैग थमाकर उसने अपना पैग उठाया।

उसके पैग की ओर अपना पैमाना बढ़ा, जाम टकराने की संकोच की दीवार, डार्लिंग ने खुद तोड़ी।

जाम से जाम टकराए तो शहबाज बेसाख्ता कह पड़ा—

"चीयर्स फॉर योअर एवरग्रीन ब्यूटी...।"

"चीयर्स फॉर फ्रैण्डशिप...।" डार्लिंग ने बांकी अदा के साथ कहा।

जाम होंठों से लगे।

शैम्पियन कंठ से उतरी।

सुरूर आंखों से छलके।

हिम्मत शहबाज की जवां हुई।

अगला पैग तैयार करने के लिए डार्लिंग ने बोतल को अपनी ओर खींचा। अधिकारपूर्ण स्वर में बोली—

"दोस्ती में मामला बराबर का चलता है। एक पैग मेरे हाथ से...।"

"मेरा पैग दोस्ती का था...।" शहबाज ने कहा।

"मेरा पैग दोस्ती का भी होगा और साकी का भी...।" डार्लिंग जैसे शैम्पियन के सुरूर में बहकी—"आप मेरी सदाबहार जवानी की शुभकामना कर चुके हैं...इस सूरत में मैं अपने मेजबान की साकी बन जाना चाहती हूं...।"

"जहे किस्मत!" शहबाज की हिम्मत की गांठें और खुलीं। उसका जिस्म सोफे पर फैला और पैर मेज के नीचे से काफी आगे तक सरक गया।

साकी का रोल निभाती डार्लिंग पैग ढाल रही थी, शहबाज का पैर ब्यूटी क्वीन की दिलकश पिण्डलियों की बन्दगी करने लगा था।

साकी ने पैमाना छलकाया—उमर खय्याम बनकर शहबाज ने जाम होंठों से लगाया।

"पैमाने के साथ दोस्ती के तार जुड़ जाने के बाद मैंने हिम्मत संजो ली है कि आपके सवाल का सही जवाब दूं...।" डार्लिंग ने धीरे-धीरे अपना पैग सिप करते हुए कहा।

"अच्छा रहेगा...और मेरे लिए। सुविधाजनक भी...।" शहबाज सुरूर में था, नशे में नहीं।

उसके चेहरे के भाव स्पाई क्वीन को बता रहे थे कि वह

उसे लेकर गुत्थी में उलझा हुआ है। वह उसे वह मानने को तैयार नहीं, जो उसने खुद को जाहिर किया है।

"मैं लाखों नहीं करोड़ों का दांव लगा सकती थी, मगर सिर्फ इस ध्येय से नहीं कि दौलत की हार-जीत मेरा मकसद था...। मेरा असली मकसद कुछ और था।" शहबाज ने कहा—"मरी के इलाके में आप जैसी हसीन, दिलकश, सदाबहार जवानी की मलिका...अकेले आकर होटल के कमरे में ठहरे तो यह बात कम से कम मुझे हजम नहीं होती कि उसके आने का उद्देश्य आम घूमना-फिरना हो सकता है...मरी से हजार गुना खूबसूरत, दिलकश, घूमने-फिरने के स्थान हजारों और भी हैं...बशर्ते कि गांठ में पैसा हो...।"

"पैसों की मेरे पास कमी नहीं! स्विस बैंक का क्रेडिट कार्ड मेरे पर्स में है, अमेरिकन डॉलरों की गड्डियां मेरे ब्रीफकेस में सजी पड़ी हैं...।"

"इतने खुले दिल से इस बात को नुमाया न करें मिस नूर...। लुटेरों की जानकारी में यह बात आ गयी तो आप लुट सकती हैं...।" शहबाज ने हंसकर कहा।

"आपके होते हुए...?" डार्लिंग मुस्करायी।

"नहीं...मेरे होते हुए नहीं...।" शहबाज सीना तानकर बोला।

"बस फिर मैं निश्चिंत हूं।"

"मगर मैं नहीं—मैं तुम्हें करीब से छूकर देखना चाहता हूं मिस नूर...जो हसीन ख्वाब की तरह मेरी निकटता में आ गयी है...मैं तुम्हें छूकर यकीन करना चाहता हूं कि तुम्हारी निकटता, तुम्हारा मेरी साकी बनना महज ख्वाब नहीं, हकीकत है।"

शहबाज के स्वर में शरारत भरा, हुस्न परस्ती के लिए इसरार उभरा।

डार्लिंग बस मुस्करा दी।

मस्त भंवरे के लिए, खिले हुए फूल का हवा का झोंका पाकर डोलना भर निमंत्रण का इजहार होता है—औरत का इनकार न करते हुए, मर्द के इसरार पर चुप्पी लगाते हुए होठों ही होठों में मुस्करा देना रजामंदी की पहचान होती है।

शहबाज ने एक झटके से स्थान छोड़ दिया।

मेज से आगे बढ़कर गुलबदन हसीना के करीब आ बैठा।

वह उसके युवा उन्मादक सांसों की खुशबू से सराबोर होने को आतुर हुआ जा रहा था। उसके मरमरी हाथों को अपने हाथों में लिए उसकी गरमी से अपनी रगों में हलचल पैदा करने की तड़प में भरा हुआ था।

डार्लिंग की ओर से तीसरा जाम पेश करने पर एक हाथ से जाम, दूसरे हाथ से उसका हाथ थामकर बोला—

"आपका असली मकसद क्लब-घर की ओर जाने का क्यों था—मिस नूर?"

"ऐसे जवांमर्दों की तलाश, जो मुंह मांगा पैसा लें और मेरे लिए काम कर सकें...। ऐसे लोगों की खुशबू मैंने क्लब-घर में जमा लोगों में पा ली थी...।" डार्लिंग अपने इरादों के बारे में कुछ और खुली।

"वण्डरफुल...।" शहबाज ने उसके कांधे पर बेझिझक हाथ रख दिया—"वाकई तुम वह नहीं जो दिखती हो नूर...।" उसकी सांसें गहरा गयीं। आंखों की सुर्खी बढ़ गयी। आवाज में नशे की लड़खड़ाहट नुमायां हो गयी।

पहले यंग लेडी, फिर मिस नूर बानो, फिर मिस नूर और अब सिर्फ नूर के सम्बोधन द्वारा शहबाज ने भरपूर बेतकल्लुफी का इजहार कर दिखाया था।

"हां, आपकी सोच ठीक ही है मिस्टर शहबाज खां कि मैं सिर्फ वह नहीं जो दिखती हूं...।" डार्लिंग ने कहा।

उसके अपने कांधे पर रखे हाथ का हल्का दबाव महसूस कर उसने जिस्म ढीला छोड़ा।

"शहबाज की सोच और परख गलत नहीं हो सकती...।" वह बोला—"मरी इलाके में मेरी बादशाहत को लोग इसीलिए कुबूल करते हैं कि मेरी सोच और परख आम लोगों से ऊंची है...।"

"वाकई, इस बात को मैं भी स्वीकार करती हूं...।"

"अपनी सोच और परख के एतबार से ही मैंने तुम्हारे लिए अपने ऑफिस की सीट छोड़ी थी और वहां से तुम्हें यहां ले

आया...।" वह कहता रहा—"आपकी चाल-ढाल, बोलचाल के लहजे और मर्दों की जमात में निडरता के साथ बोलने के अंदाज ने मेरे सामने साबित कर दिया था कि आपकी रगों में कोई उफनती आग है जो आपको इस इलाके में खींच लायी है...।"

"हां, कुछ ऐसा ही है...।"

"जवां मर्द किस्म के गुण्डे आपको किस मकसद के लिए चाहिए थे...?" शहबाज ने पूछा।

"रगों की उफनती आग में प्रतिशोध की ज्वाला है, उसे ठण्डा करने के मकसद के लिए...।" ब्यूटी क्वीन नशे की मदहोशी में डूबी हुई आवाज में बोली।

शहबाज मर मिटा उसकी इस अदा पर। होटों पर अर्थपूर्ण मुस्कान थिरकी। चेहरे के भाव गम्भीर हुए।

नशे की बोझलता के शीघ्र प्रभाव में आने वाला वह इन्सान न था। शैम्पियन की पूरी बोतल से हलक-तर करने के बाद भी वह सामने वाले से होश में रहकर बिजनेस की बातें कर सकता था।

उस समय, उस पर, शैम्पियन के पैगों का, पहलू में मौजूद शोला बदन जवानी के हुस्न का नशा कहीं ज्यादा सिर चढ़कर बोल रहा था। उस समय से पहले, मरी की सरजमीं पर ऐसा एक भी हुस्न उसकी निगाहों से न गुजरा था।

उसका लम्बा कद, और कद के एतबार से सांचे में तराशा हुआ शफ्फाफ बदन कब्र में पैर लटकाए मर्द की रगों में खून में भी गर्मी पैदा करने की कोशिश रखता था। उसकी रतनारी आंखों में यौवन का ऐसा हलाहल भरा हुआ शहबाज महसूस कर रहा था, जिसे होठों से लगाने के लिए हर मर्द की बेताबी बढ़ सकती है।

वह हुस्न का जीता-जागता ऐसा मुजस्सम रूप थी, जिसके कदमों पर जवांमर्द अपना सिर, सूफी अपनी इबादत और बादशाह अपनी सल्तनत न्यौछावर करने को तैयार हो सकता था।

शहबाज इसे अपनी खुशकिस्मती समझ रहा था जो आसमान से टपकी हुई वह हूर, बगैर किसी खास कोशिश के उसकी बांहों में समाने के लिए आ पड़ी थी।

उसकी नाजो अदा में भरपूर दिलकशी थी। उसकी सांसों में जिन्दगी की ताजगी थी। उसके स्पर्श में संजीवनी बूटी की

जीवनदायिनी कशिश थी...।

उसके हर रूप को सीने से लगाने के लिए शहबाज की तड़प बढ़ती चली जा रही थी।

हालांकि वह एक पहेली भी थी और गुत्थी भी—वह वहां से आयी थी, क्यों और किस मकसद के लिए आयी थी, इस बात को भी जानने की दिलचस्पी शहबाज की बढ़ती चली जा रही थी।

पर, जिस तरह अपनी कछार में कोई अफ्रीकी शेर कंगारू को भी देख ले तो उसके शिकार की बात पहले सोचता है, यह बात उसके लिए गौण होती है कि अफ्रीका के जंगलों में आस्ट्रेलियन महाद्वीप का जीव कैसे आ गया—वैसे ही मरी का इलाकेदार शहबाज इस बात को भी उस समय गौण मान रहा था कि गुलबदन हसीना कौन है, कहां से आयी है, कैसे प्रतिशोध में भरी हुई है, वह तो उसके हुस्न की गरमी से पिघलते और जवानी से मदहोश होने के लिए बेकरार हो उठा था।

उसे बांह में अधिक निकटता से समेटते हुए शहबाज ने मादकतापूर्ण स्वर में धीरे से पुकारा—

"नूर...।"

"हूं...।" नशे की बोझलता में डूबी डार्लिंग की उनींदी आवाज उभरी।

"तुम मेरी मेहमान हो...। मैं तुम्हारे प्रतिशोध को पूरा करने में भी पूरा साथ दूंगा...। बेशक वह कैसा भी हो, किसी के लिए भी हो...।"

"तभी तो मैं तुम्हारी दोस्ती कुबूल कर चुकी हूं...।" डार्लिंग ने लापरवाह भाव में कहा।

"अब मैं अपनी दोस्त मेहमान को होटल के कमरे के सहारे नहीं छोड़ना चाहता—मेरी ख्वाहिश है कि मेरे गरीबखाने पर मेरे साथ तशरीफ ले चलो...।"

"मैं तो नशे में हो गयी हूं...।"

"सहारे के लिए मेरी बांहें हैं...।"

"मरी की सबसे मजबूत बांहों का सहारा लेना मेरे लिए तसल्ली भरी बात होगी।"

"कम आन नूर...।" शहबाज उसकी बगलों में हाथ डाल

सोफे से उठा।

उठ खड़ी होते हुए ब्यूटी क्वीन ने उसके मजबूत कांधों का सहारा लिया।

शहबाज उसे लेकर ऑफिस से बाहर निकलने लगा।

कुछ देर बाद,

वह होटल बिल्डिंग से बाहर अपनी शानदार क्वालिस कार के करीब पहुंच रहा था।

उस समय, कुछ फासले पर, एक दरख्त के पीछे खड़ा शहाब, अपने हैण्डी कैमरे द्वारा डार्लिंग के साथ शहबाज को क्वालिस में सवार होने का दृश्य कैद कर रहा था।

कुछ देर पहले,

ऊपर मैसेज मेज पर उसने जो आदेश प्राप्त किया था, उस पर वह ब्यूटी क्वीन और शहबाज के सामने आते ही अमल करने लगा था।

क्वालिस स्टार्ट होने तक शहाब का आटोमैटिक कैमरा चलता रहा। क्वालिस के मुड़कर आंखों से ओझल हो जाने के बाद, वह खुद ही अंधेरे का लाभ उठाते हुए पीछे कदम सरकाता हुआ लुप्त होता चला गया।

हसनपुरा की छिटपुट आबादी के बीच एक सर्व सुविधा से युक्त इमारत में मौजूद सिर जोड़े चार लोगों के बीच, कम्प्यूटर पर उन चित्रों को बेहद ध्यान से देखा जा रहा था, जो खूबसूरत शोला बदन हसीना के थे।

वे चित्र उस समय के थे जबकि वह गुलफाम हसीना होटल शहनाज गुल से निकलकर क्वालिस कार में सवार हो रही थी।

वे चित्र किसी और के नहीं ब्यूटी क्वीन डार्लिंग के थे।

वे उस समय के चित्र थे जबकि डार्लिंग शहबाज के हाथ का सहारा पाए गाड़ी में सवार हो रही थी—और एक घने पेड़ की ओट से हैण्डी कैमरे द्वारा उन दृश्यों को कैद किया गया था।

"इसकी नाक की मोटाई को जरा लम्बाई में लाओ...।"

कम्प्यूटर पर निगाह जमाए चार में से एक ने कम्प्यूटर ऑपरेट करने वाले को निर्देश दिया।

निर्देश का पालन होने लगा।

हसीना की नाक धीरे-धीरे खड़ी आकृति अख्तियार करने लगी।

"होठों को पतला और आंखों की भूरी पुतलियों को नीला करो...।" निर्देश देने वाले ने अगला निर्देश दिया।

उसके हाथ में ब्यूटी क्वीन, इण्डियन 'रॉ' की टाप वन रैंक की स्पाई डार्लिंग की किताबी आकार वाली कलर्ड तस्वीर थी। वह उसी तस्वीर को निगाह में रखते हुए निर्देश दे रहा था।

कम्प्यूटर ऑपरेटर पूरे मनोवेग से निर्देशों का पालन कर रहा था।

"इसके बालों की स्टाइल को बदलो...पोनीटेल स्टाइल में लाओ...।"

एक अन्य प्रभावशाली आवाज कक्ष में गूंजी।

यह आवाज वहां खड़े निर्देश देने वाले से अलग थी।

नया निर्देश जनानी आवाज में दिया गया था। और वह खुद उस कक्ष में मौजूद न थी।

उस नयी आवाज के निर्देश से साफ झलका था कि कम्प्यूटर स्क्रीन पर कार्य करने को चलता सिलसिला सिर्फ उस कक्ष में नहीं, अन्दरूनी कक्ष में भी बारीकी से देखा जा रहा है।

अन्दरूनी कमरे से उभरती आवाज उस कक्ष में लगे माइक्रोफोन पर उभरी थी। और वह आवाज इतनी प्रभावशाली थी कि ऑपरेटर ने सबसे पहले उस निर्देश पर अमल करना आरम्भ किया।

"यस...।" फिर वही आदेशात्मक आवाज उभरी—"अब बालों को आगे से थोड़ा पफ स्टाइल में उठाओ...बालों की स्थिति ऐसी करो जैसे अभी-अभी शैम्पू से धोकर उन्हें ड्रायर से सुखाया गया हो...। बालों में चमक भी है और आवारगी के साथ वे उड़ते हुए भी हैं।"

ऑपरेटर तुरन्त अपना कार्य अमल में लाता जा रहा था।

उस कक्ष में जमा, मर्दों की आंखों में उत्साह की चमक और

तनिक हैरानी का भाव भी उजागर हो रहा था...। क्योंकि निर्देशानुसार बाल की स्टाइल बदलते ही अब तस्वीर में आश्चर्यजनक परिवर्तन आता जा रहा था।

फिर, उस स्थिति को आते देर न लगी जब सभी चौंक पड़े।

जुल्फों की आवारगी सामने आते ही, हाथों में तस्वीर संभालने वाला उत्साह से बड़बड़ा उठा—

"अरे वाह! आश्चर्य है...यह तो ठीक तस्वीर के अनुरूप हो गयी...हूबहू डार्लिंग...! इण्डियन स्पाई डार्लिंग...।"

"वेलडन...।" अन्दर से आवाज उभरी...अब कोई संदेह नहीं रहा कि यह इण्डियन स्पाई डार्लिंग है। स्टॉप द वर्क! डार्लिंग मरी में आ पहुंची है।"

"इतने शार्ट टाइम में, डार्लिंग यहां कैसे आ पहुंची?" हाथ में तस्वीर रखने वाला, स्क्रीन की तस्वीर पर उभरी डार्लिंग की आकृति से मिलान करता हुआ विस्मय भरे स्वर में बड़बड़ाया।

"समय का मामला शार्ट हो या लांग...डार्लिंग के लिए उस बात में कोई फर्क नहीं पड़ता। आफत की परकाला उसे इसीलिए ही कहा जाता है, क्योंकि वह हर उस जगह पहुंच जाती है, जहां पहुंचने की उसकी उम्मीद नहीं की जाती...।" अन्दर की आवाज उभरी। आवाज में मधुरता भी थी और प्रतिशोधी कर्कशता भी।

"फिर...?"

"ब्लैक वारण्ट...।" अन्दर से आदेशात्मक स्वर उभरा।

"वह शहबाज खां के ठिकाने पर है और शहबाज से पंगा न लेने की नीति हमने शुरू से ही अपना रखी है मैडम...।" हाथों में डार्लिंग की तस्वीर रखने वाले ने नीति की बात सामने लाते हुए पहली बार अन्दर से आदेश देने वाली शख्सियत को 'मैडम' का शिष्ट सम्बोधन दिया था।

"प्यार और जंग में नीतियां बदलती रहती हैं। अब एक नयी युक्ति पर चलेंगे। पहले समझौते भरी नीति। उस पर अमल न हो तो नई नीति।"

"वह क्या मैडम...?" उत्सुकता के साथ जियाउल ने पूछा।

"बारूद अली किस पोजीशन में है मिस्टर जियाउल...?" मैडम ने विषय का नया रुख मोड़ते हुए बारूद अली के बाबत

रिपोर्ट मांगी...।

"उसके जख्म अभी हरे हैं—डॉक्टर ने उसे मुकम्मल आराम की सलाह दी है। डॉक्टरी सलाह पर बारूद अली को अमल कराया जा रहा है...।"

"दूसरे शब्दों में उसे काम के लिए अभी मैदान में नहीं उतारा जा सकता...।"

"यस मैडम—फिलहाल यही स्थिति है...।"

"इस स्थिति में कमान तुम्हें सम्भालनी होगी मिस्टर जियाउल...।"

"मैं तैयार हूं।"

"भूखी शेरनी के सामने रास्ता सरल करना पड़ेगा...। उसे शिकारगाह में लाने के लिए बकरी की गंध उस तक पहुंचानी होगी...। उस युक्ति पर काम करना होगा जिसमें हिंसक सिंहनी के लिए शिकारी लोग उस रास्ते पर बकरी को किसी झाड़ में रस्सी से बांध देते हैं और खुद झाड़ के करीबी पेड़ों पर मचान बांधकर इस इन्तजार में बैठ जाते हैं कि कब भूखी शेरनी उस रास्ते से गुजरते हुए बंधी हुई बकरी की गंध पाकर उसे चट कर डालने के लिए उस पर छलांग लगाए...और सही मौके की घात लगाए बैठे शिकारी उस पर रायफलों से निशाने बांधने आरम्भ कर दें...।"

"गुड आइडिया...।" जियाउल ने प्रशंसा की।

"सुनो जियाउल—कभी-कभी भूखी शेरनी को मनचाही राह पर लाने के लिए हांका का तरीका भी अच्छे शिकारी अमल में लाते हैं...हांके के नियम को अमल में लाते हुए उसके रुख को उसी ओर मोड़ा जाता है जिधर बकरी को बांधकर रखा गया होता है...ताकि वह उसकी गंध सरलता से सूंघ सके...।"

"राइट मैडम...।"

"और अब सुनो, भूखी शेरनी डार्लिंग के लिए रास्ता कैसे सरल करना होगा? इसके लिए पहली जरूरत है उसे शहबाज की शिकारगाह से किसी भी तरह बाहर लाना होगा।"

"यस मैडम!" जियाउल ने कहा।

उस कक्ष में मौजूद जियाउल नामक व्यक्ति ही नहीं, शेष तीन भी अपनी पूरी तवज्जो अन्दर से उभरते निर्देश पर केन्द्रित

कर बैठे।

"जांबाज मुजाहदीनों...।" नर्म मगर जोशीले स्वर में सम्बोधन दिया गया—"हमारे मिशन की इण्डियन स्पाई इस समय एक ऐसे अवरोध के रूप में सामने आ गयी है, जिसके लिए हमने पहले से सोचने या इस बाबत तैयारी की बात भी न सोची थी।

आज, जब वह मरी तक आ पहुंची है तो हमारी इस सोच को पहले से कहीं अधिक बल मिल गया है कि वह योजनाबद्ध तरीके से हमारे संगठन की गंध सूंघती हुई जम्मू-कश्मीर पहुंची थी। उसे खत्म कर देने के बाबत हमारा लिया गया फैसला सही था। इसे उसकी किस्मत का हसीन इत्तफाक कहा जाएगा कि वह न सिर्फ बच गयी बल्कि हमारे एरिया कमाण्डर जावेद अली तथा दो जवां मुजाहदीनों को अपना शिकार बना डाला। हमें उनकी मौत का दिली अफसोस है, लेकिन जांनिसार करने वाले मुजाहदीनों को परवरदिगार जन्नत में जगह देगा—क्योंकि उन्होंने कुफ्र के खिलाफ जेहाद करते हुए शहादत पायी है।

हमारा मिशन दुनिया भर के इस्लामी भाइयों की ताकत को मजबूती देना है। ऐसी ताकत हासिल करना है जिसके बल पर अमेरिका की दादागिरी, पूरी दुनिया के परदे पर चल रही है।

ऐसी ताकत, जिसके हाथ में पूरी तरह से आ जाने के बाद दुनिया सिर्फ हमारी फुंफकार भर से थर्रायेगी...। हमारे हाथ में उस ताकत का होना भर, इस बात से दुनिया को थर्राने के लिए काफी होगा कि हम जब चाहें, जिस घड़ी चाहें हीरोशिमा और नागासाकी का दिल दहला देने वाला मंजर, किसी भी देश में दुनिया के सामने पेश कर सकते हैं।

उस ताकत के पूरी तरह हाथ में आ जाने के बाद हमारा पहला निशाना होगा भारत...आगरा से लेकर दिल्ली तक की सरजमीं...। जहां की इमारतों को हम खण्डहर और बस्तियों को श्मशान में बदल देंगे।

अपनी ताकत का मुजाहिरा करने के बाद जम्मू-कश्मीर का मसला रह जाएगा ना ही आजाद और गुलाम कश्मीर का। कश्मीर और कश्मीरी आवाम पूरी आजादी के साथ, सिर उठाकर इस तरह सांस ले सकेंगे जिस तरह इस्राईल की धरती पर यहूदी सीना

तान कर जीते हैं।

और इस सबके लिए जरूरत है कुर्बानी की...। हमारे मुजाहदीन इस काम के लिए मुद्दत से कुर्बानी देते रहे हैं, और देने को तैयार हैं...। लेकिन, इण्डियन स्पाई एक बड़ी रुकावट के रूप में हमारे सामने आ गयी है, उसका खत्म होना इस समय की सबसे बड़ी जरूरत है।'

अन्दरूनी कक्ष की ओट में मौजूद अपनी मैडम के जोशीले अलफाजों के जादूगरी में भरे जियाउल सहित चारों सदस्यों के सीने फख्र से चौड़े होते रहे। एक क्षण के लिए रुकने के बाद अन्दर से पुनः आवाज उभरी—

"अब मैं उस विषय पर आती हूं कि शहबाज के ठिकाने से, हांका लगाकर अपने शिकारगाह की ओर भूखी शेरनी डार्लिंग को कैसे लाना है...।"

चारों सदस्य सांस रोककर मैडम की योजना को समझने के लिए पूरा ध्यान लगा बैठे।

अन्दर से उभरती योजना उन चारों तक पहुंचती रही। चारों उसे पूरे ध्यान के साथ अपने मस्तिष्क में बिठाते चले गये।

"ये झुकी-झुकी निगाहें...कह रही हैं रात का फसाना...।" दूसरे कमरे से फ्रेश होकर आते हुए, शहबाज ने, अभी-अभी बिस्तर से उठ बैठी ब्यूटी क्वीन से तरन्नुम भरी आवाज में छेड़ भरी बात कही।

ब्यूटी क्वीन मुस्करा दी।

उसने बांहें उठा मादक अंगड़ाई ली। शहबाज के छेड़ को बल देते हुए सुस्ती भगाने का अभियान करते हुए रात के फसाने का इजहार किया।

शहबाज खुश था—बहुत खुश।

प्रसन्नता से उसकी बांछें खिली हुई साफ नजर आती थीं। वह फ्रेश होकर ताजा दम रूप में डार्लिंग के सामने आया था। उसके जिस्म पर शानदार हाऊस गाउन था।

वह बैड पर डार्लिंग के करीब आ बैठा, प्यार भरे अन्दाज में धीरे से अपना दाहिना हाथ उसके कंधे की ओर बढ़ाया।

"क्या अब फिर...?" डार्लिंग सकुचाने का अभिनय करते हुए जरा परे सरकी।

"जानेमन, तुम चीज ही इतनी प्यारी हो कि तुम्हारे हुस्न के पैमाने को एक बार होंठों से लगाने के बाद प्यास बुझने के बजाय भड़कती ही जाती है—बार-बार होठों से लगाने को दिल चाहता है।"

"प्लीज—अपने दिल की चाहत पर अब काबू रखिए...। मुझे लगता है, जिस्म की रग-रग तोड़कर रख दी गयी है तुम्हारे हाथों...।" डार्लिंग ने नखरीले अन्दाज में कहा।

उसने एक ऐसी बात कही, जिस पर दुनिया का हर मर्द, अपनी जवांमर्दी के गर्व में चूर होकर शान से गर्दन ऊंची कर सकता है।

हर मर्द को इस बात की चाह होती है कि वह औरत के जिस्म की रग-रग को बिस्तर की सिलवटों के कोमल साये में तोड़कर रख दे।

हर मर्द को इस बात को सुनना अच्छा लगता है कि औरत ने उसकी मर्दानगी का लोहा स्वीकार कर लिया है।

और अगर ऐसी बात कहने वाली हुस्न परी, डार्लिंग जैसी युवती हो और सुनने वाला शहबाज जैसा अय्याश मिज़ाज इन्सान तो बात की कीमत बढ़ जाती है।

"उठो, जाकर फ्रेश होकर आओ...।" शहबाज ने कहा—"शानदार नाश्ता लो, और उस पर दो पैग शैम्पियन के घूंट उतारो...जिस्म की सारी टूटन रफूचक्कर हो जाएगी।"

"दो पैग शैम्पियन...!" डार्लिंग ने बैड से कदम उतारते हुए कहा—"जनाब शहबाज खां, मैं अब इतनी बेवकूफ भी नहीं...।"

"बेवकूफ भी नहीं, क्या मतलब...।" शहबाज ने चौंकने का अभिनय किया।

"अब आप इतने भोले भी नहीं कि मेरा मतलब भी न समझ सको...।" डार्लिंग ने कनखियों से देखते हुए लुभाया।

"अगर मैं कहूं—सचमुच मैं नहीं समझा, तब...?"

"फिर मैं समझाऊंगी—और समझाने वाली बात यह है कि जिस तरह होटल शहनाज गुल के अपने ऑफिस में मुझे शैम्पियन पिला कर आपने मेरे दिलो-दिमाग को अपने वश में कर लिया था...न जाने कौन-सा जादू जगाया था कि आपके इशारे पर मैं आपके साथ यूं चली आयी थी जैसे पतंग से बंधी डोर...।

आप सीधे अपने बैडरूम में ले गये और फिर जो कुछ हुआ...उसमें जिस्म की रग-रग की टूटन के अलावा कुछ याद रखना बेकार है। उसी तरह अगर दो पैग शैम्पियन यदि मेरे पेट में एक बार फिर उतर गयी तो आगे की आपकी हरकतों को याद रखना मेरे लिए बेकार होगा...मेरी टूटन और बढ़ जाएगी...और आप कहेंगे...अभी तो दिल भरा नहीं...।"

डार्लिंग के स्वर में मीठी शिकायत भी थी और रात के मादकता भरे अच्छे लम्हें गुजारने का मधुर एहसास भी।

"अब मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगा...।" शहबाज ने वायदे के अन्दाज में कहा।

"आप न भी कहें—तब भी कम से कम दिन में पीने की भूल मैं न करूंगी।"

"और भी कुछ वजह है...?"

"वजह यह है कि पीकर मैं अपनी सुध-बुध खो बैठती हूं...और मैं नहीं चाहती कि दिन के समय मैं अपनी सुध-बुध खोऊं।" मुझे अपने उस उद्देश्य को भी ध्यान में रखना है, जिसके लिए मैं यहां आयी हूं।"

"बात में दम है।"

"तो फिर मैं फ्रेश होने जाऊं...?"

"हां जाओ—नाश्ते का हुक्म देकर मैं आता हूं, जब तक आप बाथरूम से तशरीफ लायेंगी—गर्मागर्म नाश्ता टेबल पर तैयार मिलेगा।"

"फिर तो वाकई इस मामले में मुझे जल्दी करनी चाहिए क्योंकि सोकर उठने के बाद अब मुझे अहसास हो रहा है कि भूख के मारे पेट में चूहे कुछ ज्यादा ही उछल-कूद कर रहे हैं।"

कहती हुई डार्लिंग ने तेज कदमों से बैडरूम से अटैच्ड बाथरूम और टायलेट की ओर रुख किया।

फिर कुछ देर बाद,

उधर बाथरूम के शॉवर के चल पड़ने की आहटें शहबाज के कानों ने महसूस की थीं। इधर, नौकरों ने टेबल पर नाश्ता लगाना आरम्भ कर दिया था।

उधर हुस्न की परी डार्लिंग शॉवर के ठण्डे-गर्म पानी की फुहारों के बीच जिस्म की सुस्ती भगाती सोच रही थी—शहबाज शानदार इन्सान है...उसके रईसाना ठाठ-बाट उसकी आकर्षक मर्दाना पर्सनाल्टी से भी कहीं शानदार है। वह अकेला दस मर्दों के बराबर है। उसे विश्वास में लेकर ही वह आगे बढ़ने का रास्ता पा सकती है।

इधर, शहबाज नाश्ते की टेबल पर बैठा—सजी हुई डिशेज से उठती खुशबुओं के बीच सोच रहा था—'हुस्न परी, उसकी जिन्दगी में आयी हर औरत के मुकाबले सबसे हसीन और दिलकश है।'

वह चलते शॉवर की आहट को सुन खुशनुमा कल्पनाओं में डूब-उतरा रहा था कि उसके सन्दली ज़िस्म पर पानी की बूंदें ठहर न पा रही होंगी।

उसका बदन इतना चिकना था कि छूते हुए भी मैला हो जाने का अंदेशा पैदा होता था।

उसके जिस्म के कटाव इतने नायाब थे कि बरबस ही कुदरत की कारीगरी की तारीफ करने को जी करने लगता था। वह रूपसी थी, अप्सरा थी, वीनस थी या यूसुफ की जुलेखा थी—इस बात में फर्क करना उसके लिए मुश्किल हो रहा था।

वह जो कुछ भी थी, दिलो-दिमाग में उतर जाने वाली थी।

उसके दिल की चाहत थी कि जिन्दगी भर के लिए उसके पास ठहर जाए।

वह ऐसी थी जिस पर अपनी जान न्यौछावर कर देना गर्व की बात मानता था। साथ ही सोच रहा था—उसका प्रतिशोध क्या है?

इन्तजार की घड़ियां पल-पल बीत रही थीं।

शॉवर रुका तो उसके दिल की धड़कनें और भी ज्यादा बढ़ीं।

माहताबी चेहरे के एक बार फिर जल्वा अफरोज होने का वक्त आ गया था।

वह बाथरूम से बाहर आयी—घटाओं के बीच बिजली चमकी या चौदहवीं का चांद आकाश के सीने पर सजा। रेशमी जुल्फों के शबनमी कतरों को टॉवल से हल्के-हल्के सुखाती हुई वह बाहर आयी थी। और फिर वह उसके सामने सोफे पर नाश्ते की टेबिल पर आ बैठी।

शबनमी कतरों से नहाए हुए खिले गुलाब-सा दमकता, मुखड़े को शहबाज जी भरकर निहारते रहना चाहता था—कि उसकी सरगमी आवाज के जादू से शहबाज ख्वाबों की दुनियां से बाहर आया। वह कह रही थी—

"मैं तो नाश्ते की ओर हाथ बढ़ाती हूं...आपका अगर मुझे देखते ही रहने से पेट भरता है तो देखते रहिए...।"

शहबाज मुस्कराया। उसका साथ देने के लिए हाथ बढ़ाया।

"एक बात और,..." शहबाज ने नाश्ता करते हुए कहा—"आपका सामान होटल के कमरे से मैंने यहीं मंगवा लिया है।"

"क्यों भला...?"

"मेरी मेहमान बनकर, दोबारा होटल के कमरे में जाकर ठहरें यह बात मुझे गंवारा नहीं।"

"मगर मैं यहां ठहरने के लिए नहीं, एक बड़ा मकसद लेकर आयी हूं; यह बात मैं पहले ही बता चुकी हूं।" डार्लिंग ने गम्भीर स्वर में कहा।

"आपकी रगों में आग है इस बात को मैं जान चुका हूं।" शहबाज भी गम्भीर होकर बोला—"अब इस आग को मेरे सामने आ जाना चाहिए। तुम्हारे मकसद को पूरा करने के लिए, मरी के किराये के गुण्डों की नहीं बल्कि मेरी ओर से भरपूर सहायता मिलेगी...। सिर्फ सहायता ही नहीं बल्कि तुम्हारे ऊपर आने वाले हमले के लिए मैं चट्टानी दीवार बन जाऊंगा। मरी की धरती पर ऐसा कौन मर्द पैदा हो गया जिसने तुम्हारी रगों में आग भर दी है और मुझे इस बात की खबर नहीं हो पायी है। किसी ने तुम्हारे बिजनेस में चीटिंग की है, फ्राड या धोखा दिया है। इज्जत पर हाथ डाला है या कुछ और ऐसी हरकत कर दी है जिससे आप जान

की बाजी लगाने का इरादा लेकर यहां तक आ गयी हैं। मैं उसकी ईंट से ईंट बजा दूंगा। उसके लिए दुनिया छोटी कर दूंगा।"

जब तक वह बोलता रहा थ्रिल क्वीन उसका चेहरा गौर से देखती रही। उसके स्वर में मर्दों वाली दिलेरी थी। उसके कौल में दृढ़ता थी...। उसके लिए जान पर खेल जाने का जज्बा था।

ऐसा जज्बा, जिसमें औरत के प्यार और हुस्न की चाशनी के रंग में पूरी तरह रंग कर मर्द, रणभूमि में दुंदुभी बजा देता है। कत्ल का बाजार गर्म कर देता है। खून की नदियां बहा देता है। बस्तियों को खण्डहर में वीरान कर देता है।

उसमें उसके प्रति समर्पण का वही जोश और जज्बा था— जो फरहाद के दिल में अपनी शीरी के लिए पहाड़ तोड़कर दूध की नदी निकालकर लाने का था...।

"बोलो नूर, मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं...?" उसे चेहरा तकता देख, शहबाज ने जोशीले स्वर में कहा।

"तुम मेरे लिए सिर्फ यह कर सकते हो कि हिजबुल मुरसलीन के उन ठिकानों के बारे में जानकारी दे सकते हो जहां इन दिनों उनके ट्रेनिंग कैम्प चल रहे हैं...।"

"हिजबुल मुरसलीन...!" शहबाज चौंका।

डार्लिंग मुस्कुरायी—

"क्या यह आसमान से सितारे तोड़ लाने जैसी बात है, जिसे तुम पूरा नहीं कर सकते...?" डार्लिंग ने जैसे उसकी जवांमर्दी को चैलेंज किया।

"तुम गलत सोच रही हो...।" शहबाज मुस्कराया। "बल्कि मैं अब इस बात को सोच रहा हूं कि उनका एक हरकारा मेरे पास जो पैगाम लेकर आया था, सचमुच खासा महत्वपूर्ण था।"

"हिजबुल मुरसलीन का हरकारा तुम्हारे पास पैगाम लेकर आया था?" डार्लिंग ने दिलचस्पी के साथ पूछा।

"आधी रात के समय जब तुम सो गयी थीं।"

"पैगाम क्या था...?"

"दोस्ती के हाथ को मजबूत रखने के लिए तुम्हें हिजबुल मुरसलीन के कैम्प में तोहफे के रूप में पहुंचा दिया जाए...।" उसने मुस्कराकर बताया।

अब चौंकने की बारी डार्लिंग की थी। उसने लापरवाही से कहा—"आपको उनका प्रस्ताव मान लेना चाहिए था।"

"मैंने हरकारे को उस तम्बीह के साथ वापस भेज दिया था कि शहबाज औरत के जिस्म की दलाली नहीं खाता...।" वह कहता रहा—"उस पैगाम को मैंने बहुत हल्के रूप में लिया था। मैं सिर्फ यह समझा था कि तुम जैसी हसीन गुल नाजनीन, पर हिजबुल मुरसलीन के किसी ओहदेदार का दिल आ गया है। वह मेरी ओर से तुम्हें अपनी अय्याशी के लिए तोहफे के रूप में चाहता है...।" वह कहता रहा—"इस तरह के मामले हमारे बीच में पहले चल चुके हैं...। सीमा के उस पार से अगुवा करके लायी गयी कोई हसीन नाजनीन को उन्होंने कुछ दिनों तक अपने इस्तेमाल में रखा। फिर उन्होंने जब इस बात को महसूस किया कि और ज्यादा दिनों तक उसे अपने कैम्पों में रखने से उन्हें असुविधा होने लगी है तो वे उसे सुरक्षा की दृष्टि से मेरे संरक्षण में पहुंचा गये। मैंने उसे संरक्षण दिया।"

"यह है आपकी और हिजबुल वालों की दोस्ती के हाथ का आधार...।" डार्लिंग ने तनिक व्यंग्य से कहा।

"नहीं!" शहबाज ने झटके से इनकार किया—"शहबाज अपने इलाके का ऐसा शेर है जो दूसरे शिकारों की जूठन नहीं खाता। ऐसी कोई भी औरत मेरे संरक्षण में जब भी आयी मैंने उसे अपने इस्तेमाल में लाने के बजाय अपने आदमियों के जरिये उसे सीमा पार पहुंचाने का कार्य किया है। वे भी इस बात को जानते हैं कि मैं उनके काम आता रहा हूं...मैं उनके एहसान के किसी बोझ के नीचे नहीं दबा हूं।"

"फिर उन्होंने अपने हरकारे के माध्यम से मेरे मामले में ऐसा प्रस्ताव क्यों भेजा कि आप मुझे उनके कैम्प में भेजकर दोस्ती का हाथ मजबूत करें...?" डार्लिंग ने सवाल किया।

"उनके प्रस्ताव को उस समय मैंने उनकी नासमझी समझा था। बात को गम्भीरता से न लिया था। इसकी वजह यह थी कि उनके ओहदेदार बदलते रहते हैं। मैंने सोचा था—कोई नये ओहदेदार ने चार्ज सम्भाला होगा—उसने नादानी में ऐसा प्रस्ताव भेज दिया होगा। सही वक्त पर मैं उसे समझा दूंगा कि शहबाज

ऐसे टुच्चे काम नहीं किया करता—वह अपनी समझदारी दुरुस्त कर ले...।"

"और अब...?"

"अब मेरी समझ में आया है कि मामला सीरियस है। हरकारे का पैगाम, दोस्ती के हाथ की मजबूती वाली बात, चैलेंज के रूप में है। उन्होंने आभास कराने की मूर्खता की है कि अगर मैंने ऐसा न किया तो दोस्ती के मिले हुए हाथ अलग हो जायेंगे। और जब हाथ अलग होते हैं तो वे दुश्मनी में बदल जाते हैं...।" शहबाज के स्वर में हल्की गुर्राहट थी।

"हिजबुल वालों से आपकी दोस्ती का आधार क्या है?"

"अब तक दोस्ती का आधार सिर्फ आपसी सूझबूझ पर कायम रहा है। मैं उनके मामले में कोई टांग नहीं अड़ाता था, वे मेरे मामलों में दखलअंदाजी करने मेरे इलाके को डिस्टर्ब करने कभी नहीं आते थे। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो हम एक-दूसरे को नजरअंदाज करते रहते थे। उन्होंने हसनपुरा तथा आसपास के जंगलों, घाटियों, बस्तियों पर अपना कब्जा जमा रखा है। वे उन इलाकों में क्या करते हैं, मैं जानकारी रखने की कोशिश नहीं करता...। मैं अपना बिजनेस किस तरह चलाता हूं, इस मामले में वो कभी दखलअंदाजी नहीं करते। जरूरत पड़ने पर उनके आदमी उधर से इधर आकर हथियार और औरतों को मेरे पास छुपा जाते हैं...। मैं उन्हें अपने ऊपर आंच आये बगैर मदद दे देता हूं...।

संक्षेप में कहा जाए तो हम एक-दूसरे के खिलाफ ऐसा कुछ नहीं करते जिससे हितों का टकराव हो...।"

"लेकिन, मुझे लेकर आज से ही स्थिति बदल जाएगी...।" डार्लिंग ने उसे चेताया।

"मुझे परवाह नहीं...।" शहबाज की बांहें फड़कीं, "अगर उन्होंने छेड़खानी की तो मैं उनकी ईंट से ईंट बजा दूंगा, लाशें बिछा दूंगा, खून की नदियां बह जायेंगी...! पूरे इलाके से उनके कदम उखाड़ दूंगा...।"

"लेकिन मैं नहीं चाहती कि स्थिति बदले...।"

"पर तुम्हारी रगों में उनके लिए प्रतिशोधी आग है।"

"इस आग को मैं खुद ठण्डा करूंगी...।"

"तुम हो क्या...?" शहबाज ने कौतूहल के साथ पूछा।

और अभी डार्लिंग कुछ कहने की सोच ही रही थी कि उसी समय शहबाज के मोबाइल पर बीप उभरी—।

उसका मोबाइल बैड पर सिरहाने रखा था। वह फुर्ती से उठा। उसने बैड तक जाकर मोबाइल उठाया।

स्क्रीन पर नम्बर देखा। नम्बर अनजान था, फिर भी उत्सुकतावश लाइन देते हुए दबंगता भरी आवाज में बोला—

"हैलो...शहबाज खां अटैण्डिंग...।"

"मिस्टर शहबाज खां...मेरा हरकारा (संदेशवाहक) आपके पास एक पैगाम लेकर आया था...।" दूसरी ओर से कहा गया।

शहबाज के तेवरों में बल पड़े।

"मैं जवाब दे चुका हूं...।" शहबाज बोला—"अपना परिचय दो...।"

"मुझे जियाउल कहा जाता है।" दूसरी ओर से सपाट लहजे में कहा गया—"इन दिनों हिजबुल का हसनपुरा इलाके का एरिया कमाण्डर हूं मैं...।"

"नये हो...।"

"हां...! वरना एक-दूसरे को जानते होते...।"

"मैं तुम्हें जानने की आवश्यकता नहीं समझता। तुम मुझे अपने बारे में बताओ, और यह भी कि इस समय किस मकसद से मुझे कॉल करने का कष्ट किया है।"

"मैं हिजबुल का ओहदेदार नम्बर चार हूं...।" दूसरी ओर से भी गुर्राहट उभरी—"हमारी कमान के चीफ की ओर से फैसला किया गया है कि जो पैगाम तुम्हें रात को भिजवाया गया था मिस्टर शहबाज उस पर दोबारा गौर करो—यह हमारे और तुम्हारे दोस्ती के हित की बात होगी।"

"क्या इसे मैं तुम्हारी मनमानी मानूं...?" शहबाज का चेहरा तमतमा उठा।

"मैं इस बात को भी बता देना चाहता हूं कि तुम्हारे होटल में पैसेंजर के रूप में आकर ठहरने वाली युवती इस दुनिया की स्पाई एजेंटों में सबसे खतरनाक...इण्डियन स्पाई रॉ की डार्लिंग

भटनागर है...।"

शहबाज ना ही चौंका, ना ही अचरज में भरा—अलबत्ता उसने डार्लिंग की ओर पैनी और हल्की मुस्कान भरी निगाह जरूर डाली। बोला—

"तो...?"

"उसने डल लेक में हमारे एक एरिया कमाण्डर तथा दो अन्य महत्वपूर्ण साथियों को मौत के घाट उतार दिया है। बारूद अली नामक एक मुख्य ओहदेदार को बुरी तरह जख्मी कर दिया है।"

"यह तुम्हारी अपनी सरदर्दी है।" शहबाज का स्वर लापरवाह था—"कमजोर मोहरे शतरंजी बिसात पर पिट जाते हैं...। उसके लिए मैं क्या कर सकता हूं?"

"उसके अलावा भी हमारे मिलिटेण्टों के खिलाफ मैदान में उतरकर वह उन्हें मौत के घाट उतारती रही है...।"

"हर एक को अपने ढंग से जीने और अपने फर्ज को पूरा करने की आजादी है। इण्डियन स्पाई होने के नाते उसकी ड्यूटी में यह बात शामिल है कि तुम्हारा संगठन भारत की सीमा में घुसकर हरामीपना करे तो वह अपनी ड्यूटी पूरी करे...।"

"हम अजीम मकसद के लिए जिहाद कर रहे हैं मिस्टर शहबाज खां...।" दूसरी ओर से जियाउल ने अपने शब्दों पर जोर देकर जज्बाती होकर कहा—"हम दुनिया में इस्लामी देशों और इस्लामी भाइयों की ताकत को मजबूत करने की कोशिश करने की योजना पर चल रहे हैं—तुम्हें कुफ्र के खिलाफ हमारे जेहाद में साथ देना चाहिए...।"

जियाउल के भावनात्मक शब्दों को सुन शहबाज का चेहरा रोषपूर्ण भाव में तमतमा उठा। वह गुर्राकर बोला—

"जम्मू-कश्मीर की घाटियों में अपने ही कौम और मजहब के लोगों पर गोलियां बरसाना, औरतों की अस्मत के साथ खेलना, बच्चों के सीनों में संगीनों से सूराख कर खून के फव्वारे उड़ाना ही अगर तुम्हारा जेहाद है मिस्टर जियाउल तो मैं ऐसें जेहाद पर थूकता हूं...। इस मामले में तुम जैसों का एक बार भी साथ देना अपने जिन्दगी भर के गुनाहों के बोझ से भी ज्यादा गुनाह का बोझ

समझता हूं।" शहबाज के स्वर में दबंगता थी और वह कहता रहा—"तुम जेहादी नहीं बर्बरता के प्रतीक हो; तुम इन्सान के बजाय हैवान हो। तुम जैसे लोगों को सारी दुनिया में एक ही नाम दिया गया है—आतंकी...टेरेरिस्ट, दहशतगर्द...। ठीक नाम दिया गया है। तुम लोग सिरफिरे भेड़िये हो...। और ऐसे पागल भेड़ियों को शहबाज खां से किसी तरह के साथ या मदद की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। मैं लाइन काटता हूं...।"

"नहीं...।" दूसरी ओर से चीखकर कहा गया—"लाइन काटने से पहले एक आखिरी बात सुन लो शहबाज खां—आज से और अभी से हमारे और तुम्हारे बीच दुश्मनी का पाला खिंच गया है...। तुम्हारी मरी इलाके में दादागिरी के दम पर कायम की गयी सल्तनत नेस्तनाबूद कर दी जायेगी...आज से अभी से...। तुम अंजाम भुगतने के लिए तैयार हो जाओ...। कुफ्र का साथ देने वाले इन्सान तुझे जहन्नुम में भी जगह न मिलेगी...।"

"हा...हा...हा...!" शहबाज खां ठठाकर हंसा—"पागल भेड़ियों के जब मरने के दिन आते हैं तो कुत्तों की तरह भौंकना आरम्भ कर देते हैं।" दूसरी ओर से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया गया।

सम्बन्ध विच्छेद किये जाते ही शहबाज़ फुर्ती से उठा।

उसके चेहरे पर न तो ज़रा-सी शिकन थी, ना ही खौफ या चिंता के भाव।

वह डार्लिंग से मुखातिब हुआ—

"तुम जल्द-से-जल्द तैयार होकर यहां से बाहर निकलने की तैयारी करो।" डार्लिंग ने स्थान छोड़ दिया था।

वह शहबाज के दिलेराना शब्दों से दूसरी ओर की बातचीत का विषय सुन-समझ चुकी थी।

शहबाज़ उसे जल्दी-जल्दी इस बात को बताने लगा था कि हिजबुल मुरसलीन के ओहदेदार नम्बर चार ने क्या कहा—तथा यह भी कि उसने दुश्मनी का पाला खींच दिया है।

डार्लिंग ने फुर्ती से बढ़कर जिस्म पर वह पोशाक धारण क़रनी आरम्भ कर दी जिसे पहनकर वह शहबाज के हमराह होटल में वहां तक आयी थी।

शहबाज ने दूसरे कक्ष से लाकर डार्लिंग का सफारी बैग उसके सामने रखा।

उसने झपटकर अपनी आटोगन उठाते हुए एम्युनेशन की पेटी कमर में कसते हुए कहा—

"हम यहां से सिर्फ इसलिए हट रहे हैं क्योंकि मैं इस बात का अन्दाजा लगा चुका हूं कि सिरफिरों की निगाह इस ओर है कि हम इस समय इस कक्ष में हैं। पागल भेड़िये राकेट लांचर से हमला करके इमारत को ध्वस्त कर सकते हैं। इस स्थिति में हम जंग के मैदान में उतरे बगैर अपनी मूर्खता से मारे जा सकते हैं...इसलिए इस जगह को मैं जल्दी से जल्दी छोड़ने का निर्णय ले चुका हूं...।"

डार्लिंग ने उस समय बहुत जल्दी दिखायी।

वह आभास कर चुकी थी कि बहस का वक्त नहीं...।

शहबाज के जज्बातों से वह वाकिफ हो चुकी थी। हिजबुल वालों ने शेर को ललकार दिया था...शेर अपनी गुफा से निकलकर खुले मैदान में उनका मुकाबला करना चाहता था। तुरत-फुरत—खुद हथियारों से लैस होने के बाद शहबाज ने अपने जैसा ही हथियार और एम्यूनेशन की पेटी तथा एक थैले में मौजूद हथगोले तथा कुछ अन्य विस्फोटक डार्लिंग के हवाले किये।

उसके कंधे पर हाथ रख—थपथपाकर कहा—

"मुझे फख्र है कि मैं एक ऐसी लेडी के साथ जंग में उतर रहा हूं जो माफियाओं की धरती इंग्लैण्ड में कदम रखती है तो अपनी सिंहनी ललकार से माफिया बिग बासों का कलेजा कंपा देती है। उनके अड्डों को तबाह करने पर आती है तो उनका नामो निशान मिटा अकेले दम पर उनके कदम पूरे इंग्लैण्ड से उखाड़ फेंकती है।

यह जब अण्डरवर्ल्ड डॉन सरगनाओं से टकराती है तो आसमानी बिजली बनकर उनके मिशनों को खाक करती चली जाती है।

मैं जान चुका हूं कि तुम डार्लिंग हो...! डार्लिंग भटनागर...जिसके किस्से रॉबिन हुड और हर्क्युलिस की तरह पाकिस्तान के चप्पे-चप्पे पर, बच्चे-बच्चे की जुबान पर हैं।

आई० एस० आई० वालों की पैंटे तुम्हारे नाम से गीली हो जाती हैं।

ये मुट्ठी भर हिजबुल मुरसलीन वाले, इनकी बिसात क्या है...। मैं अपने आदमियों के बल पर अकेला इनका ताजिया ठण्डा कर सकता हूं। इनके ट्रेनिंग कैम्पों को उखाड़कर वादिये मरी में इस तरह दफ्न कर सकता हूं कि बरसों-बरस तक इनकी फसल का एक पत्ता भी हरा होने का नाम न ले...!"

यह उसका नया रूप था जो डार्लिंग के सामने एकदम से उभरकर आया था। अब तक वह उसके बारे में समझती रही थी कि वह दिलफेंक आशिक और रौबीला इन्सान है, पर लगा वह जोश के साथ खूनी जंग के मैदान में उतरने वाला जवां मर्द भी है।

आनन-फानन में डार्लिंग का हाथ थाम शहबाज अपनी रिहाइश गाह के अन्दरूनी हिस्से से बाहर निकल आया। वह उसका हाथ थामे-थामे अपनी क्वालिस गाड़ी तक पहुंचा।

डार्लिंग को गाड़ी के अगले हिस्से में स्थान सम्भालने को कहकर खुद ड्राइविंग सीट सम्भाली।

उसने अपनी गाड़ी आगे बढ़ाई ही थी कि क्षणेक बाद ही इमारत के एक हिस्से में जबर्दस्त धमाका हुआ।

इतना जबर्दस्त धमाका कि आसपास का इलाका दहल उठा।

धमाका रॉकेट लांचर का था।

इमारत के परखच्चे उड़ते हुए दिखाई दिये।

शहबाज तनिक भी विचलित हुए बगैर फर्राटे से गाड़ी दौड़ाता रहा।

वह विचलित न हुआ था पर जुनून में जरूर भर गया था क्योंकि अपनी रिहाईशगाह पर रॉकेट लांचर के धमाके के साथ ही, उसने गाड़ी की रफ्तार तूफानी गति से बढ़ा दी थी।

वह प्रतिशोधी हिंसा में भरा हुआ दहाड़ा।

"मैं उन हरामजादों की लाशों से हसनपुरा की घाटियों को पाट दूंगा...।" और थ्रिल क्वीन—स्तब्ध थी, रोमांचित थी। सोच रही थी—एकदम, फिल्मी रैम्बो जैसा इन्सान। जिसे अपने नुकसान

की जरा भी परवाह नहीं।

कुछ सेकण्डों में ही उसने हिजबुल वालों से बात बिगाड़ डाली थी।

किसके लिए...?

सिर्फ उसके लिए।

हिजबुल वाले उससे सिर्फ यह चाहते थे कि उसे अर्थात् डार्लिंग को वे अपने कैम्प में देखना चाहते थे। ऐसा हो जाने पर वे उसके साथ दोस्ती का हाथ मजबूत रखना चाहते थे।

पर, शाहबाज ने उनकी बात मानने से इनकार कर दिया था।

उसने अपनी जवांमर्दी का परिचय दिया था।

जबकि डार्लिंग अपनी जंग खुद अकेले लड़ना चाहती थी। परिस्थितियां ऐसी पैदा हो गयी थीं कि अब शहबाज का साथ देना या उसका साथ लेना उसकी मजबूरी हो गयी थी।

एक इन्सान—उसके लिए अपना सब कुछ कुर्बान करने पर कमर कस चुका था—दौलत, इलाकेदारी, जान...सब कुछ की उसने बाजी लगा दी थी।

हार या जीत!

या तो हिजबुल वाले नहीं या वह नहीं।

अपनी-अपनी सरहद में दो शेर आजादी से विचरण कर रहे थे, तब तक दोनों के बीच बगैर समझौते के समझौता था कि एक दूसरे के मामले में दखल न देंगे।

हिजबुल वालों ने शहबाज के मामले में दखलअंदाजी कर दी थी तो वह हथियार लेकर खूनी जंग के लिए मैदान में उतर पड़ा था।

कुछ देर बाद,

नागरिक आबादी छोड़—घाटियों वाले इलाके में पहुंचते हुए शहबाज ने कहा—

"अब तुम इस बात को बताओगी कि तुम्हारे लहू में हिजबुल वालों को लेकर आग क्यों भरी हुई है? मेरे सामने अब सारी स्थिति आ जानी चाहिए ताकि तुम्हारी आग को मैं अपनी आग के रूप में अपनी रगों में भर सकूं...।"

"वे कुत्ते मेरी सहेली रेशमा को अगुवा कर ले आये हैं...।"

"रेशमा...!" शहबाज ने दोहराया।

"काश्मीर की बेटी...।"

और फिर,

थ्रिल क्वीन तेजी के साथ शहबाज से बताने लगी कि किस तरह वह डल झील पर रेशमा की किश्ती पर सवार थी कि उस पर कातिलाना हमला हुआ—और परिणामस्वरूप हमलावरों को उसने अंजाम तक पहुंचा दिया।

उसके पीछे एक दर्जन हमलावरों ने रेशमा के शिकारे पर हमला किया। खूनी मुठभेड़ में चार मारे गये...रेशमा के मां-बाप को जख्मी करके दहशतगर्द रेशमा को अगुवा कर लाये।

"हां, इस समाचार को मैंने अखबार में पढ़ा है...।" शहबाज ने सोचपूर्ण स्वर में बताया।

"और मैं रेशमा को छुड़ाने और उसके अपहर्ताओं को कब्र में उतारने के उद्देश्य से यहां आयी हूं।"

"तुम्हारा प्रतिशोध वाजिब है...।" शहबाज ने आतंकियों के विरुद्ध नफरत का इजहार करते हुए कहा—"ये जुनूनी कीड़े इसी काबिल हैं कि इन्हें दफन कर दिया जाए। इनसे इन्सानियत का न तो कोई भला हो सकता है, ना ही किसी कौम या धर्म का। ये न जाने किस जगह से इस्लाम के नाम पर गलत पाठ पढ़कर आये हैं...इस्लाम कभी खून-खराबे की इजाजत नहीं देता। ये तो इस्लाम को मानने वालों का ही खून बहाते हैं, औरतों की इज्जत पर हाथ डालते हैं, बच्चों का कत्ल करते हैं...और इस बात का डंका पीटते हैं कि ये जेहाद कर रहे हैं...। मैं ऐसे जेहादियों पर थूकता हूं, नफरत करता हूं...।"

थ्रिल क्वीन ने आभास किया—न जाने कब से आग में भरा बैठा था शहबाज, हिजबुल वालों के प्रति। पेट्रोल और आग अलग-अलग थी तो दोनों का अस्तित्व बरकरार था...आग ने पेट्रोल की ओर बढ़कर उसे छूने का प्रयास कर लिया था तो आग भड़क उठी थी...।

फर्राटे के साथ गाड़ी दौड़ाते हुए शहबाज ने एक वीरान घाटी के इलाके में ले जाकर क्वालिस की रफ्तार धीमी की। ब्रेक

लगाते हुए वह गाड़ी से उतरा।

पीठ पर बंधा अपना थैला संभाले हुए वह लगभग दौड़ता हुआ एक चट्टान पर की ऊंचाई पर जा पहुंचा।

उसने थैले से दूरबीन निकाल ली थी। आंखों पर दूरबीन लगा—दो चट्टानों के बीच दुबककर वह चारों ओर का जायजा लेने लगा।

दूसरी ओर,

थ्रिल क्वीन गाड़ी में बैठी रहने वाली हस्ती न थी।

शहबाज के पीछे वह खुद भी गाड़ी से उतर पड़ी थी।

दूरबीन उसके थैले में भी थी—उसने भी दूरबीन निकाली। आंखों से लगाकर उसने उस ओर देखना आरम्भ किया जिधर शहबाज पहले से देख रहा था...। और फिर, उसकी निगाह में जो दृश्य आया वह उसकी रगों में खून का उबाल तेज कर देने के लिए काफी था।

दो घाटी के उस पार, घने जंगल का सिलसिला दूर तक फैला हुआ था। ऊंचे-ऊंचे पेड़ की डालियों से बंधे टायरों के बीच से कुछ मिलिटेण्ट फुर्ती से निकलने तथा रस्सी पर चढ़ने के क़ठिन अभ्यास में लगे थे। वे एक नजर में ही मिलिटेण्ट इस तरह साबित हो जाते थे क्योंकि वे जंगलों के बीच खुद को छुपाने वाली हरी चितकबरी वर्दियों और हथियारों से लैस थे। उन्होंने अपने सिर से लेकर चेहरे को ढंकने वाली ऐसी नकाबें धारण कर रखी थीं, जिनसे उनकी सिर्फ आंखें ही नजर आती थीं। उनकी पोशाकों पर सीने और पीठ की ओर बड़े-बड़े अंकों में नम्बर अंकित थे। वे नम्बर इस बात के द्योतक थे कि उन्हें नामों से नहीं, नम्बरों से सम्बोधित किया जाता है।

कुछ आगे, एक ओर ऊंचे-ऊंचे तिरछे विशालकाय दीवार टाइप, तख्तों को जोड़ा गया था जिस पर दौड़कर फुर्ती से चढ़ने का अभ्यास कराया जा रहा था, तो तीसरी ओर कुछ मिलिटेण्ट दो खम्बों के सहारे टिकाए गये बीम पर दौड़कर उसे पार करने की प्रैक्टिस में अपना पसीना बहा रहे थे।

इन सारे दृश्यों को देखती हुई थ्रिल क्वीन कोहनियों के बल रेंगती हुई उस जगह पहुंची जहां शहबाज पहले से जमा हुआ था।

"यह हिजबुल मुरसलीन का एक छोटा-सा ट्रेनिंग सेण्टर और कैम्प है।" शहबाज ने फुंफकारती आवाज में बताया—"यहां पर नये भर्ती युवाओं को चुस्ती-फुर्ती की सख्त ट्रेनिंग दी जाती है। मेरी जानकारी में यह बात है कि इस समय ऐसे ट्रेनीज की संख्या तीस-बत्तीस के आस-पास होती है। इस शुरूआती एक महीने की ट्रेनिंग के बाद इन्हें हथियार चलाने वाले प्रशिक्षण शिविरों में अगली ट्रेनिंग के लिए भेज दिया जाता है...।"

"इनके हथियार चलाने वाले प्रशिक्षण शिविर कहां हैं...?" डार्लिंग ने अधीरता से पूछा।

"इनके इस तरह के छोटे ट्रेनिंग सेण्टरों की मुझे जानकारी है, मगर हथियार चलाने वाले ट्रेनिंग सेण्टर खासे खुफिया ठिकानों पर इन्होंने कायम कर रखे हैं, इसलिए उस बावत जानकारी हासिल करनी पड़ेगी....।" रुककर कहा—"मेरी जानकारी में जो बात है उसके अनुसार ऐसे खुफिया ठिकाने, जहां हथियार चलाने के प्रशिक्षण दिये दिये जाते हैं, उन जगहों को वे अपने हेड क्वार्टर और सब क्वार्टर के रूप में इस्तेमाल में लाते हैं। वे जगहें ऐसी बीहड़ पहाड़ियों या घाटियों के बीच वे स्थापित करते हैं जहां अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के चलते, यहां की सरकार द्वारा मिलेटरी ऑपरेशन द्वारा ध्वस्त करने की कार्रवाई की जाए तो वहां तक मिलेटरी का पहुंचना लोहे के चने चबाने जैसा हो—मिलेटरी वहां पहुंच भी जाए तो उसे जंगजुओं से लोहा लेना पड़े—और अगर वे देखें कि बड़ा मिलेटरी ऑपरेशन है तो वे फरारी का रास्ता भी अख्तियार कर सकें...।"

"उन्होंने अवश्य ही रेशमा को किसी ऐसे ही खुफिया ठिकाने पर रखा होगा...।" थ्रिल क्वीन ने सोचपूर्ण स्वर में कहा।

"लेकिन, उन्हें मुंह की खानी पड़ेगी...।" शहबाज दांत पीसकर बुदबुदाया—"मेरे रिहाइशगाह पर हमला करके उन्होंने मुझे जंग के लिए ललकार दिया है। मैं उनके खिलाफ सिर पर कफन बांधकर निकल चुका हूं। यहां की सरकार द्वारा मिलेटरी ऑपरेशन की कार्रवाई एक बात है—मेरी बात दूसरी है। मिलेटरी ऑपरेशन में उतरे ऑफिसरों को इस बात का ऊपरी इशारा भी

होता है कि बहुत ही जरूरत पड़ने पर वे गोलियां चलाएं...पूरी कोशिश इस बात की करें कि उनके ट्रेनिंग कैम्पों को तबाह करते हुए मिलिटेण्टों को तितर-बितर होने का मौका दें...। एक प्रकार से मिलेटरी ऑपरेशन में लगे लोगों और मिलिटेण्टों के बीच नूरा कुश्ती का मामला होता है। मैं इसे बरसों से देखता आ रहा हूं...और आगे भी जब तक अन्तर्राष्ट्रीय दबाव में दहशतगर्दों को पूरी तरह से मिटा देने का इरादा नहीं बनाया जाता, तब तक यूं ही नूरा कुश्ती चलती रहेगी। नये मिलिटेण्ट पनपते रहेंगे...क्योंकि इन्हें आई० एस० आई० की ओर से ढंके-छुपे तौर पर धन, ट्रेनिंग की और हथियारों की सहायता मिलती रहती है...।"

थ्रिल क्वीन डार्लिंग ने शहबाज को विस्मय भरे अन्दाज में देखा। उसने जो बताया था, इस बात को वह खुद भी जानती थी। यही हकीकत थी...। पाकिस्तान की धरती पर आतंकवादी संगठन इसीलिए कुकुरमुत्तों की तरह पनपते रहते थे क्योंकि आई० एस० आई० की सरपरस्ती उन्हें शुरू से ही हासिल रही है।

भारत की सीमा पार सैनिक हमले के बजाय आतंकी हमला कराकर अस्थिरता पैदा करना आई० एस० आई० की नीति रही है। उनके मामले में समय-समय पर गिरगिट की तरह रंग बदलना भी उनकी नीति में शामिल रहा है। कभी उनके आतंकी हमलों को आजादी की लड़ाई का नाम देकर, आई० एस० आई० उनकी कार्रवाई में सियासी रंग भरने की कोशिश करती है तो कभी आतंकवादियों के मामले में अपना पल्ला झाड़ते हुए पाकिस्तानी हुकूमत इस बात का दिखावा करती है कि उनका उनसे कोई वास्ता नहीं।

पर, कारगिल ऑपरेशन के समय, यह बात दुनिया के सामने साफ होकर आ चुकी है कि भारतीय सेना के मुकाबले में पाकिस्तानी सेना के साथ मिलिटेण्टों की मौजूदगी भी पायी गयी थी।

"वाकई आपको मिलिटेण्टों के मामले में गहरी जानकारी है मिस्टर शहबाज...।" डार्लिंग ने प्रशंसा भरे स्वर में कहा।

"मेरे आदमियों के बीच मिलिटेण्टों की घुसपैठ रही है।" शहबाज ने आगे बताया—"मेरे आदमी सिविल पुलिस का दबाव

बढ़ने पर उनके बीच पहुंचकर अपना बचाव करते रहे हैं। जब तक आपसी तालमेल रहा मैं उनके प्रति नफरत की भावना रखते हुए भी उनके खिलाफ न रहा क्योंकि उनसे मुझे न तो कोई नुकसान पहुंच रहा था, ना ही मुझसे उन्हें। मगर, मेरे तालमेल को उन्होंने मेरी कमजोरी मान मुझ पर हमला कर दिया। इस सूरत में अपना वजूद बचाने के लिए अपनी आखिरी ताकत उनके खिलाफ झोंक दूंगा—जब तक इस इलाके से उनके पैर पूरी तरह से न उखाड़ दूंगा, चैन से न बैठूंगा। उन्हें भी मालूम हो जाना चाहिए कि मरी में मेरी इलाकेदारी यूं ही नहीं चलती...।"

कहते हुए आवेशपूर्ण उत्तेजना में भरे शहबाज ने जेब से मोबाइल निकाला और किसी के जल्दी-जल्दी नम्बर मिलाकर अपने विश्वस्त आदमियों की टीम को वहां पहुंचने का आदेश देने लगा।

सिर्फ एक नहीं, कई एक फोन मिलाकर वह उन्हें पूरी तैयारी के साथ अपने पास पहुंचने के लिए कहता रहा।

थ्रिल क्वीन, शहबाज की राजनीति से काफी आश्वस्त थी। वह देख रही थी शहबाज अपने अस्तित्व की जंग के लिए मजबूत से मजबूत लड़ाई की तैयारी कर रहा है।

उसे मजबूती के साथ जवाबी पैगाम मिलता रहा।

पैगाम देने और हासिल कराने का सिलसिला पूरा करने के उपरांत डार्लिंग ने पाया—शहबाज खासा उत्साहित है। उसने मोबाइल जेब के हवाले करते हुए कहा—

"मुरसलीन वालों के इस तरह के चार ट्रेनिंग कैम्प हैं। हथियारों से पूरी तरह लैस मेरे सौ से अधिक आदमी आधे घण्टे के अन्दर-अन्दर चार टुकड़ी में बंटकर तीन ओर बढ़ जायेंगे—चौथी टुकड़ी के आदमी मेरी ओर आयेंगे। उनके आते ही एक वक्त में ही चारों कैम्पों पर एक साथ हमले की कार्रवाई होगी...। उन्हें हसनपुरा की पहाड़ियों, घाटियों, बस्तियों और दर्रों से या तो भागना होगा या फिर मरना होगा...।"

"इस खूनी जंग में मैं तुम्हारे साथ हूं शहबाज...।" डार्लिंग ने ओजस्वी स्वर में कहा—"यदि मैं कहूं कि यह जंग तुमने मेरी वजह से अपने सिर ली है तो कुछ गलत न होगा...।"

"नहीं...।" शहबाज हाथ उठाकर डार्लिंग के कथन का विरोध करता हुआ बोला—"तुम्हारी इस दूसरी बात को मैं नहीं मान सकता कि तुम्हारी वजह से मैंने यह जंग अपने सिर ली है। मैं कह चुका हूं कि यह मेरे अस्तित्व की लड़ाई है। मुरसलीन के नये कमाण्डर को मेरे वजूद का सही इल्म नहीं। जब उसे अपने ट्रेनिंग कैम्पों की तबाही का नज़ारा देखने को मिलेगा, तब उसकी समझ में यह बात आ जायेगी कि शहबाज क्या चीज है। लेकिन उस समय तक बहुत देर हो चुकी होगी...। उसे पछताने तक का भी मौका न मिलेगा। क्योंकि एक बार कदम उठा चुकने के बाद कदम पीछे हटाना मेरी फितरत में शामिल नहीं...।"

"लेकिन, इस जंग में इस बात का खास तौर पर ध्यान रखना होगा कि रेशमा को किसी किस्म का नुकसान न उठाना पड़े। यदि ऐसा कोई अंदेशा हो तो मैं इस जंग को अकेले अपने दम पर लड़ लूंगी...।" थ्रिल क्वीन ने पूरी गम्भीरता के साथ कहा।

"इस बात का मेरे आदमी पूरी तरह से ध्यान रखेंगे...। मैं उन्हें जंग शुरू होने से पहले इस बात की हिदायत कर दूंगा...।" शहबाज ने वजनदार स्वर में कहा—"मैं यह भी जानता हूं कि यह जंग आप अकेली लड़ सकती हैं मिस डार्लिंग...क्योंकि मैंने आपके बारे में जो सुन रखा है उसके अनुसार आपको 'काली आंधी' कहा जाता है। ऐसी काली आंधी, जो उठती है तो पूरे वातावरण को अपने वजूद में समेटकर दूर-दूर तक तबाहियों का निशां छोड़ जाती है।" वह कहता रहा—"इसीलिए मैंने अभी कुछ देर पहले कहा था कि मैं इस जंग को आपके लिए नहीं बल्कि अपने अस्तित्व की हिफाजत के लिए लड़ रहा हूं...। मुझे इस बात को कहने में कोई संकोच नहीं कि आपका साथ पाकर मैं गर्वित हूं...बल्कि इस जंग की कमाण्ड आपके हाथों में रहेगी। इस बात का आदेश भी मैं अपने आदमियों को जंग शुरू करने से पहले दे दूंगा...।"

"बेहतर यही होगा...।" थ्रिल क्वीन दृढ़ता से बोली—"मैं भी कहती हूं, आप जैसे जवांमर्द का दोस्ती का हाथ थामकर मैं गर्वित हूं...।"

शहबाज के कथन ने, थ्रिल क्वीन को नये जोश से भर दिया

था। उसके वजूद की श्रेष्ठता को स्वीकार कर शहबाज ने उसे जो उचित सम्मान दिया था, उस सम्मान के बदले में शहबाज अपनी कद्र थ्रिल की नजरों में बढ़ा गया था।

और फिर,

थ्रिल क्वीन आंखों पर दूरबीन चढ़ाए घाटी में नीचे उस समय भी अभ्यास में लगे मुरसलीन के जवानों को देखने लगी। वह मन ही मन इस बात को लेकर खौलने लगी कि उन्हीं में से ही किसी एक की कैद में उसकी रेशमा है...।

वह रेशमा, जिसने अभी जवानी की तरंग और दुनिया की बहार भी पूरी तरह से देखी नहीं, जिस पर, उसकी वजह से ऐसी मुसीबत आयी है कि मां-बाप से, अपनी सरजमीं से बिछुड़ गयी...। वह वहशियों के बीच फंसी न जाने उनके कैसे-कैसे जुल्म सह रही हो...।

रेशमा का कुसूर क्या था? सिर्फ यह कि अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए...उसने एक सैलानी के रूप में उसे अपनी कश्ती पर जगह दी थी। अपने शिकारे में ठहराया था। उसकी चाहत पर रात की मधुर साथी बनी थी...उसके कहने पर एक ही बिस्तर पर उसके साथ सोयी थी और उसे डल झील की सैर कराने गयी थी। जहां अमन के दुश्मनों ने उन्हें निशाना बनाना चाहा था। उन्होंने उसकी कश्ती डुबो दी थी। अपनी हर चंद कोशिशें की थीं कि उसके लहू से डल झील का पानी सुर्ख कर दें। पर वे असफल रहे थे।

अगर रोजी-रोटी कमाना ही रेशमा का कुसूर था तो यह कुसूर तो इस धरती पर सांस लेने वाला हर इन्सान करता है...।

रेशमा को लेकर भावुकता के पंखों पर सवार थ्रिल क्वीन की तन्द्रा भंग हुई। वह तन्द्रा भंग की थी मोबाइल बीप ने।

यह बीप शहबाज के जेब में पड़े मोबाइल की थी।

उसने जल्दी से काल अटैण्ड की।

दूसरी ओर से उसे उस बात का संदेश मिला जिसकी उसे बेताबी से प्रतीक्षा थी।

शहबाज ने पलटकर, डार्लिंग को उत्साह के साथ बताया—

"हमारे आदमियों की तीन टुकड़ी, मिलिटेण्टों के ठिकानों पर पहुंच चुकी हैं। चौथी टुकड़ी कुछ मिनटों में हमारी ओर पहुंचने वाली है।"

शहबाज ने अपनी बात अभी पूरी भी नहीं की थी कि उसी क्षण थ्रिल क्वीन ने अपने स्थान से किसी मेढक की तरह से, जहां थी, वहीं से जबर्दस्त उछाल ली। उसी के साथ उसकी चीख गूंजी—

"शहबाज बचना...!"

चीख गुंजाने और बैठे-बैठे पंजों के बल उछाल लेने वाली थ्रिल क्वीन अपने सिर के ऊपर, दाईं ओर तिरछी चट्टान पर कमान से छूटे तीर की तरह पहुंची।

अभी वह हवा में ही थी कि गोलियों की तड़तड़ाहट से वह स्थान गूंजता चला गया जहां पलक झपकने से पूर्व डार्लिंग और शहबाज थे।

चलने वाली गोलियों ने तड़तड़ाहट के साथ चट्टानी टुकड़े उड़ाये।

थ्रिल क्वीन ने कुशलता की सांस ली, क्योंकि उसके कानों ने इन्सानी चीख न सुनी।

निश्चित रूप से ऐसी कोई चीख कौंधती तो वह शहबाज की होती...। और शहबाज, वह तो डार्लिंग की 'शहबाज बचना' की चेतावनी भरी चीख के साथ बिजली की फुर्ती के साथ नीचे छलांग मार गया था...।

कहा जा सकता था बाल-बाल बचा था।

नीचे जिस स्थान पर शहबाज ने छलांग मारी थी वह उस ऊपरी चट्टान के नीचे का हिस्सा था, जिस पर डार्लिंग और शहबाज देर से जमे हुए ट्रेनिंग कैम्प पर निगाह रख रहे थे।

पलक झपकने से भी कम समय में दृश्य बदल गया था। मेढक की तरह उछाल और शिकारी बाज की तरह झपट्टा मारने वाली थ्रिल क्वीन, सीधे उस व्यक्ति की गरदन पर जा कूदी थी, जो पोजीशन लिये फायर खोल चुका था।

उस पर कूदते ही डार्लिंग ने खड़ी हथेली का कैरेट चाप

उसकी गरदन पर मारा...।

चोट खाते ही उसकी क्रन्दनकारी चीख कौंधी।

वह चोट खाए सर्प की तरह गन सहित पलटा...।

लेकिन, उसका पाला, उस आफत की परकाला से पड़ चुका था, जिसके बारे में उसके दुश्मनों की धारणा थी कि ऐसे संघर्ष के अवसरों पर सामान्य स्थिति से सत्तर गुना उसमें अधिक बल और सजगता भर उठती है।

गनधारी के पलटते ही थ्रिल क्वीन ने उसे जूझने का मौका दिये बगैर, उस पर दाएं पैर की किक मारी।

एकदम सही समय पर लिया जाने वाला सही निर्णय था।

डार्लिंग का वह प्रहार...क्योंकि किक, गनधारी की पसलियों पर पड़ी थी...। किक खाते ही वह फुटबाल की तरह उछला...।

अगली कसर डार्लिंग के घूंसे की चोट ने पूरी की...। और उसके बाद, उसका जिस्म किसी स्केटर की तरह स्लिप होता हुआ नीचे जा पड़ा...।

वह ठीक उस जगह जा पड़ा जहां शहबाज था...।

शहबाज पहले से ही भूखा शेर बना हुआ था—जैसे ही गनधारी उसके सामने आकर गिरा...कोई भी लम्हा गंवाए बगैर शहबाज ने उसकी एक टांग पर अपनी एक टांग जमा, दूसरी टांग हाथों में थाम ऊपर तान दी।

उसकी आंखों में पैशाचिक दरिन्दा सिमट आया था। सात फुटा शहबाज न सिर्फ लड़ाका बल्कि दुश्मनों के लिए कालदूत प्रवृत्ति का इन्सान साबित हुआ करता था। टांग को खींचते हुए उसने गुर्राती आवाज में कहा—

"बोल कुत्ते...तू यहां तक पहुंचा कैसे...जल्दी बोल...वरना मैं तुझे चीरकर दो टुकड़े कर दूंगा...।"

चोट पर चोट, और जिस्म के दो टुकड़े हो जाने के साक्षात् भय ने गनधारी की आंखों में मौत का दृश्य खींच दिया। उसकी मौत की कंपकंपी से भरी आवाज फूटी—

"तुम्हारे मोबाइल की बातचीत हमारे रेडियो ट्रांसमीटर के हाई फ्रीक्वेन्सी पर पकड़ ली गयी थी...।"

उसकी बात को डार्लिंग ने भी सुना और शहबाज ने भी।

दोनों क्षणेक के लिए शॉक्ड हो उठे।

उस समय तक थ्रिल क्वीन अपने स्थान से कूदकर नीचे आ चुकी थी।

शहबाज से उसकी आंखें चार हुईं। अंगार भरी बुदबुदाहट शहबाज के होठों से फूटी—

"थैंक्यू मिस डार्लिंग...। तुमने बाल-बाल बचाया मुझे...अगर पलक झपकने की भी देर हो जाती तो इस कुत्ते ने बगैर जंग के मेरा खात्मा कर दिया होता...।"

"इससे पूछो शहबाज कि इसके रेडियो ट्रांसमीटर पर हमारी बातचीत सुने जाने के बाद, इसे आगे बढ़ाने के साथ-साथ हमारे विरुद्ध और क्या-क्या तैयारियां हुई हैं...।" डार्लिंग ने जोशीले और उतावले स्वर में कहा।

लेकिन,

शहबाज द्वारा इस बात को पूछने का मौका न मिल सका।

शहबाज के दाईं ओर से दो और मिलिटेण्टों के चेहरे झलके। वे चट्टान के पीछे से सिर उभार चुके थे। उनके हाथ हवा में घूम चुके थे।

इस बात को डार्लिंग के बजाय देखा शहबाज ने...। देखते ही उस जीवट इन्सान ने सावधान होने की चेतावनी देने का भी अवसर न गंवाया...एक झटके से गनधारी को छोड़ डार्लिंग पर झपट्टा मारा...।

उसके बगलों में हाथ डाले हुए उसने हवा में उड़ान भरी...।

डार्लिंग सहित अभी उसके कदम चट्टान पर पड़े भी न थे कि तभी—"धड़ाम...ऽऽऽ...धड़ाम...ऽऽऽ।"

दो हथगोले फटे...।

ठीक उस स्थान पर वे हथगोले गिरकर फटे थे, जहां से शहबाज ने डार्लिंग को दबोचते हुए हवा में उछाल ले ली थी।

जहां शहबाज छोड़ आया था दुश्मन गनधारी को...।

तब तक, दुश्मन गनधारी न तो अपने स्थान से उठ पाया था ना ही, बचाव का कोई प्रयास कर पाया था....।

परिणामस्वरूप, धमाकों के बीच उसकी क्रन्दनकारी चीख कौंधी और जिस्म चीथड़ों में बदलता चला गया।

शहबाज़ के साथ पैर टिकते ही डार्लिंग ने तुरन्त तेजी के साथ कहा—

"शहबाज...सिर बचाओ...नीचे लुढ़को....।"

इन शब्दों के साथ खुद थ्रिल क्वीन ने कलाबाजी खाकर लुढ़कना आरम्भ कर दिया। शहबाज के सामने डार्लिंग के निर्देश को मानने के अलावा कोई चारा न था क्योंकि गोलियां चलने लगी थीं...।

फायरों की गूंज से वातावरण कांपने लगा था। प्रथम गनधारी दुश्मन से जो बात शहबाज जानना चाहता था—उसका जवाब अब सामने आ गया था। दुश्मनों की ओर से पहाड़ियों के दो छोरों से मोर्चाबन्दी कर ली गयी थी। दोनों साइडों से गोलियां चलायी जाने लगी थीं।

दोनों की किस्मत अच्छी थी या फिर डार्लिंग और शहबाज को फाइटिंग आर्ट की सूझ-बूझ का श्रेय दिया जा सकता था कि वे सैकड़ों गोलियां चलने और दो हैण्डग्रेनेड के धमाके के फटने के बाद भी अब तक बाल-बाल बचे हुए थे।

डार्लिंग के साथ चट्टानों से कलाबाजी खाता हुआ शहबाज जल्द ही, पहाड़ियों के बीच से गुजरने वाली सड़क पर पहुंचा...। डार्लिंग ने उसका हाथ थामा और तेजी के साथ सड़क पर खड़ी उसकी क्वालिस की ओर दौड़ पड़ी। उसने तेजी से सुझाव दिया—

"हमें सबसे पहले गाड़ी को बचाना होगा शहबाज...क्योंकि हमारे बच जाने के बाद वे गाड़ी को अपना टार्गेट बनाएंगे....।"

उस समय शहबाज ने जैसे अपने सोचने की शक्ति छोड़ दी थी। उसने डार्लिंग की सोच के साथ अपनी सोच और एक्शन के साथ अपने एक्शन को जोड़ दिया था।

शहबाज के साथ डार्लिंग सेकण्डों में गाड़ी तक पहुंचने में सफल रही। फिर उसने गाड़ी के पीछे पोजीशन सम्भाली।

और अब उसे अपनी गन का मुंह खोलने का मौका मिल गया था।

"तुम दूसरी ओर देखो...।" डार्लिंग, शहबाज को दायीं ओर की पोजीशन सम्भालने का निर्देश देती हुई, बायीं ओर की उस चट्टान पर फायरों की बाढ़ छोड़ बैठी—जहां उसने चार

मिलिटेण्टों को जमे हुए देखा था।

शहबाज ने भी दिलेराना अन्दाज में फ़ायर दागने आरम्भ कर दिये। उस साइड में भी वही पोजीशन थी जैसी डार्लिंग के टार्गेट पर थी।

"अब ट्रेनिंग कैम्प के बचे हुए सारे ट्रेनीज दाएं और बाएं आकर एकत्र होने शुरू हो जायेंगे...।" डार्लिंग फायरों की पहली बाढ़ छोड़कर शहबाज से रणनीति समझाती हुई बोली—"हमारा इस समय का ध्येय सिर्फ यह होना चाहिए कि उन्हें अपने स्थान से आगे बढ़ने का मौका उस समय तक न दिया जाए; जब तक कि तुम्हारे आदमियों की टुकड़ी नहीं आ जाती।"

"आप फिक्र न करें मिस डार्लिंग...।" शहबाज दांत भींचकर बोला—"उनमें से एक भी कुत्ता अपनी जगह से हिल न पायेगा... मेरा निशाना अचछा है। साथ ही गाड़ी में एम्युनेशन्स की कमी नहीं है।"

दूसरी ओर चट्टानों पर जमे हुए मिलिटेण्टों को भी इस बात का आभास था कि सिर उठाते ही वे मौत के मुंह में समा सकते हैं...।

इसलिए वे भी उस समय जवाबी कार्रवाई में ही गोलियां चला रहे थे...।

उस समय तक, दस-दस की टोली में दुश्मन की टुकड़ी दोनों मोर्चों पर एकत्र हो चुकी थीं।

"तुम्हारे आदमी कितनी देर में पहुंच सकते हैं शहबाज...?" डार्लिंग ने पूछा—"अब मैं महसूस कर रही हूं कि वे आत्मघात का रास्ता अपनाकर हमें उलझाने की रणनीति अपनाने लगे हैं। वे आगे इत्तला कर चुके होंगे...। वे अपने चारों कैम्पों के लोगों के साथ-साथ हेडक्वार्टर से भी मदद तलब कर सकते हैं... अगर तुम्हारे आदमियों के पहुंचने में अधिक देरी है तो मैं अपनी युक्ति पर कार्य करने के लिए आगे बढ़ने का निर्णय लेती हूं...।"

"नहीं...प्लीज नहीं...। थोड़ा इन्तजार और...वे बस आने ही वाले हैं...। और अगर तुम आगे बढ़ने का निर्णय लेती हो तो अपने से पहले मुझे इस बात की इजाजत दो कि मैं आगे बढ़कर उनका खात्मा करने के लिए खुद को झोंक दूं...।"

"मूर्खतापूर्ण बात नहीं शहबाज...।" डार्लिंग ने कहा।

"यस कमाण्डर...।" शाहबाज के होटों से फूटा।

डार्लिंग को जवाब देने का मौका न मिला, क्योंकि उसी समय उसकी साइड के दो मिलिटेण्टों ने उसका ध्यान पूरी तरह अपनी ओर आकृष्ट कर लिया था।

उन दोनों ने बेहद दुःसाहस का परिचय देते हुए चट्टान की ओर से अपना शरीर उछाल दिया था। वे नीचे आकर नया मोर्चा खोलने के लिए उतावले थे...।

"तड़...तड़...तड़...रेट...रेट...रेट...ऽऽऽ।" थ्रिल क्वीन ने दोनों की उछाल के साथ फायरों की अब तक की सबसे भीषण बाढ़ खोल दी।

दोनों में से एक का जिस्म हवा में उछला...। चीख कौंधी...।

उसका सिर तरबूज की तरह फट गया था...। मौत को वरण करके उसका जिस्म लुढ़कता हुआ नीचे आने लगा।

लेकिन,

उस एक मिलिटेण्ट के खात्मे की स्थिति को सुखकर न कहा जा सकता था—क्योंकि उस एक की चीख और उसके जिस्म को लुढ़ककर नीचे आते देख शहबाज कुछ ज्यादा जोश में भरकर न सिर्फ अपना सारा ध्यान उधर दे बैठा था बल्कि, मूर्खता यह कर डाली थी कि कुछ पलों के लिए अपनी ओर का मोर्चा ढीला छोड़ दिया था।

उसकी ओर से मोर्चा ढीला छोड़ते ही उसकी साइड के मोर्चा धारकों में से पाँच ने बेहद दुःसाहस का परिचय दिया था। ताबड़-तोड़ गोलियां चलाते हुए एकदम से दौड़ते हुए अन्दाज में आगे को हमला कर दिया।

"शहबाज....सम्भालो उन्हें...।" डार्लिंग चीखकर उसकी दिशा में पलटी...। वह सिंहनी बन झपट्टा मारती, गोलियां चलाती हुई एकदम झुकी और जमीन पर लेटकर गोलियां चलाने लगी।

उसने अपने अचूक निशानों पर लेकर दो को ढेर कर दिया...।

बावजूद इसके स्थिति बदल गयी थी...। बचे हुए मिलिटेण्टों ने जान पर खेलकर हैण्डग्रेनेड के धमाकों की बरसात सी कर दी थी।

हैण्डग्रेनेड...क्वालिस के आसपास आकर गिरने और फटने लगे।

गाड़ी को शोलों में घिरने और उसके परखच्चे उड़ने की स्थिति को किसी भी सूरत से रोका न जा सका।

गाड़ी में मौजूद आर्म्स एण्ड एम्युनेशन ने आग पकड़ते ही और भी प्रचण्ड रूप धारण कर लिया...।

"धड़ाम...धड़ाम...धड़ाम...ऽऽऽ!"

विस्फोटों के साथ उठती ऊंची-ऊंची लपटों में थ्रिल क्वीन और शहबाज के सामने, इस बात के अलावा कोई चारा न था कि उनके कदम पीछे सरकते चले जाएं।

मिलिटेण्टों को उस हमले में जबर्दस्त कामयाबी मिली तो वे जोश में भरे दोनों ओर से अधिक शक्ति के साथ गोलियां चलाते...हैण्डग्रेनेड फेंकते...आगे को दौड़ पड़े।

क्वालिस से होते हुए धमाके और उसके उड़ते हुए परखच्चे थ्रिल क्वीन और शहबाज की पोजीशन को और भी खराब कर गये।

डार्लिंग को लगा, बस कुछ देर और...उसके गन की गोलियां जवाब दे जाने वाली हैं...। वह दो-चार को मार सकेगी...उसके बाद निहत्थी जंग के अलावा उसके सामने और कोई चारा न रह जाएगा...। इस सोच के साथ ही उसके माथे पर पसीने की बूंदें छलछला आयीं...।

उधर, शहबाज के हाथ में थमे हथियार की मैगजीन भी पूरी तरह खाली हो चुकी थी...। उसने खुद को धरती पर गिराया। हमलावर रहने के बजाय अब वह कदम पीछे सरकाने में ही भलाई समझ रहा था।

उसने जेब में हाथ डाल मोबाइल निकाला...और जल्दी-जल्दी आगे वाली टुकड़ी की पोजीशन जानने के प्रयास में लग गया...।

एक नहीं, दो नहीं...चार नहीं...वे पूरी बारह गाड़ियां थीं...। कुछ तेज रफ्तार गाड़ियां, कुछ मिनी ट्रक...कुछ मोटर

साइकिलो...पर सवार दो-दो की टोलियां...।

गोली बारी और धमाके से थर्राते उस इलाके में एक के बाद एक गाड़ियां आकर रुकने लगीं। गाड़ियों में पड़ते ब्रेकों के कारण सड़क पर घिसटते पहियों के टायर से चरचराहटें पैदा होती चली गयीं।

आने वाली वह टुकड़ी शहबाज टीम की थीं। शहबाज के आदेश पर पहला राकेट लांचर मिनी ट्रक पर से उस ओर दागा गया जिधर बिस्फोटों से घिरी क्वालिस के करीब पहुंचे मिलिटेण्टों की टुकड़ी आकर जम गयी थी। उनकी संख्या आठ थी...और वे, वहां आसपास डार्लिंग और शहबाज को तलाश कर रहे थे...।

दागा हुआ वह 'राकेट लांचर', उस राकेट लांचर का जवाब था जो शहबाज के निवास स्थान पर दुश्मनों द्वारा दागा गया था।

शहबाज द्वारा मोबाइल कान्टेक्ट बनाते ही वह पार्टी वहां आकर धमकी थी। अपनी और डार्लिंग की स्थिति-तथा क्वालिस की बरबादी की सही जानकारी शहबाज ने अपनी टुकड़ी के लोगों को दे दी थी। जिसकी रणनीति के तहत पहला हमला राकेट लांचर से दागा गया था।

भीषण धमाके के साथ राकेट लांचर उस स्थान पर आकर फटा जहां मिलिटेण्ट जमा होकर डार्लिंग और शहबाज को तलाश कर रहे थे।

राकेट के आकर फटते ही, एक को भी बचकर भागने का मौका न मिल सका। सारे के सारे भयावह विस्फोट की चपेट में आये। उनके जिस्म के परखच्चे उड़ते चले गये।

वहां पहुंची शहबाज की टुकड़ी के पहले ही जबर्दस्त विध्वंसक हमले ने, दुश्मनों के पैर उखाड़ दिये।

वहां का मोर्चा पूरी तरह से ध्वस्त होते ही थ्रिल क्वीन को दूसरी ओर का मोर्चा सही रूप में सम्भालने का अवसर मिल गया।

बचे हुए मिलिटेण्टों में भगदड़ मचते ही डार्लिंग ने तीन के सिरों को निशाना बनाते हुए उनकी लाशें बिछा दीं...।

बचे हुए मिलिटेण्ट उसी रास्ते पर भाग रहे थे जिधर से वे नमूदार हुए थे...मगर शहबाज की टुकड़ी की संख्या पच्चीस से भी ज्यादा थी...सबके सब छटे हुए बदमाश, पेशेवर गुण्डे और

कातिल थे। साथ ही वे आधुनिकतम हथियारों से लैस थे...।

इसी के साथ उस इलाके में उस समय सबसे ज्यादा कारआमद साबित हो रहे थे...मोटर साइकिलों पर आने वाले सवार वे पहाड़ी के ऊबड़-खाबड़, असमतल रास्तों पर भी पूरी कुशलता के साथ मोटर साइकिलें दौड़ा-दौड़ाकर मैदान छोड़कर भागने वाले मुरसलीन दल के बचे हुए सदस्यों को मौत की घाटी में उतार रहे थे।

और एक बार फिर,

शहबाज के हाथों में, फुल लोडेड मैगजीन से युक्त ए० के० 47 आयी। डार्लिंग के हाथ में ए० के० 56 थी...। दोनों दौड़ते हुए पहाड़ी पर चढ़े। बचे-खुचे मिलिटेण्टों का सफाया करते उनके ट्रेनिंग कैम्पों की ओर उतर पड़े।

उन दोनों के चारों ओर रक्षक के रूप में मोटर साइकिल सवार तथा जीपों तथा मिनी ट्रक से आये शहबाज के टुकड़ी के जवान थे।

कुछ देर बाद,

प्रतिरोध करने वाले मिलिटेण्टों की संख्या अंगुलियों पर भी गिनी जाने लायक न रह गयी थी। अब वे घने जंगलों में अपनी जान बचाने के लिए भाग रहे थे...। वे पूरी तरह से हथियार और नेतृत्व रहित थे। अब उनके सामने एक ही ध्येय था...पीठ दिखाकर भागना है ताकि जान बच सके...।

"यलगार। मिलिटेण्टों के कैम्पों के बीच पहुंच, शहबाज ने ललकार कर कहा—"तबाह कर दो...इनके एक-एक ठिकाने को...आग लगा दो...। नामो-निशान मिटा दो इस बात का कि इस इलाके में दशहतगर्दो के ट्रेनिंग कैम्प भी हुआ करते थे...।"

उसके आदेश का, उसके आदमी जोशो-खरोश से पालन करने लगे। पेट्रोल छिड़क-छिड़ककर पेड़ों से रस्सी के सहारे उन टायरों में आग लगायी जाने लगी जिन्हें डार्लिंग और शहबाज ने खूनी जंग छिड़ने से कुछ देर पहले ट्रेनीज मिलेटेण्टों को अभ्यास के माध्यम के रूप में देखा था। दीवार रूपी तख्तों और बीमों को उखाड़-उखाड़कर आग के शोलों में झोंका जाने लगा, जिन पर दौड़ने और चढ़ने का जौहर दिखाते मिलिटेण्टों को देखा गया था।

उनके रिहायशी कैम्पों को भी उखाड़-उखाड़कर आग के

हवाले कर दिया गया।

"फैल जाओ चारो ओर दो-दो की टुकड़ी में। जंगलों में घुंसकर भागने वालों को खोजो और जो भी दिखे लाश बिछा दो हरामजादों की...।" शहबाज ने ललकारकर अपने आदमियों को हुक्म दिया।

उस समय, उसका जोश—जीत के उन्माद में भरे योद्धा के रूप में था।

"शहबाज...तुम्हें उन टुकड़ियों की खबर लेनी चाहिए...जिन्हें तीन अन्य, मिलिटेण्ट कैम्पों पर हमलावर होने का तुमने आदेश दिया था...।" डार्लिंग ने काफी देर की खामोशी के बाद मुंह खोला।

वह शहबाज टीम की ओर से चलने वाली अब तक की कार्रवाई के मामले में सन्तुष्ट भी थी और खुश भी।

"हां...जरूर...।" शहबाज ने कहा। कहने के साथ ही उसने मोबाइल निकाल उस पर जल्दी-जल्दी नम्बर मिलाया...।

दूसरी ओर से सम्पर्क बनने पर रिपोर्ट मिलनी आरम्भ हुई...।

उसके चेहरे का उत्साह और आंखों में उभरती चमक, शहबाज के बगैर बताए डार्लिंग को आभास करा गयी कि उधर भी इसी ढंग की सफलता मिल रही है।

दूसरी और तीसरी टुकड़ी के मामले में भी शहबाज को सफलता की सूचना मिली।

अन्य तीनों मोर्चों की एक के बाद एक सफलता की सूचना मिलती रही। सफलता के जोश में भरे हुए शहबाज ने बढ़कर डार्लिंग का दायां हाथ थामा। अपने आदमियों के सामने थामा हुआ डार्लिंग का हाथ उठाकर उसने ओजस्वी स्वर में कहा—

"दोस्तो! मैं तुम्हारी पहचान करा रहा हूं...मिस डार्लिंग, इस जंग में हमारी कमाण्डर हैं...। जब तक हिजबुल मुरसलीन के नये ओहदेदार जियाउल की बोटियां-बोटियां मैं अपने पालतू कुत्तों को नहीं खिला देता, मिस डार्लिंग के मुल्क से दहशतगर्दों द्वारा अगुवा करके लायी गयी रेशमा को हम बरामद नहीं कर लेते, तब तक हिजबुल मुरसलीन के विरुद्ध हमारी जंग जारी रहेगी...।

और इस जंग में हमें मिस डार्लिंग का नेतृत्व स्वीकार करके आगे बढ़ना होगा...।"

"हमें मंजूर है...हम सब को मंजूर है...।" वहां जमा शहबाज के साथियों ने जोश के साथ हाथ उठाकर, शहबाज के कथन का समर्थन किया।

"शुक्रिया दोस्तो...। मेरा समर्थन करने का। मैं आप सब का दिल से शुक्रिया अदा करती हूं...।" डार्लिंग ने अपनी मिठास में डूबी आवाज में कहा—"इस मौके पर मैं अब लोगों के सामने इस बात को साफ कर देना जरूरी समझती हूं कि यह जंग मैं अपने लिए नहीं लड़ रही हूं...ना ही यह जंग मिस्टर शहबाज सहित आप सब लोग अपने लिए लड़ रहे हैं...। यह जंग इन्सानियत के दुश्मनों के विरुद्ध लड़ी जा रही है। ऐसे वहशियों और दरिन्दों के विरुद्ध लड़ी जा रही है जिनका उद्देश्य दहशत फैलाकर अपना दबदबा और दहशतगर्दी भरी हुकूमत कायम करना है।" रुककर उसने कहा—"चूंकि अभी तक मेरी दोस्त, मेरी सहेली मेरे वतन की बेटी—रेशमा के बाबत कहीं से खबर नहीं आयी कि वह कहां है, किस हाल में है...। इसलिए उसकी खबर मैं सबसे पहले पाना चाहती हूं...। हमारा अगला हमला उस जगह होगा, जहां दशहतगर्दों ने रेशमा को अपने पास रख छोड़ा होगा...।"

"वे उसे अपने हेड क्वार्टर पर ही रख सकते हैं मैडम...क्योंकि चारों ट्रेनिंग कैम्पों में से किसी एक में भी ऐसी किसी लड़की के देखे जाने की इत्तला कहीं से नहीं आयी...।" एक जवान ने डार्लिंग को 'मैडम' का शिष्ट सम्बोधन देते हुए कहा।

"उन शैतानों का हेडक्वार्टर कहां हो सकता है?" डार्लिंग ने तनिक चिंतित स्वर में पूछा।

"हमारे आदमी इस बारे में तेजी के साथ पता लगाने की चेष्टा कर रहे हैं...। ट्रेनिंग कैम्प नम्बर तीन से दो जख्मी मिलिटेण्ट को जीवित अवस्था में दबोचे जाने की मुझे इत्तला मिली है।"

शहबाज ने बताया—"मैंने उधर के आदमियों को इस बात को कह दिया है कि वे जीवित हाथ लगे दोनों मिलिटेण्टों को लेकर यहां पहुंचें। उन मिलिटेण्टों से हम मालूम करेंगे कि इस समय हिजबुल मुरसलीन का हेडक्वार्टर कहां है।

उनके पूछताछ से यह बात भी साफ होकर सामने आ सकती है कि अपनी रेशमा इस समय किस स्थिति में कहां है...।"

"यह एक आशाजनक जानकारी है मिस्टर शहबाज। मैं आपकी अन्य टुकड़ियों के आदमियों के यहां पहुंचने की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रही हूं...।"

फिर कुछ देर बाद,

घने जंगलों के बीच गये शहबाज के आदमी वापस आने लगे थे। उनके हाथों में जान बचाकर भागने वाले मिलिटेण्टों के छोड़े गये हथियार, गोला बारूद, छोटे रेडियो वायरलेस सेट तथा कुछ दस्तावेज थे...।

डार्लिंग और शहबाज को ज्यादह देर इन्तजार न करना पड़ा। शहबाज के आदमियों की तीन ओर की अन्य टीम विजेता बनी हुई वहां आ पहुंची।

उन सारे आदमियों की संख्या सौ से ऊपर थी।

सब के सब उत्साह से भरे हुए थे।

वे बढ़-चढ़कर इस बात की रिपोर्ट दे रहे थे कि किस-किस तरह से उन्होंने मुरसलीन वालों पर हमला किया और कैसे उनके दांत खट्टे करके उन्होंने उनके कदमों को उखाड़ फेंकने की कार्रवाई की।

तीनों टीमों के हाथ, कैम्पों की तबाही के बाद, जान बचाकर भागे दहशतगर्दों के छोड़े गये हथियार और दूसरे साजो-सामान काफी मात्रा में लगे थे।

सब कुछ एक तरह से लूट का माल था मगर अब वह जायज माल था...क्योंकि उन्होंने उसे जान पर खेलकर हासिल किया था—उसके लिए अपने कुछ साथियों की उन्हें जानें गंवानी पड़ी थीं।

भागने वाले दहशतगर्द आरटरी की छोटी गाड़ियां तक छोड़कर भागे थे। उनमें 120 एम० एम० के मोर्टार बजूका और ए० के० 47 की राइफलें भी थीं। उनमें गोला-बारूद और दूसरे हथियारों की भी काफी बड़ी तादाद थी। जंग में इस्तेमाल होने वाले

उन हथियारों को वे लैण्डटोर जैसी जंगी गाड़ी में लादकर लाए थे। वह लैण्डटोर गाड़ी न सिर्फ बुलेटप्रूफ थी बल्कि हथगोलों तथा राकेट लांचर धमाकों से भी अप्रभावित रहने की खूबी रखती थी।

हथियारों और लेस आरटरी गाड़ियों के अलावा संचार साधन भी उनके हाथ लगे थे। वॉकी-टॉकी, छोटे-छोटे ट्रांसमीटर तथा रेडियो वायरलेस सेट भी।

उन सब को देखते और मुआयना करती हुई डार्लिंग इस बात पर गहराई से विचार कर रही थी कि उनका कहां-कहां तथा किस-किस रूप में आगे इस्तेमाल किया जा सकता है।

इन सबसे कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण था, डार्लिंग और शहबाज की टीम द्वारा जंगलों में पाये जाने वाले दस्तावेज। जिन पर स्पाई क्वीन ने खासतौर पर गौर किया था। वे दस्तावेज हाथ से बनाए नक्शे की शक्ल में थे।

उन नक्शों पर शहबाज सहित उसके कुछ खास साथी झुके हुए कुछ देर विचार करते रहे। चूंकि शहबाज टीम के सारे के सारे आदमी मरी, हसनपुरा तथा आसपास के इलाकों के ही थे, इसलिए उनके लिए उन नक्शों को समझना ज्यादा मुश्किल न था।

नक्शों में दर्शाये गये स्थानों में से काफी स्थान—जंगल, पहाड़ियां, टीले, घाटियां और पुराने जमाने की इमारतें उनकी देखी भाली थीं।

शहबाज के आदमियों में से दो का डार्लिंग अच्छी तरह परिचय पा चुकी थी। नक्शों के मामले में बढ़-चढ़कर अपनी राय पेश कर रहे थे। उनमें से एक पख्तूनी गुण्डा और कानून का भगोड़ा हैदरबख्श था—वह कई सालों से शहबाज के साये में पनाह पाये हुए था। उसने पुलिस और कानून की आंखों में धूल झोंकते हुए मरी, हसनपुरा तथा आसपास की पहाड़ियों में बरसों खाक छानी थी—उसे नक्शों की सबसे अच्छी जानकारी थी।

दूसरा था अल्लामेहर। वह अफगानी था। अफगान की धरती पर मुल्लावाद पनपने के बाद उसे अलकायदा वालों से कई बार लोहा लेना पड़ा था। लेकिन अन्ततः मुल्लावाद की मजबूत होती गयी ताक़त के सामने उसके पैर अफगानिस्तान की धरती से उखड़ गये थे।

उसकी कुछ देर की बातचीत से डार्लिंग ने जान लिया था कि वह भी शहबाज की तरह जीवट किस्म का इन्सान था।

उसे अफगानिस्तान की धरती पर अलकायदा के हाथों अपना भरा-पूरा घर और कुनबा बरबाद करना पड़ा था। उसके सारे अपने चुन-चुनकर मार दिये गये थे। उसके गिरोह के सदस्य एक-एक करके तबाह कर दिये गये थे। मुश्किल से अकेला जान बचाकर अफगानिस्तान से वह भाग निकला था। उसने भी शहबाज के पास आकर शरण ली थी। अब शहबाज के लिए जान न्यौछावर करने का उसमें जबर्दस्त जज्बा भरा हुआ था।

वह दिलेर था, जवां मर्द था। अफगानिस्तान की धरती पर अफीम की नाजायज खेती और ड्रग्स की स्मग्लिंग करके उसने करोड़ों की दौलत कमायी थी—वहां के एक इलाके में अपनी बादशाहत कायम की थी। सब कुछ उसका तबाह हुआ था—पर काफी बड़ी दौलत समेटकर निकल आने में सफल रहा था। वह सरमाया शहबाज के पास सुरक्षित था—उसी के बल पर बरसों से वह शहबाज का संरक्षण पाने के बाद ऐश की छान फूंक रहा था।

उसकी रगों में दहशतगर्दों के प्रति आग भरी हुई थी। वह दहशतगर्दों के खिलाफ किसी भी जंग में उतरकर उनका सफाया करने में अपना सब कुछ दांव पर लगा देने पर आमादा था। दहशतगर्द चाहे अलकायदा के लोग हों, हिजबुल मुसलमीन हों या मुरसलीन—सब ही उसकी नजरों में नफरत के पात्र थे। उनको खत्म करने में उसे दिली सुकून मिलता था—उनके जिस्म से उड़ते रक्त के छींटे देखकर उसे इस बात की तसल्ली होती थी कि वह अपने खानदान वालों की मौत का बदला ले रहा है।

शहबाज, अल्लामेहर को अपना दायां हाथ मानता था।

ऐसी ही कुछ मिलती-जुलती दास्तान हैदरबख्श की भी थी—जो शहबाज का बायां हाथ था।

अल्लामेहर, हैदरबख्श और शहबाज ने कुछ देर तक नक्शों पर गौर करने के बाद निर्णय निकाला कि इन दिनों मुरसलीन वाले नीलकाफ की पहाड़ियों पर सिमटे हुए हैं। उसी जगह को उन्होंने अपना हेडक्वार्टर बनाया हुआ है।

दूसरी ओर,

नीलकाफ की पहाड़ियों पर स्थित, किलेनुमा खण्डहर रहित इमारत में उस समय अफरा-तफरी का माहौल था।

उस इमारत के एक सबसे सुरक्षित कक्ष में, हिजबुल मुरसलीन का कमाण्डर जियाउल, बुरी तरह बेचैनी में भरा हुआ इधर-से-उधर भाग-दौड़ कर रहा था।

कमाण्डर जियाउल करीब पैंतीस वर्ष का लम्बूतरे चेहरे और दाढ़ी वाला जीवट किस्म का इन्सान था। उसमें कमी यह थी कि इधर से उधर भागदौड़ करते समय उसका दायां पैर थोड़ा लचकता था। सहारे के लिए वह छड़ी का इस्तेमाल करता था।

जियाउल जिन जगहों पर भागदौड़ कर रहा था, वे कक्ष के विभिन्न हिस्सों में मौजूद रेडियो वायरलेस और ट्रांसमीटर सेट के स्थान थे।

उसे पिछले एक घण्टे से एक के बाद एक बुरी खबरें मिल रही थीं...बुरी और निराशाजनक खबरें। उन खबरों ने, कहा जा सकता था, उसके छक्के छुड़ा दिये थे।

असफलता भरी खबरों ने उसके होश उड़ा रखे थे।

उसका चेहरा पसीने-पसीने हो रहा था। अभी-अभी उसे वहां मौजूद ट्रांसमीटर सेटों में से एक पर एक नया पैगाम मिलने का संकेत मिला।

"कैम्प जहांगीरी...नम्बर तेरह...चौदह...ओवर...।"

ट्रांसमीटर सेट पर काल अटेण्ड करते ही संदेश मिला। उसकी डूबती-उतराती नौका रूपी आशाओं में नया संचार हुआ, उसने तेजी से पूछा—

"यस...यस मुजाहदीन तेरह चौदह...। क्या खबर है...? इस समय तुम कहां हो? क्या इण्डियन स्पाई डार्लिंग और शहबाज को तुम्हारे कैम्प के बहादुर जांबाज मौत की नींद सुलाने में कामयाब रहे...ओवर...।" उसके दिल की धड़कनें बढ़ी हुई थीं।

"हम इस समय सना के घने जंगल में घुसकर जान बचाने

में सफल रहे हैं कमाण्डर...हमारे पीछे शहबाज टुकड़ी के आये हुए हथियार बन्द बदमाश वापस लौट गये हैं...हम दो ही बचे हैं कमाण्डर ओवर....।"

जियाउल का सारा उत्साह भाप की तरह उड़ गया। सूचना देने वाले ट्रेनीज मिलिटेण्ट की ओर से केवल अपनी स्थिति की सूचना देने के साथ ही सारा नक्शा उसके सामने साफ होकर आ गया था।

ट्रेनीज मिलिटेण्ट ने यह बात कहकर कि सिर्फ वे दो ही बचे हैं, और जान बचाने के लिए उन्हें सना के जंगल में घुसना पड़ा है, जियाउल की निगाह में असफलता की तस्वीर आईने की तरह साफ कर दी थी।

"यस...।" गम्भीर हुआ जियाउल—"आंखों में रोष की चिंगारियां उड़ने लगीं। रगों में क्रोध की ज्वाला धधक उठी। बावजूद इसके अपने मिलिटेण्टों के लिए संयम का परिचय देना, कमाण्डर होने के नाते उसका फर्ज बनता था। उसने आगे कहा—"तुम दोनों जंगल से निकलकर अपने सहारे हेडक्वार्टर तक पहुंच सकते हो या तुम्हें हमारी ओर से मदद की आवश्यकता है...?ओवर...।""

"हम दोनों हेडक्वार्टर तक पहुंच सकते हैं कमाण्डर। ओवर।"

"अच्छी बात है...अब रिपोर्ट दो...। कैसे और क्योंकर यह स्थिति पैदा हुई। ट्रेनीज कैम्प के सारे के सारे मुजाहदीन मिलकर एक आफत की परकाला इण्डियन स्पाई डार्लिंग और एक अदद उल्लू के पट्ठे शहबाज खां का खात्मा क्योंकर न कर सके...? जबकि शुरूआती रिपोर्ट में कहा गया था कि उन दोनों को ट्रेनिंग कैम्प जहांगीरी के ऊपरी पहाड़ी पर पहुंचते ही घेर लिया गया है...दो ओर से उनकी घेराबन्दी कर ली गयी है...। मैं उनकी लाशें देखने की उम्मीद में था...तुम्हारी ओर से निगेटिव सूचना क्यों मिल रही है...ओवर...?"

जियाउल, अपने स्वर में पूरी तरह संयम से काम ले रहा था।

"इण्डियन स्पाई डार्लिंग जहरीली नागिन साबित हुई कमाण्डर...। हमारे मुजाहदीन साथियों ने बार-बार उसे मौत के मुंह में झोंकना चाहा। मगर वह बार-बार बचती और हमारे फ्रन्ट

मोर्चे के साथियों को डसती गयी...। वह न सिर्फ खुद बचती गयी बल्कि शहबाज खां तक को उसने बचाया। हमने उसकी वह क्वालिस कार तक तबाह कर दी, जिससे वे दोनों कैम्प जहांगीरी की पहाड़ी पर पहुंचे थे...लेकिन वे उसमें होने वाले विस्फोट से भी बच गये...। फिर शहबाज खां के गुण्डों की सशस्त्र टुकड़ी तेजी से वहां आ पहुंची और उनके सम्मिलित हमलों ने हमारे मुजाहदीनों पर कयामत बरपा कर दी...। मुजाहदीन मार दिये गये...। ट्रेनीज कैम्प को तबाह करते हुए एक-एक चीज लूट ली गयी...। हमारे साथ जंगलों में घुसकर जान बचाने का प्रयास करते साथियों का भी पीछा करके मौत के घाट उतारा गया। बस मैं और नम्बर चौदह उनकी पहुंच से दूर हो पाने में कामयाब रहे...ओवर...।"

यह थी, जियाउल के आशा की निगेटिव रिपोर्ट, जो ट्रेनीज मिलिटेण्ट नम्बर तेरह की रिपोर्ट से प्राप्त हुई थी।

"ओ०के०। रिपोर्ट मैंने समझ ली...। तुम हेडक्वार्टर पहुंचो। वह इण्डियन कुतिया इस बार भी बच गयी, मगर बार-बार न बचेगी...। किस्मत कब तक उसका साथ देती रहेगी...ओवर एण्ड आल...।"

कहने के साथ ही जियाउल ने सम्बन्ध विच्छेद किया।

उसका चेहरा असफलता के क्रोध से और भी सुलग उठा था। उससे पूर्व, वह एक के बाद एक तीन अन्य ट्रेनिंग कैम्पों पर, शहबाज के गुण्डों द्वारा हमले की सूचना पाता रहा था।

पर, हमले का जवाब देने की रणनीति का निर्देशन करता हुआ अपने मिलिटेण्टों का हौसला बढ़ाने का प्रयास करता रहा था।

लेकिन,

एक के बाद एक असफलता की सूचना ही हासिल होती रही थी।

डार्लिंग और शहबाज के बच जाने और जहांगीरी कैम्प के भी तबाह हो जाने की सूचना ने उसे अधिक हताशा में भर दिया। यूं महसूस करने लगा जैसे शतरंज की बिसात पर बिछी पूरी बाजी हार गया है।

वह हाथ मलता—बेचैनी से चहलकदमी करता हुआ आगे

के लिए कोई कदम उठाने की बात सोच रहा था तभी उसके जेब में पड़े मोबाइल पर बीप उभरी।

उसने जल्दी से मोबाइल निकाला। कालिंग लाइन दी।

दूसरी ओर से उभरने वाली आवाज को सुनते ही उसने अपनी हताशा पर कुछ हद तक काबू पाते हुए कहा—

"यस बारूद अली...मैं जियाउल बोलता हूं...।" उसने कहा।

"कमाण्डर जियाउल...।" बारूद अली की आवाज उभरी—"आर्गनाइजेशन की सलाहकार कमेटी को अब तक के ऑप्रेशन की पल-पल की जानकारी हो चुकी है।"

"क्या इस बात की जानकारी भी कि कैम्प जहांगीरी वाले मोर्चे पर भी हमारे मिलिटेण्टों को जबर्दस्त शिकस्त खानी पड़ी। अन्य तीन कैम्पों की तरह उस कैम्प को भी हर्राफा जासूस...डार्लिंग और शहबाज के गुण्डों की टीम ने पूरी तरह तबाह कर दिया, हमारे आदमी। एक-एक करके मार दिये गये। उस कैम्प के सिर्फ दो मिलेटेण्टों को जान बचाकर भागने में सफलता मिल सकी है...।" जियाउल ने अधीरता के साथ बताया।

"हां।" बारूद अली का सुलझा हुआ स्वर उभरा—"सलाहकार कमेटी की चेयरमैन को इन सभी बातों की जानकारी मिल चुकी है तथा यह भी कि ट्रेनीज शकील व वकील शहबाज के गुण्डों की पकड़ में आ गये हैं।" बारूद अली कहता रहा—"चेयरमैन की ओर से सलाह दी गयी है कि इस हार पर हमें निराश होने की आवश्यकता नहीं ...। चेयरमैन के कथनानुसार ऊंचे उद्देश्य को हासिल करने के लिए छोटी-मोटी कुर्बानियां देने की आवश्यकता पड़ जाती है। इण्डियन स्पाई डार्लिंग एक ऐसी बला है कि उसे आर्गनाइजेशन के लिए जिसको निशाने पर लेने के लिए यदि हमें अपने सौ-पचास मिलिटेण्ट कुर्बान कर देने पड़ें तो भी सौदा घाटे का न रहेगा।"

"लेकिन सौ-पचास मिलिटेण्ट कुर्बान करने के बाद भी तो हम उसे हिट नहीं कर सके...।" जियाउज बेताबी भरे स्वर में बोला।

"चेयरमैन की नजरों में यह एक इत्तफाक है। यह इत्तफाक

इसलिए बना क्योंकि शहबाज के साथ-साथ उसे, उसके गुण्डों का साथ मिल गया है।" बारूद अली कहता रहा—

"सलाहकार कमेटी की सोच थी कि हमारे दबाव में आकर, शहबाज आफत की परकाला को हमें सौंप देगा—वह अपनी तबाही व बरबादी न चाहेगा...लेकिन वह हमारे दबाव में न आया। समझा जाता है कि आफत की परकाला, हुस्न परी के शबाब का जादू उस पर चल गया है...। अपनी रिहाइशगाह को तबाह कराने के बाद भी उसकी अक्ल पर से परदा न हटा। वह पूरी तरह प्रतिशोध पर आमादा हो गया है।

हमें इस बात की भी उम्मीद न थी कि इतनी जल्दी और आसानी के साथ अपने गुण्डों की टुकड़ी को संगठित करके हमारे विरुद्ध ही अटैक की नीति अपना लेगा। हमारी सोच थी कि वह अपने रिहाइशगाह पर हुए हमले और तबाही के बाद पागल कुत्ते की तरह इधर से उधर भागता फिरेगा। हम उसे हिट करने के साथ-साथ इण्डियन स्पाई को भी मार गिरायेंगे। अगर हमारी योजना काम कर गयी होती तो जहां एक ओर शहबाज की मौत के बाद हमारे संगठन का दबदबा मरी इलाके में पूरी तरह से बढ़ जाता वहीं इण्डियन स्पाई की मौत पर हमें एक जबर्दस्त उपलब्धि यह हासिल होती कि हमारा आर्गनाइजेशन टॉप वन पर आ जाता।"

"लेकिन, सब कुछ उलट हुआ...। ना ही शहबाज खत्म हुआ, ना ही डार्लिंग—उल्टे हमारे मुजाहदीनों को जबर्दस्त रूप में जानी नुकसान उठाना पड़ा और संगठन को भारी माली नुकसान...।" जियाउल बड़बड़ाया।

"मैं एक बार फिर चेयरमैन का कथन याद दिलाना चाहता हूं कि ऊंचे उद्देश्य के लिए छोटी-मोटी कुर्बानियां देने की आवश्यकता पड़ जाया करती है...। अगला पाला हमारी जीत का होगा कमाण्डर जियाउल...!" दूसरी ओर से बारूद अली की सुलझी हुई आवाज उभरी।

"किस तरह...?"

"दुश्मन के हाथ पड़े हमारे दो युवा नौजवान शकील और वकील इस मामले में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगे, ऐसी सलाहकार

कमेटी की संयुक्त राय है। शकील और वकील को दुश्मन अपना महत्वपूर्ण मोहरा बनायेंगे। उनसे वे हमारे हेडक्वार्टर के बारे में अधिक से अधिक जानकारी हासिल करेगा। इस कामयाबी के मद में चूर होकर वे हमारी ओर अपनी पूरी ताकत से कूच करने की योजना बनायेंगे। हम उन्हें अपने हेडक्वार्टर की ओर बढ़ने देंगे। ऐसे में हम अपने आपको एक जगह समेट लेंगे। यदि वे रास्ते में तबाह नहीं हो जाते तो हमारे हेडक्वार्टर की सीमा में दाखिल होने के बाद ऐसे चक्रव्यूह में फंस जायेंगे जहां से, मौत के बाद उनके जिस्म को नहीं रूहों को ही बाहर निकालना नसीब हो पायेगा।"

और फिर दूसरी ओर से जियाउल को आगे की योजना, बारूद अली द्वारा समझाई जाने लगी।

इधर,

स्पाई क्वीन डार्लिंग ने हैदरबख्श और अल्लामेहर की ओर से पेश किये गये आइडिये से तसल्ली न की। वह टीम नम्बर तीन की ओर से बन्दी बनाकर लाए गये जो मामूली तौर पर जख्मी, मिलिटेण्टों की ओर बढ़ गयी।

वे दोनों खासे युवा थे—उस समय वे गनों के साये में थे। डार्लिंग ने गनमैनों को वहां से हट जाने का आदेश दिया।

गनमैनों के वहां से चले जाने के बाद थ्रिल क्वीन दोनों कैदियों के सामने पहुंची। उनके सामने पहुंचकर डार्लिंग ने पाया कि उन कैदियों को अभी पूरी तरह युवा भी न कहा जा सकता था। उन दोनों की उम्र सोलह और सत्रह के बीच थी। उनके शरीर हृष्ट-पुष्ट थे। हाथ-पैरों से निकलते हुए कद-काठी के थे। मगर दाढ़ी-मूंछ और चेहरे की मुलायमियत, उनकी उम्र के कच्चेपन का बोध करा रही थी।

"तुम्हारी खुशकिस्मती है कि तुम मौत के मुंह में नहीं पहुंचे हो बल्कि थोड़े-बहुत जख्मी हुए हो, जिन्दगी बच गयी है...।" डार्लिंग ने उनके चेहरों पर दृष्टि जमाकर मुलायम स्वर में कहा।

दोनों चुप रहे।

डार्लिंग ने और आगे बढ़कर उनके कंधों पर हाथ रखे। स्वर में पहले से ज्यादा नर्मी समेटकर कहा—

"न जाने किन जालिमों ने तुम्हारी जवानी में जहर घोल दिया है...। अभी तुमने जिन्दगी की कोई बहार नहीं देखी...बचपना खेल-कूद की उमंगों से गुजर कर जवानी की दहलीज पर चढ़ा तो तुम्हारे सिर पर कफन पहनकर, हाथों में हथियार और जेहन में इन्सानियत के प्रति नफरत के जहर बो दिये गये...। अब तुम्हें अपनी जिन्दगी से प्यार करके इसका सही लुत्फ उठाना चाहिए...।"

दोनों की आंखों में अचरज के भाव उभरे...।

लात-घूंसों, जूतों की ठोकरों, और दरिन्दगी से भरे स्वरों में गालियां व हर क्षण मौत की धमकियां सहते-सहते वे पल-पल सूख रहे थे—

वह जो सामने आयी थी उनके लिए एकदम नया चेहरा थी, उसका अन्दाज दूसरों से पूरी तरह जुदा था।

उसका ओहदा बड़ा है, इस बात को वे इसी बात से समझ गये थे जब उसके हुक्म पर उसे संगीनों की नोक पर रखने वाले वहां से हट गये थे।

जब उसने बोलना शुरू किया था तो उसके स्वर में खूंखारता के बजाय इतनी नर्माहट थी कि उनके मन में भरी कठोरता मोम की तरह पिघलती चली गयी थी।

वह उन्हें ममता, करूणा, दया और प्यार की देवी के रूप में नजर आ रही थी।

उनके चेहरे के भाव हर क्षण बदलते चले गये। उन्होंने यूं महसूस किया था जैसे घण्टों से लू के थपेड़े सहते-सहते उनके सामने शीतलता में डूबी बयार बहने लगी है। ऐसी ठण्डी बयार जो हर पल उन्हें जिन्दगी की ताजगी से भरती चली जा रही है।

डार्लिंग ने स्नेहिल स्वर में कहना जारी रखा—

"जब तुम पैदा हुए होंगे तो मां ने लोरियां सुनाकर तुम्हें नींद के आगोश में जाने के लिए, अपने हाथों पर झूला झुलाया होगा...। बाप ने खुशियों में भरकर मिठाइयां बांटी होंगी कि उनके खानदान को आगे चलाने वाला चश्मो-चिराग उनके घर में पैदा हुआ है। बहनों ने बलइयां ली होंगी और रिश्तेदारों ने बधाई के गीत गाए होंगे।

जब तुम घुटनों-घुटनों चले होंगे तब मां की आंखें खुशियों से छलकी होंगी, कि उनका बेटा अब कुछ दिनों बाद खड़ा होकर अपने पैरों पर चलने लगेगा। जब तुम पैरों-पैरों चलने को हुए होंगे, तो मां ने अपनी अंगुली का सहारा दिया होगा। मां का दिल, उल्लास से सागर की लहरों की तरह छलका होगा कि आज वे बेटे को अंगुली थमा रही हैं, कल बेटा जवां होकर उनका सहारा बनेगा...।

तुम्हारे बड़े होने की उम्र आते देख मां की आंखें हर पल तुम्हारी हरकतों पर जमी रहती होंगी...। पैरों में कांटा या कंकड़ तुम्हारे गड़े होंगे तो आह और टीस मां के होठों से फूटी होगी...। दौड़कर सीने से लगाया होगा...और पूछा होगा—मेरे लाल! ज्यादा चोट तो नहीं आयी? मामूली चोट और खरोंच पर मां का दिल तड़पा होगा...। बाप का कलेजा हिला होगा...।

बड़े नाजो-नियामत से अपनी औलाद को पालते हैं हर मां-बाप...। इस उम्मीद पर कि आने वाले कल में उनका बेटा उनके बुढ़ापे का सहारा बनेगा। औलाद के चेहरे पर जवानी की चमक आती देख, वे हसीन सपने बुनते हैं कि एक दिन उनके घर आंगन में शहनाई गूंजेगी...वे बेटे के लिए चांद सी बहू घर आंगन में लायेंगे...।

बेटा जवानी की चमक को बन्दूकों की गरज, धमाकों की कौंध में गुम कर देने के लिए, जंगलों, पहाड़ियों, घाटियों में उतर जाए...यह बात किसी भी मां-बाप के ख्वाब में नहीं होती...। अगर बेटा अपने मां-बाप के ख्वाबों को तोड़ जाए, तो उनके दिलों पर क्या बीतती है, इसे बस औलाद वाले ही जान सकते हैं...। हवाओं की हर आहट पर मां-बाप के कान लगे होते हैं कि उनका बेटा घर वापस आ गया है। आधी-आधी रात को उठकर मां की निगाहें घर के चौखट की ओर उठती हैं...और निराशा की टीस में भरकर तड़प-तड़प जाती हैं। लोग बुढ़ापे की उम्र पाकर मौत की फिक्र में घुलते हैं, वे मां-बाप तो आधी-अधूरी उम्र में रोज मर-मर कर जीते हैं जिनका जवान बेटा उनकी आंखों से इतना दूर चला जाए कि उसकी उन्हें कोई खबर ना हो...।

तुम दोनों ऐसी ही नालायक और नाकारा औलाद हो अपने

मां-बाप की, जिसने अपनी जवानी की उठती तरंग में, जीते-जी अपने मां-बाप को, भाई-बहनों के प्यार को मार डाला है...।"

कहते-कहते डार्लिंग के स्वर में ऐसी भावुकता सिमट आयी, कि स्वर भर्रा उठा था।

और सामने खड़े दोनों युवा बन्दियों की आंखों से टपा-टप आंसुओं की बूंदें जारी हो गयी थीं।

ब्यूटी क्वीन आगे बढ़ी—ममत्त्व पूर्ण भाव लिए हुए।

बढ़कर उसने दोनों के पीछे बंधे हाथों के बंधन खोल दिये। बोली—

"लो मैं तुमको आजाद करती हूं।"

हाथों के खुलते ही दोनों ने आंसुओं को खुश्क कर उस देवी सरीखी नारी को, आंसुओं के परदे से बाहर आकर देखने की कोशिश की...जिसके बारे में वे निर्णय न ले पा रहे थे कि वो कौन है, क्या है...। और उनसे चाहती क्या है।

"जाओ...मैंने तुम्हें आजादी दी...।" डार्लिंग ने प्रभावशाली स्वर में कहा।

"नहीं...।" एक ने कहा। स्वर आर्द्रता से भर्राया हुआ था।

"हम अब घर नहीं जा सकते...।" दूसरे ने इनकार में गरदन हिलायी।

"क्यों, आजादी तो बारह साल पिंजड़े में कैद रहने वाले तोते को भी प्यारी होती है...?" डार्लिंग के स्वर में आश्चर्य था।

दोनों के होंट जैसे सिल गये। नजरें नीची रहीं।

"तुम्हारा नाम क्या है...?" एक के कंधे पर हाथ रखकर डार्लिंग ने पूछा।

"शकील...।"

"और तुम्हारा...?" दूसरे से डार्लिंग ने पूछा।

"वकील...।" दूसरे ने बताया।

"तुम दोनों का आपस में कोई रिश्ता है...?"

"हम एक गांव के हैं। यही हमारा रिश्ता है...।" पहले वाले ने कहा, जिसने अपना नाम शकील बताया था।

"इसके अलावा और कोई रिश्ता नहीं...?" डार्लिंग ने दोनों के कांधों पर एक साथ हाथ रखा।

"है...।" दूसरा बोला जिसने अपना नाम वकील बताया था।

"हम एक ही मदरसे में साथ-साथ पढ़ते थे।"

"इस तरह दोस्ती या सहपाठी का रिश्ता भी हुआ तुम दोनों के बीच...।"

"हां....।" दोनों के होठों से एक साथ स्वर फूटा।

"चेहरा उठाकर बात करो। मुझे अपना हमदर्द समझो...। हर तरह का डर-खौफ दिल से निकाल दो। मेरे रहते तुम्हें कोई अंगुली भी न लगाएगा...इस बात को दिलो-दिमाग में अच्छी तरह बिठा लो...। मैं तुम्हारे जख्मों की मरहम-पट्टी भी कराऊंगी और इस बात की कोशिश भी करूंगी कि आगे तुम्हें बेहतर जिन्दगी जीने का मौका हासिल हो सके...।"

दोनों ने चेहरा उठाया।

उनकी आंखें अब भी डबडबाती चली आ रही थीं।

"आप मेरे लिए इतना सब क्यों कर रही हैं...?" शकील ने हिम्मत संजोकर धीमे स्वर में पूछा।

"इसलिए कि तुम्हारी अभी उम्र वह नहीं हुई है जिससे इन्सान अपने अच्छे-बुरे का खुद निर्णय लेने लायक हो जाए...। कानूनी तौर पर तुम अभी बालिग भी नहीं हो...। नाबालिगों की सजा के मामले में रियायत दुनिया का हर कानून करता है...।" डार्लिंग कहती रही—"और मेरा दिल कहता है तुमने अपनी इच्छा से हथियार उठाकर मिलिटेण्ट बनने का शौक नहीं पाला है...। तुम्हारे दिमागों में या तो इस काम के लिए गन्दगी ठूंसी गयी है या फिर जोर-जबर्दस्ती करके हाथों में हथियार थमाये गये हैं...।"

"हमारे साथ दोनों ही वह काम हुए हैं जो आप कह रही हैं...। दो साल पहले, जब हम मदरसे से पढ़कर घर लौटकर जा रहे थे, तो रास्ते में हथियारों के बल पर हमें उठाया गया। जीप पर लादकर कैम्पों की ओर ले जाया गया। फिर हमें जिहाद का पाठ पढ़ाया गया। हमें इस बात को बताया गया कि इस दुनिया में हमारा जन्म इस्लाम की खिदमत करने के लिए हुआ है। हम इस्लाम के लिए जेहाद करने मैदान में उतरें तो जन्नत की हूरें बांह फैलाकर हमारा स्वागत करेंगी...। हमें बागे-फिरदौस में जगह

मिलेगी...। हमारे दिलो-दिमाग से घर, बार, मां-बाप, भाई-बहन, नाते-रिश्तेदारों सब का मोह हटा दिया गया...और इस बात के लिए तैयार किया गया कि हम इस्लाम की हिफाजत के लिए अजीम मकसद में उतरकर खुदा की राह में जिन्दगी कुर्बान कर दें...।"

"और तुम उनकी बातें मानते चले गये...?" डार्लिंग ने आश्चर्य के साथ पूछा।

"नहीं—हम सिर्फ ज्ञातों से उनकी बातें नहीं मानते चले गये...।" वकील ने बताया—"बल्कि हमारे डर और खौफ को दूर करने के लिए, अपनों की यादें भुलाने के लिए, हमें सुबह-शाम इन्जेक्शन दिया गया, जिसका नशा, बागे-फिरदौस अर्थात् जन्नत के बाग की सैर कराने के लिए, घण्टों के लिए, अपने आपमें हमें समेट लेता था। धीरे-धीरे हम नशे और उनकी बातों के आदी होते गये...। और वही सीखते चले गये जो वे सिखाना चाहते थे।"

"ओ माई गॉड...।" डार्लिंग चौंककर बुदबुदायी—"ब्रेन वॉश...।"

"ये ब्रेन वॉश क्या होता है...?" शकील ने पूछा।

"ये ब्रेन वॉश वही होता है जो तुम्हारे साथ हुआ है...। ब्रेन वॉश यानि दिमाग की सफाई। दिमाग में पहले से मौजूद बातों की सफाई करके, उन नई बातों को ठूंस दिया जाना, जिसे ठूंसने वाला अपनी जरूरत समझता है, ब्रेन वॉश कहलाता है।" डार्लिंग ने बताया। फिर तेजी से पूछा—"तुम्हारे साथ उस कैम्प में तुम जैसी उम्र के और कितने युवा थे?"

"पचास...।" वकील ने बताया।

"किसी एक खास जगह के...?"

"नहीं, अलग-अलग जगहों के दो-दो, चार-चार...।"

"क्या तुम्हें अपने घरवालों, मां-बाप, भाई-बहन की याद है...?"

"अब आपके कहने और याद दिलाने से याद आयी है...।" शकील ने कहा।

"और वकील तुम्हें...?"

"हमारी आंखों से बहते हुए आंसुओं ने हमें सब कुछ याद दिला दिया है।"

"फिर तो तुम्हें इस बात का भी एहसास हो जाना चाहिए कि तुम्हारी दो साल की जिन्दगी बरबाद कर दी गयी।"

"हां, अब एहसास हो रहा है...।"

"तुम्हें नफरत होनी चाहिए उन लोगों से, जिन्होंने तुम्हें इन्जेक्शन दे-देकर तुम्हारे एहसासों को सुलाए रखा है...।"

"हां, अब कैदी बनने के बाद हमें एहसास हुआ है कि जिन्दगी का प्यार क्या होता है...।" शकील बोला।

"आजादी क्यों नहीं चाहते, क्यों कहा कि घर नहीं जाना चाहते...?"

जवाब दिया वकील ने—

"इसलिए कि हम अपने कुछ साथियों का बुरा हश्र देख चुके हैं...। उन साथियों का, जिन्होंने कैम्पों से फरारी का रास्ता अख्तियार किया....। लड़ाई के मोर्चे से पीठ दिखाकर भागे...और घर पहुंचे। उनके पीछे दर्जनों की तादाद में मिलिटेण्ट घातक हथियारों के साथ उनके घर पहुंचे। उनके घरों में पहले आग लगायी गयी...हथगोले बरसाए गये...फिर भागने वालों सहित उनके मां-बाप, भाई-बहन, अन्य सारे नाते-रिश्तेदारों को एक लाइन में खड़ा करके तोप से उड़ा दिया गया या उनके जिस्मों में इतनी गोलियां दागी गयीं कि जख्मों की गिनती न की जा सकी...। संगठन का साथ छोड़कर भागने वालों या पीठ दिखाकर मोर्चा छोड़ने वालों की वीडियो कैसेट हम लोगों को बार-बार दिखायी गयी। ऐसे लोगों का हश्र देख चुकने के बाद हमें मर जाना मंजूर है, मगर घर, मां-बाप और खानदान वालों की बरबादी देखना मंजूर नहीं...।"

वकील की बात सुन थ्रिल क्वीन की मुट्ठियां भिंच उठीं। दहशतगर्दों की बर्बरता का एक नया पहलू उसके सामने आया। उनके प्रति रोष की चिंगारियां और गहराई से उसकी रगों में उबाल खाने लगीं। वकील के कथन का पहलू समझ डार्लिंग ने सोचपूर्ण स्वर में कहा—

"फिर तुमने क्या सोचा है अपने बारे में...?"

"हमें आपने जिन्दगी की आजादी दी है तो हम आपके बीच ही रहना चाहते हैं...।" शकील ने कहा।

"कब तक...?"

"जब तक हमें इस बात की गारण्टी न मिल जाए कि अपने घरों को वापस जाने के बाद हमारे घर और खानदान वालों पर कयामत भरी आफत न टूटेगी...।"

"यह गारण्टी उस समय आप ही आप मिल जाएगी जबकि हिजबुल मुरसलीन संगठन की तबाही पूरी तरह सुनिश्चित हो जाएगी। और इस काम को मैं करके रहूंगी...।" डार्लिंग ने दृढ़ता से कहा।

"उस समय तक हम आपके साथ ही रहेंगे...।"

"और हमारा साथ भी दोगे...?" डार्लिंग ने सवाल दागा।

"हम जान पर खेलकर भी आपका साथ देंगे...।" दोनों ने कहा—"आप जैसे भी चाहें हमारा इम्तहान ले सकती हैं।"

"तुम्हारा पहला इम्तहान यह है कि हिजबुल मुरसलीन का हेडक्वार्टर इन दिनों कहां है...इस बारे में बताओ।"

"नीलकाफ की पहाड़ियों पर।" शकील ने कहा।

"नीलकाफ का इलाका पाक और ईरान की सीमा को छूता हुआ और दर्रों वाला पहाड़ी इलाका है...।" वकील ने बताया।

"तुम दोनों वहां आते-जाते रहे हो...?"

"कई बार...।"

"वहां की भौगोलिक स्थिति की जानकारी तुम्हें है?"

"अच्छी तरह...।"

"आओ मेरे साथ...।" डार्लिंग ने कहा और घूम पड़ी।

उसका रुख उस ओर था जहां शहबाज, हैदरबख्श और अल्लामेहर के साथ आगे की रणनीति को बनाने में व्यस्त था।

रातों-रात नीलकाफ पहाड़ियों की ओर प्रस्थान करने की योजना तैयार हुई।

डार्लिंग की योजना को स्वीकार करते हुए शहबाज ने अपनी टीम को आठ छोटी-छोटी टुकड़ियों में बांट दिया।

टुकड़ियों को चार दिशा से आगे बढ़ने का प्लान तैयार

किया गया। बढ़ने वाली टुकड़ी के पीछे उसकी सहायता टुकड़ी को रखने की योजना दी गयी। ऐसी व्यवस्था की गयी थी कि संचार माध्यम द्वारा सभी टुकड़ियों का एक-दूसरे से सम्बन्ध बना रहे।

थ्रिल क्वीन ने अपने साथ शहबाज को रखना स्वीकार किया ही, साथ ही अल्लामेहर की मौजूदगी को भी आवश्यक माना। शकील की उपयोगिता मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार की थी।

एक अन्य टुकड़ी में हैदरबख्श को नेतृत्व सौंपा गया, जिसके साथ मार्गदर्शक वकील को रखा गया।

शहबाज, अल्लाह मेहर, शकील सहित डार्लिंग की टुकड़ी के बारह सदस्य थे। तेरहवें सदस्य के रूप में डार्लिंग खुद उनका कमाण्ड कर रही थी।

एक जीप तथा तीन बख्तरबन्द गाड़ियों के साथ डार्लिंग का काफिला बढ़ा।

भोर का उजाला फूटने में अभी एक घण्टे की देरी थी।

पहाड़ी इलाका पीछे छूट गया था। डार्लिंग की टुकड़ी अब मैदानी इलाके से गुजर रही थी। वह मैदानी इलाका कच्चा, धूल गर्द से युक्त था। गाड़ियों की रफ्तार पच्चीस से तीस के बीच रखनी पड़ रही थी क्योंकि अधिक तेज रफ्तार के कारण उड़ती हुई धूल के आगे आने से रास्ता दिखना बन्द हो जाता था।

कच्चा रास्ता ज्यादा खुला हुआ न था—दोनों ओर उगे हुए लम्बे-लम्बे सरकण्डों की झाड़ियां, चलती हवा के साथ-साथ सरसराहट छोड़कर वातावरण में रोमांच भरा माहौल उत्पन्न करती थीं।

नीलकाफ की पहाड़ियां अब दिखाई पड़ने लगी थीं—मगर उनका दिखना भर इस बात के लिए उत्साहजनक न था कि मंजिल करीब आ गयी है।

मंजिल अभी दूर थी।

डार्लिंग के साथ सफर कर रहे शकील ने सरकण्डों की झाड़ियों वाला इलाका शुरू होते ही कहा—

"यहां से मुरसलीन वालों का इलाका शुरू हो जाता है मैडम...।"

अन्य की देखा-देखी शकील भी डार्लिंग को 'मैडम' का

सम्बोधन देने लगा था—"पाक सैनिक ऑप्रेशन के एक मौके पर मुरसलीन के कमाण्डर वकार ने अपने मिलिटेण्टों को, सरकण्डों वाले इस जंगल के दोनों ओर से मोर्चे बन्दी के लिए मैदान में उतार दिया था...।"

"कमाण्डर वकार....?" डार्लिंग ने प्रश्न किया।

"एक साल पहले, कमाण्डर वकार ही मुरसलीन का नम्बर वन ओहदेदार था।"

"था से क्या मतलब?"

"मैं जिस ऑप्रेशन का जिक्र कर रहा हूं...उसमें कमाण्डर वकार को, अपने साथ-साथ मुरसलीन संगठन के नम्बर दो और तीन के ओहदेदारों को भी, मोर्चे में झोंककर जान गंवानी पड़ी थी...।"

"ओह! ठीक। मैं समझी।" डार्लिंग ने कहा—"इस समय संगठन पर, चौथे नम्बर के ओहदेदार जियाउल का कब्जा है न...। जियाउल ही संगठन का मुख्य कर्ता-धर्ता है...। ऐसा ही है...?"

"जी हां, मुख्य रूप से जियाउल ही इस समय संगठन का कमाण्डर है...।" शकील ने बताया—"लेकिन वही सब कुछ नहीं, ऐसी भी चर्चा है। जियाउल को कन्ट्रोल करने वाली कोई और भी ताकत है—जिसे, संगठन की गोपनीयता बनाए रखने के लिए चन्द ऊपर के ओहदेदारों के बीच ही सीमित रखा गया है। एक साथ तीन चोटी के ओहदेदारों के खात्मे के बाद संगठन की नीति में यह परिवर्तन लाया गया है कि एक वक्त में एक ही ओहदेदार को मुख्य रूप से उजागर किया जाए। शेष ओहदेदारों का मामला पूरी तरह से गुप्त रखा जाए। यही वजह है कि हम जैसों की जानकारी में भी यह बात नहीं लायी गयी है कि जियाउल के अलावा संगठन का कोई अन्य बड़ा ओहदेदार है...और अगर है तो वह कौन है...महत्वपूर्ण फैसले की राय सलाहकार कमेटी देती है। वह फैसला चेयरमैन के नाम पर आगे बढ़ाया जाता है।"

"और बारूद अली...।" डार्लिंग ने पूछा—"उसकी पोजीशन संगठन में किस दर्जे की है...?"

"उसका दर्जा बड़ा है...मगर सिर्फ बारूदी मामलों में।

आदेश देने के मामले में उसकी पोजीशन पूरी तरह शून्य रहती है...। वैसे सलाहकार कमेटी में अच्छी हैसियत रखता है।"

"अब उस बात पर आ जाओ, जबकि सैनिक मुठभेड़ में वकार और संगठन के नम्बर दो व तीन ओहदेदार मारे गये थे—क्या हुआ था?"

"वह पाकिस्तानी फौज का अब तक का किसी पाकिस्तानी मुजाहदीन संगठन के विरुद्ध की गयी सैनिक कार्रवाई का सबसे बड़ा हमला था। उस हमले में हेलीकाप्टरों और हवाई जहाजों का भी इस्तेमाल किया गया था...। हेलीकॉप्टरों के गश्ती राउण्डों को देखते हुए कमाण्डर वकार ने जमीनी मोर्चेबन्दी का फैसला लिया था। वह अपने सभी मिलिटेण्टों को इस सरकण्डों के जंगल में उतार लाया था।

मिलिटेण्टों ने यहां से गुजरती फौज पर जबर्दस्त छापा मार हमला कर उनकी कई सैनिक गाड़ियां तबाह कर दी थीं...। दर्जनों सैनिकों को मौत की नींद सुला दिया गया था।

लेकिन, वह छापामार हमला कमाण्डर वकार के लिए जबर्दस्त भूल साबित हुआ था। गश्ती हेलीकॉप्टरों से पेट्रोल बमों की बारिश कर, सरकण्डों के जंगल में भयानक रूप से आग लगा दी गयी थी...। आग की लपटों की रोशनी मीलों दूर तक देखी गयी थी...। दर्जनों मिलिटेण्टों को आग की भीषण लपटों में घिरकर मौत के मुंह में समा जाना पड़ा था। कदम पीछे सरकाकर भागने वाले मिलिटेण्टों पर हेलीकॉप्टर से गोलियां या गोले बरसाये गये थे—गोलों के विस्फोटों से कमाण्डर वकार तथा नम्बर दो, तीन के ओहदेदारों को, अपने दर्जन भर मिलिटेण्टों के साथ जान से हाथ धोना पड़ा था।"

"और अगर उनकी ओर से इस तरह की गलती दोहराई जाती है तो उसी तरह का नुकसान उठाना पड़ जाएगा।" डार्लिंग ने कहा।

उसका इशारा सरकण्डों के जंगलों की ओर से मिलिटेण्टों की ओर से हमला करने की सम्भावित कार्रवाई की ओर था।

"गलती दोहराए जाने की उम्मीद नहीं...।" शकील ने कहा।

"लेकिन हम असावधान नहीं रहेंगे...।" अल्लामेहर अपनी

गन पर मजबूती से हाथ जमाकर चारों ओर चौकन्नी निगाहें दौड़ाता हुआ बोला।

सरकण्डों के जंगल का इलाका काफी लम्बा-चौड़ा था—उसे पार करने में करीब पन्द्रह मिनट का समय बीत गया।

"सरकण्डों वाले जंगल के बाद चारगास की घाटियों का इलाका शुरू होगा मैडम...!" शकील ने कुछ देर की खामोशी के बाद बताया।

"मुझे चारगास घाटियों के बारे में पूरी मालूमात है...।" शहबाज ने कहा—"ये घाटियां नीलकाफ को चारों ओर से घेरती हैं। उनका नक्शा मेरे जेहन में अच्छी तरह से है...।"

"और मेरे भी...।" अल्लामेहर ने कहा—"केवल सरकण्डों वाले इस जंगल से मैं इस समय से पहली बार नहीं गुजरा। मैं चालीस दिनों तक यहां की घाटियों की खाक छानता रहा हूं। ये उन दिनों की बात है जबकि मुरसलीन वालों का यहां कब्जा न था और मैं यहां की पुलिस से बचने के लिए यहां मारा-मारा फिर रहा था। उस समय मैं तुम्हारे पास न पहुंचा था शहबाज खां...।"

अल्लामेहर की बात पर शहबाज बस जरा-सा मुस्कराकर रह गया। उसकी समझ में न आया कि वह अल्लामेहर की उस दास्तान के जवाब में क्या कहे।

अलबत्ता, स्पाई क्वीन ने अल्लामेहर की बात को अपने लिए खास महत्व का माना। उसे तसल्ली हुई कि शकील और शहबाज के अलावा तीसरा शख्स भी है जिसे वहां की घाटियों की अच्छी जानकारी है।

सिर्फ अच्छी नहीं बल्कि उसने यह बात भी मान ली थी कि अल्लामेहर को वहां की सबसे अच्छी जानकारी है। जो इन्सान चालीस दिनों तक जान बचाने के लिए घाटियों में छुपता रहा हो, उसे स्वाभाविक रूप से वहां के न सिर्फ चप्पे-चप्पे की जानकारी हो सकती है, बल्कि वहां छुपने के खुफिया ठिकानों का भी पता हो सकता था।

कुछ देर बाद,

डार्लिंग का काफिला घाटी के बीच उतरकर आगे बढ़ने लगा।

"मिस डार्लिंग...।" अचानक शहबाज ने चाक-चौबन्द स्वर में डार्लिंग को सम्बोधित किया—"मेरा मशविरा है कि गाड़ियों का बढ़ना रोक दिया जाए...।"

मशविरे की वजह जाने बगैर स्पाई क्वीन ने गाड़ियों को रुकने का संकेत किया।

गाड़ियों के रुकते ही वह खुद फुर्ती के साथ गाड़ी से उतरती हुई बोली—"मेरे भी ख्याल में यही बात आ रही थी मिस्टर शहबाज, जो शायद तुम्हारी सोच है।"

"आपके ख्याल में क्या बात आ रही थी...?" शहबाज ने उत्सुकतापूर्ण स्वर में पूछा।

"रास्ते को पूरी तरह से खुला छोड़ा जाना...।" डार्लिंग ने झट कहा—"वातावरण में चारों ओर फैला हुआ सन्नाटा जिस तरह तूफान आने का सूचक हुआ करता है, ठीक उसी तरह दशहतगर्दों से प्रभावित इस इलाके में पसरी हुई खामोशी खतरे की सूचक है...।"

"ठीक!" शाहबाज प्रशंसनीय नेत्रों से डार्लिंग की ओर देखता हुआ बोला—"मैं यही बात कहने वाला था।"

"यस!" डार्लिंग चाक-चौबन्द भाव से चारों ओर देखती हुई बोली—"यह तो हो ही नहीं सकता कि दुश्मन के हेडक्वार्टर तक इस बात की इत्तला न पहुंची हो कि उसके ट्रेनिंग कैम्प तबाह कर दिये गये हैं...। इस सूचना के पाते ही उनके लिए जरूरी हो जाता है कि वे इस बात को समझ लेते कि हम अब उनके मुख्य ठिकाने की ओर बढ़ेंगे। इस स्थिति में उन्हें इन रास्तों की घेराबन्दी मजबूत करनी चाहिए थी।"

"ओह यस...।" शहबाज ने कहा—"हो सकता है कि उन्होंने ऐसी नीति बना रखी हो कि हम आगे बढ़ें और वे चारों ओर से घेराबन्दी करके हम पर छापामार हमला कर दें।"

"यह सम्भव है....पर दुश्मन की इस रणनीति से मुझ पर कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। ऐसी किसी सम्भावना को निगाह में रखकर हमारा आगे बढ़ना रुक नहीं सकता...।" डार्लिंग ने जोश भरे स्वर में कहा—"हमारे सामने असल मामला यह है कि दुश्मनों की रणनीति क्या है?"

"हो सकता है दुश्मन की संख्या मुख्यालय पर इतनी कम हो कि उन्होंने दुबककर बैठ जाना ही हितकर समझ हो...।" अल्लामेहर ने अपनी राय व्यक्त की।

"एक और बात भी हो सकती है...।" शकील गाड़ी से उतर पड़ता हुआ बोला—"उन्होंने आगे बढ़ने के रास्ते में बारूदी सुरंगें बिछा दी हों...।"

"यू आर राइट शकील...।" डार्लिंग ने बढ़कर शकील की पीठ थपथपाई। कहा—"अपनी कम संख्या को देखते हुए दुश्मन की ओर से इस तरह की नीतियां काम में लायी जाती हैं।"

और इस बात को कहने के साथ ही स्पाई कवीन ने शहबाज के सामानों के साथ लाये गये थैले से मेटल डिटेक्टर निकाला। मेटल डिटेक्टर शकील के हाथ में थमाकर उसे आगे बढ़ने का इशारा करते हुए कहा—

"इस काम को तुम करोगे शकील। मेटल डिटेक्टर सहित आगे बढ़ोगे...। अगर उन्होंने छुपकर मोर्चाबन्दी कर रखी है तो उनकी नजरों में पहले तुम आओगे। वे तुम्हें पहचानकर गोलियां चलाने से हिचकेंगे। वे इस बात को समझेंगे कि तुम्हें हमारे द्वारा आगे बढ़ने को मजबूर किया गया है...। इस सूरत में वह पहले छुटपुट गोली बारी, फिर सामूहिक हमला कर, तुम्हें बचाने का प्रयास करेंगे...और मैं यही चाहती हूं कि वे एक मुश्त, थोक में हमारे सामने हमलावर होकर आ जाएं...।"

"मुझे मजबूर नहीं किया जा रहा है मैडम...।" शकील ने दिलेराना स्वर में कहा—"बल्कि मुझे आपकी ओर से ड्यूटी सौंपी जा रही है। इस सूरत में सबसे पहले सीने पर गोली खा लेने में मैं फख्र महसूस करूंगा।"

"शाबाश...। मेटल डिटेक्टर से चारों ओर की टोह लेते हुए बढ़ो...।" डार्लिंग ने आदेशात्मक स्वर में कहा।

शकील आगे-आगे बढ़ने लगा। वह पैदल था, बाकी लोग उसके पीछे जीपों तथा असलहों से लदी अन्य गाड़ियों पर।

शकील के चेहरे पर डर या खौफ का लेशमात्र भी भाव न था।

अभी वह तकरीबन सौ मीटर आगे ही गया था कि मेटल

डिटेक्टर पर लाल हुआ बल्ब स्पार्क करने लगा।

डार्लिंग लपककर उस तक पहुंची। उसने उस पर लगे हुए कुछ बटन दबाकर इस बात को जानने की चेष्टा की कि बारूदी सुरंग किस जगह पर है।

वह ठीक उनकी राह में था।

"सचमुच! यही युक्ति उन्होंने अपनायी थी...।" डार्लिंग ने उत्साहित स्वर में शहबाज तथा टीम के अन्य सदस्यों को सम्बोधित करके कहा।

शहबाज, अल्लामेहर तथा टीम के अन्य सदस्य भी वहां आ एकत्र हुए।

"अब...?" शहबाज ने प्रश्न छोड़ा।

"हम इसे खोदकर निकालेंगे...और आगे का सफर इसी तरह जारी रखेंगे।" डार्लिंग ने निर्णायक स्वर में कहा।

और फिर,

आगे का काम अंजाम दिया अल्लामेहर ने। उसने लकड़ी के नोकीले डंडों की सहायता से थोड़ी कोशिश के बाद उस स्थान को खोद डाला—जहां के बाबत मेटल डिटेक्टर ने संकेत दिया था।

वहां एक के बाद एक तीन बारूदी सुरंगें बरामद हुईं। उन सुरंगों को आर० डी० एक्स० एवं चार्ज बैटरी के द्वारा इस तरह से एक्टिव कर रखा गया था कि अगर उस रास्ते से गाड़ियां गुजरतीं तो मात्र दबाव पाते ही वे बारूदी सुरंगें एक-एक करके फटते हुए भयानक तबाही का कारण बन जातीं।

सावधानी के साथ बारूदी सुरंगों को हटाने तथा आर० डी० एक्स० के पैकेटों को बैटरी सम्पर्क से अलग किया गया फिर उन्हें कब्जे में लिया गया। उसके बाद रास्ता साफ कर आगे बढ़ने का निर्णय लिया गया।

"दुश्मन छापामार हमले के एकदम मूड में नहीं...।" डार्लिंग ने निर्णय देते हुए कहा—"वह किसी एक जगह अपनी शक्ति के साथ सिमटा हुआ है। उसकी बारूदी सुरंगों वाली नीति असफल हो गयी है दोस्तों। हमें अब अधिक होशियारी के साथ आगे बढ़ना होगा।"

"हम कदम-कदम पर सतर्कता बरतेंगे...।" शहबाज बोला।

"आगे बढ़ने से पहले हमें अपनी अन्य सभी टुकड़ियों की पोजीशन मालूम कर लेनी चाहिए। उन्हें भी बारूदी सुरंगों के मामले में खबरदार कर देना चाहिए...। ऐसा ही मामला घाटी के उन रास्तों पर भी हो सकता है जिधर से बढ़ने का उन्हें प्लान दिया गया है।" डार्लिंग ने परामर्श दिया।

परामर्श पर तेजी से अमल करने का कार्य किया शहबाज तथा अल्लामेहर ने। ट्रांसमीटर, रेडियो वायरलेस तथा मोबाइल फोन द्वारा अन्य टुकड़ियों से सम्पर्क बनाया जाने लगा।

संदेशों का आदान-प्रदान होने लगा।

दूसरी ओर से संदेश मिला कि अभी तक सभी सकुशल हैं। उन्हें दुश्मन की ओर से किसी प्रकार की झड़प का सामना नहीं करना पड़ा है...। दूसरी ओर से इस समाचार के मिलने के बाद उन्हें बारूदी सुरंगों के बावत चौकसी बरतने का निर्देश दिया गया। इस बात की खबर अपने पीछे की टुकड़ी के हैदरबख्श और वकील को भी खास तौर पर दी गयी।

सूचनाओं के आदान-प्रदान के बाद डार्लिंग ने राय दी—

"इन बारूदी सुरंगों की उपस्थिति इस बात का परिचायक है कि हम दुश्मन के सही लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं। उस पर की जाने वाली हमारी चारों ओर की घेराबन्दी उसकी पूरी तरह से तबाही की कहानी, लिखने जा रही है...।" रुककर वह बोली—"इस तरह की बारूदी सुरंगें आगे और भी हो सकती हैं...इसलिये आगे बढ़ने के मामले में पूरी सतर्कता और सजगता की आवश्यकता है...।"

"हम सब इसके लिए प्रयासरत हैं मैडम...।" अल्लामेहर ने कहा।

इस तरह, एक बार फिर, डार्लिंग की टुकड़ी आगे बढ़ने लगी।

कुछ देर बाद, सुबह के फूटते उजाले के साथ इस बात का निर्णय लिया गया कि आगे बढ़ना रोककर किसी सुरक्षित स्थान पर पड़ाव डाला जाए तथा ऐसा ही निर्देश अन्य टुकड़ियों को दिया जाए।

लिए गये उस सामूहिक निर्णय पर अमल किया जाने की तैयारी में सब लग गये।

शाम ढलने पर आगे बढ़ने का मिशन फिर शुरू हुआ। इस बार पहले जैसी सतर्कता बरती जाने लगी।

कुछ देर बाद डार्लिंग के सामने, घाटी को पार कर, पहाड़ियों की ओर बढ़ने के लिए पहाड़ी और घाटी के बीच पड़ने वाली एक नदी को पार करने की समस्या आयी।

नदी का पाट ज्यादा चौड़ा न था, पर पहाड़ी नदी होने के कारण वह काफी गहरी थी।

"मैंने यहां अपने छुपने के दिनों में इस इलाके में लकड़ी का एक पुराना पुल देखा था मैडम...।" अल्लामेहर ने बताया—"वह पुल यहां पहाड़ियों पर आबाद पुराने वाशिन्दे अपने आने-जाने के इस्तेमाल में लाते थे, जो दहशतगर्दों के इस इलाके के कब्जा होने के बाद यहां से पलायन कर गये हैं...।"

"अगर वह पुल अभी भी है तो अवश्य ही दहशतगर्द उसे अपने इस्तेमाल में लाते होंगे...।" डार्लिंग ने कहा।

"हो सकता है...।" शहबाज बोला। फिर उसने अल्लामेहर को निर्देश दिया—"उस पुल को खोजने के कार्य में लग जाओ अल्लामेहर...। नदी को पार कर पहाड़ी पर पहुंचने के लिए पुल का ढूंढा जाना बहुत आवश्यक है।"

"बशर्ते कि वह अब भी हो...।" डार्लिंग ने टिप्पणी की।

"कोशिश कर लेने में हर्ज क्या है...।" शहबाज बोला।

"नहीं मिलता तब हम नदी को तैरकर पार करेंगे...।" डार्लिंग ने निर्णय दिया—"और दूसरी टुकड़ी के आदमियों को भी यही राय देंगे...। लेकिन उस सूरत में हमें गाड़ियां यहीं छोड़नी पड़ेंगी...।"

"लेकिन, पुल मिल जाने के बाद भी गाड़ियों को तो छोड़ना ही पड़ेगा—क्योंकि लकड़ी का बना वह पुराना पुल इतना चौड़ा नहीं है कि उस पर एक जीप भी गुजर सके...इसके साथ ही वह

गाड़ियों का भार सहने के लायक भी नहीं है।" अल्लामेहर ने बताया।

"पहले उसे तलाशो...। उसके सामने आने पर अगली बात सोची जायेगी कि उसे कैसे पार किया जाए...। उसकी हालत और स्थिति देखने के बाद ही कोई फैसला लिया जाएगा...।" डार्लिंग ने कहा।

अपने इस निर्णय के बाद,

अल्लामेहर के साथ अपनी टुकड़ी के चार अन्य सदस्यों को डार्लिंग ने लगा दिया। वे सभी ए० के० छप्पन और हथगोलों से लैस थे।

अल्लामेहर ने आधे घण्टे की कोशिश के बाद लकड़ी का वह पुल खोज निकाला, जिसके बाबत उसने पहले देखे जाने का जिक्र किया था।

वह पुल उत्तर की ओर था। कोई आधा किलोमीटर आगे जाने के बाद वह मिला था।

पुल की खोज के बाद दो लोगों को खबर देने के लिए अल्लामेहर ने डार्लिंग की ओर दौड़ाया। वह खुद दो रक्षकों के साथ पुल के पास रुक गया।

खबर आने पर डार्लिंग का ठहरा हुआ काफ़िला उत्तर की ओर उस रास्ते की ओर बढ़ने लगा जहां पुल के करीब अल्लामेहर जमा हुआ था।

वहां तक काफिले को पहुंचने में दस मिनट का भी समय न लगा।

डार्लिंग ने पुल को दूर से ही देखते ही सोचा—उसे पार करने में उन्हें लोहे के चने चबाने पड़ेंगे। इसकी वजह यह थी कि वह ही पहाड़ी पर आने-जाने का एक मात्र माध्यम था। वह सरहदी इलाके में था। और उसकी हिफ़ाजत दहशतगर्द जान से भी ज्यादह कर सकते थे।

पुल संकरा था। एक वक्त में चार लोग मुश्किल से उस पर से गुजरकर आगे जा सकते थे। गाड़ियों को उन पर से ले जाने का तो सवाल ही पैदा न होता था।

डार्लिंग के काफिले के करीब पहुंचते ही अल्लामेहर पुल को

खोज निकाले जाने के जोश में कुछ इस तरह भरा जैसे उसने खुद को कोलम्बस समझ लिया हो।

उसने हाथ हिलाकर डार्लिंग टुकड़ी का स्वागत किया और उत्साह में भरा हुआ पुल पार करने के लिए अपने साथ के दो साथियों के हमराह, पुल को सबसे पहले पार करने के लिए दौड़ा।

उसने पुल पर कदम रखा ही था कि एक कान फाड़ देने वाला धमाका हुआ और अल्लामेहर तथा उसके साथ के दोनों साथियों के जिस्म हवा में लगभग पन्द्रह फुट ऊपर उछलकर टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गये।

स्पाई के कंठ से चीख उबल पड़ी। वह बेतहाशा आगे को दौड़ी...। उद्देश्य अल्लामेहर और उसके साथ के दोनों लोगों को बचाना था—लेकिन यह महज उसकी भावुकता थी।

मरने वाले पलक झपकते मौत के मुंह में समा गये थे, उनके लिए अब कुछ भी न किया जा सकता था—यहां तक कि उनके जिस्म के टुकड़ों को जोड़ना भी बस की बात न रह गयी थी...क्योंकि उड़े हुए जिस्म के टुकड़ों में से आधे से ज्यादा तेज धारा में बहती पहाड़ी नदी में जा पड़े थे।

पुल पर धमाका—यह एक ऐसा दहशतनाक हादसा था जिसने सभी के रोंगटे खड़े कर दिये थे। मौत के भयानक दृश्य ने सभी के चेहरों पर हवाइयां उड़ा दी थीं।

और, सिर्फ थ्रिल क्वीन डार्लिंग ही नहीं उसके पीछे शहबाज, शकील तथा अन्य दूसरे लोग भी दौड़ पड़े थे।

"अल्लामेहर अति उत्साही हो गया था।" थ्रिल क्वीन भावुक स्वर में, शहबाज को करीब पाकर बुदबुदायी—"उसने अपने साथ-साथ दो और को भी मौत के मुंह में झोंक दिया...।"

"अच्छा यह रहा कि उसने दो अन्य को हमारी ओर भेज दिया था, वरना एक झटके से हमारे पांच साथी खत्म हो जाते...।" शहबाज ने उन दो की ओर देखकर कहा जिन्हें अल्लामेहर ने पुल की खोज के बाद उन्हें बुलाने भेज दिया था।

उन दोनों के चेहरे धुआं-धुआं हो रहे थे। अपने आपमें यह खासी रोमांचक बात थी कि मौत उनके सिरों पर दस्तक देकर गुजर गयी थी...। सोच ही जबर्दस्त सनसनी पैदा कर देने वाली

थी कि अगर उन्हें वापस न भेजा गया होता तो उस समय उनके जिस्मों के भी इसी तरह चीथड़े उड़े होते जैसे अल्लामेहर और अन्य दो साथियों के रक्त-रंजित जिस्मों के अवशेष वे देख रहे थे।

"और पुल भी उड़ गया...।" डार्लिंग सामने के सारे दृश्य को देखकर बुदबुदायी।

"स्वाभाविक था...।" शहबाज आक्रोश से मुट्ठियां भींचे हुए बुदबुदाया—"वे हमारे लिए पुल को इसलिए खुला हुआ नहीं छोड़ सकते थे कि उससे हम बढ़कर उन तक पहुंचें और उन्हें मार दें...। अल्लामेहर को पुल को खोज लेने के बाद इस बात को सोचना चाहिए था कि उसे जांचे-परखे, तब उस पर आगे बढ़े।"

"अब इस बात को कहने से कोई फायदा नहीं शहबाज...। साथियों ने हम पर अपनी जान न्यौछावर की है, उनकी जांनिसारी की हमें कद्र करनी चाहिए...तथ इस बात को सोचना चाहिए कि अगली रणनीति क्या हो...?"

इससे पहले कि शहबाज अगली रणनीति पर कोई बात कहता, वातावरण फायरों की बाढ़ से दहल उठा।

गोलियां सीधे उस ओर से तड़तड़ायी थीं जिधर दूसरे सिरे पर पुल का रास्ता उतरता था।

खैरियत थी कि अंधेरे की चादर घनी छायी हुई थी...जिससे अंधा-धुंध और काफी फासले से चलाई गयी गोलियों की जद में कोई न आ पाया था...अन्यथा भरपाई न हो पाने वाला नुकसान उठाना पड़ता।

"पोजीशन लो।" फायरों की तड़तड़ाहट के साथ ही एक ओर उछाल मार जमीन पर गिरती और पोजीशन लेती हुई स्पाई क्वीन चीखकर आदेश दे बैठी।

पलक झपकते शहबाज, शकील तथा टीम के अन्य सभी लोग तितर-बितर होकर भूमि पर लेटकर पोजीशन ले बैठे।

"फायर...!" डार्लिंग का अगला आदेश गूंजा।

आदेश के साथ ही उसकी साइड से फायरों की बाढ़ छोड़ी जाने लगी।

लेकिन,

यह जवाबी फायरिंग भी अंधेरे में तीर छोड़ने वाली कहावत चरितार्थ कर रही थी। सिर्फ जवाबी फायरिंग करके उससे सिर्फ दुश्मन के बढ़ते कदमों को रोकने का कार्य किया गया।

"गोलियां चलाते रहो...मगर ठहर-ठहरकर...।" कहती हुई डार्लिंग कोहनियों के बल रेंगती और सरकती उस ओर तेजी से बढ़ी जहां पर शहबाज ने मोर्चा बांध रखा था। उस तक पहुंचकर उसने कहा—

"दुश्मन को मालूम हो चुका है कि पुल उड़ चुका है तथा उसमें हमारे आदमी हलाक हुए हैं...। अपनी इस सफलता से उनका हौसला बढ़ गया है, अन्यथा वे गोलियां चलाकर अपनी उपस्थिति दर्ज न कराते...।"

"फिर...?"

"हमें उपस्थिति का पूरा-पूरा लाभ उठाना होगा...। ठीक वैसा लाभ जैसा मैं चाहती थी, हमें अब उसका अवसर मिल गया है...।" उसका स्वर उत्साहित था।

"कैसें, क्योंकर...?" शहबाज के स्वर में गहरी उत्सुकता थी।

"सबसे पहले पीछे से आने वाली हैदरबख्श और वकील की टुकड़ी को बढ़कर हम तक आने को कहो। उसी के साथ उत्तर की ओर बढ़ने वाली दूसरी टुकड़ी की सहायता तलब करो।" सुझाव दिया —"रास्ते की बारूदी सुरंगों के अलावा उनके हमारी ओर बढ़कर आने में, इस बात का कोई खतरा नहीं कि मुरसलीन वाले नदी पार कर उन पर हमलावर हो सकते हैं...। मैं स्पष्ट कर देना चाहती हूं कि अगर वे ऐसा करने लायक होते तो इस समय सबसे पहले उन्हें हम पर टूट पड़ना चाहिए था। न कि उस पार रहकर गोलियां चलाते...। पुल विहीन नदी को पार करना इस समय उनके बूते की बात नहीं है। और, गोलियां चलाकर, अपनी उपस्थिति की सूचना देकर उन्होंने अपने हक में जबर्दस्त भूल कर डाली है...।"

"और हमारे हक में लाभ क्या है?" शहबाज ने मूर्खों के से अन्दाज में पूछा।

"मैं सब बताती हूं...। हमारे लिए अब मोर्चा फतह करना

आसान हो गया है। मेरी हमेशा की यह धारणा रही है कि छुपा हुआ दुश्मन मैदान में उतर आने वाले दुश्मन के मुकाबले कहीं ज्यादा खतरनाक होता है। खुले मैदान में उतर आने वाले दुश्मन के विरुद्ध हम रणनीति तो बना सकते हैं। छुपे हुए दुश्मन के मामले में हमेशा यह अंदेशा रहता है कि न जाने किस ओर से वह निकल पड़े और न जाने किस किस्म का हमला कर बैठे...?"

"हां, यह तो है...।"

"तो फिर अब पीछे सरको—कोहनियों के बल मेरे साथ सरकते हुए आरटरी गाड़ी तक चलो...। दो अन्य को साथ लो। चार को इसी तरह मोर्चे पर छोड़ो...। उन्हें निर्देश दो कि गोली चलने के जवाब में वे गोलियां चलाते रहें बस। इस बात की ओर खास निगाह रखें कि उस पार से नदी को पार करने की कोई चेष्टा करे तो वे सामूहिक हमला करने का निर्णय लें...।"

"ओ०के०...।" शहबाज ने कहा।

उसने साथियों को डार्लिंग के परामर्शानुसार निर्देश दिया। फिर वह दो साथियों को लेकर डार्लिंग के साथ आरटरी गाड़ी की ओर बढ़ने लगा। हैदरबख्श और उत्तर दिशा वाली टुकड़ी को जल्दी आने को कहो।

डार्लिंग ने अगला निर्देश दिया—"साथ ही अन्य दो टुकड़ी को आदेश दो कि वे पूरब-पश्चिम सीमा पर एक साथ जमाव करें...। हम इधर से दुश्मन का मोर्चा तोड़ेंगे तो वे पलटकर पूरब-पश्चिम वाले रास्ते की ओर से फरारी का रास्ता अख्तियार करने की सोचेंगे...।"

"पूरब-पश्चिम वाले रास्ते पर ही क्यों...?" शहबाज ने सवाल किया।

"वह रास्ता भी पाक-ईरान बार्डर का रास्ता है...। वे पाक की ओर का बिल्कुल भी रुख नहीं करेंगे...। इसकी एक वजह यह है कि अपने तबाह होने वाले चारों कैम्पों के बाद उन्हें इस बात की कोई उम्मीद नहीं रह गयी है कि इधर से कोई मदद मिल सकती है। दूसरे, उन्हें इस बात का कोई अन्दाजा नहीं है कि हमारी ताकत कितनी है। एक बार उनके कदम नीलकाफ की पहाड़ियों से पीछे ढकेल दिये गये तो वे फरारी का रास्ता ही चुनेंगे

और वह भी पाक सीमा से बाहर की ओर। उन्होंने नीलकाफ को अपने मुख्य अड्डे के रूप में इसीलिए चुना है ताकि जरूरत पड़ने पर ईरान की ओर फरारी लेने में उन्हें आसानी रहे...।"

"हां, पाक-ईरान बार्डर के दर्रे उनके लिए अच्छे रास्ते साबित हो सकते हैं...।" शहबाज ने डार्लिंग की बात अच्छी तरह समझ लेते हुए अपनी राय दी।

"लेकिन, वह अच्छा रास्ता ही उनके लिए सबसे बुरा रास्ता साबित होगा। यदि उस रास्ते पर हमारी टुकड़ी के सारे सदस्य पहुंचकर घेराबन्दी करने में कामयाब होते हैं...।"

"मैं उन्हें खबर करता हूं...।" शहबाज ने कहा।

फिर वह आरटरी गाड़ी तक पहुंचा। उसने ट्रांसमीटर सेट ऑन किया। बारी-बारी से पूरब और पश्चिम की टुकड़ी के सदस्यों से सम्बन्ध बनाने के बाद उन्हें नया निर्देश देने लगा।

फिर उसने हैदरबख्श और उत्तर दिशा टोली वालों को जल्द से जल्द बढ़कर अपनी ओर आने का हुक्म दिया।

"और अब...।" डार्लिंग आरटरी वैन पर जा चढ़ी। मोर्टार गन सम्भालते हुए उसके मुंह पर लाइटिंग बम चढ़ाती हुई शहबाज से बोली—"मैं लाइटिंग बम को जैसे ही दागूं राकेट लांचर तैयार रखा जाए...। जैसे ही लाइटिंग बम अपना काम करे, सही स्पॉट पर राकेट दागा जाए...।"

शहबाज की आंखों में उसके हौसले और तीक्ष्ण निर्णय पर हैरानी के भाव थे। जोश भरे स्वर में डार्लिंग के निर्णय के प्रति सहमति देकर उसने अपने साथ दो आदमियों को राकेट लांचर सम्भालने का हुक्म दिया।

कुछ पलों के बाद, पूरी तैयारी में आकर शहबाज ने कहा—

"यस मिस डार्लिंग...हम तैयार हैं...।"

डार्लिंग ने पहले ही मोर्टार गन तैयार कर रखी थी...। उसने गन सम्भाली और नदी पार, उस दिशा में उसने लाइटिंग बम का फायर झोंका, जहां से दुश्मनों की ओर से फायरों की बाढ़ छोड़ी गयी थी, तथा उस समय भी उधर से रह-रहकर छुट-पुट फायरिंग हो रही थी।

"धूम...ऽऽऽ धड़ाम...ऽऽऽ...।" आकाश में जबर्दस्त धमाका

हुआ और दूर-दूर तक इलाका दिन की सी रोशनी के समान जगमगा उठा।

आसमान पर होने वाले धमाके और तेज रोशनी के उभरे झमाके ने मोर्चा बांधे दुश्मनों को बदहवाशी में भर दिया...। वह अपनी पोजीशन छोड़ उठकर इधर-उधर सुरक्षित स्थानों के लिए भागने लगे।

थ्रिल क्वीन की यही तो योजना थी।

"अटैक...।" उसने जोशीले स्वर में अपना बायां उठा हुआ हाथ गिराते हुए, शहबाज को इशारा किया।

इशारा पाते ही राकेट लांचर से गगनभेदी धमाका गुंजाता राकेट छूटा।

पलक झपकते ही राकेट ठीक उस जगह जाकर गिरकर फटा...जहां दुश्मनों की मोर्चाबन्दी और भगदड़ थी...।

राकेट के फटने के फलस्वरूप जो विस्फोट हुआ, वह भयानक तबाही फैलाने वाला था।

विस्फोट की रोशनी में लाशों के बिखरने की गिनती आसानी से की जा सकती थी।

अभी लाइटिंग गन की रोशनी आसमान पर लुप्त न हो पायी थी कि स्पाई क्वीन ने दूसरा धमाका दाग दिया...।

एक बार फिर आकाश पर रोशनियों का झमाका उभरा...।

पहाड़ियों का टुकड़ा-टुकड़ा रोशनियों से नहा उठा।

इस बार की रोशनी का फायदा उठाया शहबाज के मोर्चा बांधे अन्य साथियों ने...।

दूसरी बार लाइटिंग बम के फटते ही दुश्मन की टुकड़ी के बचे-खुचे सदस्यों में बदहवासी भरी भगदड़ मची। भागने वालों को शहबाज टीम ने चुन-चुनकर निशाना बनाना आरम्भ कर दिया।

उसी समय,

हैदरबख्श व उत्तर दिशा वाली टुकड़ी की गाड़ियां धड़धड़ाती हुई शहबाज की मोर्चे पर जमी टीम का साथ देने के लिए आ गयीं।

आने वाली उस नयी टुकड़ी के पास हल्की तोप गाड़ी थी...। उस टुकड़ी ने अपनी तोप गाड़ी का मुंह दुश्मन के मोर्चे की ओर करके गोले दागने आरम्भ कर दिये।

तीसरे लाइटिंग बम के धमाके के बाद दुश्मन की लाशों पर लाशें गिरने या बदहवाश होकर भागने का दृश्य खासतौर पर देखा जा रहा था।

दुश्मन के गनों के मुंह घूम चुके थे। अब उन्हें एक भी गोली चलाने का होश न रह गया था। वे पीठ दिखाकर भाग रहे थे।

निशाने पर आते ही मौत के मुंह में समाते चले जा रहे थे।

"बस...।" डार्लिंग ने उत्साहित स्वर और ऊंची आवाज में कमाण्ड सम्भाले रहकर कहा—"दुश्मन का मोर्चा तोड़ दिया गया है...।"

वह कूदकर आरटरी गाड़ी से नीचे आयी। शहबाज का साथ पकड़कर नयी टुकड़ी के सदस्यों के बीच पहुंची।

नई टुकड़ी के बीच पहुंचने पर उसने उस टुकड़ी की पूरी कमान सम्भालने का कार्य पूरी मुस्तैदी के साथ कर रहे हैदरबख्श और वकील को देखा।

हैदरबख्श की टुकड़ी की ओर से, हल्की तोपगाड़ी के हमले ने काफी कारगर काम किया था।

तोपगाड़ी की मारक क्षमता गनों से गोलियां बरसाने के मुकाबले कम से कम दस गुनी अधिक प्रभावशाली थी। एक और खूबी यह थी कि तोप गन को द्रुत गति से इस्तेमाल में लाया जा सकता था।

दूसरी ओर की मोर्चाबन्दी पूरी तरह टूट चुकने के बाद गोलियों की गूंज थम गयी थी।

वातावरण में अंधेरे की चादर पहले से कुछ ज्यादा तन चुकी थी।

डार्लिंग ने शहबाज के साथ सिर जोड़कर नयी प्लानिंग बनाते हुए कहा—

"पूर्वी और पश्चिमी पहाड़ियों की ओर कूच करने वालों की पोजीशन पता करो शहबाज...।"

शहबाज ने इस बार मोबाइल फोन से सम्बन्ध बनाया। दूसरी ओर से फौरन काल अटेण्ड की गयी।

जवाब आशाजनक आया—और वह यह कि दोनों टुकड़ियां आपस में मिलकर निर्दिष्ट दिशा की ओर बढ़ना आरम्भ कर चुकी हैं।

"दुश्मन का इधर का मोर्चा तोड़ दिया गया है...।" शहबाज ने उत्साहित स्वर में कहा—"हम इधर से नदी पार करने की युक्ति करने जा रहे हैं...। तुम लोग उधर बढ़कर मोर्चा सम्भालो...। फरार पाक-ईरान सीमा से फरार होने की चेष्टा करने वाले किसी भी मिलिटेण्ट को देखो और मार दो...।"

शहबाज ने हुक्म दिया और सम्बन्ध विच्छेद कर नदी पार करने की योजना की सोच में गुम हो गया।

उस समय तक,

थ्रिल क्वीन हैदरबख्श वाली टुकड़ी के साज-सामानों का जायजा लेने के लिए बढ़ गयी थी।

और फिर कुछ देर बाद,

थ्रिल क्वीन की आंखों में प्रसन्नता और उत्साह की चमक भर उठी—जब उसने हैदरबख्श की टुकड़ी के साथ एक ऐसी चीज देखी, जिसकी उसे उस समय सबसे ज्यादा जरूरत थी।

वह चीज मिलिटेण्टों के कैम्पों से लूटकर लाये साज-सामानों में से एक थी। और उसे देखने के बाद डार्लिंग की जानकारी में यह बात भी आ गयी कि मिलिटेण्टों द्वारा, ट्रेनिंग कैम्प से वहां की नदी पार कर नीलकाफ की पहाड़ी हेडक्वार्टर पर पहुंचना होता था तो वे उसकी ही सहायता लिया करते थे।

वह एक रबड़ नौका थी, जिसे मिलेटेण्टों के ट्रेनिंग कैम्प की लूट के सामानों के बीच से हासिल किया गया था।

उस रबड़ नौका की खूबी यह थी कि वह फोल्डिंग थी। उसकी हवा निकालकर एक छोटे से पैकेट की शक्ल में रखा जा सकता था, तथा मुंह से हवा भरकर, आसानी से फुलाकर नौका की शक्ल में बदला जा सकता था।

हवा भरी जाने के बाद उस नौका का जो रूप डार्लिंग के सामने आया, उसके अनुसार उस पर एक वक्त में चार लोग सवार होकर नदी को पार कर सकते थे। उसमें कोई चप्पू न था—उस पर बैठने वाली सवारियों को हाथों की सहायता से पानी

की धारा को काटकर आगे बढ़ना पड़ता था।

"काम चल जाएगा...।" डार्लिंग ने शहबाज, हैदरबख्श शकील और खलील के बीच परामर्श करते हुए कहा—"इसमें एक रस्सी को और बांधने की आवश्यकता पड़ेगी। रस्सी का सिरा इस पार रखना पड़ेगा। चार लोग एक वक्त में बैठकर नदी पार करेंगे तथा उस पार पहुंचने के बाद बंधी हुई रस्सी की सहायता से इसे इस पार खींच लिया जाएगा...।

इस युक्ति को उस समय तक अमल में लाया जाता रहेगा जब तक कि सारे लोग उस पार न पहुंच जायेंगे...चूंकि यह चार लोगों के भार को वहन कर सकती है, इसलिए एक-एक आदमी के साथ हथियारों को भी उस पार उतारा जा सकता है। और इस सारे काम को हमें सुबह होने से पहले पूरा कर लेना है...।"

"ठीक...।" शहबाज ने सहमति दी।

हैदरबख्श और शकील और वकील ने भी डार्लिंग की राय का समर्थन किया।

"इसमें सबसे पहले मैं सवार हूंगी...।" डार्लिंग ने निर्णय दिया—"पहले तजुर्बे के तौर पर मेरे साथ वह व्यक्ति जाएगा जो अच्छी से अच्छी तैरानी का जानकार हो...। इसे पानी में उतारने और दो लोगों की इसकी भार क्षमता देखने के बाद ही इस बात का निर्णय लिया जाएगा कि इस पर चार लोग सफर कर सकते हैं या नहीं..."

"जी हां...तजुर्बा जरूरी है मैडम...।" शकील ने कहा। वकील ने समर्थन किया।

"अगर चार लोगों को उस पार उतारने में यह कारगर रहे तो हम सब जल्दी उस पार पहुंच सकते हैं...।" हैदरबख्श ने उतावलेपन से कहा।

"आप उस पार जल्दी पहुंचने के लिए उतावले हैं मिस्टर हैदर...।" डार्लिंग ने हल्के-फुल्के मूड में मुस्कराकर कहा—"अगर आप अच्छी तैराकी जानते हैं तो मैं पहले हमसफर के रूप में आपका चुनाव अपने साथ कर सकती हूं...।"

"यस...। मैं तैराकी जानता हूं...। और फिर इस पहाड़ी नदी को पार करना मेरे लिए बगैर इस रबड़ नौका के भी आसान

है...।" हैदरबख्श ने जोश के साथ कहा।

"बेवकूफी की बात मत करो हैदरबख्श...।" शहबाज ने जरा डपट भरे स्वर में कहा—"मैं जानता हूं कि तुम पानी में उतरकर हाथ-पांव मारना भर जानते हो। अच्छा तैराक मैं तुमको नहीं कह सकता...।"

डार्लिंग ने देखा—शहबाज के टोंकने पर हैदरबख्श का चेहर उतर गया।

"लेकिन मिस्टर हैदर अच्छे गनर तो हैं...।" डार्लिंग ने हैदरबख्श की दूसरी खूबी को उजाकर करते हुए कहा—"उस पार पहुंचने के बाद जरूरत पड़ने पर मिस्टर हैदर दुश्मनों से अच्छा मोर्चा तो ले सकते हैं...।"

"इस काम को मैं कहीं बेहतर ढंग से कर सकता हूं...।" शहबाज ने कहा—"और मैं अच्छा तैराक भी हूं...।"

ब्यूटी क्वीन के होठों पर मुस्कान आयी। स्पष्ट था कि हैदरबख्श और शहबाज के बीच रबड़ नौका में उसके साथ बैठकर फर्स्ट राउण्ड की बोटिंग के रोमांच का अनुभव उठाने की होड़ लग गयी थी।

"लेकिन, मेरे पीछे इधर के मोर्चे के पूरे कमान को सम्भालने की जिम्मेदारी की बात भी रहेगी मिस्टर शहबाज। इस बारे में आप ज्यादा बेहतर फैसला करें कि दुश्मन की ओर से हमला हो जाने की स्थिति में तथा मेरे और आपके साथ नदी के बीच नौका पर होने पर, क्या हैदरबख्श सम्भावित हमले की कमान को अच्छी तरह सम्भाल सकते हैं...।"

"नहीं—उसे मैं ही अच्छी तरह सम्भाल सकता हूं...।" शहबाज ने जोश के साथ कहा।

"फिर फैसला हो गया...।" डार्लिंग ने कहा—"मैं और हैदरबख्श नौका से उस पार जाने का पहला प्रयास करते हैं...आप इधर का मोर्चा सम्भाले रखेंगे तथा मैं और हैदरबख्श उस पार जाकर नया मोर्चा जमायेंगे...। अगर हमारा पहला प्रयास सफल रहा तो अगली बार तीन को नौका से उस पार ले जाये जाने का प्रयास अमल में लाया जाएगा...।"

"यही उचित है...।" शहबाज ने कहा।

अब, उसके स्वर का जोश हल्का था।

ब्यूटी क्वीन शहबाज की भावनाओं को समझती थी। रसिक स्वभाव का वह इन्सान मैदाने जंग में भी अपने स्वभाव की चंचलता पर काबू न पा रहा था...रात का सफर, आसमान पर टिमटिमाते सितारों की छांव...कल-कल करती नदी की धारा...पहाड़ियों के बीच की मनोरम दृश्यावलियां...कश्ती पर सवार शहबाज हो और उसके साथ हो वह, जिसके हुस्न के नशे में डूबकर उसने अपने रंगमहल सरीखी आरामगाह पर राकेट लांचर का हमला करवा लिया था...हिजबुल मुरसलीन के खिलाफ एलाने-जंग करके खुद मरने और उन्हें मिटा डालने पर उतर आया था...। भला ऐसा इन्सान उसके साथ नौका विहार का मौका कैसे छोड़ सकता था।

लेकिन, हालात का तकाजा था—एक बड़ी जिम्मेदारी निभाने के एहसास के सामने वह रोमांस की मधुर गुदगुदी के क्षणों का त्याग करने के लिए तैयार हो गया था।

ब्यूटी क्वीन हैदरबख्श को साथ लेकर चल पड़ी। नौका को नायलोन की रस्सी से बांधा गया ताकि उसके उस पार जाकर खाली होने के बाद उसे इस पार खींचकर वापस लाया जा सके।

नौका लहरों पर उतारी गयी।

कांधे पर ए० के० 47 को टांग डार्लिंग ने रबड़ की नौका पर सवार होकर अपना संतुलन बनाया।

डार्लिंग के सवार होने के बाद, हथियारों का बोझ उठाए हुए हैदरबख्श ने नौका के दूसरे सिरे पर स्थान संभाला।

हल्की-फुल्की नौका डगमगायी...लेकिन दोनों ओर के सन्तुलन के कारण उनका बोझ सम्भालने लायक हो गयी। वह तीन फुट चौड़ी और आठ फुट लम्बी, लम्बे आकार की नौका थी। बीच में दो लोगों के और स्थान सम्भालने के लिए उसमें पर्याप्त स्थान था। लेकिन पहले तजुर्बे के तौर पर उसे डार्लिंग इस्तेमाल कर रही थी। इसलिए सिर्फ दो सवारियों पर उस तजुर्बे को अमल में लाने की सोच बनायी थी।

डार्लिंग ने धीरे-धीरे लहरों पर हाथ चलाया।

नौका किनारा छोड़ने लगी। उसके साथ बंधी रस्सी ढीली

छोड़ी जाने लगी।

नौका अभी किनारा छोड़कर कुछ ही आगे गयी थी कि अचानक हैदरबख्श के कंठ से हृदय विदारक चीख कौंधी और वह 'गड़ाप' से पानी में उलट गया।

थ्रिल क्वीन, जो क्षणेक के लिए हैदरबख्श की ओर से बेखबर हुई थी, उसने जबर्दस्त रूप से डगमगा उठी नौका को संभालना चाहा, साथ ही उसकी निगाह हैदरबख्श पर पड़ी...।

उसने पहली नजर में ही जो कुछ देखा उससे कलेजा मुंह को आ गया। पूरा जिस्म रोमांच की झुरझुरी से भर उठा। पूरी ताकत से वह चीखी—"लाइट...।" इस चीख के साथ ही क्षणेक के लिए भी वह नौका पर न रहकर पानी में छलांग लगा गयी।

वह एक मगरमच्छ था—जिसकी झलक हैदरबख्श की चीख और उसके नौका से उलट जाते देख डार्लिंग ने देखी थी।

अवश्य ही मगरमच्छ ने हैदरबख्श का दाहिना हाथ उस समय अपने भयानक जबाड़े में दबोच लिया था जब वह चप्पू के रूप में उसे लहरों पर इस्तेमाल कर रहा था।

उस पहाड़ी नदी में मगरमच्छ भी हो सकते हैं, इस ओर किसी का ध्यान भी न गया था।

दूसरी ओर,

किनारा ज्यादा दूर न था इसलिए हैदरबख्श की हृदय विदारक चीख भी किनारे पर मौजूद लोगों ने सुन ली थी तथा डार्लिंग का निर्देश भी।

आनन-फानन में जीपों की लाइटें जल उठीं। तीन जीपों की जल उठी हैडलाइटों के प्रकाश में नदी का जल नहा उठा।

शहबाज को अगर पूरी हकीकत नहीं तो इस बात का आभास हो गया था कि हैदरबख्श और डार्लिंग पर आकस्मिक विपत्ति टूट पड़ी है।

वह चीख-चीखकर आदेश देने लगा—"बायीं ओर जीप को पीछे करके पैंतीस डिग्री के कोण पर बायीं ओर घुमाओ। लाइटें डालो...और दायीं ओर वाली जीप को दायें घुमाकर उसी एंगल पर रखो...ध्यान दो...तीनों जीपों की हैडलाइटें कश्ती के इर्द-गिर्द रखो।"

फिर वह दौड़ा। मोर्टार गन सम्भालकर लाइटिंग बम फिट कर फायर दागा।

आकाश रोशनी की चकाचौंध से भरा।

और अब,

वह स्थान पूरी तरह साफ नजर आने लगा जहां खाली नौका लहरों पर हिचकोले खा रही थी...।

भरपूर रोशनी में जो दृश्य शहबाज और उसके साथियों की निगाह में आया वह मौत की कंपकंपी से भर देने वाला था।

उधर,

कश्ती से उछाल लेकर लहरों पर जा कूदने वाली थ्रिल क्वीन ने निहायत दिलेरी का परिचय देते हुए, अपने दाएं पैर की पिण्डली के पास बंधे खंजर को फुर्ती से खींच कर हाथ में सम्भाल लिया था।

उसने मगरमच्छ की स्थिति देख ली थी। मगरमच्छ हैदरबख्श की बांह को दबोचे हुए पानी में नीचे बैठता चला जा रहा था।

थ्रिल क्वीन ने गोता मारा।

जान पर खेलती हुई वह मगरमच्छ के ठीक नीचे पहुंची। तैराकी करते हुए उसने खंजर वाला हाथ चलाया।

अचूक वार! जबर्दस्त आत्म विश्वास! इस बात का भरपूर एहसास कि हैदरबख्श रूपी शिकार को अपने जबाड़े में मजबूती के साथ दबोचे हुए मगरमच्छ, उसके नजदीक से नजदीक जाने पर भी उस पर मुंह नहीं मार सकता, क्योंकि एक बार शिकार को दबोचने के बाद मुंह खोलना मगरमच्छ की फितरत में शामिल नहीं होता।

उसका खंजरयुक्त हाथ मगरमच्छ के पेट के बहुत करीब से गुजरा...और नर्म खाल में उतरता चला गया।

डार्लिंग का यह हमला कुछ मगरमच्छ के शरीर की हलचल तथा कुछ अनुमान के आधार पर हुआ था, पर वार अचूक साबित हुआ।

और, वह वही वक्त था जब जीपों की हैडलाइटों से लहरें रोशन हुई थीं।

जलधारा जैसे चांदी की थाल सी झिलमिलाई थी।

थ्रिल क्वीन के सामने अब अंधेरा न था।

रोशनी के साथ-साथ सफलता के जोश ने उसे नयी ऊर्जा शक्ति से भर दिया था।

उसने खंजर वाले हाथ को उमेठ दी...।

खंजर घूमा...। खंजर की धार घूमते ही थ्रिल क्वीन ने झटके से हाथ आगे, वहां तक खींच दिया जहां तक जाकर खंजर हड्डी से टकरा न गया।

और, यह तब हुआ था जबकि आकाश पर लाइटिंग बम का प्रकाश पुंज चमका था—।

डार्लिंग ने खंजर युक्त हाथ खींचा और गहरी डाइव मारी...।

फिर कुछ फासले पर जाकर सिर उभारा।

उस समय पहाड़ी नदी की स्वच्छ जलधारा खून से सुर्ख हो चुकी थी।

उसने इस बात को भी देखा—मगरमच्छ के विशालकाय और भयावह जबाड़े खुल चुके हैं...तथा हैदरबख्श दूर छिटका हुआ पानी में डुबकियां खा रहा है...।

दरअसल यह अनहोनी भरा कारनामा मगरमच्छ का पेट गहराई से फट जाने की वजह से सामने आया था।

पेट फट जाने की भयानक पीड़ा में फड़फड़ाते हुए मगरमच्छ ने जबाड़ा खोल दिया था।

अपनी जिन्दगी के लिए जूझते, संघर्ष करते हैदरबख्श को, हाथ को आजाद कराने का मौका मिल गया था।

लेकिन, वह बुरी तरह जख्मी हो गया था...। उसकी बांहें क्षत-विक्षत हो चुकी थीं। सीना तक जख्मी था। खून बुरी तरह बह रहा था। वह मौत के भय से या पीड़ा की अधिकता के कारण अपने हवास पर काबू न रख पा रहा था...। वह डुबकियां खाने लगा था।

डुबकियां खाते हैदरबख्श की ओर तैराकी करती, गोता मारती डार्लिंग तीर की तरह लपकी।

उस तक पहुंच एक हाथ से उसके बालों पर हाथ डाल मुट्ठी में कसा—दूसरे हाथ से तैराकी कर लहरों के ऊपर आयी...।

लहरों पर आकर उसने देखा—मगरमच्छ जिन्दगी और मौत के बीच संघर्ष करता हुआ बुरी तरह फड़फड़ा रहा है। वह भयावह रूप में हिंसक होकर उसकी ओर झपटने की चेष्टा कर रहा है।

मगर उसकी शक्ति उसका साथ न दे पा रही थी, इस बात को थ्रिल क्वीन ने समझ लिया अन्यथा वह अब तक दोनों को दबोच चुका होता। शिकार पर झपटे हुए मगरमच्छ से पानी की लहरों के बीच बच जाना किसी चमत्कार से कम नहीं होता...बेशक कैसा भी अच्छा तैराक हो।

हैदरबख्श को सहारा देकर किनारे की ओर तैराकी करती हुई डार्लिंग ने ऊंची आवाज में कहा—

"फायर...फायर झोंको मगरमच्छ पर...।"

शहबाज सहित...किनारे पर खड़े लोग या तो बदहवाश थे या फिर इस असमंजस में कि उनकी ओर से की जाने वाली फायरिंग कार्रवाई से डार्लिंग या हैदरबख्श को किसी प्रकार का नुकसान न पहुंच जाए...।

लेकिन, उसकी ओर से आदेश मिलते ही...लहरों पर तड़फड़ाते मगरमच्छ पर शहबाज ने फायरों की बाढ़ छोड़ दी।

अनगिनत गोलियां उसके जिस्म में बिंधती चली गयीं...।

मगरमच्छ की एक और जबर्दस्त फड़फड़ाहट से लहरों पर मन्थन जैसी हलचल हुई।

गोलियों की बौछार के बाद अब उसकी रही-सही शक्ति भी क्षीण हो गयी थी।

किनारे पर पहुंचने के प्रयास में डार्लिंग ने दृष्टि उठाकर नौका की ओर देखा—लहरों के तेज बहाव से वह उसकी पहुंच से काफी दूर चली गयी थी।

लेकिन, कुछ आगे बढ़ने पर उसके हाथ वह रेशम की डोर आ गयी, जिसके सहारे नौका बंधी थी।

उसने डोर को झटका दिया—जो उसे थामे रखने वाले के लिए इशारा था कि वह उसे खींचे।

डोर थामने वाले ने डार्लिंग का इशारा समझ एक और को अपने साथ लगाया। डोर को खींचे जाने का सिलसिला शुरू हुआ।

हैदरबख्श को थामे हुए डार्लिंग किनारे की ओर आने लगी।

उसका और हैदरबख्श का जिस्म जैसे ही किनारे पर आया...शहबाज, शकील व वकील ने फुर्ती से आगे बढ़कर उन्हें सहारा दिया।

"तुम तीनों हैदरबख्श को सम्भालो...यह अचेत है। मैं अपने सहारे बढ़ सकती हूं...।" डार्लिंग ने तेजी से कहा। वह पानी में उठकर खड़ी हो गयी।

उसके निर्देश पर शहबाज, शकील और वकील ने हैदरबख्श के कांधे और पैरों पर हाथ लगाया। उसे पानी से निकालकर बाहर लाया जाने लगा।

मगरमच्छ के जबाड़े में कुचलकर निकली हैदरबख्श की बांह व सीना बुरी तरह जख्मी था। जख्मों से भलभलाकर खून निकल रहा था।

"इसे फर्स्ट एड दो...जल्दी...।" शहबाज बुरी तरह चिंतित स्वर में बोला—"कहीं ऐसा न हो कि खून अधिक बह जाने से यह मर जाए...।" शहबाज के आदेश पर कई लोग उसकी ओर लपके।

उसे सहारा देकर ले जाया जाने लगा।

शहबाज, अल्लामेहर को पुल के विस्फोट में खो चुका था—हैदरबख्श को जिन्दगी और मौत के कशमकश में फंसे देख बुरी तरह चिंतित हो उठा। उसकी हालत देखते हुए इस बात की आशा क्षीण होती जा रही थी कि उसे बचाया जा सकेगा।

लेकिन उसका चिंता युक्त ध्यान नदी में उभरी, उस भयानक उथल-पुथल की ओर तेजी से बंट गया, जो अब एक नये रोमांचक दृश्य के रूप में सामने आया था।

जीपों की हैडलाइटें अब भी नदी की जलधारा पर पड़ रही थीं। उस जलधारा में डार्लिंग और शहबाज देख रहे थे...दर्जनों मगरमच्छ उस मगरमच्छ पर टूट पड़े थे जिसका पेट डार्लिंग ने फाड़ डाला था।

जख्मी और मौत के मुंह में समाते मगरमच्छ के खून की गंध पाकर दर्जनों मगरमच्छ उस पर टूटकर उसकी तिक्का-बोटी कर रहे थे...। उसकी आंतें खींचने के लिए एक-दूसरे से जूझ रहे

थे...चिंघाड़ और फुंफकार रहे थे...। भयानक उपद्रव मचाए हुए।

"बाप रे बाप...।" रोमांच की झुरझुरी में भरा हुआ शहबाज बुदबुदाया—"मगरमच्छ ही मगरमच्छ...। इस नदी में तो मगरमच्छ भरे पड़े हैं...।"

यही बात डार्लिंग भी सोच रही थी...।

नदी में मगरमच्छों की विशाल संख्या ने डार्लिंग सहित शहबाज को सोच में डाल दिया था कि रबड़ नौका द्वारा इस समय नदी को पार करना सीधे-सीधे मौत को दावत देना है...।

"इस बाबत तो हमने सोचा भी न था...।" टी० वी० स्क्रीन पर दृष्टि जमाए जियाउल ने चिंतित मुद्रा में करीब खड़े बारूद अली पर निगाह जमाकर कहा।

टी० वी० स्क्रीन पर जो दृश्य उभर रहा था वह नदी के आसपास चट्टानों के बीच लगाए गये खुफिया कैमरों के द्वारा उभर रहा था।

जियाउल और बारूद अली देर से टी० वी० स्क्रीन पर निगाह जमाए हुए थे।

उन्होंने डार्लिंग-शहबाज की टुकड़ी को नदी तट पर पहुंचते और रबड़ नौका द्वारा नदी पार करने का प्रयास करते दृश्य को देखा था। चेयरमैन के आदेश के आधार पर तुरन्त ही युद्धनीति का चक्रव्यूह रच डाला था।

उस नये चक्रव्यूह की रचना करने का आदेश उस चेयरमैन की ओर से उन्हें मिला था—जिसके बाबत उसकी राय थी कि उसकी हजार आंखें हैं...। उसकी निगाह हर ओर लगी रहती है। डार्लिंग और शहबाज की बढ़ती टुकड़ी की एक-एक गतिविधि को निगाह में रखते हुए बदलती परिस्थितियों के अनुसार उन्हें नयी रणनीति दी जा रही थी।

डार्लिंग-शहबाज की टुकड़ी के नदी तट पर जमाव होते देख पहले हमले का आदेश दिया गया था। इस बात की कोशिश में मिलिटेण्टों की पूरी शक्ति झोंक दी गयी थी। उस रणनीति का

उद्देश्य रखा गया था कि जबर्दस्त हमला करके डार्लिंग-शहबाज को ही न सिर्फ खत्म कर दिया जाए बल्कि उस ओर की पूरी टुकड़ी तबाह कर दी जाए।

लेकिन,

कुछ देर बाद ही इस बात का नतीजा सामने आ गया था कि इस हमले की कार्रवाई में मिलिटेण्टों की जान का ही ज्यादा नुकसान हो रहा है तथा दुश्मन को कोई खास नुकसान नहीं पहुंच रहा है।

अल्लामेहर तथा उसके साथ पुल की ओर बढ़े दो लोगों के पुल के विस्फोट में मारे जाने की घटना ने कुछ देर के लिए मिलिटेण्ट खेमे में खुशी की लहर दौड़ा दी थी और उसी के जोश में एक बड़े हमले का हुक्म दिया गया था।

लेकिन, वह बड़ा हमला कुछ कारगर साबित न हुआ था। वजह यह थी कि जोशीले हमले के कारण मिलिटेण्टों को ही अधिक जानी नुकसान उठाना पड़ा था।

जियाउल, बारूद अली तथा उनकी खुफिया सलाहकार कमेटी व उस कमेटी के चेयरमैन के रूप में अंतिम निर्णय लेने की पावर रखने वाली शख्सियत को, डार्लिंग, शहबाज ग्रुप को आगे बढ़ने के रास्ते में बिछाए गये बारूदी सुरंगों का भी वांछित लाभ न मिला था, क्योंकि दुश्मन ग्रुप द्वारा बारूदी सुरंगों को खोजकर उखाड़ फेंका गया था।

और फिर,

नदी तट के हमले के बाद जो नयी रणनीति बनायी गयी थी उसके अनुसार दुश्मन को आगे बढ़ने का पूरा अवसर दिये जाने की बात सामने लायी गयी थी।

लेकिन, मगरमच्छों की विशाल संख्या नदी में उतर आने से उस योजना पर पानी फिरता हुआ जियाउल को नजर आया था।

उसने अपनी चिंता बारूद अली के सामने व्यक्त कर दी थी कि इस बाबत तो हमने सोचा भी न था।

"हां।" बारूद अली टी० वी० स्क्रीन पर निगाह जमाए रखते हुए दांत पीसकर बुदबुदाया—"अब तो वह हरामजादी

कुतिया डार्लिंग, नदी पार करने का इरादा स्थगित कर देगी...। नदी में तो मगरमच्छ ही मगरमच्छ जमा हो गये हैं। उन पर गोलियां बरसाकर मारने की बात वे सोचते हैं तो एक तो पानी में रहते हुए मगरमच्छों पर गोलियां कम ही असरदायक साबित होंगी, दूसरे अगर एकाध मगरमच्छ मर गया तो उसकी तिक्का-बोटी करके, दरिया के और भी सैंकड़ों मगरमच्छ वहां पर आ एकत्र होंगे...उन्हें अपने ही साथियों की भरपेट खुराक मिलनी जो शुरू हो जायेगी...।"

"यानि हमारा रचा हुआ चक्रव्यूह इस समय असफल हो जाएगा...।" जियाउल बुदबुदाया—"ऐसे में हमें मिलिटेण्टों के जमाव को हटा लेना चाहिये...।"

"ऐसा बिल्कुल भी न होगा...।" एक आवाज उभरी। आवाज में दृढ़ता थी।

आवाज उस कक्ष की दीवारों में लगे स्पीकर पर उभरी थी।

आवाज चेयरमैन की थी।

उस चेयरमैन की, जिसे अंतिम निर्णय लेने का अधिकार था।

जियाउल और बारूद अली ने टी० वी० स्क्रीन से दृष्टि हटाकर उस ओर ध्यान दिया जहां लगें स्पीकर पर आवाज उभरी थी।

"नदी पार, नीलकाफ की पहाड़ियों पर हमने अपने आदमियों की जो तीन ओर की घेराबन्दी बनानी है, उस घेराबन्दी को ढीली करने की बात मैं कह रहा था। रेसपेक्टेड चेयरमैन...।" जियाउल ने अपनी बात स्पष्ट करने के इरादे से कहा—"मगरमच्छों का इतनी बड़ी संख्या में वहां, एक वक्त में जमाव हो जाना, हमारी सोच में भी न था। इस स्थिति में रात के इस बचे हुए कुछ घण्टों में दुश्मन टुकड़ी नदी पार करने का कोई प्रयास न करेगी...।"

"वह पूरा-पूरा प्रयास करेगी और प्रयास में सफल भी होगी...।" चेयरमैन की आवाज उभरी—"दुश्मन टुकड़ी की कमान सम्भालने वाली हस्ती का नाम डार्लिंग है। इण्डियन स्पाई डार्लिंग उस बला का नाम है जो अपने रास्ते में आ जाने वाले पहाड़ को तोड़कर भी अपना रास्ता बना लिये जाने का कार्य कर लिया

करती है। वह सुबह होने का बिल्कुल भी इन्तजार न करेगी...इसलिए अपने मिलिटेण्टों का जमाव उसी तरह रहने दिया जाए...।"

"ओह! अगर मगरमच्छों के झुण्ड के रहते, नदी पार करने की मूर्खता उनकी ओर से की जाती है तो उनमें से एक भी न बच पायेगा...।" जियाउल ने कहा। उसके कथन में संशय का भाव था।

"इस बात को, पख्तूनी गुण्डे हैदरबख्श का मामला देखने के कारण तुम कह रहे हो कमाण्डर...।" चेयरमैन का सुलझा हुआ स्वर उभरा—"जो मगरमच्छ का शिकार होकर अब मौत के मुंह में समा गया है...।"

"जी हां...।" जियाउल ने उत्साहित स्वर में कहा।

"काश! उसके साथ-साथ इण्डियन स्पाई भी शिकार हो जाती...।" चेयरमैन ने अफसोस के साथ कहा—"लेकिन वह न जाने किस धातु की बनी हुई है...। उसका मगरमच्छ से हैरतअंगेज द्वन्द्व-युद्ध रोंगटे खड़े कर देने वाला साबित हुआ है। उसे खरोंच तक न आयी, वह हैदरबख्श को मगरमच्छ के जबाड़े से निकाल ले गयी और मगरमच्छ को मार डाला।"

"जी हां, हैरतअंगेज दृश्य रहा वह।"

"उसी हैरतअंगेज दृश्य के आधार पर मैं कहती हूं...इण्डियन स्पाई फौलादी जिस्म, फौलादी हिम्मत और फौलादी इरादों वाली हस्ती है...। अपने फौलादी इरादों वाले स्वभाव के कारण वह अभी और इसी समय अपनी पूरी टुकड़ी के साथ नदी पार करने की चेष्टा करेगी...।"

"मगरमच्छों के झुण्ड के जमाव के बावजूद...?" इस बार बारूद अली ने सवाल किया। उसके स्वर में हैरत का पुट था।

"यस, मगरमच्छों के झुण्ड के जमाव के बावजूद...।"

"फिर तो निश्चित रूप से उसका हसीन जिस्म मगरमच्छों द्वारा तिक्का बोटी कर दिया जाएगा...सिर्फ उसका ही नहीं, उसके साथ-साथ उन सबका ही, जो उसके साथ नदी में उतरेंगे...।"

"अगर ऐसा हो जाए तो हम खुशी का जश्न मनायेंगे।" चेयरमैन ने कहा—"मगर ऐसा होगा नहीं...वह कोई ऐसी युक्ति अमल में लायेगी जिसमें वह आदमियों की और अपनी जान

जोखिम में डाले बगैर इसी रास्ते से नदी पार कर जाए।

मेरी हर पल इस बात पर निगाह लगी हुई है कि वह क्या करने जा रही है। यदि वह वही करने जा रही है, जो मैंने सोचा है तो हमारे मिलिटेण्टों का तीन ओर से एक साथ होने वाला छापामार हमला उसकी न सिर्फ पूरी टुकड़ी को बल्कि इण्डियन स्पाई को भी मौत का रास्ता दिखा देगा।"

"काश ऐसा ही हो...।" जियाउल ने कहा—"उस कुतिया ने हमारे बहुत सारे आदमी मार दिये हैं। उसने हमारे दो ट्रेनीज मिलिटेण्ट शकील और वकील को अपने कब्जे में करके, उनका इस तरह ब्रेन वॉश कर दिया है कि वे उसे 'यस मैडम', 'यस मैडम' कहने लगे हैं। यह सब देखकर मेरा खून खौल रहा है।"

"रिलैक्स...रिलैक्स...। कमाण्डर जियाउल जरा धैर्य रखो...।" चेयरमैन का शान्त स्वर उभरा—"मेरी निगाह में तो शकील और वकील को अपने कब्जे में डार्लिंग का लेना भी मेरे लिए लाभप्रद नजर आता है। वे तो ऐसे बकरे साबित हो रहे हैं जिनके द्वारा शेरनी को शिकारगाह के रास्ते पर लाया जाता है...। वह शिकारगाह के सही रास्ते पर ही आयेगी और हम उसे मनचाहे रूप से अपना शिकार बना लेंगे... कोई एक भी बचकर जा न सकेगा! इस बात को तुम जल्द देखोगे...कमाण्डर जियाउल।"

"इस बात को देखने के लिए ही तो मैं तड़पा जा रहा हूं...।"

"और मैं तो अपने हाथ पर खाए उसके खंजर का हिसाब चुकाने के लिए बेचैन हुआ जा रहा हूं...।" बारूद अली ने कहा।

"जरा धीरज रखो...। दुश्मन पूरी तरह जाल में आकर फंसने की राह पर बढ़ने का इरादा कर रहा है...।" चेयरमैन ने शान्त स्वर में कहा। रुककर पूछा—"और हां, अब जरा पूर्वी-पश्चिमी मोर्चे की ओर की रिपोर्ट भी दो कमाण्डर जियाउल...। उधर का मामला क्या ठीक उसी तरह किया गया है...जैसा हमारी योजना थी....।"

"यस चेयरमैन...।" जियाउल ने कहा—"मैंने उधर भी इस ओर की तरह ही अपने चालीस जांबाजों को तीन मोर्चों पर जमा दिया है। उनसे रेडियो वायरलेस सेट पर हमारा सम्पर्क बना

हुआ है...। मैंने अपने जांबाजों को हुक्म दे दिया है कि वे शहबाज टुकड़ी के बढ़ते हुए गुण्डों का प्रतिरोध करने के लिए एक भी गोली न चलाएं...। उनके आगे बढ़ने का रास्ता इस तरह खोल दें कि वे बगैर किसी हिचक के धड़धड़ाते हुए हमारी सीमा में घुसते चले आयें...। ऐसा हो जाने के बाद हमारे आदमी हमारा आदेश पाते ही उनके दाखिल होने वाले रास्ते को रोककर एक साथ छापामार हमला कर सबको खत्म कर दें...।"

"वेरी गुड...।" चेयरमैन ने प्रशंसा भरे स्वर में कहा—"आखिरी फतह हमारी होगी...और कुछ देर बाद हम दुश्मन की लाशों का ढेर लगाकर फतह का जश्न मना रहे होंगे...। दैट्स आल...।"

और फिर चेयरमैन की स्पीकर पर आती आवाज बन्द हो गयी।

जियाउल और बारूद अली की निगाह एक बार फिर टी० वी० स्क्रीन पर जम गयीं।

हैदरबख्श के साथ पेश आने वाली दुर्घटना और नदी में मगरमच्छों की विशाल संख्या ने डार्लिंग और शहबाज के आगे बढ़ाए कदमों को भले ही कुछ देर के लिए रोक दिया था, लेकिन डार्लिंग वह आंधी थी जो अपने रास्ते में आने वाले अवरोधों को उखाड़ फेंकने की कला अच्छी तरह जानती थी।

कुछ देर, शहबाज के साथ सिर जोड़ने के बाद स्पाई क्वीन ने तेजी से नया निर्णय लेते हुए कहा—

"नदी पार करने के बाद, हमारे लिए गाड़ियां यूं भी बेकार हो जातीं...।"

शहबाज ने प्रश्नभरी दृष्टि से डार्लिंग को देखा।

"मैं इस बात का अन्दाज कर चुकी हूं कि ये पहाड़ी नदी बेशक तेज धारा वाली है मगर इसकी गहराई अधिक नहीं...।"

"हां, लगता तो ऐसा ही है...।" शहबाज ने स्वीकारा।

"यदि हम गाड़ियों को नदी में डाल दें तो हमें पुल मिल

जाएगा। विचार तो अच्छा है मगर यह होगा कैसे?" शहबाज नें पूछा।

"यहां नदी का पाट पचास फुट के करीब चौड़ा है...।" डार्लिंग योजना बनाती हुई बोली—"हम पहले ट्रकों और जीपों को इस काम के लिए इस्तेमाल में लायेंगे। एक ट्रक को मैं और दूसरे को तुम आगे-पीछे लगाकर स्टार्ट हालत में नदी में दौड़ा देंगे...। पानी में उनके पहुंचते ही बेशक इंजन बन्द हो जायेंगे...बावजूद इसके तेज रफ्तार के साथ नदी में डालने के बाद मैं आशा करती हूं कि वे इंजन बन्द होने के बाद भी दूसरे किनारे तक पहुंच जायेंगे...।"

"मैं इस काम के लिए तैयार हूं...।" शहबाज ने कहा—"क्योंकि मैं अच्छी तैराकी जानता हूं...। ट्रक के रुकते ही मैं स्टेयरिंग सीट से नीचे कूद जाऊंगा और तैरकर इस पार वापस आ जाऊंगा...।"

"ठीक यही बात मैं चाहती थी...।" डार्लिंग उत्साहित स्वर में बोली—"यही मैं भी करूंगी...।"

"अगर इस तरह चार ट्रक हमने नदी में डाल दिये तो इस पार से उस पार तक हमारे लिए रास्ता तैयार हो जाएगा...।" शहबाज ने कहा।

"ट्रकों को नदी में डालने मात्र से रास्ता नहीं तैयार होगा शहबाज...।" डार्लिंग ने कहा—"नदी की गहराई का मैं अनुमान कर चुकी हूं। इसके लिए ट्रकों पर हमें एक-एक जीपों को भी लादना होगा...। मैं समझती हूं कि जीपों के ऊपर तक पानी न पहुंच पायेगा। अगर ऐसा ही हुआ, जैसा मेरा अनुमान है, तो हमारे आदमी बगैर पानी में उतरे, ट्रक और जीप की सहायता से तैयार किये गये पुल के ऊपर से हथियारों तथा दूसरे साजो-सामानों के साथ आसानी से नदी पार कर जायेंगे...।"

"आइडिया अच्छा है...।" शहबाज की आंखों में चमक आयी।

"हमारे सामने इस समय सबसे ज्यादा जरूरी मसला है हथियारों, गोला-बारूदों, मोर्टार गनों और राकेट लांचरों को पानी के सम्पर्क में आने से बचाना...। इस युक्ति से हम कामयाबी के

साथ उस पार पहुंच सकते हैं...।"

"फिर देर किस बात की...?" शहबाज ने कहा।

डार्लिंग ने घूमती हुई शहबाज की टुकड़ी के लोगों को आदेश दिया।

"ट्रकों और जीपों से सामान उतारो...। लकड़े के पटरे ट्रकों के पीछे लगाकर चार ट्रकों पर चार जीपें चढ़ाओ...।"

आदेश पर द्रुत गति से अमल होने लगा।

शहबाज अपने आदमियों को इस बात की जानकारी देने लगा कि वे क्या करने जा रहे हैं।

"बची हुई जीपों की हैडलाइटें नदी की धारा पर उस समय तक पड़ती रहनी चाहिए जब तक कि काम पूरा न हो जाए...। गनें सम्भाले हुए इस बात पर भी निगाह रखी जानी चाहिए कि दुश्मन की ओर से अवरोध या मगरमच्छों की ओर से खतरा पैदा होते ही जवाब गोलियों से देना है...। मोर्टार गन पर लाइटिंग बम और राकेट लांचर पर राकेट तैयार रखे जाएं...। जरूरत पड़ने पर उनको इस्तेमाल करने में जरा भी चूक न की जाए...।" डार्लिंग ने अगला निर्देश दिया।

आनन-फानन में तैयारियां पूरी हो गयीं।

थ्रिल क्वीन ने अगले ट्रक की स्टेयरिंग सीट खुद सम्भाली। इंजन जगाकर बैक गियर डाला। ट्रक को तीस मीटर करीब पीछे ले जाकर रोका।

शहबाज ने दूसरे ट्रक की सीट सम्भाली—ठीक डार्लिंग जैसी क्रिया उसने अपनायी।

डार्लिंग ने ट्रक को फर्स्ट गियर में डाला...दौड़ाकर सेकेण्ड गियर डाला। क्लच पर दबाव डाला।

और फिर,

अगले पल...ट्रक को नदी के पानी में उछाल दिया...।

शहबाज ठीक उसके पीछे था...।

किनारे पर जमा, निर्देश पर अमल के लिए तैयार सांस रोके हुए शहबाज के साथी—डार्लिंग और शहबाज की सलामती की मन ही मन दुआ करने लगे...।

पहले छिछले...फिर गहरे पानी में तेज झटके खाता रफ्तार

पकड़े हुए डार्लिंग का ट्रक दौड़ा...आधे से ज्यादा डूबा फिर तीन चौथाई पानी में गायब हुआ थोड़ा उबरा...। उसका इंजन बन्द हो गया था।

लेकिन कुछ और बढ़ा...और फिर अंगद के पांव की तरह जम गया।

ट्रक के रुकते ही पहले से तैयार थ्रिल क्वीन ने स्टेयरिंग सीट से जम्प मारी—लहरों पर आयी। उसने पलटकर देखा—उस ओर का किनारा बस कुछ मीटर दूर रह गया था...।

लेकिन उसे परवाह न थी—क्योंकि वहां से आगे पानी घुटते-घुटने से अधिक न था।

उसके ट्रक के पीछे, शहबाज ने ठीक उसकी योजना के अनुसार कार्य पूरा कर दिखाया था—अब यह बात दूसरी थी कि पहले ट्रक से दूसरे के बीच दो मीटर के करीब का फासला रह गया था।

शहबाज भी ट्रक से नीचे लहरों पर आ गया।

ब्यूटी क्वीन ने उल्लास के साथ सिर उठा ट्रक की स्थिति देखते हुए जोशीले स्वर में कहा—

"कामयाबी शहबाज...कामयाबी...। ट्रक तीन चौथाई डूबे हैं...। और जीपें पूरी-पूरी बच गयी हैं...।"

कहते हुए डार्लिंग उत्साहित भाव में शहबाज तक पहुंची। उसका हाथ थामा...उसके साथ-साथ प्रसन्नता भाव में किनारे की ओर बढ़ने लगी।

उसने इस बात का इत्मीनान किया कि किनारे के सारे आदमी उसके दिये निर्देश के अनुसार पोजीशन लिये तैयार हैं।

"लेकिन मिस डार्लिंग...।" शहबाज ने सिर उठा पीछे देखते हुए हिचक के साथ कहा—"आपके ट्रक से मेरे ट्रक के बीच काफी फासला रह गया है, जबकि मैं चाहता था कि अपना ट्रक ठीक आपके ट्रक से सटा दूं...।"

"कोई चिन्ता नहीं शहबाज...।" डार्लिंग पूर्व की तरह प्रसन्न और उत्साहित स्वर में बोली—"दो ट्रकों के बीच की दूरी को हम उन तख्तों की सहायता से पूरी कर लेंगे, जिन्हें लगाकर ट्रकों पर जीपें चढ़ाई गयी हैं...।"

"वाकई...।" शहबाज हर्षित हुआ।

वापस किनारे तक पहुंचने के बीच इस बार कोई हादसा पेश न आया। मगरमच्छों की ओर से भी खतरा सामने न आया। इसकी वजह यह हो सकती थी कि अपने एक मगरमच्छ साथी को चट कर जाने वाले अन्य मगरमच्छों की क्षुधा या तो तृप्त हो चुकी थी या फिर लहरों की हलचल और किनारों के कोलाहल और रोशनी के कारण वे भयभीत होकर दूर निकल गये थे।

किनारे जा लगने के बाद उत्साहित डार्लिंग और शहबाज ने तीसरे और चौथे तैयार खड़े ट्रकों के मामले में पहली वाली युक्ति अपनायी। ट्रक स्टार्ट हुए, दौड़े और पानी में कुदा दिये गये।

इस बार अधिक तेज रफ्तारी का सहारा न लेना पड़ा क्योंकि नदी में कुदाने के बाद भी उनका इंजन बन्द हो जाता है तो भी वे बचे हुए शेष मार्ग में पुल बनाने का कार्य पूरा कर सकते थे...।

इस बार आशा के बिपरीत एक और बात यह हुई कि...किनारे के छिछले पानी में शहबाज के ट्रक का इंजन बन्द न हुआ...जबकि डार्लिंग के ट्रक का इंजन गहराई में समाते ही झटके से बन्द हो गया था....परिणामतः शहबाज के ट्रक ने डार्लिंग के ट्रक के पिछले हिस्से में जोरदार टक्कर मारी...। डार्लिंग का ट्रक टक्कर खाकर आगे को उछला और तीसरे ट्रक से टकराकर उसे और आगे ढकेल गया।

"वाह! बहुत खूब...।" डार्लिंग उछाल ले लहरों पर आती हुई शहबाज को प्रशंसनीय भाव से देखती हुई बोली—"तुमने बहुत अच्छा कार्य किया शहबाज...।"

"मैंने कोई अच्छा काम नहीं किया मिस डार्लिंग...।" शहबाज ने सफ़ाई देने वाले स्वर में कहा—"बल्कि इंजन के बन्द न हो पाने के कारण मैं ब्रेक का इस्तेमाल सही समय पर न कर सका, जिसकी वजह से आपके ट्रक पर जोरदार टक्कर लगी...।"

"मगर यह टक्कर कारआमद लगी...।" डार्लिंग तैराकी करके किनारे की ओर बढ़ती, शहबाज का हाथ थाम मुस्कराकर बोली—"इस टक्कर से पहले और दूसरे ट्रक के बीच का फासला पूरा हो गया...।"

शहबाज मुस्कराया—

"अगर गलती का फल भी अच्छा निकला है तो इसका मुझे कोई श्रेय नहीं जाता।"

"सारा श्रेय तो तुम्हें ही जाता है शहबाज...तुम्हारा साथ न होता तो यह जंग मुझे अकेले ही लड़नी पड़ती...। अब हम एक से दो हैं...।"

और फिर,

किनारे पहुंचने के बाद डार्लिंग और शहबाज ने पाया कि ट्रकों को पानी में डालकर पुल बनाने की योजना, उनकी सोच से कहीं अधिक अच्छी प्रैक्टिकल रूप में तैयार थी।

किनारे को छूते खड़े ट्रक पर पटरे लगाकर, हथियारों तथा अन्य साज-सामानों के साथ चढ़ने का सिलसिला तेजी से शुरू हुआ।

"कोई भी सामान बाकी न रखो...।" डार्लिंग शहबाज के आदमियों को निर्देश देती हुई बोली—"खासतौर पर गोले-बारूद को बिल्कुल नहीं...।"

उसके आदेश पर अमल होने लगा।

थ्रिल क्वीन इस किनारे के दूसरे ट्रक की जीप पर थी। अभी सुबह होने में खासी देर थी। शहबाज डार्लिंग के करीब ही खड़ा था। उसने आंखों पर दूरबीन चढ़ा रखी थी। वह दरिया पार की पहाड़ियों का बारीकी से जायजा लेने की कोशिश कर रहा था। अंधेरे की वजह से उधर कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। उसने कुछ चिन्तित और बेचैनी भरे स्वर में डार्लिंग से कहा—"मेरी समझ में नहीं आता कि दुश्मन की ओर से खामोशी क्यों अख्तियार कर ली गयी है...?"

"ऐसा ही मैं भी सोच रही हूं...।" डार्लिंग ने कहा—"और उनकी खामोशी को ध्यान में रखकर ही मैं अगली रणनीति तैयार कर रही हूं...।"

"कहीं ऐसा न हो कि हम उस पार पहुंचकर खुली पहाड़ी पर पहुंचें और वे गोरिल्ला छापामार युद्धनीति अपनाकर चारों ओर से हम पर हमला कर दें...।" शहबाज ने आशंका व्यक्त की—"पहाड़ी के चप्पे-चप्पे की जमीन उनकी देखी-भाली है...।

अगर चारों ओर से घेरकर हम पर हमला किया गया तो हो सकता है अच्छी जवाबी कार्रवाई का भी हमें मौका न मिल सके...।"

"शकील और वकील इस मामले में हमारे मददगार साबित हो सकते हैं...।" डार्लिंग ने अपनी राय व्यक्त की।

शहबाज ने गरदन हिलाकर हामी भरी।

उसने घूमकर देखा—सबसे अगले ट्रक की जीप पर गोला-बारूद पहुंचाकर शकील लौटकर वापस आ रहा था।

शकील के करीब आने पर उसे शहबाज ने रोककर कहा—

"मैडम से बात करो...।"

शकील डार्लिंग की ओर बढ़ गया।

"तुम्हारी अपनी सोच के मुताबिक मुरसलीन के मुख्यालय पर इस समय कितने मिलिटेण्ट हो सकते हैं, शकील...?" डार्लिंग ने पूछा।

"अगर उन्होंने इस समय पहाड़ी पर बनी किलेनुमा विशालकाय इमारत छोड़ नहीं दी है तो उनकी संख्या तीन-चार सौ हो सकती है मैडम...।"

"तीन-चार सौ...!" शहबाज ने हैरत से दोहराया।

वह उन दोनों के बहुत करीब आ गया था।

"शहबाज...।" डार्लिंग तेजी से कुछ देर पहले से लेते निर्णय को अमली जामा पहनाते हुए शहबाज से सम्बोधित हुई—"अपने आदमियों को हुक्म दो कि असलाह और गोला-बारूद ट्रकों पर मौजूद जीपों पर समान मात्रा में जमा करते रहें...। कोई भी अभी नदी के उस पार उतरने की न सोचे।" कुदरती तौर पर हमें नदी के ऊपर किलेबंदी का जो एक खूबसूरत अवसर मिल गया है...। हमें उसे निगाह में रखकर आगे की योजना तैयार करनी चाहिए।"

"योजना क्या है...?" शहबाज ने झट पूछा।

"हम अपने कुछ आदमी इन जीपों पर छोड़ेंगे...। कुछ अपने पीछे लेकर आगे बढ़ेंगे...। हमारे आगे बढ़ते समय यदि हम पर हमला होता है तो जीपों के बीच सिर छुपाए हमारे साथी जवाबी कार्रवाई कर कम से कम दुश्मनों की एक ओर की घेराबन्दी तोड़ देंगे...। यह उसी रास्ते की घेराबन्दी होगी जिधर से हम आगे

बढ़ रहे होंगे। ऐसा होने पर हमारे पीछे पलटने का मार्ग खुला रहेगा।" वह बताती रही—"दुश्मन की ओर से भारी संख्या में हमला होने की स्थिति में पलटकर नदी पार कर जायेंगे और जीपों के गोला-बारूद में विस्फोट कर उनके आगे बढ़ने का मार्ग रोक देंगे...। ऐसा होने पर दुश्मन को बड़ी से बड़ी संख्या में नुकसान उठाना पड़ेगा। हमारा मकसद इस जंग को जीतना है। हम किसी भी कीमत पर इस जंग को जीतकर रहेंगे...।" फिर वह बोली—"एक बात और—हम उस पर उतरकर अटैक की कार्रवाई उसी समय करेंगे जबकि तुम्हारी पूर्वी और पश्चिमी टीम की ओर से इस बात का संदेश मिल जाए कि उन्होंने सही मोर्चेबन्दी कर ली है। इसलिए अब जरूरी है कि उनकी सही पोजीशन की जानकारी हासिल कर ली जाए शहबाज...। साथ ही मेरी योजना पर कार्य आरम्भ करा दो—तब तक मैं शकील से मुरसलीन वालों के बारे में विस्तृत जानकारी हासिल करने की चेष्टा करती हूं। और हां, इस बात को खासतौर पर याद रखो कि जंग के मैदान में पहले से तैयार, किसी एक योजना के मुताबिक ही नहीं चला जाता...। मैदान में उतरने के बाद परिस्थितियों और दुश्मन के हमले और उसकी शक्ति का आंकलन करके, समय-समय पर रणनीति बदलनी पड़ती है। परिस्थितियों के अनुकूल अपनी युद्धनीति को तेजी से बदल लेने वाला ही विजेता बनता है...।"

"मैं समझ गया...।" शहबाज ने कहा। स्पाई क्वीन की योजना को सुन, शकील को डार्लिंग के पास छोड़कर शहबाज आगे बढ़ गया।

वह अपने आदमियों को नई रणनीति की योजना के कार्य पर लगाने लगा।

शहबाज के आगे बढ़ जाने के बाद डार्लिंग ने शकील से पूछा—"मुरसलीन वालों के मुख्यालय पर हथियारों तथा यातायात के साधनों की क्या पोजीशन है...?"

"उनके पास सैन्य शक्ति जैसे मादक क्षमता वाले आधुनिक हथियार हैं। हाई फ्रीक्वेन्सी वाले रेडियो वायरलेस और ट्रांसमीटर सेट हैं। करीब एक दर्जन जीपें, आधा दर्जन तोप गाड़ियां...तथा दो छोटे हेलीकॉप्टर हैं...।"

"दो हेलीकॉप्टर भी...?" डार्लिंग ने चौंककर पूछा।

"जी हां।" इस बार जवाब दिया वकील ने और इन सबके अलावा उनके पास बारूद अली जैसा इन्सान है, जिसे बारूदों का साइन्टिस्ट कहा जाता है। जरूरत पड़ने पर वह कैमिकल बम भी तुरत-फुरत तैयार कर सकता है...। जो भयानक तबाही फैला सकते हैं...।"

"कैमिकल बम...।" डार्लिंग बुदबुदायी। सोचपूर्ण भाव में उसकी आंखें सिकुड़ीं।

शकील और वकील की ओर से दी जाने वाली जानकारियों को, उस स्थिति में किसी भी रूप में उत्साहवर्धक न कहा जा सकता था। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो उसकी जानकारियां उत्साहहीनता में भर देने वाली थीं।

स्पाई क्वीन के स्थान पर और कोई होता तो निश्चित रूप से उसका हौसला पस्त हो जाता। दुश्मन मैन पावर में भी कम से कम चार गुनी शक्ति रखता था, और यदि सिर्फ इस ओर की इन्सानी संख्या को देखा जाता तो संख्या आठ गुनी थी। वह अत्याधुनिक हथियारों, हेलीकॉप्टरों तथा कैमिकल बम से युक्त था...जबकि इधर से हथियार ट्रेनिंग कैम्पों से लूटे हुए तथा कुछ शहबाज और उसके साथियों की ओर से लाये हुए थे...। वे न तो भयानक रूप से संहारक थे, ना ही उनके बल पर लम्बी मोर्चाबन्दी की जा सकती थी।

लेकिन, वह थ्रिल क्वीन डार्लिंग थी। जो इस उसूल पर चलना जानती थी कि जंग हथियारों के बल पर नहीं हौसले के बल पर लड़ी जाती है।

हौसला न हो तो महीनों तक जंग का साजो-सामान रखने वाली एक लाख पाकिस्तानी फौज, बांग्लादेश में युद्ध के मैदान में हथियार डालकर, हिन्दोस्तानी फौज के सामने आत्मसमर्पण कर देती है—जिससे दुनिया में, सबसे बड़ी संख्या में फौजियों के हथियार डालने का विश्व कीर्तिमान बनता है।

हौसला न हो तो सद्दाम की तीस हजार की रेड आर्मी, तथा इराक की दूसरी सारी फौजी शक्ति, रातो-रात सैनिक वर्दी और हथियार छोड़कर भाग खड़ी होती है, फौजी आम नागरिकों के बीच

जाकर साधारण नागरिक बन जाते हैं और एक भी गोली चलाए बगैर अमेरिकी और ब्रिटिश फौज धड़धड़ाकर बगदाद तक घुस जाती है और उसे फौजी प्रतिरोध के बजाय नागरिकों का स्वागत अभिनन्दन हासिल होता है।

"मुरसलीन वालों के पास एक और भी चीज है...। जिसके बारे में संगठन के सदस्यों के बीच इस बात की चर्चा है कि उसकी ताकत केमिकल्स बम से भी बड़ी है।"

"वह क्या...?" डार्लिंग ने चौंककर पूछा।

इस समय मुरसलीन संगठन की गुप्त सलाहकार...।" शकील ने बताया—"जो ओहदेदार नम्बर वन, टू, थ्री को खोने के बाद मुरसलीन को नये ओहदेदार को मिला है...।"

"गुप्त सलाहकार...! वह कौन है...?" डार्लिंग ने झटके से पूछा।

"मैं पहले ही बता चुका हूं मैडम कि संगठन की नई नीति के अनुसार उस मामले में पूरी तरह से गोपनीयता बरती जा रही है।"

"ओह!" डार्लिंग के चेहरे पर सोचपूर्ण भाव आये।

"तुमने देखा कमाण्डर जियाउल...।" स्पीकर पर उत्साहजनक, जानी-पहचानी आवाज उभरी।

उस आवाज को सुनकर टी० वी० स्क्रीन पर निगाह जमाए जियाउल सजग हो गया।

"यस....।" जियाउल का सम्मान भाव में डूबा स्वर उभरा— "आपकी सोच अपनी जगह एकदम दुरुस्त थी। आफत की परकाला नाम है जिसका डार्लिंग... उसने हैरतअंगेज रूप से...ट्रकों को पुल बना लिया और नदी पार कर ली...।"

जियाउल के स्वर में हैरत थी।

"एक बात और ध्यान रखो।" दूसरी ओर की आवाज कक्ष में उभरी—"घर का भेद दुश्मन को मिल जाए तो उसकी हिम्मत और भी बढ़ जाती है साथ ही वह अपने आपको अधिक शक्तिशाली मानने लगता है। इण्डियन स्पाई के हाथ हमारे दो ट्रेनीज मिलिटेण्ट

शकील और वकील लग गये हैं तो वह इस जोश में भर उठी है कि हमारी शिकारगाह में घुसकर हमें मात दे देगी... ।"

"और उसका यह जोश उसे सीधे मौत के मुंह में ला रहा है... ।" जियाउल कहता रहा—"हमने अपने आदमियों का चक्रव्यूह आपके परामर्शानुसार उसके बढ़ने के रास्ते पर फैला दिया है। आगे बढ़ते हुए वह महसूस करेगी कि हमारी ओर का रास्ता पूरी तरह खुला हुआ है। मगर कुछ आगे बढ़ते ही उसके पीछे पलटने का रास्ता भी घेरे में ले लिया जाएगा। और उसके बाद...कोई भी ऐसा रास्ता उसके सामने न होगा जो उसे मौत की मंजिल से दूर कर सके।"

"यस...मैं चक्रव्यूह से सन्तुष्ट हूं... ।" स्पीकर पर कहा गया... । साथ ही निर्देश दिया गया—"बारूद अली को तुरन्त, पूर्वी-पश्चिमी मोर्चे की ओर कमान सम्भालने के लिए भेजो। उधर की टुकड़ी के पास हमारी सोच से कहीं ज्यादा अच्छे हथियार हैं... । उन्हें हमारे मुजाहदीनों से भिड़ने का मौका न देकर घेराबन्दी करके एक ही झटके से उन्हें खत्म कर दिया जाए। बारूद अली को जल्दी रवाना करो... ।"

"ओ०के० मैं आपके परामर्शानुसार पूर्वी-पश्चिमी मोर्चे की ओर बारूद अली को रवाना कर रहा हूं... ।" जियाउल ने जल्दी से कहा।

और फिर,

वह जल्दी-जल्दी बारूद अली से मोबाइल पर सम्पर्क बनाने लगा। उसे बारूद अली से मोबाइल सम्बन्ध बनाने की आवश्यकता इसलिए पड़ गयी थी, क्योंकि उसके स्वयं के जोश के कारण उसने उसे उत्तरी मोर्चे की ओर रवाना किया था। बारूद अली अपनी बांह में खाए हुए जख्म का, इण्डिया स्पाई से बदला चुकाने की दीवानगी में भरा हुआ था।

शहबाज जिस व्यवस्था के लिए वहां से हटा था, उसे पूरी करके वापस लौट आया। उसके चेहरे पर उत्साहजनक भाव थे।

उसने आते ही कहा—

"पूर्वी और पश्चिमी टुकड़ी ने अपनी साइड से नदी का रास्ता पार कर लिया है। उनकी ओर की नदी का पाट कम चौड़ा तथा छिछला था। वे जीपों और बख्तर बन्द गाड़ियों सहित नदी को आसानी से पार कर लगातार आगे बढ़ रहे हैं।"

"वाकई यह अच्छी खबर है।"

"मैंने उन्हें हमले का हुक्म दे दिया है...।"

"गुड...।" डार्लिंग एकदम जोशीले अंदाज में बोली।

और उसी समय,

पहाड़ियों के पूर्वी-पश्चिमी तट की ओर से भयानक फायरिंग और धमाकों की आवाजें गूंजने लगीं।

थ्रिल क्वीन ने फुर्ती के साथ गन तथा कुछ हथगोले कमर में बंधी पेटी के साथ लटकते बैग में डाले। रिवॉल्वर खौंसी। खंजर को पिण्डली में बंधी पट्टी के खोल में डाला। घूमकर शहबाज और शकील से बोली—

"सिर्फ तुम दोनों मेरे साथ आओगे...। दस की टुकड़ी हमारे पीछे रहेगी...शेष यहीं रहकर मोर्चा सम्भालेंगे। एक अदद रेडियो वायरलेस साथ रखोगे शहबाज...जिससे यहां वालों से सम्बन्ध बना रहेगा। हमारी ओर से मिलने वाले संदेश के अनुसार आवश्यकता पड़ने पर यहां से कार्रवाई अमल में लायी जायेगी...।"

थ्रिल क्वीन ने बुलन्द आवाज में यह सलाह दी थी।

सलाह सबके कानों तक पहुंची।

शहबाज ने दस आदमी छांटे।

सारी व्यवस्था में कुल दो मिनट का वक्त लगा।

आगे-आगे दौड़ती हुई डार्लिंग, शहबाज, शकील तथा वकील ने उछाल ले-लेकर किनारा छोड़ा।

उनके पीछे दस की टुकड़ी पीछे से मैदान में उतरी।

मैदान में उतरने वाली डार्लिंग दूसरी ओर की टुकड़ी की पोजीशन की जानकारी हर क्षण ले रही थी। उनका हमला बेहद जोरदार था।

गोलियों का आदान-प्रदान तेजी के साथ दोनों ओर से हो रहा था।

"मुरसलीन वालों को हमारी दोनों टुकड़ी ने पूरी तरह से अपनी ओर उलझा लिया है...।" शहबाज, शकील और वकील के साथ तेजी से आगे को दौड़कर पहाड़ी टीले पर चढ़ती....जम्प मार कर, हिरणी की तरह कुलांचे लेती दौड़ती डार्लिंग ने कहा—"मैं अब कह सकती हूं कि दुश्मन बौखलाहट में भरकर बचाव की कार्रवाई पर उतर आयेगा।"

फायरों के आदान-प्रदान के साथ मुरसलीन के हैडक्वार्टर में भयानक उथल-पुथल मच गयी। छायी हुई खामोशी अब टूट चुकी थी।

वहां रिजर्व टुकड़ी के रूप में ठहरे हुए दहशतगर्दों को तेजी से पूर्वी पश्चिमी मोर्चे पर जीपों पर रवाना किया जा रहा था। थ्रिल क्वीन, ट्रांसमीटर पर उधर की खबर अब भी ले रही थी।

जख्मी होकर गिरने वालों की चीखें उभर रही थीं।

मोर्टार गन से लाइटिंग बम और राकेट के जोरदार धमाके कौंधने लगे थे। राकेट आकर दहशतगर्दों के मुख्यालय के करीब गिरा।

राकेट के गिरते ही जबर्दस्त धमाका हुआ, और उसके विस्फोटक प्रकाश में डार्लिंग ने देखा—जहां पर वह गिरकर फटा था वहां दुश्मन की एक बड़ी टुकड़ी जमा थी...। राकेट के फटते ही दर्जनों जिस्म हवा में उड़कर बिखर गये...बचने वालों में जबर्दस्त भगदड़ मच गयी।

डार्लिंग, शहबाज, शकील और वकील अपनी ओर का मैदान पूरी तरह खाली पा रहे थे।

वे उत्साह में भरे दौड़ते हुए बढ़ रहे थे।

फटने वाले राकेट की ज्वाला के बीच डार्लिंग ने खण्डहरनुमा पुराने किले के एक हिस्से में खड़ी एक जीप पर बेहद जल्दबाजी में बारूद अली को सवार होते देखा।

वह बारूद अली, जिसे उसने डल झील में जख्म दिया था।

उसकी दाईं बांह में ड्रेसिंग थी। गले में लटकी पट्टी के सहारे वह उस हाथ को सहारा दिये, दूसरे हाथ में गन उठाए जीप में चढ़ रहा था।

बारूद अली को देखते ही थ्रिल क्वीन का रोष शिकारी

सिंहनी के समान हो गया। वह उस पर गोलियों की बौछार करके मौत के घाट उतार देने की दीवानगी में भर उठी। लेकिन दूरी ज्यादा होने के कारण उसे अपने आक्रोश पर काबू पाना पड़ रहा था।

और,

अभी वह बारूद अली की ओर से ध्यान हटा भी न पायी थी कि अचानक अपनी साइड में होने वाले फायरों की बाढ़ पर द्रुत गति से ध्यान दे बैठी...।

"शहबाज...शकील...वकील...पोजीशन लो...।" थ्रिल क्वीन ने चीखकर कहा।

इसे थ्रिल क्वीन ने अपने लिए सुखद संयोग माना कि उस समय उस सहित चार की टुकड़ी दो ऐसी चट्टानों के बीच से गुजर रही थी जिसके सामने का रास्ता खुला था, दाहिने-बाएं चट्टानों पर गोलियों की तीव्र बाढ़ आयी थी...पीछे उसके अपने दस जवानों की टुकड़ी थी—जिन्हें बेधकर ही दुश्मन की गोलियां उन तक पहुंच सकती थीं।

और डार्लिंग ही नहीं शहबाज भी इस बात को अच्छी तरह जानता था कि अपनी जान पर खेलकर ही वे जवान दुश्मन को उनकी ओर बढ़ने दे सकते हैं।

एक ओर डार्लिंग के साथ शहबाज, और दूसरी ओर शकील और वकील ने चट्टान की दीवार से लग कोहनियों के बल लेटकर पोजीशन ली।

अभी सामने से दुश्मन का मोर्चा न खुला था इसलिए डार्लिंग टुकड़ी को जवाबी हमले का समुचित अवसर मिल गया था।

"शहबाज...।" थ्रिल क्वीन सामने निगाह रखते हुए शहबाज से बुदबुदायी—"इस बात को मानना पड़ेगा कि दुश्मन ने अपनी रणनीति से हमें उलझा लिया है....हमने जिस रास्ते को अपने बढ़ने के लिए खुला हुआ पाया, उस पर हमें बढ़ते देख चारों ओर से तगड़ी मोर्चाबन्दी की जा रही थी...चक्रव्यूह रूपी घेरा बढ़ाया जा रहा था।"

"मगर, दुश्मन को इस बात की जानकारी न होगी मैडम कि

हमने अपने रिजर्व आदमियों की करीब तीन-चौथाई ताकत बैक फ्रण्ट पर छोड़ रखी है। मैं उन्हें आगे बढ़ने का आदेश देता हूं...। हमारे नदी के रिजर्व बैक फ्रण्ट वाले साथी तीन ओर से बढ़ेंगे और हमलावर दहशतगर्दों को कब्रों में उतार देंगे...।" शहबाज ने उत्साहित स्वर में कहा।

वह तनिक भी हतोत्साहित न था। उसने ट्रांसमीटर पर जल्दी-जल्दी नदी के ऊपर ट्रकों पर तैनात जवानों से सम्पर्क साधना आरम्भ किया।

"जो तुम कर रहे हो वह आवश्यक है शहबाज...।"

थ्रिल क्वीन सोचपूर्ण भाव में बोली—"लेकिन, इस ओर भी ध्यान दो कि दुश्मन ने पूर्वी-पश्चिमी मोर्चे पर घमासान युद्ध मचाने के कुछ देर बाद इधर का मोर्चा खोला है...। अगर उसने दोनों ओर का मोर्चा बांध रखा था तो उसे एक वक्त में दोनों मोर्चों की फायरिंग खोलनी चाहिये थी। इधर की फायरिंग थोड़ा समय देकर खोली गयी। इससे यही लगता है कि दुश्मन ने सोची-समझी योजना के अनुसार हमें और आगे बढ़ने का अवसर दिया।"

शहबाज उसके कथन का कोई जवाब दे पाता उससे पहले ही पीछे-पीछे कोई बीस मीटर के फासले पर एक के बाद एक हथगोलों के धमाकों से वातावरण कौंधने लगा।

वे एक के बाद एक दर्जन भर धमाके हुए थे...और उन धमाकों से पहाड़ी का जर्रा-जर्रा कांप उठा था।

डार्लिंग, शहबाज, शकील-वकील अपने-अपने स्थान से उछलकर पलटकर पीछे की ओर दौड़े।

धमाकों, विस्फोटों की चमक के साथ हृदय विदारक चीखें भी उभरती हुई डार्लिंग चौकड़ी के कानों में पड़ी। चारों अपने पीछे आ रही टुकड़ी की मदद के लिए पलट पड़े थे।

कुछ गज दौड़ने के बाद डार्लिंग चट्टान के पास ऐसे हिस्से पर पहुंची जहां से दोनों सिरों पर दौड़कर चढ़ा जा सकता था।

"शहबाज...। शकील वकील...अपने-अपने साइड से दाएं-बाएं से पैंतालीस डिग्री कोण बदलो...। फौरन...।" डार्लिंग दाईं ओर चढ़ाई पर दौड़ पड़ती हुई ऊंचे स्वर में आदेश दे गयी।

शहबाज, शकील, वकील ने झट आदेश का पालन किया।

कुछ सेकण्डों में ही थ्रिल क्वीन, शहबाज के साथ लगभग दस मीटर की ऊंचाई पर पहुंची। उसने फ़ौरन झुककर एक नया मोर्चा बांधा। उसने पांच दुश्मनों को कुछ फ़ासले पर कोहनियों के सहारे रेंगकर आगे बढ़ते देख लिया था...।

स्पाई क्वीन ने ए० के० 47 सम्भाली। और पाँचों पर बेतहाशा गोलियां बरसाने लगी...।

"तड़...तड़...तड़...रेट....रेट...रेट...।"

कोहनियों के बल रेंगकर बढ़ने वालों पर मौत ने एक साथ झपट्टा मारा और अपने आगोश में समेट लिया।

शहबाज दौड़ता हुआ डार्लिंग तक पहुंचा।

अभी वह कुछ निर्णय ले पाता इसी समय शकील और वकील की जोड़ी ने अपनी साइड से फायर खोल दिया...।

डार्लिंग के करीब पहुंचे, अपने पीछे की टुकड़ी के प्रति बेताबी में भरे शहबाज को उस समय जबर्दस्त झटका लगा, जब उसने नीचे अपने दस के दस जवानों के जिस्मों के परखच्चे उड़े हुए देखे...।

उनके रक्त की छींटों से चट्टानें सुर्ख हो रही थीं।

शहबाज के होंठों से साथियों की मौत पर गहरी आह फूटी।

दुश्मन ने चक्रव्यूह रचकर कुछ ऐसी घेराबन्दी की थी कि उसके जवानों को सम्भलने तक का मौका न मिला था...पलक झपकते वे मौत के आगोश में समाते चले गये थे।

"हरामजादो...कुत्तो...!" अपने साथियों की एक मुश्त मौत पर शहबाज किसी जख्मी दरिन्दे की तरह चीख गुंजाता, गन सम्भाले आगे की ओर दौड़ पड़ा। उसकी हिंसकता में डूबती चीखती आवाज, नीलकाफ की पहाड़ियों का सीना थर्रा गयी।

कुछ आगे जाते ही दुश्मन की एक और टुकड़ी नजर आयी। वह पूर्णतयः दरिंदगी में भरा हुआ उन पर गोलियां बरसाने लगा।

दूसरी ओर से,

नीलकाफ की पहाड़ी की एक अन्य ऊंची चट्टान के पीछे मोर्चा बांधे मिलिटेण्टों की ओर से भी जबर्दस्त फायरिंग खोल दी गयी।

थ्रिल क्वीन को दुश्मन की मोर्चाबन्दी को अब समझने का मौका मिला। एक के पीछे एक—चार-चार टुकड़ियां लगी हुई थीं। शहबाज ने फायरों की बाढ़ से बचने के लिए एक चट्टान के पीछे फुर्ती से पोजीशन ले ली।

स्पाई क्वीन ने पलटकर देखा—अब वह मोर्चा भी भर चुका था जिस रास्ते से वह आगे बढ़ रही थी—जहां से, फायरों की बाढ़ शुरू होते ही पलट आयी थी। अब उनके चारों ओर मौत का चक्रव्यूह था।

शहबाज ने पोजीशन लेते ही तुरन्त अपने पास मौजूद ट्रांसमीटर सेट ऑन कर उस पर नदी के ऊपर, मोर्चाबन्दी किये जमा अपने आदमियों से सम्पर्क साधकर उन्हें तेजी से आगे बढ़ते हुए हमलावर होने का आदेश दिया।

वह उस समय, थ्रिल क्वीन डार्लिंग की सूझ-बूझ की मन ही मन प्रशंसा किये बगैर न रहा, जिसने केवल दस आदमियों की टुकड़ी को अपने पीछे लाने की समझदारी दिखायी थी।

यदि शेष आदमी चारागास नदी के ऊपर ट्रकों के पुल पर न छोड़े गये होते तो, मुरसलीन वालों के उस समय के हमले में उसकी पूरी टीम तबाह हो जाती...। जिस स्थिति में उस के दस लोग एक झटके से उड़ा दिये गये थे, उसमें सबके सब मार दिये जाते...।

ट्रांसमीटर को अपने साथ रखना भी डार्लिंग की सूझ-बूझ का नतीजा था—जिससे वह अपने शेष आदमियों से सम्पर्क बनाने में सफल रहा था। इस बात की पूरी आशा उसे थी कि दस मिनट के अन्दर उसके बचे हुए आदमी जंग का नक्शा बदलकर रख देंगे। अपने आदमियों को जवाबी कार्रवाई का निर्देश देने के साथ ही जैसे ही उसने चेहरा घुमाया। डार्लिंग ने निर्देश दिया—

"हम अब सुरक्षित पोजीशन में हैं। इसलिए अभी हमारी ओर से गोली नहीं चलानी है...। तुम्हारे आदमियों की ओर से होने वाली कार्रवाई का हमें इन्तजार करना है...। साथ ही दुश्मन की संख्या पर भी निगाह रखनी है। दुश्मन की संख्या निगाह में आने के बाद ही हम अगले हमले की कार्रवाई करेंगे...।"

शहबाज कुछ कहता इससे पहले ही शकील की चीख कौंधी—

"बचना मैडम...!"

आवाज कौंधने के साथ ही शकील और वकील की ओर से फायरिंग खोल दी गयी।

डार्लिंग बिजली की सी चमक के साथ उस दिशा में पलटी जिधर शकील-वकील ने फायरिंग खोली थी।

वह दिशा, उसके ठीक पीछे थी...।

पीछे की दरार युक्त चट्टान से टिड्डी दल की सी संख्या में मिलिटेण्टों की टुकड़ी सर उभार चुकी थी। शकील, वकील की फायरिंग के निशाने पर वे न आकर, जवाबी कार्रवाई करने लगे थे।

उनके निशाने पर न आ पाने की वजह यह थी कि उन्होंने सुरक्षित पोजीशन ली हुई थी।

थ्रिल क्वीन पलटी...।

वह दुश्मनों पर सिंहनी बनकर टूट पड़ना चाहती थी कि उसके सामने एक हथगोला आकर फटा—

"धड़ाम...।"

वह कई फुट हवा में पीछे को उछली और बेतहाशा गिरी...।

अगर डार्लिंग फुर्ती से घूमने के एक्शन मुद्रा में न होती और फुर्ती से पीछे हवा में उछाल लेकर बचाव करने की कार्रवाई अमल में न लायी होती तो वह हथगोले की चपेट में आये बगैर न रहती।

दुश्मनों की ओर घात लगाकर उस पर सही निशाना लगाया गया था।

लेकिन अब, कहा जा सकता था—बाल-बाल बची थी।

उधर, शहबाज एक चट्टान की ओट लिये लगातार दुश्मनों की गोलियों का जवाब गोलियों से दे रहा था।

उसकी पोजीशन उस समय बस इस बात की अहमियत रखती थी कि उसने दुश्मन के कदम आगे बढ़ने से रोके रखे थे।

और थ्रिल क्वीन,

जिसके हथगोले के धमाके से बाल-बाल बचने की बात,

शहबाज ने देखी थी—वह उछलकर दाएं हाथ को टेकते हुए गिरी थी...। गिरने के साथ इस अन्दाज में छिटककर एक ओर को उछली थी जैसे कि खुद विस्फोट का एक हिस्सा हो।

कठिन से कठिन परिस्थितियों में इस तरह की दूरदर्शिता अपना लेना थ्रिल क्वीन के स्वभाव में शामिल खूबी थी।

दूरदर्शिता अपनी जगह सही थी, क्योंकि जिस स्थान से गिरकर वह विस्फोट के टुकड़े की तरह छिटकी थी वहां पर पलक झपकते फायरों की जबर्दस्त बाढ़ छोड़ दी गयी थी। दुश्मन की टुकड़ी किसी भी कीमत पर सिर्फ और सिर्फ उसे मौत की नींद सुला देने पर आमादा थी।

जिसकी वजह से सब से बुरी स्थिति डार्लिंग के सामने यह आयी कि छिटकने वाले स्थान पर उसकी गन छूट गयी।

इस बात का आभास डार्लिंग को छिटककर दूसरे स्थान पर पहुंचने के एक सेकण्ड बाद हुआ पर शहबाज ने सेकण्ड के सौवें हिस्से में इस बात को देख लिया था।

और, हथियार रहित होने वाली डार्लिंग के चेहरे पर चिंता की लकीर खिंचती इससे पहले शहबाज ने अपने स्थान से डार्लिंग की ओर उछाल ली। वह उसके लिए ढाल बनता, हवा में उड़ता-सा, दुश्मनों पर गोलियां बरसाता हुआ डार्लिंग तक पहुंच जाने को कटिबद्ध था...। जान पर खेलकर डार्लिंग को हथियारबद्ध करना चाहता था।

शहबाज की गोलियों का जवाब गोलियों से दिया जा रहा था...उसके एक फायर के जवाब में कम से कम दर्जन फायर झोंके जा रहे थे।

थ्रिल क्वीन, इण्डियन स्पाई, मैडम डार्लिंग और अपनी जान से ज्यादा अजीज मेहमान की जिन्दगी की हिफाजत के लिए शहबाज ने खुद को ढाल बना डाला था।

वह दुश्मनों को भून रहा था...पूरी जांबाजी और उग्रता से अपनी जवांमर्दी का परिचय दे रहा था।

लेकिन, दुश्मनों की संख्या घटने के बजाय बढ़ रही थी। वे खेतों में उगती फसल की तरह, रौंदे जाने के बाद भी नये-नये पौधों की तरह अंकुरित होकर सिर उभार रहे थे।

"शहबाज...अपनी पोजीशन सुरक्षित करो...।" डार्लिंग ने उसके पीछे से ऊंची आवाज में अपनी पोजीशन की जानकारी दी—"मेरे हाथ में रिवॉल्वर है...मैं अपनी हिफाजत कर सकती हूं...।"

"आऽऽऽह।" तभी दूसरी ओर से वकील की चीख कौंधी।

शहबाज का ध्यान वकील की चीख पर पलटा। उसे लगने वाली गोली की यह चीख थी। शहबाज की चीख सुनकर पलटना उसके लिए सबसे खतरनाक पहलू साबित हुआ।

टिड्डी दल की तरह, खेत होते जा रहे दुश्मनों को, उसे सीधे लक्ष्य करके निशाना लगाने का मौका मिल गया—

"तड़...तड़...तड़...रेट...रेट...रेट...।" गोलियों की तेज बाढ़ शहबाज पर छोड़ी गयी...।

एक साथ दर्जनों गोलियां, उसके बाजू, सीने, कांधे और पेट में पेवस्त होकर, जिस्म का लहू उबलकर बाहर आ जाने का दृश्य सामने ले आयीं।

हर गोली पर शहबाज लहराया...कराहा।

पूरी तरह से घूमा और हाथ में थमी गन उसने, अपनी मैडम डार्लिंग की ओर उछाल दिया...।

गन लपकते ही थ्रिल क्वीन ने उन दुश्मनों पर दहाना खोल दिया जिनकी ओर से शहबाज पर गोलियां बरसाकर दर्जनों जख्म दे दिये गये थे...।

उसके फायरों की बाढ़ से, शहबाज के जख्म देने वाले के माथे में तीसरी आंख बनी ही...साथ ही तड़तड़ाती गोलियों ने पूरी पट्टी के लिए कब्रगाह बना दी...।

लेकिन,

यहीं मंजिल खत्म न थी। मौत का साया तो हर ओर से मंडरा रहा था...।

थ्रिल क्वीन ने सामने का मोर्चा तोड़ा ही था कि जख्मों से चूर, लहराते, मौत से जूझते शहबाज ने डार्लिंग के पीछे, एक हाथ बुलन्द होता देखा।

उस बुलन्द होते हाथ में हैण्डग्रेनेड था...। वह पिन खींच चुका था और हाथ लहरा चुका था।

जांबाज, जवांमर्द शहबाज के पास इतना भी वक्त न था कि वह डार्लिंग को खबरदार कर सकता...।

जैसे तेल खत्म होने के बाद दीपक की लौ भभकती है, अपने जीवन संघर्ष के लिए अंतिम शक्ति समेटना चाहती है, वैसे ही गोलियों से क्षत-विक्षत शहबाज ने, अंतिम शक्ति समेट हवा में उछाल भरी साथ ही चीख गुंजाई "मैडमऽऽऽ...!"

हैण्डग्रेनेड युक्त लहराया हुआ हाथ, ग्रेनेड उछाल चुका था...लक्ष्य डार्लिंग थी...।

लेकिन ढाल शहबाज बना।

उछाल मारे हुए शहबाज ने अपना सीना आते हुए हैण्डग्रेनेड के सामने अड़ा दिया था...।

'धड़ाम...।'

जबर्दस्त धमाका!

चट्टानों को उड़ा देने...वादियों को दहला देने...भूकम्प की-सी स्थिति ला देने वाला विस्फोट...।

उस विस्फोट में न सिर्फ शहबाज का जिस्म जर्रा-जर्रा होकर बिखरा, बल्कि आसपास की चट्टानें भी टुकड़े-टुकड़े होकर हवा में उड़ उठी थीं...।

चट्टानों के टूटने, उड़ने, गिरने से दायीं नहीं बायीं ओर की उस चट्टान पर भी जैसे भूकम्प आ गया था जहां शकील, अपने साथी वकील की लाश सम्भाले दुश्मन से मुकाबला कर रहा था...।

अब न डार्लिंग अपनी जगह पर थी, ना ही शकील...।

चट्टानों के टूटने से घाटी पट गयी थी...।

"विक्ट्री...फतह...जीत...।" हैण्डग्रेनेड के धमाकों से दो चट्टानों के बीच की घाटी को पाट देने वाले ने जोशीले स्वर में ट्रांसमीटर पर, हेडक्वार्टर से सम्पर्क स्थापित कर विजयोल्लास में भरी इत्तला दी—"मैं नदीम...मैंने इण्डियन स्पाई डार्लिंग को मार दिया...मैंने शहबाज खां का खात्मा कर दिया...। दोनों के जिस्मों

के चीथड़े हवा में बिखेर दिये। मैंने घर के भेदी वकील को, साथियों की गोलियों से क्षत-विक्षत होकर गिरते देखा...और शकील की लाश हजारों टन पत्थरों के नीचे दफन हो गयी...। कमाण्डर हमें जो काम सौंपा गया था उसमें हमारे दो दर्जन साथी शहीद हुए, मगर मैंने अपना काम पूरा कर दिया...ओवर...।"

"मुझे दो दर्जन मुजाहदीनों की शहादत का अफसोस है—मेरे गाज़ी नदीम...।" दूसरी ओर से कमाण्डर जियाउल का स्वर ट्रांसमीटर पर उभरा—"मगर इण्डियन स्पाई डार्लिंग और शहबाज की मौत की बेपनाह खुशी है...। आफत की परकाला की मौत के लिए दो दर्जन साथियों की कुर्बानी कुछ भी मायने नहीं रखती...। रहा शकील और वकील का मामला...तो वे एक तरह से हमारे ही पैदली मोहरे थे। शतरंज की बिसात पर बिछाए पैदली मोहरों की मौत का ना तो गम मनाया जाता है ना ही खुशी...क्योंकि उन्हें तो आगे बढ़ाया ही इसीलिए जाता है ताकि सामने वाला पैदली मोहरों को पीटने की चाल में फंसकर शह खाए और मात पाने के लिए मजबूर हो जाए...। हमने शह दी और इण्डियन स्पाई ने मौत पायी...ओवर...।"

"यस कमाण्डर...।" नदीम नामक दहशतगर्द युवा ने कहा—"हमारे लिए अब क्या हुक्म है...? मैं अपनी टुकड़ी के छः मुजाहदीनों के साथ इस समय हाजी पीर टीले पर हूं ओवर...।"

"अभी मोर्चा मत छोड़ो...।" दूसरी ओर से कमाण्डर जियाउल का आदेशात्मक स्वर गूंजा—"पूर्व-पश्चिमी मोर्चे पर दुश्मन की ताकत हमारे जांबाज मुजाहदीनों ने काफी हद तक पस्त कर दी है...। शहबाज के बचे हुए कुछ गुण्डे अभी भी छुटपुट मोर्चा जमाए हुए हैं...मगर उन्हें भी बहुत जल्द हमारे मुजाहदीन मौत की नींद सुला देंगे...। उधर उत्तरी किनारे की ओर भी अभी धूल गर्द के रूप में कुछ लोगों की ताकत बची हुई है। उन्हें ठिकाने लगाने का काम तुम्हें करना है...उस ओर को आगे बढ़ो...ओवर...।"

"यस कमाण्डर...हम उस ओर को बढ़ना आरम्भ कर रहे हैं...ओवर...।"

"ओवर एण्ड ऑल...।" उधर से आवाज उभरी...और सम्बन्ध विच्छेद कर दिया गया।

शकील ने किसी नेवले की तरह चट्टानी दराज से सिर उभारा।

वह इसे, किसी चमत्कार से कम नहीं समझ रहा था कि टूटती चट्टानों के साथ वह नीचे घाटी में गया था...मगर दो बड़ी चट्टानों ने उस पर चादर-सी तान दी थी। बचाव भरी चादर...।

वह बाल-बाल चट्टानों के नीचे कुचलने से बच गया था—"खरोंचे तक न आयी थीं उसे...।"

इसे वह अपनी किस्मत भी समझ रहा था और जिन्दगी का खेल भी।

सिर उभारकर उसने इधर-उधर देखा—वातावरण में धूल-गर्द अब भी उड़ रही थी, मगर चारों ओर श्मशान की-सी खामोशी छायी हुई थी। श्मशान घाट ही उसे वह जगह नजर आयी थी जहां चारों ओर लाशें ही लाशें थीं।

अब वहां न गोलियों की तड़तड़ाहट थी, न हथगोलों के धमाके...।

उसे अपने साथी, वकील की मौत का गम और शहबाज के चीथड़े-चीथड़े होते जिस्म का जबर्दस्त सदमा था।

साथ ही मैडम डार्लिंग की खोज के लिए उसकी निगाहें चारों ओर फिसल रही थीं।

उसने शहबाज को ऊपर से आते हुए ग्रेनेड के लिए अपने सीने को अड़ा देने का दिलेराना मंजर और चीथड़े-चीथड़े होते उसके जिस्म का वीभत्स दृश्य देखा था।

साथ ही थ्रिल क्वीन को रोमांचक उछाल लेने का कारनामा भी उसकी आंखों के सामने गुजरा था।

मगर उसके बाद आगे का दृश्य, विस्फोट के धमाकों और लपटों में खो गया था...। आगे कुछ भी न देख पाया था वह। ना ही देखने का उसे होश रह गया था।

उसके कदम खुद अपनी जगह से उखड़ गये थे। उसे इस बात की सूझ भी न रह गयी थी कि वह मौत के आगोश में सोने

जा रहा है, अथवा जिन्दगी बांहें फैलाए उसका स्वागत कर रही है।

दरार से सिर उभारने के बाद उसने अपनी जिन्दगी का यकीन किया था। और इसी के साथ वह मैडम डार्लिंग के जीवन की आस लगा बैठा था।

उसका दिल कह रहा था—मैडम डार्लिंग की ओर मौत के हाथ लपककर पीछे हट गये हैं। पर दिमाग कह रहा था...दुश्मनों की टुकड़ी बहुत बड़ी और जबर्दस्त थी। किसी की भी निगाह पड़ गयी होगी तो उसने डार्लिंग की जिन्दगी को मौत की बाजी में पलट दी होगी।

दिमाग की इस सोच ने शकील की रूह तक को कंपाकर रख दिया था। उसका रोम-रोम, रोमांच की लहर से थरथरा उठा।

दुश्चिंता में भरे शकील के हाथ आसमान की ओर उठे। होटों से आर्द्रता में डूबे स्वर फूटे।

"ऐ दुनिया के पालने वाले! मैंने अपनी जिन्दगी में अगर एक भी अच्छा काम किया है, तो उसके सदके में, मुझे बस एक बार मैडम डार्लिंग को, साथ खैरियत के दिखा दे...।"

इस दुआ के साथ उसकी आंखें छलछला आयीं।

हाथ नीचे हुए।

उसने बेचैनी भरे भाव में इधर-उधर नजरें दौड़ायीं।

चारों ओर अंधेरा था—वातावरण में कोहरे की चादर तनी हुई थी।

और उसी क्षण,

आकाश में लाइटिंग बम का धमाका फूटा।

शकील का दिल उत्साह से उछल पड़ा।

लाइटिंग बम का यह धमाका—उत्तरी सिरे से हुआ था...। इस धमाके ने शकील के सामने साबित कर दिया कि यह उसके पक्ष के लोगों का हमला है...। क्योंकि लाइटिंग के प्रकाश में दहशतगर्दों की टुकड़ी आयी थी।

वे एक पहाड़ी के पीछे सिर छुपाए घात लगाने की मुद्रा में जमा थे...। लाइटिंग बम के प्रकाश में आते ही उनके बीच भगदड़ मची।

और उनकी मची भगदड़ के बीच आ फटने वाले राकेट ने

कयामत बरपा कर दी।

"अगली दो टुकड़ी आगे बढ़ें...।" वातावरण में ललकारती गर्जना उभरी। यह गर्जना शहबाज ग्रुप के किसी सदस्य की थी। उस गर्जना को शकील ने बस कुछ फासले से सुना था। आगे कहा गया—"एक भी दहशतगर्द बचकर जाने न पाये...। एक-एक हरामजादे को चुन-चुनकर मौत के घाट उतार दो...।"

उत्साहित शकील ने अपने शरीर को आगे सरकाया ताकि वह दौड़कर अपने साथियों के बीच पहुंच जाए।

लेकिन,

जिस्म को आगे सरकाने की चेष्टा करते ही उसे ऊपर टिकी हुई शिला के हिलने का आभास मिला।

उसने सांस रोककर अपना शरीर स्थिर कर लिया।

जिन्दगी पाने के बाद मौत की शक्ल देखने का साहस उसका साथ छोड़ गया।

उसी क्षण,

एक और लाइटिंग बम का धमाका आकाश में गूंजा।

इस दूसरे धमाके की रोशनी ने शकील के रोम-रोम में खुशी की तरंग दौड़ा दी...।

उसने जो कुछ देखा—उसे अपनी दुआ का असर माना...। उसकी आंखें मारे खुशी के छलछला उठीं।

उसने अपनी मैडम डार्लिंग की दूर झलक पायी। इसी झलक के लिए तो उसने दुनिया को पालने वाले से दुआ मांगी थी।

उस समय वह उससे बहुत दूर थी...इतनी दूर की बस धुंधली साया के रूप में ही नजर आ सकी थी।

मगर, वह डार्लिंग ही थी इस बात का शकील को पूरा यकीन था। उसकी निगाहें उस पर टिक गयी थीं।

उसका रुख मुरसलीन के मुख्य ठिकाने की ओर था।

खण्डहरित किले के उस भूभाग की ओर वह हमलावर सिंहनी की सी रफ्तार धारण किये, दौड़ती चली जा रही थी।

शकील के दिल की धड़कनें बेतहाशा बढ़ गयीं। उसने आभास किया—वह शेरों की गुफा में बगैर सोचे-समझे घुसी जा रही है।

उसके मन की छटपटाहट बढ़ गयी...।

वह कुछ कर पाता इससे पहले ही लाइटिंग बम का प्रकाश वातावरण से लुप्त हुआ...और उसी के साथ डार्लिंग की कुशलता की छटपटाहट में भरे हुए शकील की आंखों के सामने अंधकार की घनी चादर तन उठी।

अब, उसके कानों में शहबाज की टुकड़ी और मुरसलीन के दहशतगर्दों के बीच छिड़ी खूनी जंग का बोलबाला पड़ने लगा था। हर ओर कोहराम मचा था।

फायर पर फायर हो रहे थे।

धमाकों पर धमाके गूंज रहे थे।

पहाड़ियों का सीना थर्रा रहा था।

और इन सबके साथ ही शकील ने देखा—आकाश पर शिकारी बाज-सा एक हेलीकॉप्टर मंडरा आया है।

उस हेलीकॉप्टर के बाबत शकील को जानकारी थी कि वह मुरसलीन हेडक्वार्टर में मौजूद दो हेलीकॉप्टरों में से ही एक है।

वह टू सीटर छोटा हेलीकॉप्टर था।

हेलीकॉप्टर से नीचे मशीनगन से शहबाज की टुकड़ी पर गोलियां बरसायी जाने लगी थीं।

हथगोले फेंके जाने लगे थे...।

उस हेलीकॉप्टर ने खूनी जंग में एक नया अध्याय जोड़ दिया था, शकील का जिस्म एक बार फिर दरार से बाहर आने के जोश में भरा...। उसने अपने शरीर को सर्प की तरह सिकोड़ा और एक-एक सूत करके खुद को बाहर लाने की चेष्टा में जुट गया।

और तभी,

उसका जी चाहा वह उल्लास में उछल पड़े क्योंकि शहबाज की जंगजू टुकड़ी की ओर से हेलीकॉप्टर को निशाना बना डाला गया था।

हेलीकॉप्टर के पिछले हिस्से में आग के शोले बुलन्द हुए।

शकील के देखते ही देखते...हेलीकॉप्टर लहराया...पंख कटे पंछी की तरह डोलता हुआ पैंतीस डिग्री कोण में उसने चक्कर काटा।

अचानक ही वह शहबाज की टुकड़ी की जद से निकल जाने की चेष्टा में मुड़ा...। लेकिन एकदम दिशा बदलकर वह झुकने लगा...।

आग की लपटों में घिरे हेलीकॉप्टर का रुख सीधे उस ओर था जहां शहबाज की टुकड़ी मोर्चा बांधे खड़ी थी...।

"जूमऽऽऽधड़ाम...।"

हेलीकॉप्टर चट्टान पर आकर टकराया।

उसकी फ्यूल टंकी में जबर्दस्त विस्फोट हुआ...। विस्फोट में लिपटी फ्यूल की आग जंगल की आग से भी भयानक रूप अख्तियार करती चारों ओर धूं-धू करके इन्सानी जिन्दगियों, वनस्पतियों और सूखी पहाड़ियों को अपनी चपेट में लेकर, निगल जाने को तैयार हो गयी।

वहां जैसे प्रलय आ गयी थी।

प्रलय का रूप धारण किये हुए लपटों को शकील ने अपनी ओर बढ़ते हुए देखा। उसने जबर्दस्त सिहरन में भरकर दरार में फंसे अपने जिस्म को जोरदार झटका दे दिया।

पहाड़ी पर निर्मित खण्डहरित किलेनुमा इमारत में उस समय अफरा-तफरी का माहौल था।

लाइटिंग बम के कुछ देर के प्रकाश में, दुश्मन के शिकारगाह की ओर सिंहनी की तरह लपकने की जिसकी झलक शकील ने देखी थी...वह सचमुच डार्लिंग ही थी।

थ्रिल क्वीन डार्लिंग!

किस्मत की धनी डार्लिंग!

शहबाज के चीथड़े होते जिस्म को उसने देखा था...और फिर उसके उड़ते हुए सिर को उसने हाथों में लपका था।

उसकी जिन्दगी का सबसे दर्दनाक मंजर था वह...शहबाज ने उसके लिए खुद को कुर्बान कर दिया था। उसकी कुर्बानी उसके रोम-रोम में नश्तर की तरह उतरती चली गयी थी।

लेकिन वक्त इतना न था कि अपने जांनिसार का सिर सीने

से लगा सकती। उसने जांनिसारों के किस्से बहुत सुने थे...मगर शहबाज ने जिस तरह उस पर जान न्यौछावर की थी वह बेमिसाल थी। उसने उसे बचाया था...उस पर बरसती गोलियों के सामने चट्टान बन गया था। गोलियों से बिंधे जिस्म के बावजूद उसके हाथों में गन थमा दी थी...और पलटकर उसकी ओर आते ग्रेनेड के लिए दीवार बन गया था।

अपने सीने पर ग्रेनेड को रोककर जिस्म के चीथड़े उड़वा दिये थे...लेकिन उस पर आंच न आने दी थी।

हाथों में अपने जांनिसार का सिर आने के बाद तो जैसे वहां कयामत आ गयी थी। उसके पैर चट्टान पर न टिक सके थे...। वह समझ न सकी थी कि उस एक ग्रेनेड के बाद अनेक ग्रेनेड आ-आकर प्रलयंकारी दृश्य पैदा करते गये थे या फिर उस एक का ही असर इतना कयामतखेज था कि चट्टानों का सीना हिल गया था। पहाड़ियां टूट-टूटकर रुई के गालों की तरह हवा में बिखरने लगी थीं।

विशालकाय चट्टानें टूट-टूटकर घाटी को पाट गयी थीं।

कुछ भी होश न था डार्लिंग को...। शोलों की चमक में घिरी, बिजली-सी लपलपाती हुई वह कहां जा पड़ी थी—कुछ भी मालूम न था।

प्रलय गुजर गया था...।

फायरिंग और धमाके थम गये थे...। शोलों की चमक लुप्त हुई थी तो थ्रिल क्वीन को आभास हुआ था—वह जिन्दा है।

सही-सलामत है।

वह एक तंग घाटी में पड़ी हुई थी...। जिन्दगी की सुई चल रही है...सांसों के चलते रहने के एहसास से उसने जाना था।

उसके दोनों हाथों में अब भी शहबाज का सिर सम्भला हुआ था...खून से लिथड़ा हुआ चेहरा...।

थ्रिल क्वीन ने शहबाज के चेहरे को पूरे जज्बात के साथ चूमा था। चूमकर बुदबुदायी थी—

"शहबाज...मेरे जवांमर्द शेर...तुम्हारी कुर्बानी जाया न जायेगी। मेरे बहादुर, मैं कभी इस बात को भुला न पाऊंगी कि तुमने मेरी खातिर अपनी जान कुर्बान की है।

मेरे शहबाज! मैं वायदा करती हूं कि जब तक दुश्मनों की मांद में घुसकर एक-एक के जिस्म के चीथड़े न उड़ा दूंगी, चैन से न बैठूंगी...। तुम आराम से सो जाओ मेरे शहबाज, तुम्हारा छोड़ा हुआ बाकी का अधूरा काम मैं पूरा कर दूंगी...।"

और फिर उसने पिण्डली में बंधा खंजर खींचा था। घाटी की मिट्टी खोदी और खुरची थी...गड्ढा कर, शहबाज के सिर को इस अन्दाज में उसमें उतार दिया था गोया उसकी लाश को सम्मान के साथ दफना रही हो।

ऊपर से मिट्टी ढंक दी थी।

श्रद्धा सुमन रूपी अश्रुकणों की भेंट चढ़, उठ खड़ी हुई थी।

उठ खड़े होने के साथ मालूम हुआ था उसी हालत में खड़े होकर आगे बढ़ने का रास्ता नहीं।

उसने कुछ दूर झुककर रास्ता पार किया...फिर पतली घाटी में, कोहनियों के बल रेंगकर आगे बढ़ी थी।

पहाड़ियां पार कर जंगली मैदानी मार्ग पर उसके कदम उठे थे। उस मार्ग पर लम्बी-लम्बी घासें थीं...झाड़ियां थीं...जिन्हें पार करती आगे बढ़ने लगी थी।

और फिर,

लाइटिंग बम के प्रकाश में उसे खण्डहरित इमारत नजर आ गयी थी...जो दहशतगर्दों का मुख्य अड्डा था—हेडक्वार्टर था।

रोशनी पाते ही वह बेतहाशा दौड़ पड़ी थी...कुछ इस अन्दाज में जैसे मंजिल सामने ही हो...। वह मंजिल, जिस पर दुश्मनों को पहुंचा देने के संकल्प के साथ उसने शहबाज के सिर को अपने से जुदा किया था।

उड़ चली थी...शिकारी सिंहनी बन दौड़ पड़ी थी।

यही वह समय था, जब शकील ने उसकी झलक देखी थी और उसकी मदद के लिये तड़प उठा था।

पर,

शकील ने एक और बात जो न देखी थी—वह कुछ देर में। रोशनी में खण्डहरित इमारत के करीब डार्लिंग ने देख ली थी।

उसने रोशनी में वह चेहरा देखा था—जो उसका जाना-पहचाना हुआ था। वह चेहरा था बारूद अली का।

खण्डहरित इमारत में मची अफरा-तफरी के बीच जन्नाटे के साथ एक जीप आकर रुकी थी। उस जीप से उतरकर अन्दर को दौड़ पड़ते उसने बारूद अली को देखा था। वह बौखलाया हुआ...बदहवाश था। उसका दायां हाथ बैण्डेजयुक्त था....बाएं हाथ में उसने गन संभाल रखी थी।

थ्रिल क्वीन, उस जाने-पहचाने—दुश्मन को देख और भी हिंसकता से भर उठी थी। उसकी रफ्तार बढ़ गयी थी।

वह देख रही थी—इमारत के आस-पास आ-आकर राकेट फट रहे हैं। हैण्डग्रेनेड के धमाके गूंज रहे हैं—और मुरसलीन के दहशतगर्दों के होश बिगड़ रहे हैं।

उनके बीच बुरी तरह अफरा-तफरी मची हुई है।

दुश्मनों की भगदड़ और बदहवाशी का लाभ उठाती थ्रिल क्वीन...घनी झाड़ियों के बीच से गुजरती, आगे बढ़ती चली जा रही थी।

फिर विस्फोटों से उड़ते शोलों की चमक दबने लगी तो चारों ओर अंधेरे की चादर, पहले की तरह तनी नजर आने लगी।

वह प्रतिशोध में भरी नागिन की तरह, बलखाती हुई, दबे कदम खण्डहरित इमारत के करीब जा पहुंची।

अब वह दुश्मनों के बहुत करीब थी—वहां पहुंचने के बाद उसने दुबककर हमला करने वाली सिंहनी की-सी मुद्रा अपनायी। इमारत के टूटे हुए चबूतरे के नीचे स्थित एक खम्भे की ओट में जाकर ठहरी।

अपनी अव्यवस्थित सांसों को व्यवस्थित किया।

वातावरण में कोहरे की चादर अब भी घनी थी। उसने वहां ठहरकर पूरी सतर्कता के साथ अंधेरे में आहट लेने की चेष्टा की।

अब न धमाके हो रहे थे, ना गोलियां चल रही थीं...ना ही राकेटों के विस्फोट गूंज रहे थे...।

चारों ओर की आहट लेने के बाद उसने कुछ फासले पर खड़ी उस जीप पर निगाह जमायी—जिससे उसने दूर से, बारूद अली को वहां आया हुआ देखा था।

जीप के अन्दर फैली मटमैली रोशनी में उसने मिलिटेण्ट वेशभूषा में, चालक सीट पर बैठे एक अधेड़-से व्यक्ति को देखा।

वह स्टेयरिंग पर दोनों हाथ टेके हुए करीब-करीब ऊंघ रहा था।

थ्रिल क्वीन झुकी।

उसने लम्बी-लम्बी घासों के बीच कोहनियों के बल जीप की ओर सरकना आरम्भ किया।

उसने दाहिने हाथ में रिवॉल्वर सम्भाल ली। उसके कांधे पर शहबाज की मौत से पूर्व दी हुई गन थी...उसे अपने साथ सरका रही थी।

हर पल, आहट के प्रति उसके कान सजग थे।

जीप के करीब पहुंचने के रास्ते में कोई अवरोध उसकी राह में न आया।

चालक सीट पर मौजूद अधेड़ अब भी ऊंघ रहा था।

थ्रिल क्वीन एक झटके से उठी।

हवा के झोंके-सी लहरायी। पलक झपकते जीप तक पहुंची। रिवॉल्वर की नाल चालक की कनपटी से लगा दी। दूसरा हाथ उसकी ओर बढ़ाकर रिवॉल्वर कनपटी से सटा दी।

चालक के होश एकदम उड़ गये।

उसने उसकी शक्ल देख ली थी। अवश्य ही उसे पहचान लिया था...। अपने आपमें उसके लिए यह जबर्दस्त रोमांच की झुरझुरी से भर देने वाली बात थी कि जिसके पीछे पूरे संगठन की शक्ति पड़ी हुई थी, वह वहां तक आ पहुंची थी।

सिर्फ यही नहीं—होश उड़ाने वाली बात यह थी कि उसके बारे में हर्ष भरी सूचना मिली थी कि उसके जिस्म के चीथड़े उड़ा दिये गये हैं...। जबकि वह जीवित थी, पूर्ण-रूपेण सही-सलामत थी और उसकी कनपटी से रिवॉल्वर लगाए हुए थी।

थ्रिल क्वीन ने उस काम को पूरा किया उसे अपने आपको दिखाकर अपने प्रति उसके चेहरे के भाव जान ले।

उसने देखा और जान लिया।

दूसरा हाथ बढ़ा—लाइट स्विच पर हाथ रखा।

'खट्' की हल्की आहट उभरी। जीप के अन्दर फैली मटमैली रोशनी लुप्त हो गयी।

"नीचे उतरो...हाथों को उठाए हुए...।" डार्लिंग ने कहा।

उसने आदेश का पालन किया।

उसके पैर नीचें आये।

थ्रिल क्वीन ने रिवॉल्वर उसकी कनपटी से लगाए रखा।

दूसरा हाथ अपनी कमर की बेल्ट पर लहराकर बेल्ट की क्लिप पर दबाव डाला। पेटी अलग की—उसका एक सिरा पकड़ दूसरा सिरा चालक की कमर पर लहराया। दूसरे सिरे से बेल्ट क्लिप जोड़ देती हुई गुर्रायी—

"अब तुम हाथों को नीचे करके अपनी कमर में बंधी, बेल्ट का पेट के वाला सिरा छूकर इस बात को देख सकते हो कि बेल्ट के उस हिस्से में रिमोट बम फिट है...और रिमोट मेरे हाथ में है। मैं नहीं चाहती कि रिमोट पर रखी मेरी अंगुली दबे और तुम्हारा जिस्म चीथड़ों में उड़ जाए...।"

"न...न...नहीं।" चालक के कंठ से फंसी-फंसी, दहशत में डूबी खुशामदी आवाज उभरी।

"ऑल राइट।" डार्लिंग ने कहा—"मेरा उद्देश्य तुम्हारी हत्या करना होता तो कनपटी से रिवॉल्वर लगाने के साथ ही ट्रेगर दब जाता...। मेरे साथ बढ़ते रहो...उस टूटे खम्भे तक चलो...।"

उसने अपनी कमर में बंधीं बेल्ट का प्वाइण्ट टटोलने की हिम्मत न की। अवश्य ही इस बात के मनोवैज्ञानिक दबाव में था कि उस तक इतना दुःसाहस करके पहुंचने वाली शेरनी का कथन गलत नहीं हो सकता।

उसका पहला ध्यान अपनी जिन्दगी बचाव की ओर था...गुद्दी से लगी रिवॉल्वर ही मौत की तरह सिर पर सवार थी—ऐसे में एक मौत कमर से लिपटी हुई है या नहीं, इस बात की ओर ध्यान देने की उसकी हिम्मत कहां थी।

उसके हाथ उठे रहे।

कदम बढ़ते रहे, उस प्वाइण्ट की ओर जिसका लक्ष्य थ्रिल क्वीन ने उसे दिया था।

कुछ पलों के बाद, डार्लिंग उसे लेकर खम्भे के करीब पहुंची। खम्भे के करीब की जगह थ्रिल क्वीन को सुरक्षित इस अर्थ से नजर आयी थी क्योंकि वह टूटे चबूतरे के नीचे स्थित थी—आस-पास झाड़-झंकाड़ फैला हुआ था। खम्भा चौकोर था। मोटाई तीन फुट वर्गाकार में थी...। उसके पीछे, तथा झाड़-झंकाड़ों की

ओट की वजह से वहां आसानी से किसी की निगाह न जा सकती थी।

"अपना नाम बताओ...।" डार्लिंग ने उसे ठहरने का आदेश देकर कहा।

"नवेद असलम...।" उसने मशीनी अन्दाज में बताया—"मेरी नागरिकता सूडानी है और मैं भाड़े का सैनिक हूं...। मेरी भूमिका सिर्फ चालक के रूप में है। मैं उन मिलिटेण्टों में से नहीं जो अपनी मौत की चाहत में लगे रहे हैं...।"

एक प्रश्न के उत्तर में उसने अपना पूरा परिचय और अपने मामले में सफाई दे डाली थी। डार्लिंग मुस्करायी। अर्थपूर्ण मुस्कान...।

वह बोली—

"तुम उन मिलिटेण्टों में से नहीं हो जो मेरी मौत की चाहत में लगे रहे हैं, इसका सबूत तुम्हारे कथन मात्र से नहीं बल्कि सहयोगात्मक रवैया से सामने आयेगा...।"

"मैं हर सहयोग के लिए तैयार हूं...।" उसके जिस्म से पसीना फूट पड़ रहा था—पैण्ट तक गीली हो गयी थी।

"बारूद अली के बाबत जानकारी दो...।" डार्लिंग ने सवाल दागा।

"वह पूर्व-पश्चिमी छोर का किस्सा निपटाकर लौटा है...। शहबाज खां की सारी टुकड़ी तबाह करने के बाद उसे यहां आने की खबर इधर से भेजी गयी थी।"

"बारूद अली के अलावा, मिलिटेण्टों का और बड़ा कौन अधिकारी यहां इमारत में मौजूद है?"

"कमाण्डर जियाउल...तथा उससे जूनियर रैंक के आठ-दस लोग...।"

"और...?" डार्लिंग ने सवाल दागा।

चालक ज़ावेद असलम की प्रश्न भरी निगाह डार्लिंग के चेहरे पर उठी। वह उसका सवाल न जान पाया था। चुप्पी उसकी मौत का कारण न बन जाए, इस खौफ से सिहरकर उसने जल्दी से कहा—"और...वे लोग जीत का जश्न मना रहे हैं...अपनी मौत की खुशियां...।"

थ्रिल क्वीन ने दांत भींचे...। उसकी मुट्ठियां कसीं...आंखों

में अंगारों की गरमी और रगों में तेजाबी उबाल खौला। मन ही मन सोचा—'हरामजादे...उसकी मौत का जश्न मना रहे हैं...। इस बात की जानकारी उनके लिये कितनी बड़ी कयामत भरी साबित होगी कि वह उनकी मौत की देवी बनी उनके कितने करीब आ गयी है।'

"और से मेरा आशय था...।" डार्लिंग ने शब्दों पर जोर देकर कहा, "कि क्या यहां एक खूबसूरत सोलह वर्षीय कश्मीरी लड़की भी उनकी कैद में है...जिसे वे भारत की धरती से अपहृत करके ले आये हैं...?"

"हां, एक खूबसूरत लड़की भी उनके बीच है...।"

"बस...।" डार्लिंग हाथ उठाकर बोली—"तुम्हारा अपेक्षित सहयोग मिल गया। सचमुच तुम उनमें से नहीं हो जो मेरी जान के दुश्मन बने थे...। तुमने इस बात को साबित कर दिया...।"

नवेद असलम सूडानी के चेहरे पर इत्मीनान के भाव आये। मौत का खौफ उसके सिर से हटा।

"बारूद अली, कमाण्डर जियाउल...। अपहृत करके लायी गयी लड़की रेशमा तक मैं किस तरह आसानी से पहुंच सकती हूं, इस बाबत पुख्ता जानकारी दो...। उनकी पोजीशन बताओ...।"

"जब मैं बारूद अली को लेकर यहां से कुछ देर पहले रवाना हुआ था उस समय सब अफरा-तफरी में भरे हुए थे...। लौटकर यहां आये हुए बारूद अली ने मुझे बताया कि अब जीत और इण्डियन स्पाई की मौत का जश्न मनाया जाएगा। वे इमारत के अन्दर ही जमा होंगे...सब एक जगह भी हो सकते हैं, दो-चार जगह भी...मैं इस बारे में कुछ नहीं बता सकता। मैंने बताया न कि मैं उनके बीच का आदमी नहीं हूं...।"

थ्रिल क्वीन ने पाया—इससे ज्यादा वह उसके काम का आदमी नहीं रहा।

यह बात उसके लिए सबसे काम की और संतोष भरी थी कि वह जिसके लिए वहां आयी थी वह उसी इमारत में थी...उससे बस चन्द कदम के फासले पर।

वह रेशमा तक जल्द से जल्द पहुंचने के लिए व्याकुल थी...। यह सोच उसकी रगों में बिजली-सी भर रही थी कि

जियाउल और बारूद अली जैसे लोग—रेशमा को अपने जश्न का एक हिस्सा न बना रहे हों...।

रगों में बिजली रूपी प्रतिशोधी आक्रोश में भरी, थ्रिल क्वीन ने अपना रिवॉल्वर वाला हाथ घुमाया।

रिवाल्वर का हत्था जावेद असलम की कनपटी से टकराया। फिर दूसरा हाथ बढ़ा उसका मुंह भींच लिया।

मुंह से उबलने वाली चोट की चीख पर डार्लिंग ने ढक्कन रूपी हथेली रख दी थी। उसकी चीख कंठ में घुटकर रह गयी।

रिवॉल्वर का हत्था कनपटी की एक खास नस पर टकराया था। थ्रिल क्वीन के लिए वह जाना-बूझा खास प्वाइण्ट था। दुश्मन को कुछ घण्टों के लिए अचेतावस्था भरी नींद सुलाने के लिए वह उस प्वाइण्ट पर खड़ी अंगुली की चोट पहुंचाकर भी अचेत कर दिया करती थी...रिवॉल्वर के हत्थे की चोट तो खासी महत्वपूर्ण चोट थी।

नवेद असलम का जिस्म आगे को लड़खड़ाया। उसका शरीर पूरी तरह ढीला पड़ा।

वह बेहोशी में डूब जाने के बाद गिरकर फ्लैट हो जाना चाहता था...लेकिन थ्रिल क्वीन ने उसके जिस्म को सम्भाला। उसे खींचकर पीछे ले गयी।

झाड़ियों के बीच लम्बा-लम्बा लिटा दिया।

उसकी नब्ज की हरकत देखी। इस बात का इत्मीनान किया कि वह कई घण्टों के लिए लम्बलेट हो चुका है।

थ्रिल क्वीन आगे बढ़ी। दबे पांव, शिकारी बिल्ली की तरह उछाल मारकर वह चबूतरे पर पहुंची।

उसके हाथ में साइलेंसरयुक्त रिवॉल्वर थी। वह चारों ओर की आहट लेते हुए आगे बढ़ने लगी।

दुश्मन की आसपास मौजूदगी हो सकती है, वह इस बात से बेखबर न थी। उसने इस बात को मन में तय कर लिया था कि असामान्य परिस्थिति सामने आने पर भी गन का इस्तेमाल करेगी...अन्यथा एक-एक, दो-दो यदि सामने आते हैं तो उन्हें अच्छा दाना समझते हुए बगैर शोर-शराबे के चुनती चली जाएगी।

उसका मुख्य उद्देश्य रेशमा तक पहुंचना और बचे हुए

दहशतगर्दों को कब्र में उतारना था।

बरामदे में आगे बढ़ते हुए—कुछ कदमों के बाद ही उसे एक विशालकाय कक्ष से गैस पैट्रोमेक्स की रोशनी उभर बाहर आती नजर आयी।

उस कक्ष में लोग हो सकते हैं...बारूद अली, जियाउल, रेशमा हो सकते हैं।

खुशियां मनाते अन्य जूनियर रैंक वाले मिलिटेण्ट हो सकते हैं। इस बात से थ्रिल क्वीन अधिक उत्साह में भरी।

कक्ष की रोशनी, एक खिड़की के झरोखे से फूटकर बाहर आ रही थी। डार्लिंग ने खिड़की की ओर रुख किया।

उस लम्बे-चौड़े कक्ष में रेडियो वायरलैस और ट्रांसमीटर सेट एक सिरे से दूसरे सिरे तक अब भी नजर आ रहे थे। मगर, अब उन पर संदेश आने, उनके द्वारा दूसरी ओर सम्बन्ध बनाने का शोर न था।

वे शान्त पड़े हुए थे।

एक मेज के आमने-सामने तनावरहित जियाउल और बारूद अली बैठे थे। उनके सामने खुली हुई शैम्पियन की बोतल थी। जियाउल अपने सामने रखे मग में आधी बोतल ढाल चुका था, शेष आधी बोतल वह बारूद अली के मग में ढाल रहा था।

बारूद अली का चेहरा भी प्रसन्नता से खिला हुआ था।

बोतल खाली हो जाने के बाद दोनों ने अपने-अपने मग उठाए।

जाम टकराए।

"चीयर्स फॉर विक्ट्री...।" जियाउल ने आंखों में चमक समेटकर कहा। वहां रोशन गैस पैट्रोमेक्स के प्रकाश में उसकी आंखों की चमक साफ देखी जा सकती थी।

"चियर्स फॉर डेथ ऑफ इण्डियन स्पाई...।" बारूद अली ने हर्षित स्वर में कहा—"आज हमारे खुलकर जश्न मनाने का दिन है...क्योंकि आज उस आफत की परकाला का वजूद इस दुनिया से मिट गया है...जो हम मुजाहदीनों के संगठनों और आई० एस० आई० पर कयामत बनकर टूटा करती थी...। जिसने मेरी बांह में जख्म दिया था—और जिसके लिए मैंने कसम

खाई थी कि उसको मौत देने के बाद ही मैं अपने होंठों से जाम लगाऊंगा...।"

शब्द पूरे करते-करते उसने मग होंठों से लगाया और एक लम्बा घूंट भरा।

"कयामत तो वह इस बार भी बनी...।" जियाउल ने अपना मग होंठों से लगा लम्बा घूंट भरकर गम्भीर आवाज में कहा—"उस एक खूबसूरत कुतिया ने शहबाज खां पर डोरे डालकर अपने आगे बढ़ने का ऐसा नायाब रास्ता अपनाया कि एक बारगी हमारे छक्के छुड़ा दिये...। वह इतनी दिलेरी दिखाती हुई यहां तक घुस आयेगी इसकी तो मुझे कल्पना भी न थी। उस कयामत पर, कयामत बरपा करने के लिए हमें सैकड़ों साथियों की कुर्बानियां देनी पड़ीं...।"

"बेशक...।" बारूद अली बोला—"साथियों की कुर्बानियों का अफसोस मुझे भी रहेगा...। मगर इस बात की खुशी साथियों की मौत से हजार गुना बड़ी है कि वह मारी गयी...।"

"यह तो है...।" जियाउल ने स्वीकारा—"यही वजह है कि चेयरमैन की ओर से हमें और बचे हुए सभी मुजाहदीनों को इस बात की छूट मिली है कि हम जी भरकर जीत की खुशी का जश्न मनाएं...।"

उसने अपने मग का दूसरा तगड़ा घूंट भरा।

बारूद अली कुछ कहने के लिए अर्थपूर्ण भाव में मुंह खोलने जा रहा था कि तभी जियाउल के मोबाइल पर बीप उभरी।

बारूद अली का ध्यान बंट गया।

जियाउल ने जल्दी से मोबाइल हाथ में लिया। स्क्रीन पर दृष्टि डाली। कालिंग लाइन दी।

दूसरी ओर से मिलने वाली खबर काफी अहम थी।

उस अहम खबर पर उसके चेहरे पर गम्भीरता के भाव उभरे।

बारूद अली, आने वाली उस खबर को जानने को उत्सुक हुआ। जियाउल ने हाथ उठाकर उसे प्रतीक्षा करने का इशारा किया।

फिर सम्बन्ध-विच्छेद करते हुए उसने बारूद अली से कहा—"तुम्हारी जीप का ड्राइवर अचानक गायब हो गया है...।

चेयरमैन का हुक्म है कि तुम तुरन्त शार्टकट रास्ते से मामला देखो...जल्दी...।"

इस बात को सुनते ही बारूद अली एक पल के लिए भी अपनी जगह ठहर न सका।

वह अन्दरूनी द्वार की ओर दौड़ा। वही शार्टकट रास्ता था—जो सेकण्डों में उसे अपनी जीप तक पहुंचा सकता था।

दूसरी ओर,

चारों ओर सजगता और सतर्कता बरतती थ्रिल क्वीन दबे कदम चलती हुई उस कक्ष के करीब पहुंच गयी। उसने वहां अन्दर हल्की रोशनी देखी। रोशनी गैस पैट्रोमेक्स की थी और काफी मद्धिम थी। खिड़की की झिर्रियों से फूटकर बाहर आ रही थी। डार्लिंग ने सीधे कक्ष के सामने पहुंच जाने में अक्लमंदी न समझी। वह दीवार से लगकर बढ़ती हुई, दरवाजे से पहले पड़ने वाली कक्ष की खिड़की के करीब जा ठिठकी। उसने खिड़की से अन्दर झांकने की चेष्टा की ताकि अन्दर की स्थिति को सही तरह से निगाह में ले सके...।

खिड़की के पट लकड़ियों के थे...।

डार्लिंग ने झिर्री पर आंखें लगायीं। इस काम के लिए उसे थोड़ा आगे झुकना पड़ा। हाथों को खिड़की के सीखचों पर रखना पड़ा।

और,

उसी क्षण उससे चूक हो गयी।

उसकी गुद्दी पर ठण्डी लोहे की नाल आ लगी—साथ ही सर्प की-सी फुंफकारती आवाज कानों से टकरायी—

"ड्राप द रिवॉल्वर...वरना मेरे रिवॉल्वर की गोली, तुम्हारा भेजा फाड़कर बाहर निकल जायेगी...। मैं तुम्हारी सूरत देखना चाहता हूं।"

डार्लिंग के रोम-रोम में ठण्डी लहर दौड़ गयी...। वह किसी भी तरह इस स्थिति में न थी कि वह फुर्ती से घूम सकती। उसका अधिकांश जिस्म खिड़की के चौखट के बीच फंसा हुआ था।

मौत सिर्फ ट्रेगर पर अंगुली हिलने के फासले पर थी।

खिड़की के सीखचे पर जमे रिवॉल्वरयुक्त हाथ से रिवॉल्वर ढीली पड़ी—'खट' से नीचे चौखट पर गिरी।

गुद्दी से रिवॉल्वर लगाने वाले के बारे में थ्रिल क्वीन इस बात का भी अन्दाज लगा चुकी थी कि वह पीछे से एक प्रकार से उस पर पूरी तरह से छा चुका है...हिलने मात्र से, उसकी गुद्दी से लगाए रिवॉल्वर के ट्रेगर पर जमी अंगुली हिला सकता है।

और फिर, उसकी रिवॉल्वर गिरवाने के साथ उसने उसके कंधे से टंगी गन पर भी हाथ डाल दिया।

"घूमो...।" उसका अगला फुंफकारता हुआ स्वर उभरा।

डार्लिंग का चौखट में फंसा जिस्म घूमने के लिये ढीला पड़ा।

बिना आदेश के ही उसने हाथ उठा दिये थे।

रिवॉल्वरधारी ने उसकी गन पर पहले से ही हाथ डाल रखा था...।

उसके घूमते ही गन के फीते को एक झटके से उसकी बांह से खींचा। गन अपने कब्जे में ले ली।

डार्लिंग ने घूमते हुए देखा—उससे कब्जाई हुई गन उसने अपने कंधे पर टांग ली है।

जब तक वह पूरी तरह घूमती, रिवॉल्वरधारी उससे चार कदम पीछे हट चुका था।

वह लम्बा-तड़ंगा निहायत खूंखार शख्स था। वह डार्लिंग के लिए नितान्त अपरिचित था। उसके कांधे और माथे से खून बह रहा था। वह जख्मी होकर वहां आया था...बहते हुए खून की वजह से वह अधिक खूंखार लग रहा था।

डार्लिंग के घूमते ही उसने भयावह फुंफकारती आवाज में कहा—

"तुम...?" उसकी आंखें हैरत से किसी फन काढ़े सर्प की तरह सिकुड़कर गोल हुईं—"मैं तुम्हें पहचान चुका हूं...। तुम यहां तक आ पहुंची हो...यहां ये...सब आफत तुम्हारी ही लायी हुई है...। और इससे भी हैरतअंगेज बात यह है कि तुम जिन्दा हो...?"

उसके रिवॉल्वर पर साइलेंसर चढ़ा हुआ था। रिवॉल्वर का

रुख डार्लिंग अपने माथे के बीचों-बीच पा रही थी।

"मरने के लिए तैयार हो जाओ...क्योंकि तुम वह बला हो जो जब तक जिन्दा रहेगी हम पर आफत आती रहेगी...।"

उसकी अंगुली, तने हुए रिवॉल्वर के ट्रेगर पर सख्त होती चली जा रही थी। डार्लिंग ने एक गहरी सांस लेकर आंखें बन्द कर लीं।

उसने मान लिया था कि उस समय उसका मौत से फरार होना मुमकिन नहीं।

"पिट्...पिट्...पिट्...।"

गोलियां चलीं...शोले चमकते गये...। बन्द आंखों ने फायरों की चमक का भरपूर एहसास किया।

थ्रिल क्वीन ने महसूस किया...चलने वाली हर गोली उसके जिस्म पर पड़ी है।

मगर नहीं,

उसे कुछ नहीं हुआ था।

उसने आंखें खोलीं तो मौत देने की ठाने हुए शैतान के जिस्म को उसने फर्श पर तड़पता हुआ देखा। उसका जिस्म खून से नहाया हुआ था...और उसका रिवॉल्वर उसके गिरने के बाद फर्श पर छिटक गया था।

थ्रिल क्वीन ने हाथ बढ़ा, खिड़की की चौखट पर गिराया हुआ अपना रिवॉल्वर उठा लिया।

उसके माथे पर फूटा हुआ, मौत की झुरझुरी से उबला हुआ पसीना एक झटके से सूख गया।

वह न मरी थी, बल्कि उसे मौत देने की ठानने वाला शैतान मर गया था...।

मौत को मौत देने वाला कोई और नहीं शकील था...।

डार्लिंग विस्मय से आंखें झपका रही थी।

शकील ठीक उसके सामने खड़ा अपना साइलेन्सरयुक्त रिवॉल्वर अंगुलियों में घुमा रहा था...। उसके रिवॉल्वर से ही शोले चमके थे...। शोले चमककर उसे मौत देने की तैयारी किये बैठे व्यक्ति के जिस्म में समाए थे।

डार्लिंग अपनी जिन्दगी के सबसे सुखद विस्मय का सामना

कर रही थी।

उसकी जिन्दगी ऐसे व्यक्ति ने आकर बचा ली थी, जिसकी ओर से वह इस बात की तनिक भी आशा न करती थी।

एक सत्रह वर्षीय युवक...जिसे कुछ घण्टे पहले उसने जिन्दगी की आजादी दी थी...वह वहां उसकी जिन्दगी के फरिश्ते की तरह अचानक प्रकट हुआ था और उसे मौत के मुंह में जाते-जाते जिन्दगी की राह पर खींच लाया था।

डार्लिंग विस्मय से आंखें फाड़े शकील को देख रही थी।

"मैडम...मैंने कहा था न कि मैं यहां बेहतर तरीके से खप सकता हूं...देखिए मैं आकर खप गया हूं...।" शकील ने आगे बढ़कर धीमी आवाज में कहा।

डार्लिंग ने उसका रिवॉल्वर युक्त हाथ थामा।

अपने चेहरे तक उसका हाथ लाकर चूमा। उसके करीब ही कांधे से कांधा लगाकर बुदबुदायी—

"तुमने शकील, वाकई ऐसा काम कर दिखाया जो मेरी नजरों में चमत्कारिक है...।"

"आपने मुझे जिन्दगी ही नहीं जिन्दगी की नई रोशनी दी थी मैडम...। जिन्दगी जीने का जज्बा मेरे दिल में जगाया था—मैंने देखा कि आप के सिर पर मौत मंडरा रही है तो मैंने कदम आगे बढ़ाया और मंडराती मौत को मौत दे दी...।"

"तुम यह कैसे कर सके शकील...?" डार्लिंग का स्वर अब भी विस्मय में डूबा हुआ था।

"मैं दबे कदम आगे बढ़ा और बगैर आहट व धमकी के उसकी कनपटी के करीब रिवॉल्वर ले जाकर ट्रेगर दबा दिया...।" वह कहता रहा—"मेरे सामने इसके अलावा दूसरी बेहतर सूरत न थी...। उसे हिलने का भी अवसर दिये बगैर खत्म कर देना ही एकमात्र रास्ता था मेरे सामने...।"

"और इसमें तुम कामयाब हुए...।"

"दो साल मिलिटेण्टों के बीच रहते, जिन्दगी और मौत की बाजी लगाते रहने के बाद, अब किसी की जान ले लेना मेरे लिए चींटी मसल देने से भी आसान बात हो गयी है...।"

"इस समय तुमने अच्छा काम किया है...मैं इस बात की

तुम्हें शाबाशी देती हूं...।" डार्लिंग ने उसका कांधा थपका। फिर पूछा—"तुम मुझ तक पहुंचे कैसे?"

"टूटती हुई चट्टानों से फिसलता, अपने साथी शकील की लाश सम्भाले मैं कब और कैसे, किस घड़ी, दो चट्टानों के बीच घाटी की एक दरार में जा पड़ा था मैडम, मुझे कुछ पता नहीं। इसे मैं कुदरत का चमत्कार मानता हूं कि उसने मुझे जिन्दगी बख्श दी थी...। और यह जिन्दगी शायद आपको बचाने के लिए मुझे मिली थी।" शकील बताने लगा—"मैं जब कुछ सोचने-समझने लायक हुआ तो सब ओर शान्ति थी। मगर एक बार फिर शान्ति भंग हुई...तो मैं जोश में भरा हुआ दरार से बाहर आने को छटपटा उठा...। उसी क्षण मैंने लाइटिंग बम की रोशनी में आपके इधर आने की झलक देखी। मैं आपके पीछे आने को बेताब हुआ...। लेकिन एक बार फिर जंग शुरू हो गयी थी। हमारी नदी की ओर से आयी टुकड़ी दुश्मन पर टूट पड़ी थी। लेकिन, दुश्मन की ताकत ज्यादा थी...। हमने सबको खो दिया। शहबाज खां को, अपने साथी वकील को...। इसके बाद मेरे सामने एक ही चारा था...आपकी ओर आऊं...। मैंने इधर का रुख किया और यहां आ गया।

अपने साथी वकील की बात कहते हुए शकील का स्वर भर्रा उठा था। उसकी आंखें हल्के से डबडबा आयी थीं।

"हिम्मत रखो शकील...।" डार्लिंग ने उसका कंधा हल्के से थपककर कहा—"जंग के मैदान में योद्धा जब उतरते हैं तो दो ही बातें होती हैं—मौत या जिन्दगी...दो ही उद्देश्य होते हैं—जीत या हार...।" वह कहती रही—"साथियों की कुर्बानी को हम जीत में बदल दें तो उसकी दी हुई कुर्बानी का मकसद हल हो जाता है...।"

"मैं इसके लिए तैयार हूं...।"

"मैंने अन्दर की बस एक झलक पायी है। उस झलक के अनुसार मुरसलीन का कमाण्डर जियाउल अन्दर है...।" डार्लिंग ने कक्ष के द्वार की ओर इशारा करके कहा—"मेरी समझ में नहीं आता कि अपने आदमियों को जंग में झोंककर वह खुद अकेला अन्दर क्या कर रहा है?"

"उसका वजूद जंग के मोर्चे पर ज्यादा कारआमद नहीं...क्योंकि

एक मौके पर दाएं पैर में गोली खाने से उसका पैर कमजोर है। वह भाग-दौड़ नहीं कर सकता...।" शकील ने बताया।

"यानि वह लंगड़ा है...।"

"पूरी तरह लंगड़ा नहीं, बल्कि पैर कमज़ोर है। वह भागने-दौड़ने के काबिल नहीं...। दूसरी बात वह इस कक्ष में रहकर अपने आदमियों को कमाण्ड करता रहा होगा...। उन्हें कैसे और किस पोजीशन में लड़ना है, इस बात का निर्देश देता रहा होगा।"

"अवश्य यही बात होगी...क्योंकि तुमने बताया था कि इनके पास रेडियो वारयलेस और ट्रांसमीटर भी है...।"

"जी हां...।"

"और दो हेलीकॉप्टर तथा जीपों की भी बात कही थी...।"

"जी हां...।" शकील ने जल्दी से उसका आशय समझकर कहा—"एक के अलावा अन्य जीपें यहां नजर नहीं आ रही हैं इसलिए माना जा सकता है कि मिलिटेण्ट जीपों के साथ मोर्चेबन्दी के लिए गये थे...। जो अभी बैठे नहीं हैं। उन्होंने हेलीकॉप्टर का भी इस्तेमाल किया है जो तबाह हो चुका है...।"

"लेकिन दूसरा हेलीकॉप्टर...?" डार्लिंग ने पूछा।

"उसे बचा होना चाहिए...। लंगड़ा जियाउल उसे अपने इस्तेमाल में रखता है।"

"ओह!" डार्लिंग ने गहरी सांस ली। बुदबुदायी—"उसे भागने का मौका अब नहीं मिलने जा रहा है...।"

वह पलटी।

शकील उसके कंधे से कंधा मिलाए हुए आगे बढ़ा।

दोनों ने द्वार पर पहुंच आहट ली।

द्वार नाम की वहां कोई चीज न थी—बल्कि सिर्फ दर था...।

अन्दर सन्नाटा था।

एक क्षण के लिए डार्लिंग ने सोचा कहीं वह वहां से निकल चुका हो।

एक यह भी संभावना थी कि वहां दूसरी ओर टूटी हुई दीवार का कोई दूसरा दर हो और वह उधर से निकल गया हो।

अभी इस बाबत वह कोई निर्णय न ले पायी थी कि शकील ने एकदम से आगे को कदम बढ़ा दिया...। वह उत्साही हो रहा था।

थ्रिल क्वीन उस पर हाथ रखने के लिए तेजी से झपटी।

लेकिन तभी, 'धांय।'

अन्दर से गोली चली...।

जबर्दस्त अचूक निशाना था।

गोली शकील के माथे में तीसरी आंख बना गयी थी...।

थ्रिल क्वीन के सामने पीछे हटकर बचाव का कोई मौका न था...उसने एकदम से खुद को आगे को झोंक दिया...। गोली खाए मौत के मुंह में, जाते शकील के दोनों कांधों पर हाथ टेक उसने हवा में उछाल मारी।

वीरान खण्डहर में दीवार से चिपकी चमगादड़ के समान झपट्टा मारकर उड़ने जैसा उसका अन्दाज था।

दो गोलियां और चलीं।

लेकिन थ्रिल क्वीन के झपट्टा मार उछाल की नीति के कारण फायर बेकार गये...।

वह उड़ती हुई-सी जाकर फायर करने वाले से जा टकरायी।

जबर्दस्त टकराव।

वह कोई और नहीं मुरसलीन का कमाण्डर जियाउल था...लंगड़ा जियाउल।

जीवट किस्म का इन्सान।

उसके बाएं हाथ में छड़ी और दाएं हाथ में रिवॉल्वर की झलक झपट्टामार उछाल के साथ डार्लिंग ने देख ली थी।

टकराव के साथ ही वह लड़खड़ाया।

सचमुच उसका एक पैर कमजोर था।

उसकी लंगड़ाहट का लाभ उठाते हुए थ्रिल क्वीन ने उसके रिवॉल्वर वाले हाथ पर किक मारी।

जियाउल के हाथ से रिवॉल्वर उछल गयी।

उस तक पहुंचने के साथ डार्लिंग इरादा रखती थी कि उसकी कनपटी से रिवॉल्वर लगाकर वह रेशमा के बारे में बारूद अली तथा उसके बचे हुए साथियों के बारे में पूछेगी।

लेकिन,

यह उसकी भावुकता भरी सोच साबित हुई, क्योंकि जियाउल उतना कमजोर साबित न हुआ, जितना उसने उसे समझा था।

रिवॉल्वर हाथ से निकलते ही उसका छड़ी वाला हाथ किसी तलवार की तरह, बेहद फुर्ती के साथ घूमा। डार्लिंग के रिवॉल्वर से टकराया। और डार्लिंग के हाथ से रिवॉल्वर निकल गयी...।

"सांय...ऽऽऽसांय,...ऽऽऽ।" जियाउल ने अपना छड़ी वाला हाथ दो बार और लहराया...।

लहराई हुई छड़ी, हवा को काट गयी...। वह खाली गया। थ्रिल क्वीन दोनों बार उछाल लेकर पीछे हटती चली गयी थी।

उससे फासला बन जाने के बाद थ्रिल क्वीन ने इस बात को देखा कि छड़ी के अंतिम सिरे पर ब्लेड जैसी चमक और धार वाला छः इंच का लचकीला टुकड़ा बाहर निकला हुआ था। अवश्य ही उसका सम्बन्ध छड़ी के साथ लगे बटन से था...। बटन दबते ही छड़ी धारदार हथियार बन गयी थी।

डार्लिंग रोमांच की सनसनी में भर उठी...यह सोच अपने आपमें खासी रोमांचक थी कि छड़ी ब्लेड के सम्पर्क में उसके जिस्म का जो भी हिस्सा आ जाता वह उसे लहू-लुहान किये बगैर न रहता।

मगर, यह उसकी चुस्ती-फुर्ती और सूझ-बूझ थी कि पीछे उछाल लेने के कारण वह बच गयी थी।

बचाव कर जाने के बाद डार्लिंग की निगाह में वह मेज आयी—जिस पर दो मग और एक शैम्पियन की खाली बोतल सजी हुई थी। उसे समझते देर न लगी कि कुछ देर पहले जियाउल के साथ वहां कोई दूसरा भी था...क्या बारूद अली...? प्रश्न ने तेजी से सिर उभारा।

"तेरी मौत मेरे ही हाथों लिखी थी इण्डियन कुतिया...।" जियाउल पैशाचिक मुस्कान होठों पर समेटे हुए डार्लिंग की ओर छड़ी नचाता हुआ झपटा।

डार्लिंग ने इस बार पीछे उछाल लेने के बजाय तेजी से झुकाई ली और छड़ी को सिर से गुजर जाने दिया...। इसी झुकाव में उसने बिजली की-सी चमक के साथ अपनी पिण्डली से कटार खींची।

झुकाव दे जाने से जियाउल अपनी ही झोंक में जरा आगे को लड़खड़ाया...।

और उसकी लड़खड़ाहट का भरपूर फायदा उठाते हुए थ्रिल क्वीन ने सिंहनी की उछाल मार, खंजर युक्त हाथ उसके छड़ी वाले हाथ पर घुमा दिया। खंजर कलाई में घुसता, नस काटता यूं पार हो गया जैसे खरबूजे के बीच छुरी।

जियाउल के कंठ से हृदय विदारक चीख कौंधी, साथ ही उसके हाथ से छड़ी हवा में उछल गयी।

थ्रिल क्वीन ने हाथ बढ़ा उसकी छड़ी लपकी।

उसे पूरी दरिन्दगी के साथ हवा में घुमाया...।

"सांय...ऽऽऽ सांयऽऽऽ।"

"दहशत गर्दों के हरामी कुत्ते...। तुझे शहबाज खां की मौत का हिसाब चुकाना है, पर उससे पहले तुझे बकना होगा कि रेशमा कहां है...?"

कलाई के जख्म की पीड़ा से बिलबिलाता और छड़ी विहीन होकर लड़खड़ाता जियाउल चिंघाड़ा—

"मेरे आदमी तेरी बोटियां-बोटियां नोच डालेंगे...। तू उनके जश्न के बीच जायकेदार परोसी हुई थाली साबित होने जा रही है...।"

"कुत्ते...!" डार्लिंग हिंसक सिंहनी की तरह चिंघाड़ी...। "अब भी तुझमें कमाण्डरी वाला वलवला बाकी है...।" उसने कंधे पर टंगी गन पर दायां हाथ रख रुख जियाउल की ओर किया। चिंघाड़ते स्वर में कहती गयी—"जी तो चाहता है तेरे जिस्म में दर्जनों गोलियां एक साथ उतार दूं...। मगर, मौत इतनी आसान मैंने दे दी तो तेरी रुह इस बात के लिए कैसे कांपा करेगी कि तेरा वास्ता डार्लिंग से पड़ा था...। नहीं...नहीं...मैं तेरी बोटियां-बोटियां हवा में उड़ाऊंगी...तब जाकर शहबाज की आत्मा को चैन आयेगा...।"

शब्द पूरे करते-करते उसने छड़ी का हाथ लहराया।

पूरे वेग से लहराया हुआ हाथ...।

'सांयऽऽऽ' की आवाज करती छड़ी जियाउल के चेहरे को छूती हुई गुजरी...।

लपलपाता हुआ ब्लेड का जख्म, जियाउल के गाल पर

पड़ा...। बायें गाल का छः इंच का मांस का टुकड़ा हवा में उड़ा।

"रेशमा...रेशमा...रेशमा...कहां है...?" चिंघाड़ती हुई डार्लिंग वार पर वार करती गयी...।

जियाउल के कंधों और दाहिने बांह की मछली के टुकड़े छड़ी के ब्लेड की चपेट में आकर उड़ते चले गये...।

जियाउल की चीख पर चीख कौंध रही थी...।

जिस्म से रक्त की फुहार उड़ रही थी...।

घुटना मुड़ रहा था...और वह जख्मों की असीम पीड़ा में भरा हुआ कराह रहा था।

"वह...वह...यहीं है...यहीं है...यहीं है...।" जियाउल की आवाज...कमजोर-सी आवाज जैसे किसी गहरे कुएं से उभरी।

रणचण्डी का रूप धारण किये थ्रिल क्वीन ने एक और हाथ चलाया।

इस बार लपलपाता...रक्त-रंजित छड़ी के ब्लेड ने जियाउल की गरदन को छुआ...।

एक ही झटके में, उसकी गरदन के पीछे छः इंच का गहरा घाव हुआ...। गरदन आगे को झूल गयी। पीछे से रक्त की धार उबल पड़ी...।

वह मुंह के बल गिरा। फर्श पर फैलता एड़ियां रगड़ने लगा।

हिंसकता की दरिन्दगी से भरी डार्लिंग ने उसके बाद भी बीसों जख्म उसके जिस्म पर लगाए और उसकी बोटियां हवा में उड़ायीं।

फिर उसकी निगाह उस विशाल कक्ष के ऐसे दर की ओर गयी—जिस पर न दरवाजा था न चौखट...। वह उस जीर्ण-शीर्ण किलेनुमा इमारत के अन्दरूनी हिस्से को जाने वाला दर नजर आता था।

जियाउल की अधकटी गरदन पर छड़ी का एक और प्रहार कर उसने उसके तन से गरदन जुदा कर शहबाज की मौत का प्रतिशोध चुकाया...। फिर वह अन्दरूनी हिस्से को जाने वाले दर की ओर झपटी।

अगले सेकण्ड, उस दर पर पहुंचकर उसने पाया—उस पार एक लम्बी गैलरी है...और गैलरी पार बने एक अन्य कक्ष से संगीत लहरियां उभर रही हैं।

उन संगीत लहरियों को थ्रिल क्वीन जियाउल के साथ संघर्ष करते न सुन सकी थी...अवश्य ही उस स्थान की दूरी ज्यादा थी।

वह संगीत लहरियों के गूंज की दिशा की ओर झपटी।

ज्यों-ज्यों वह निकट होती गयी...उसके कानों में नुसरत फतेह अली के सूफियाना कलाम के संगीतमय बोल पड़े...।

'रब तो सबकी सुनता है...रब तो सबका मालिक है...ऽऽऽ' कुछ ऐसे ही बोल थे...जो ऊंची आवाज में बुलन्द थे।

थ्रिल क्वीन दोनों हाथों में गन सम्भाले हुए उस कक्ष के द्वार पर जा ठिठकी...।

वह एक विशालकाय हॉल था। हॉल की दशा बता रही थी कि कभी वहां नाच-रंग की महफिल सजा करती रही होगी।

वहां दस की संख्या में युवा मिलिटेण्ट जुटे हुए हाथों में शैम्पियन की बोतल उठाए...पी रहे थे...मस्त होकर नाच रहे थे...।

उसी हॉल के किसी हिस्से में सूफियाना कलाम का टेप चढ़ा हुआ था...।

वहां पहुंचते-पहुंचते थ्रिल क्वीन का दिल इस बात के लिए धड़का कि कहीं उन वहशी-दरिन्दों ने रेशमा को अपने बीच घेरे में न ले रखा हो...वे उसे, इण्डियन फिल्म 'शोले की बसन्ती' मानते हुए नचा न रहे हों...।

मगर वहां रेशमा न थी...।

थ्रिल क्वीन ने गन का मुंह खोल दिया...।

'तड़...तड़...तड़...रेट...रेट...रेट।' गोलियों की बौछार कर दी...।

किस-किसके सीने में, बरसाती ओलों की तरह चमकते शोलों ने सूराख किया...इस मामले में थ्रिल क्वीन ने भेद करने की कोई आवश्यकता न समझी, क्योंकि उसकी नजरों में सबके सब पशु प्रवृत्त को अपनाए हुए दरिन्दे थे...।

वे सब मर जाने के काबिल थे।

न जाने कितनी युवतियों का सुहाग उन्होंने उजाड़ा था, मांओं की गोदें सूनी की थीं...बाप के सहारे उजाड़े थे...। वे दहशतगर्द थे...। उनका कोई दीन-ईमान न था।

वे सूफियाना कलाम के बोल पर नाच-रंग में मस्त थे—

रब के नाम पर भी नाच-रंग की महफिल सजाए नशे में झूम रहे थे।

एक साथ पांच लाशें गिरीं तो वहां चीखो-पुकार का बाजार गर्म हो गया। बचे हुए पांच जैसे एकदम से होश में आकर जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे...।

"कहावत है...सिंहनी की गंध पाकर कुत्ते भौंकने की बात भूल दुम दबाकर भाग जाते हैं...तुम सब कुत्ते हो...आवारा कुत्ते...। डार्लिंग रूपी सिंहनी अब तुम्हें भागने का भी मौका नहीं देने जा रही है...तुम पांचों एक लाइन में खड़े हो जाओ...।"

सबको जैसे सांप सूंघ गया था...। तनी हुई गन के सामने, निहत्थे, बचे हुए पांचों मिलिटेण्टों के सामने कतारबद्ध हो जाने के अलावा कोई चारा न था।

"रेशमा कहां है...? मेरी रेशमा, जिसके लिए भारत की धरती से मुझे यहां तक आना पड़ा है...?"

पांचों को पहले से ही सांप सूंघा हुआ था...। मौत की हवाइयां चेहरों पर उड़ रही थीं...बोलती बन्द थी...।

डार्लिंग की गन का रुख एक-एक की ओर घूमता रहा।

पांचवें की ओर जैसे ही गन की नाल केन्द्रित हुई—उसकी आवाज फूटी—"यहीं है...यहीं है...यहीं है...।"

उस पर हिस्टीरियाई अंदाज में जैसे दौरा पड़ गया था।

थ्रिल क्वीन के कान उसी शब्द को सुनने को तरसे हुए थे...। रेशमा 'यहीं है', इस जानकारी के साथ उसे अपना काम पूरा होता महसूस हुआ...।

हाथों में थमी गन गरजी...और घूमती हुई गरजती चली गयी...।

एक सिरे से दूसरे सिरे तक उसने उनकी लाशें बिछा दीं।

एक की भी जिन्दगी बख्शना उसने विषैले कोबरा को दूध पिलाने जैसी मूर्खता मानी थी।

उसने आनन-फानन में लाशों के ढेर बिछा दिये थे।

फिर उसने अन्दर कदम रखा...।

गोलियों से क्षत-विक्षत लाशों पर से गुजरती हुई...उसने रेशमा की तलाश में खोजी नजरें दौड़ानी आरम्भ कीं।

जल्द ही वह हॉल कक्ष के दूसरे सिरे पर पहुंच गयी—

जहां दरवाजा था...।

उसे इमारत में वह पहला दरवाजा नजर आया था।

उसने दरवाजे के पल्लों पर हाथ रखा।

हाथ रखते ही दरवाजा खुलता चला गया।

वहां भी अन्दर पैट्रोमेक्स की रोशनी जगमग थी।

दरवाजा खुलते ही—उसकी रगों में उत्तेजना का नया संचार हुआ...। जोश और उत्तेजना, हर्ष और कष्ट में लिपटा हुआ जोश...।

हर्ष इस बात का कि उसकी निगाहों ने रेशमा को देख लिया था।

कष्ट इस बात का था कि वह जंजीरों में जकड़ी हुई थी।

लोहे की जंजीरों का बोझ उसके नर्म-नाजुक जिस्म पर था।

"रेशमा...।" वह आह्लादित भाव में बुदबुदायी और दौड़कर उस हसीन मोहिनी सूरत के पास पहुंच गयी जो कश्मीर के चमन की कली थी...। जो जाफरान की बूटी थी।

जंजीरें छत की कड़ियों से गुजरकर आ रही थीं। और वे रेशमा के हाथ-पैर और फूल से कोमल जिस्म से लिपटी हुई थीं।

थ्रिल क्वीन ने अपनी रेशमा को, जंजीरों की जकड़न से सेकण्डों में मुक्त करा, कष्ट से छुटकारा दिलाने के उद्देश्य से छत की कड़ियों से अटकी जंजीरों पर फायरों की बाढ़ छोड़ दी।

छत की कड़ियां उखड़ीं...।

जंजीरें टूटीं...और कटकर उछलीं...।

थ्रिल क्वीन ने बढ़कर रेशमा को झटपट, जंजीरों के बोझ से आजाद कराने का कार्य किया।

"डार्लिंग...।" आजादी पाते ही हर्ष के जोश में उफनती दरिया बनी रेशमा...लपककर डार्लिंग के सीने से लग गयी। वह बुदबुदायी—"तुम मेरे लिए यहां तक आ गयीं...।"

"मैंने प्रण किया था तुम्हें खोज निकालने और आजाद कराने का...। मैं अपना प्रण पूरा कर रही हूं...।"

कहते-कहते ब्यूटी क्वीन ने उसे सीने से यूं भींच लिया जैसे सिंहनी ने अपने खोये हुये शावक को पाकर अपनी ममता पा ली हो।

ब्यूटी क्वीन की आवाज खुशी से कांपी जा रही थी।

उसने रेशमा को कांधे पर उठाया...और पलटकर दरवाजे

से बाहर आ गयी। वह इस एहसास से भी डर रही थी कि न जाने कितने जुल्मो-सितम सहे हों रेशमा ने...। वह अपने पैरों से चलने के काबिल भी हो या नहीं।

वह इमारत से बाहर निकल आयी—खुले आसमान के नीचे।

"क्या तुमने यहां सबके सबको मार दिया डार्लिंग?" रेशमा का हर्ष के कौतुक में लिपटा स्वर उभरा।

"मैंने...दरिन्दों के सरदार कमाण्डर जियाउल तक को मौत के घाट उतार दिया रेशमा...। बस एक ही शख्स मेरी निगाह में अभी तक न आ सका—और वह बारूद अली...।"

"बारूद अली...।" फर्श पर उतारे जाने के बाद रेशमा बुदबुदायी—

"मुझे मालूम है बारूद अली कहां होगा...।"

"कहां होगा? जल्दी बताओ रेशमा...मैं उस शैतान की भी कब्र बनाना चाहती हूं...।"

"हैंगर की ओर—जहां एक बचा हुआ हेलीकॉप्टर खड़ा है...वह हेलीकॉप्टर जियाउल के आने-जाने के इस्तेमाल में आता था। तुम कहती हो कि तुमने जियाउल को भी मार दिया...। इसके बाद बारूद अली हेलीकॉप्टर के जरिये ही अपनी जान-बचाकर यहां से भागेगा।"

"हैंगर का रास्ता किधर से है...क्या तुम जानती हो रेशमा...?" डार्लिंग ने पूछा।

उसी समय,

हेलीकॉप्टर के इंजन चालू होने की आवाज रेशमा के बिन बताए हैंगर की दिशा का आभास करा गयी।

वह रेशमा का हाथ थाम आवाज की दिशा में तेजी से बढ़ने का इरादा करके बोली—"क्या तुम अपने पैरों से चल सकती हो...? अगर वह हरामजादा भाग रहा है तो उसे भी मुझे भागने नहीं देना है।"

"हां, मैं अपने पैरों पर चल सकती हूं...तुम्हारे साथ दौड़ भी सकती हूं...।" रेशमा ने उत्साह भरे स्वर में कहा—"उधर है हैंगर का रास्ता, जहां दो हेलीकॉप्टर खड़े रहा करते थे। एक जंग में काम आ गया...मगर दूसरे से बारूद अली यहां से फरार

होने जा रहा है।" कहते-कहते डार्लिंग उसका हाथ थाम आवाज़ की दिशा में दौड़ पड़ी थी।

वह इमारत का पृष्ठ भाग था।

जब तक थ्रिल क्वीन ने इमारत का पृष्ठ भाग पार किया...उस समय तक दोनों ने काफी दूर से हेलीकॉप्टर ऊपर को उठता हुआ देखा...। वह तेजी से ऊपर उठता जा रहा था।

डार्लिंग ने दौड़कर उस पर गोलियां खर्च कीं।

लेकिन वह फायर की सीमा से बाहर होकर ऊपर ही ऊपर उठता चला जा रहा था।

दौड़ते हुए डार्लिंग रुकी। हाथ मलते हुए बोली—

"बारूद अली के बाबत मुझे देर से ज्ञात हुआ जिससे उसे निकल जाने का मौका मिल गया।"

"मगर मैं जानती हूं, वह कहां जाएगा...।"

"कहां जाएगा वह...?" डार्लिंग ने तेजी से पूछा।

"वह अकेला पड़ गया है...बिल्कुल अकेला...।" रेशमा ने बताया—"मैंने उसकी अपने आदमियों से हुई एक-एक बात सुनी है...। उसके वे आदमी जो हॉल में नाच-रंग की महफिल सजाने के लिए जमा थे। वह पाक-ईरान की सरहद पार करेगा...और ईरान की ओर उड़ान कर जाएगा।"

"तुम कहती हो तुमने उनकी एक-एक बात सुनी है...।" डार्लिंग उसका हाथ थाम तेजी से पलटती हुई बोली।

उसकी दिशा अब टूटे चबूतरे और चौकोर खम्भे की ओर थी।

जहां वह भाड़े के सूडानी सैनिक नवेद असलम को अचेत करके छोड़ आयी थी। जहां एक अदद वह जीप खड़ी थी, जिससे बारूद अली का नवेद असलम ने वहां आना बताया था।

जीप अब भी खड़ी है, इस बात को डार्लिंग ने वहां पहुंचने से पहले ही दूर से देखकर इत्मीनान किया।

फिर वह तेजी के साथ रेशमा का हाथ थामे हुए टूटे चबूतरे के नीचे पहुंची।

उसने आगे बढ़कर झाड़ियों के बीच नवेद असलम को देखा। वह अभी भी अचेत पड़ा था।

थ्रिल क्वीन ने झुककर उसे उठाया। सहारा देकर बैठाते हुए उसकी कनपटी तीन-चार बार मली।

उसके होठों से हल्की कराह फूटी, पलकें थरथराईं और वह धीरे से होश में आ गया।

डार्लिंग पर निगाह पड़ते ही उसके चेहरे पर एक बार फिर मौत की परछाइयां तैर उठीं।

डार्लिंग ने उसे सहारा देकर उठाया।

"जीप तक चलो... ।" डार्लिंग ने आदेश दिया—"अब तक तुम्हारा रवैया सहयोगात्मक रहा है...देखो। मैं जिसके लिए यहां आयी थी उसे मैंने पा लिया है... ।"

उसकी निगाह रेशमा पर पड़ी।

और एक बारगी आंखों में आनन्द की चमक आ गयी। प्यास से मरते किसी इन्सान को जैसे शीतल जल के झरने के किनारे पहुंचने का मौका मिल गया हो।

उसने जीप की स्टेयरिंग सीट सम्भाली। डार्लिंग के आदेश पर उसने जीप का इंजन जगाया।

"गाड़ी बैक करो...और घुमाकर रुख उस ओर का करो जिधर से उसे लेकर आये थे... ।" डार्लिंग ने आदेशात्मक स्वर में नवेद असलम सूडानी को हुक्म दिया। वह खुद, रेशमा के साथ गाड़ी में जरा फासले पर थी।

थ्रिल क्वीन, ऐसा हुक्म देते समय पूरी दूरदर्शिता से काम ले रही थी। पहली सतर्कता यह थी कि अगर उसके इमारत में दाखिल होने के पीछे जीप में कोई छेड़छाड़ की गयी है तो उसका फल जीप का इंजन जगने और उसके आगे-पीछे होने पर ही सामने आ जाएगा।

उसकी जिस ढंग की जंग छिड़ी हुई थी उसमें समय की सुइयों का कोई आंकड़ा न था। सेकण्डों का काम घण्टों में हो सकता था—घण्टों का काम सेकण्डों में।

ऐसे हालात में, टाइम बम के बजाय बैटरी एक्सप्लोसिव का ही इस्तेमाल किया जा सकता था। ऐसा बैटरी एक्सप्लोसिव, जीप का इंजन जगते ही या फिर गाड़ी के पहियों के डोलते ही अपना काम कर जाता।

पर, ऐसा कुछ भी न हुआ।

थ्रिल क्वीन ने इत्मीनान की सांस ली।

विश्वास किया कि दुश्मनों को अपनी ही जान बचाने की जब फुर्सत नहीं थी तो वे उसकी जान लेने की योजना भला क्यों बनाते।

उस एक पहलू के आलवा दूसरा पहलू यह भी था कि गाड़ी का इंजन जागने के साथ यदि कोई दुश्मन अब भी इमारत में बचा था या खुद को उसने छुपा रखा था तो वह जीप के इंजन जगते ही सीधे हमलावर होता।

एक्सप्लोव और अटैक, इन दोनों ही स्थितियों में नवेद असलम सूडानी को ही खामियाजा भुगतना पड़ता।

परन्तु, ऐसा कुछ न हुआ।

ऐसी किसी खतरे की सम्भावना टल गयी तब थ्रिल क्वीन ने रेशमा के साथ तेजी से आगे बढ़ते हुए नवेद सूडानी को जीप में ब्रेक मारने का आदेश दिया।

यह भी एक पहलू था—कभी-कभी ब्रेक पैडल के साथ भी एक्सप्लोसिव इस्तेमाल में लाये जाते थे।

यह मामला भी साफ-सुथरा रहा।

नवेद सूडानी ने यंत्रवत् जीप रोकी।

वह ऐसा करने को विवश था। किसी भी तरह से फरारी की बात उसकी सोच में न आ सकती थी। उसके दिमाग में तो अपनी कमर से बंधी रिमोट बम बेल्ट का खौफ भूत की तरह सवार था...।

वह अलादीन के जादुई चिराग वाले जिन्न की तरह, आदेश का गुलाम था।

जीप रुकने पर रेशमा के हमराह डार्लिंग जीप की पिछली सीट पर सवार हुई।

"गाड़ी बढ़ाओ...।" डार्लिंग ने हुक्म दिया—"पूर्वी-पश्चिमी सीमा की ओर बढ़ो...।"

आदेश का पालन होने लगा।

"तुम्हारी सोच के मुताबिक, बारूद अली हेलीकॉप्टर से कहां के लिए फरार होगा?" डार्लिंग ने रेशमा से मुलायम स्वर में पूछा।

"इसमें मेरी सोच का कोई दखल नहीं...।" रेशमा ने

कहा—"उसका जहां का प्रोग्राम रहा है वहीं जाएगा...।" वह कहती रही—"और मैंने तुम्हें बताया है कि उनकी बातें मैंने सुनी हैं...।"

"हां...तुमने बताया है...।"

"उन्हें तो ख्वाब में भी इस बात की आशा न थी, कि आप जीवित रह गयी हैं...। वे तो आपकी मौत का जश्न मना रहे थे...।"

"प्रोग्राम कहां का था?"

"पाक सीमा पार, ईरान की कबीलाई तुगलई बस्ती का...।"

"तुगलई बस्ती ही क्यों...?"

"क्योंकि वह बस्ती ही उनके लिए परमाणु रिसर्च के लिए सबसे सुरक्षित इलाका है।"

"परमाणु रिसर्च...?" डार्लिंग बुरी तरह चौंकी।

"जी हां। बारूद अली परमाणु बम तकनीक पा चुका है। पाकिस्तान के परमाणु अनुसंधानशाला से, परमाणु तकनीक को ईरान और लीबिया को दिये जाने का समाचार दुनिया के अखबारों में आ चुका है...। आपकी जानकारी में यह बात है। इसकी वे आपस में चर्चा कर रहे थे...।"

थ्रिल क्वीन, रेशमा की हर बात पर चौंक रही थी।

"हां! वर्ल्ड मीडिया और सरकारों के बीच यह बात पिछले कुछ दिनों से खूब चर्चा में है...। इस बाबत पाकिस्तान के परमाणु वैज्ञानिक अब्दुल कादिर की गिरफ्तारी भी हुई, और पूछताछ भी। उन्होंने देश से इस बाबत माफी भी मांगी और उनके प्रति देश की सेवाओं को देखते हुए परवेज मुशर्रफ ने उन्हें माफी भी दे दी...।" स्पाई क्वीन ने रेशमा के कथन का समर्थन करते हुए बताया।

उसके मस्तिष्क में जैसे धमाके पर धमाके हो रहे थे...। उसने जल्दी से कहा—

"पर, परमाणु तकनीक अनुसंधान से मुरसलीन वालों का या बारूद अली का क्या ताल्लुक है...?"

"उनकी बातचीत से मैंने जो जाना, उसके अनुसार उनका सभी बातों से ताल्लुक है...।" रेशमा कहती रही—"बारूद अली। कैमिस्ट्री विषय में एम० एस-सी० गोल्ड मैडलिस्ट बताया है। पाकिस्तान डिफेन्स आर्टीलरी में अच्छी सेवा में था। ड्रग्स एडिक्ट

होने की कमजोरी की वजह से सर्विस से निकाल दिया गया...मगर वह खुद को बारूद से खेलने के शौक से अलग न कर सका। वह दहशतगर्द संगठन की सेवा में जुटा...। उनके बीच अपने वजूद की अहमियत बनाकर हिजबुल मुरसलीन में आया। यहां उसने महत्वपूर्ण हैसियत बनायी।

जो मामला मेरी समझ में आया है...उसके अनुसार परमाणु तकनीक ईरान सरकार के पास नहीं, मुरसलीन वालों के पास पहुंची है। और वे उस तकनीक पर रिसर्च करके, परमाणु बम बना रहे हैं...। वे परमाणु बम बनाकर, अपनी ताकत को अल-कायदा वालों से भी ऊंची करना चाहते हैं। वे ऐसी स्थिति पैदा करना चाहते हैं कि अमेरिका, चीन, फ्रांस, जर्मनी जैसे शक्तिशाली देश भी उनसे घबरायें। वे पाकिस्तान को अपना पॉकेट कन्ट्री बनाकर रखने की योजना बनाए हुए हैं...जैसा कि ओसामा बिन लादेन ने अफगानिस्तान को बना रखा था।"

"लेकिन, मुरसलीन के तीन कमाण्डर पहले ही खत्म हो चुके हैं...। कमाण्डर जियाउल को मैंने खुद मौत की नींद सुला दिया है...। उनके हेडक्वार्टर की ताकत तहस-नहस कर दी गयी है...। हेडक्वार्टर के सारे आदमी थोक और फुटकर में खुदागंज का टिकट कटा चुके हैं। इस सूरत में अब उनके पास बचा ही क्या है...?"

"उनके पास बारूद अली बचा है...।" रेशमा ने शब्दों पर जोर देकर कहा—"तुगलई बस्ती में भी मुरसलीन संगठन के कुछ सीनियर रैंक के लोग हैं। यहां उनके आदमियों का ही तो खात्मा हुआ है...वे आदमियों को फिर खड़े कर लेंगे...। हथियारों का सफाया हुआ है, उसे फिर हासिल कर लेंगे। उनकी विचारधारा का तो खात्मा नहीं हुआ है...वे अपनी विचारधारा को आसपास के छोटे-छोटे मुस्लिम कन्ट्रीज में फैलाकर अपनी ताकत तेजी से मजबूत कर लेंगे...।

परमाणु बम का इस्तेमाल कर भारत के आगरा से लेकर दिल्ली तक ऐसी बरबादी फैलाने की योजना बनाए हुए हैं कि इमारतें खण्डहर और बस्तियां कब्रिस्तान बन जाएंगी...।

थ्रिल क्वीन इस बात को दूसरी बार सुन रही थी।

डल झील पर अपने और रेशमा पर हमलावर हुए आत्मघाती

के मुंह से भी उसने यह धमकी सुनी थी।

रेशमा की ओर से मिलने वाली जानकारी को उसने अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारी के रूप में लिया। उसके चेहरे पर जबर्दस्त रूप से आक्रोश भरे भाव उभरे। वह मुट्ठियां भींचकर बुदबुदायी—

"अगर इन आतंकी कुत्तों ने मेरी जननी जन्मभूमि की ओर टेढ़ी निगाह से देखने की भी भूल की तो उनकी नस्लों को बर्बाद कर दूंगी...।" रुककर उसने पूरी गम्भीरता से रेशमा से पूछा—"तुम्हें पूरा यकीन है कि बारूद अली तुगलई कबीलाई बस्ती की ओर ही गया होगा?"

"मैंने उनके बीच बनता हुआ जो प्रोग्राम सुना था, उसके अनुसार उसे वहीं जाना चाहिए...।" रेशमा ने सामान्य भाव में कहा—"वैसे भी वह यहां पूरी तरह अकेला पड़ गया था—वह और कहां जाएगा?" वह कहती रही—"हर इन्सान की यह फितरत होती है कि वह जब मुसीबत में घिरता है तो अपने सबसे सुरक्षित ठिकाने की ओर ही भागता है...।"

"तुगलई का इलाका, बारूद अली का सबसे सुरक्षित ठिकाना है...?"

"होना ही चाहिए...।"

"किस तरह...?"

"भौगोलिक दृष्टिकोण से...।" रेशमा ने कहना जारी रखा—"वह पठारी और दर्रों वाला पहाड़ी इलाका है...।"

"क्या तुम वहां कभी गयी हो?"

"नहीं...।"

"वहां के बारे में सुना है...?"

"बारूद अली और उसके आदमियों के बीच, वहां को लेकर जो खिचड़ी बन रही थी उसके आधार पर जाना है।"

"वह पठारी और दर्रों वाला पहाड़ी इलाका है...।" डार्लिंग ने दोहराया—"इसके अलावा वहां के बारे में माना जाता है कि तैमूर लंग लुटेरे के वंश की औलादें वहां हैं। कबीलाई लोग निहायत पिछड़े हुए, जंगली और लुटेरे हैं...।"

"और उनके बीच बारूद अली ने अपनी घुसपैठ कर रखी है...।"

"सिर्फ घुसपैठ नहीं, वहां अपनी अनुसंधान की दुनिया

आबाद कर रखी है...।"

"मैं उसकी आबाद की हुई दुनिया को खाक में मिला दूंगी...।"

रेशमा ने मासूमियत के भाव से ब्यूटी क्वीन की ओर देखा।

जीप ऊबड़-खाबड़ रास्तों से पहाड़ियों का सीना रौंदती हुई आगे की मंजिल तय कर रही थी।

अचानक जीप सर्पाकार रूप में लहरायी।

लगा स्टेयरिंग पर से चालक का नियन्त्रण टूट गया है।

"डार्लिंग...।" रेशमा चीखी—"ड्राइवर हमें मार देना चाहता है...।"

स्पाई क्वीन चौंकी। चालक पर दृष्टि डाली। गाड़ी की रफ्तार तूफानी थी और चालक का चेहरा पूरी तरह से स्टेयरिंग पर झुका हुआ था।

इससे पहले कि थ्रिल क्वीन कुछ निर्णय ले पाती, मारे खौफ के रेशमा ने आगे झुक डार्लिंग के कांधे—सहारे के लिए थामे...। डार्लिंग उसे दिलासा देना चाहती थी कि तभी...रेशमा ने मारे बदहवाशी के अपना जिस्म हवा में झोंक दिया।

"नहीं...ऽऽऽ ई ई...!" डार्लिंग चीखी।

उसने अपने हाथ रेशमा को थामने के लिए लपकाए...।

मगर उसे देर हो चुकी थी।

खुद को बौखलाहट में बाहर झोंक देने के चक्कर में डार्लिंग के कांधों पर जो दबाव पड़ा था उसमें वह रेशमा को थाम पाने के बजाय उलटे अगली सीट के पोर्शन से टकरा गयी।

और उसी क्षण जीप धाड़ से चट्टान से टकरायी।

डार्लिंग सम्भल भी न पायी थी कि उसने पाया कि जीप के पहिये हवा में उड़ चुके हैं...।

थ्रिल क्वीन की आंखों के सामने भूचाल आ जाने का नजारा कौंध उठा...।

वह भूचाल से भी भयानक मंजर था...। हवा में उछलती हुई जीप कलाबाजी खाकर एक गहरी संकरी खाई में जा रही थी।

उलट-पुलट होती डार्लिंग ने जीप की सीट को थामने के लिए हाथ बढ़ाया फिर परदे के राड को पकड़ने के लिए हाथ मारे...। मगर सहारा न पा सकी...। उसका पूरा जिस्म जीप से

उछलता हुआ बाहर आया...और किसी पके हुए ताड़ के फल की तरह वह जीप से बाहर टपक पड़ी।

आंखें खुलीं तो ब्यूटी क्वीन ने पाया कि सूरज की किरणें उसकी रेशमी जुल्फों को चूम रही हैं।

वह चौंककर उठ बैठी। अपने आधे तन पर पड़े टर्किश कम्बल को झटके से पूरे जिस्म को ढंकने के लिए खींचा। वह चौंकने के साथ-साथ बदहवाश भी हुई थी। बदहवाशी की वजह यह थी कि उसका सरापा हुस्न पूरी तरह बेलिबास था। उसके जिस्म पर नाम-मात्र को भी कपड़ा न था। और इस सबसे भी बड़ी बात यह थी कि एक नितांत अपरिचित शख्स उसकी बगले में पड़ा गहरी-गहरी सांसें ले रहा था।

कांधों तक अपने जिस्म को ढंकने के बाद डार्लिंग ने अपने पहलू में पड़े शख्स पर निगाह दौड़ायी।

वह निश्चिंतता के साथ मुस्कराया। वह भारी-भरकम चेहरे और गोरे जिस्म का इन्सान था। आंखें खूबसूरत, माथा चौड़ा और बाल घुंघराले थे। वह पचास के आस-पास की उम्र का था। उसके जिस्म की हड्डियां चौड़ी और कद लम्बा था।

एक नजर में उसे गोरा-गोरिल्ला मानव कहा जा सकता था। हालांकि गोरिल्ला भी नहीं, क्योंकि वह बदशक्ल न था। गोरिल्ला मानव का ख्याल डार्लिंग के जेहन में इसलिए कौंधा था क्योंकि उसके कांधों और सीने पर बेपनाह बाल थे—बाल चमकीले और भूरे थे।

उसका चौड़ा सीना मेहनती इन्सान का परिचायक था। कमर से नीचे उसके जिस्म पर खाकी पैण्ट थी—तन से शर्ट उतरी हुई सिरहाने पड़ी थी। उसकी आंखों में हुस्न परस्ती की ललचाई हुई चमक थी।

"तुम मेरे आदमियों को खाई में अचेत पड़ी हुई मिली थीं...।" उसने साफ-सुथरी ईरानी-उर्दू मिक्स भाषा में कहा—"मेरे आदमी तुम्हें उठा लाए...। उन्होंने गलत तो नहीं किया...?"

ब्यूटी क्वीन को उसके बताने पर समझ में आया कि उसने

नई जिन्दगी पायी है। यह भी याद आया कि अपनी जान रेशमा के साथ जीप की पिछली सीट पर आमने-सामने बैठी हुई थी। जीप ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों के मार्ग पर दौड़ रही थी। रेशमा के साथ वह बातों में खोयी हुई थी। अचानक ही रेशमा ने आभास कराया था कि जीप चालक उसे मार देना चाहता है।

जब तक वह स्थिति से निपटने के लिए खुद को तैयार कर पाती, जीप की तूफानी रफ्तार को देख, दुर्घटना के प्रति बदहवाश हो रेशमा ने बाहर छलांग लगा दी थी। रेशमा ने सही वक्त पर सही कदम उठाया था क्योंकि अगले ही पल जीप एक चट्टान से टकराकर उछल पड़ी थी। उलटती हुई खाई में जा गिरने को हुई थी। सम्भलने के प्रयास में वह खुद जीप से बाहर टपक गयी थी।

उसके बाद क्या हुआ था—कुछ होश न था।

होश आने पर अपने आपको वह सही-सलामत पा रही थी। वह गोरे-गोरिल्ला जैसे इन्सान के सामने थी—और अब उसके व्यवहार को समझने की चेष्टा में पूरा ध्यान लगा दिया था। गोरा-गोरिल्ला बता और पूछ रहा था कि उसके आदमियों को वह एक खाई में अचेत पड़ी मिली थी। वे उसे उठा लाये थे—उन्होंने कोई गलत तो नहीं किया था?

डार्लिंग ने उसके सवाल के जवाब में तेजी से गरदन हिलायी। आभार भरी मुस्कान होठों पर लाकर बोली—"नहीं! जिन्दगी बचाने का शुक्रिया।"

"मैंने तुम्हारे साथ कोई गुस्ताखी भी नहीं की...।" गोरा गोरिल्ला ने सपाट भाव के साथ कहा—"सिर्फ इस बात का इत्मीनान करने के लिए कि तुम्हारे जिस्म के किसी हिस्से में टूट-फूट तो नहीं हुई, मैंने तुम्हें बेलिबास किया। अपने हाथों से जिस्म के हर हिस्से को छूकर देखा। तुम्हारा जिस्म ठण्ड से अकड़ा हुआ था इसलिए गरमी देने के लिए मैं तुम्हें लिपटाकर सो गया...और अब तुम्हारे होश में आने की प्रतीक्षा कर रहा था।"

उसने जो भी कहा था, उसमें पूरी सादगी थी। अन्दाज भोला-भाला था।

ब्यूटी क्वीन होठों ही होठों में मुस्करा दी। जी चाहा कह दे—अगर उसके साथ गुस्ताखी भी की होती तो वह क्या कर सकती थी। अचेतावस्था में, उसको बेलिबास करके, उसके साथ

लेटकर, उसके तन को गर्मी देने वाले व्यक्ति को सब कुछ कर गुजरने का अधिकार था।

यदि उसने कुछ भी नहीं किया था तो यह उसकी शराफत थी...या चाहत की इन्तहा थी।

"मेरा नाम मुख्तार है...। मैं सामी कबीले का सरदार हूं...।" उसने अपना परिचय दिया।

"क्या मैं तुम्हारे आदमियों को अकेली मिली थी...?" डार्लिंग ने प्रश्न किया।

उसने उसका सवाल समझने के भाव में देखा फिर पूछा—"क्या तुम्हारे साथ कोई और भी था...?"

"हां, एक सोलह साला लड़की...।" डार्लिंग ने कहा और झट परखने वाली नजरें उसके चेहरे पर जमायीं।

वह समझना चाहती थी कि गोरे-गोरिल्ले मुख्तार ने रेशमा को उससे अलग करके कहीं उसके मामले में बदनीयती तो मन में नहीं पाल ली है।

अगर ऐसा था तो वह बहुत बुरा आदमी था। उसके भलेपने का परदा उसकी निगाहों में उतरने जा रहा था। और, ऐसे किसी भी बुरे इन्सान के मामले में वह बुरे से भी बुरे रूप में पेश आने में जरा भी झिझक से काम नहीं लेना जानती थी।

गोरे-गोरिल्ले ने किसी को आवाज लगायी।

सेकण्ड के अन्दर दो तगड़े-तन्दुरुस्त व्यक्ति अन्दर दाखिल हुए। उनके कांधों पर आधुनिक राइफलें थीं।

दोनों ने अन्दर दाखिल होकर, सिर झुकाकर अपनी वफादारी का इजहार गोरे-गोरिल्ले के सामने किया।

"क्या तुम्हें इन मोहतरमा के अलावा उस खाई में कोई दूसरा भी मिला था...?" गोरे-गोरिल्ला ने सवाल दागा।

"नहीं...।" उनमें से एक ने कहा—"हमने सिर्फ इन्हीं की ऊपर से उभरती चीख सुनी थी—उस समय हम अपने इलाके की पहरेदारी के लिए खाई से गुजर रहे थे। हमने इन्हें ही ऊपर से गिरते देखा था।"

गोरे-गोरिल्ले ने अपने आदमी का जवाब सुन डार्लिंग की ओर देखा और जैसे समझना चाहता हो कि वह उसके आदमियों के जवाब से सन्तुष्ट है या नहीं।

"मेरे साथ एक सोलह साला लड़की थी। उसका नाम रेशमा है...।" डार्लिंग ने बेताबी से कहा।

"जाओ...पांच और आदमियों को लेकर मेरे सामने आओ जहां पर ये मोहतरमा मिली थीं। वहां से दूर-दूर तक, जहां तक अपनी सरहद है वहां तक जाकर हमें इनके साथ की लड़की को तलाश करना है...। इस बात की भी टोह लेने की कोशिश शुरू कर दो कि इनकी साथी लड़की किसी दूसरे कबीले वालों के हाथ में तो नहीं लग गयी...।" गोरे-गोरिल्ले ने अपने आदमियों को आदेश दिया।

दोनों आदेश पाकर सिर झुकाए हुए वहां से उलटे कदमों वापस लौट गये।

ब्यूटी क्वीन के चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर पड़ी थीं। गोरे-गोरिल्ला ने कहा—

"इस बात को बताकर मोहतरमा कि आपके साथ और भी था, आपने मुझे फिक्र में डाल दिया है...।" उसने अपनी शर्ट खींची। बिस्तर से उतर गया। जिस्म पर शर्ट डालता हुआ बोला—

"आप अपना लिबास जिस्म पर डाल लीजिए...ताकि हमें बातचीत में आसानी रहे। मेरे ख्याल से आपको खाने-पीने की भी जरूरत होगी।"

ब्यूटी क्वीन ने कांधे तक ताना हुआ कम्बल जिस्म से उछाला। उसके कपड़े सिरहाने ही थे।

उसने इस बात की जरूरत न समझी कि गोरे-गोरिल्ले की ओर देखे कि वह उसके बेलिबास जिस्म को देख रहा है या नहीं...। न जाने उसने कितनी देर उसे देखा हो...उसने उसे अच्छी तरह छूकर देखा था...इस बात को तो खुद बता रहा था...। अपने हाथों से उसे बेलिबास किया था...इस बहाने से कि उसके जिस्म में कहीं टूट-फूट तो नहीं। उसने अपने जिस्म पर लिबास डाला।

दृष्टि घुमायी। गोरा-गोरिल्ला उसकी ओर ही देख रहा था। डार्लिंग होठों ही होठों में मुस्करायी। उसने कहा—

"मैंने कपड़े पहन लिये...।"

उसने चेहरा उसकी ओर किया। कदम आगे बढ़ाया और बैड पर पायताने की ओर आ बैठता हुआ बोला—"आपके पास

हथियार भी पाये गये थे, जो सुरक्षित हैं...।"

"आपके पास...।"

"हां...।" मुख्तार ने कहा। उसने आगे बात बढ़ायी—"आप पर बीस लाख रुपयों का इनाम मुरसलीन वालों की ओर से घोषित किया गया है मिस डार्लिंग...। इस बात की इत्तला भी हमारे आदमियों ने हमें लाकर दी है।"

डार्लिंग चौंकी। विस्मय भाव से मुख्तार को देखा। समझने की चेष्टा की कि उसके कथन के पीछे आशय क्या है।

उसने एक वाक्य में तीन चौंकाने वाली बातें कह डाली थीं। सर्वप्रथम यह कि उसने उसे सीधे नाम से सम्बोधित कर दिया था। दूसरे यह बता दिया था कि उस पर बीस लाख का इनाम घोषित है, तीसरी बात यह कि वह हिजबुल मुरसलीन का भी नाम उसके सामने ले आया था।

उसने मुख्तार के चेहरे का भाव सपाट पाया। कुछ कटाक्षपूर्ण भाव में बोली—"फिर तो आपके हाथ बहुत बड़ा जैकपॉट लग गया है मिस्टर मुख्तार...। बीस लाख की रकम बहुत बड़ी रकम होती है।"

"इन बातों से आप चौंकी नहीं?"

"किन बातों से...?"

"कि मैं आपके बाबत सब कुछ जान गया हूं...।"

"चौंकने के बजाय मुझे तो खुशी हुई—इस बात की खुशी कि मुझे अपने बारे में आपसे झूठे बहाने नहीं बनाने पड़ेंगे। अपने ही कथन से आपने बता दिया है कि मेरे बारे में आप बहुत अधिक जानते हैं...।"

"हां, उससे कहीं अधिक जितना मैंने एक वाक्य में बताया है...।" मुख्तार ने स्वीकारा।

"जानकारी का स्रोत क्या है...?"

"मेरे आदमी।" मुख्तार ने कहा—"जो मुरसलीन वालों की हर हरकत पर नजरें रखते हैं।"

"आप द्वारा मुरसलीन वालों पर अपने आदमियों द्वारा नजर रखवाने की वजह...।"

"उन्होंने सरहदी इलाकों में, बस्तियों में गुण्डागर्दी मचा रखी है। हम कबीलाई लोगों के वजूद को खत्म करने के लिए वे

धीमे जहर के रूप में काम कर रहे हैं। वे हमारे कबीलाई नौजवानों के दिमागों को ब्रेन वॉश कर रहे हैं। एक ओर वे उन्हें योरोपीय सुविधा और अय्याशी की चीजें बांट रहे हैं दूसरी ओर इस्लाम की रक्षा का पाठ पढ़ा रहे हैं। वे कबीलाई सभ्यता और संस्कृति को तबाह तो कर ही रहे हैं, औरतों और लड़कियों को अगुवा करके उन्हें अपनी अय्याशी का साधन बना रहे हैं। वे शराब पीते हैं और इस्लाम का नाम लेते हैं। औरतों से बलात्कार करके उन्हें रखैलों के रूप में रखते हैं, बांदियों-सा बर्ताव करते हैं और अपने इस कुकर्म को जायज ठहराते हैं। वे एक-एक करके कबीलों की ताकत कमजोर करते हुए उन पर अपनी हुकूमत कायम करते जा रहे हैं। ऐसा करते हुए उन्होंने तुगलई इलाके को पूरी तरह से अपने अधिकार में कर लिया है...उनके विस्तारवाद की नीति आगे बढ़ती जा रही है। वे इतने गंदे हैं कि एक ओर अमेरिका से हाथ मिलाते हैं तो दूसरी ओर रूस से मदद पाने के लिए दोस्ती का हाथ बढ़ाते हैं। उनकी न कोई नीति है न सिद्धांत, न दीन है न ईमान...। वे चोर और लुटेरों से भी गये गुजरे हैं। मैं उनसे नफरत करता हूं...। उनके पैर तुगलई बस्ती से उखाड़ फेंकना चाहता हूं...। छोटे कबीलों में बढ़ती जा रही उनकी घुसपैठ पर मैं रोक लगाना चाहता हूं...। उन्हें अपने इलाकों से इस तरह खदेड़ देना चाहता हूं कि वे जान बचाकर भाग रहे हों तो उन्हें कोई पानी देने वाला भी न मिले...।"

मुख्तार बोलता रहा, ब्यूटी क्वीन खामोशी से सुनती रही। उसने जो कहा था—वह हकीकत थी। उसमें कोई झूठ इसलिए न था क्योंकि अपनी सभ्यता-संस्कृति से हर किसी को प्यार होता है और वह उसे मिटता हुआ नहीं देखना चाहता।

मुख्तार के कथन में कोई सियासत न थी क्योंकि सियासत की जुबान में शब्दों के माध्यम से मिठास की ऐसी चाशनी घोली जाती है जिसकी कोई हकीकत नहीं होती, लेकिन सुनने वाला उसके फरेब में फंसता है और इस बात को सोचता है कि उनकी ज़िन्दगी का कायाकल्प कर देने वाला मसीहा उनकी किस्मत से उनके बीच आ गया है।

मुख्तार के कथन में आग बरस रही थी—दहशतगर्दों के विरुद्ध आग...। मुरसलीन वालों के लिए विष...।

उसकी बात पूरी होने पर डार्लिंग ने कहा—

"फिर तो मैं अपने अल्फाज वापस लेती हूं।"

"कौन-से...?"

"बीस लाख के जैक पॉट वाला...।" डार्लिंग ने सीरियसली कहा।

मुख्तार ने उन्मुक्त ठहाका लगाया।

पहली बार वह हँसा था...। हँसी की बात तो दूर उसके होठों पर उस समय से पूर्व डार्लिंग ने मुस्कान तक न देखी थी।

ठहाका लगाने के बाद वह बोला—

"आप समझी थीं कि मैं मुरसलीन वालों को आपको सौंपकर बीस लाख की रकम कमा लूंगा...?"

"बगैर आपको जाने ऐसा सोच लेना स्वाभाविक था।"

"मैंने आपके कथन की कोई नोटिस ही न ली थी। इसलिए अलफाज वापस लेने न लेने का सवाल ही पैदा नहीं होता...।" वह कहता रहा—"बीस लाख की रकम कमाने के बजाय मैं आपकी हिफाजत के लिए अपने बीस हजार कबीलाई जवान कुर्बान कर सकता हूं...।"

"तब तो मैं इसे अपनी खुशकिस्मती मानती हूं कि जीप के उलटने से मैं खाई में गिरी और कुदरत ने एक हमख्याल दोस्त की हिफाजत में मुझे भेज दिया।"

"आपको अपने कबीले के बीच, अपने बीच पाकर मैं फख्र महसूस करता हूं...। आपने वह काम कर दिखाया जो बरसों से पाकिस्तान सरकार न कर सकी थी...। सरहदी इलाकों पर हमारी कबीलाई ताकत न कर सकी थी। हजारों लोग उनके जुल्म के शिकार होते रहे। उनके दिलों से निकली आह की ताकत भी वह काम न कर सकी, जो आपने कर दिखायी।

आप मरी इलाके के उनके हेडक्वार्टर पर बिजली बनकर टूटीं और उनकी ताकत की धज्जियां उड़ा दीं...।

आप दहशतगर्द की लगातार उगती जा रही फसल पर आसमानी ओले बनकर बरसीं और उन्हें तबाह करके रख दिया।

हम सरहदी कबीलाई सरदारों को यह सुनकर सहज में यकीन न आया कि डार्लिंग नाम की एक हसीन...जमील युवती ने—मुरसलीन की संगठित जालिमाना ताकत से लोहा लिया...और

उनके कदम न सिर्फ उनके हेडक्वार्टर से उखाड़ फैंके बल्कि सैकड़ों को कब्र में सुला दिया, उनके मौजूदा कमाण्डर जिबाउल के जिस्म की बोटियां-बोटियां उड़ाकर उसे मौत की नीद सुला दिया...।

मरी हेडक्वार्टर से बचे हुए लोगों को जान बचाकर भागना पड़ा...। उनकी गुण्डागर्दी से मरी का पूरा इलाका खाली हो चुका है...।

वहां की दहशतगर्दी से त्रस्त जनता नाच-गाकर जश्न मना रही है।

खून लगाकर शहीदों में शामिल होने की कहावत चरितार्थ करती हुई पाकिस्तान सरकार रेडियो, टी० बी० और मीडिया के सामने इस बात का ढिंढोरा पीट रही है कि हिजुबुल मुरसलीन का मरी से खात्मा कर दिया गया है...। ढाई सौ मिलिटेण्टों की लाशें पाये जाने का दावा किया गया है। चार ट्रक असलाह, गोले-बारूद और दूसरे ट्रेनिंग के साजो-सामान बरामद करने की बात कही गयी है।

साथ ही यह भी बयान दिया है कि भारत-पाक दोस्ती के रिश्ते को मजबूत करने के उद्देश्य से आतंकवाद के विरुद्ध यह बड़ा कदम उठाया गया है...।"

"और इस सबका श्रेय पाकिस्तान सरकार ने खुद लिया है...?" डार्लिंग ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"इस मामले में डिप्लोमेटिक पॉलिटिक्स से काम लिया गया है...।" मुख्तार ने कहा—"इस मामले में वहां की सरकार ने कुछ भी नहीं कहा है। बयान को गोल-मोल रखा है। इस बात की गुंजाइश रखी है कि जरूरत पड़ने पर वह इस आप्रेशन मिलिटेण्ट के मामले में भारत का नाम जोड़ सके...।"

"आपको तो बहुत गहराई से इन बातों की ज़ानकारी है मिस्टर मुख्तार...।" डार्लिंग ने प्रशंसा भरी निगाहों से उसे देखते हुए कहा।

"जिस शख्स को जिस मामले में इन्ट्रेस्ट होता है, उसे उस मामले में गहराई से जानकारी रखने की आवश्यकता पड़ जाती है।" मुख्तार कहता रहा—"मैं जानता हूं कि मिलिटेण्टों को खदेड़ने का काम आपने किया है...। उन पर कयामत बनकर

आप टूटी हैं...।"

"मैंने अकेले यह काम नहीं किया है...।" डार्लिंग के स्वर में आर्द्रता सिमट आयी—"इस काम में मेरे दोस्त शहबाज खां को अपनी जान की कुर्बानी देनी पड़ी है। इस मिशन में उसने अपने सौ से ऊपर साथियों को लगाया और शायद ही कोई बच पाया।

सुनकर अजीब लगेगा कि शहबाज खां जुर्म की दुनिया का बादशाह माना जाता था...। उसके साथी अपराध-जगत के खलीफा थे...।"

"मुझे इन बातों की भी जानकारी है...। मरी की जनता को भी इस बात की जानकारी है। जनता ने उन सबकी लाशों को पहचाना है और उनका पूरे सम्मान के साथ अन्तिम-संस्कार किया है...जिन्होंने बरसों से जुल्म और नफरत की फसल बोने वालों के खिलाफ हथियार उठा उनका खात्मा किया है...।"

"ओह...!" डार्लिंग बिस्तर छोड़ उठ खड़ी हुई। आगे बढ़कर मुख्तार के कांधों पर दोनों हाथ रखे। प्रसन्नता और संतोष भरे स्वर में कहा—"यह एक बहुत अच्छी खबर दी है तुमने...सबसे अच्छी खबर। नेक काम में अपनी जिन्दगी की कुर्बानी देने वालों का सम्मान होना चाहिए। मरी की जनता ने उन्हें सम्मान दिया...मेरे लिए यह एक सन्तोषजनक खबर है। मरने वाले मरकर जिन्दा तो नहीं हो पाते, मगर उनकी दी हुई कुर्बानी का सम्मान हो तो आने वाली नस्लों को अच्छे काम के लिए कुर्बानी देने की प्रेरणा मिलती रहती है।"

"उधर ऐसा ही हुआ है...।" मुख्तार ने कहा—"और हम सरहदी लोग इस बात की कोशिश करेंगे कि मुरसलीन वालों के विरुद्ध अपनी जान कुर्बान करने वालों को हम अपने जवानों के सामने आदर्श के रूप में पेश करें...।"

"पूरी मानवता के लिए यह एक अच्छा काम होगा।" डार्लिंग इतना कहकर चुप हो गई।

मुख्तार ने अपना स्थान छोड़ दिया। वह उठकर खड़ा हो गया।

उसने अपने उन दो आदमियों को द्वार पर खड़े देख लिया था, जिन्हें उसने कुछ देर पहले बुलाया था। पांच आदमियों को साथ लेकर आने का आदेश दिया था।

मुख्तार दरवाजे की ओर बढ़ा।

डार्लिंग उसके साथ हो ली।

वह जगह पत्थरों के टुकड़ों को जोड़कर बनाई हुई इमारत की शक्ल में थी। दीवारें मोटी और छत ऊंची थी। वहां छोटे-बड़े कई कमरे थे। मुख्तार के दो आदमियों के साथ पांच और हथियारबन्द नौजवान आ गये थे।

मुख्तार ने कबीलाई भाषा में उनसे बातचीत की। फिर डार्लिंग का हाथ पकड़े हुए वह इमारत से निकलकर खुले मैदान में आ गया।

खुले मैदान में आकर डार्लिंग ने चारों ओर निगाह डाली। एक ओर घुड़साल में उम्दा नस्ल के घोड़े बंधे थे।

चारों ओर पहाड़ी बस्तियां थीं। बस्तियां बहुत घनी थीं। झोपड़ों की शक्ल में थी।

इलाका पहाड़ी होने के साथ-साथ हरियाली से भरा तलहटी था...। लोगों का जीवन खुशहाल नजर आता था।

मुख्तार मकान से बाहर खुले मैदान में आया। इस बीच डार्लिंग ने इस बाबत जानकारी दी कि किस तरह वह दुर्घटना का शिकार हुई—तथा कैसे जीप टकराकर पलटी। मुख्तार गम्भीरता से सुनता रहा। उसी समय एक कुत्ता तेजी से भागता हुआ आया...और मुख्तार के कदमों पर लोटने और उसके पैरों को चाटने लगा।

डार्लिंग ने देखा—कुत्ता पहाड़ी था...कद छोटा, मगर बाल सुनहरे और घुंघराले थे...।

मुख्तार के प्रति कुत्ते के प्यार ने डार्लिंग की जानकारी में यह बात ला दी कि वह उसका पालतू, लाडला और वफादार है।

"टीपू...ठीक है...अब तुम जाओ...। मैं बेवक्त घर से बाहर निकल आया, जिसकी वजह से तुम्हारे अपने शिकार में खलल पड़ा...।" कुत्ते को गोद में उठा प्यार से उसकी पीठ पर हाथ सहलाता हुआ मुख्तार उससे यूं बोला जैसे कुत्ते के बजाय इन्सान से बात कर रहा हो।

कुत्ते की चंचलता, फुर्तीलापन, बालों की खूबसूरती ने डार्लिंग का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। वह मुख्तार से सम्बोधित हुई—

"इसका नाम टीपू है...?"

"हां, मेरा प्यारा टीपू...।" कहते हुए मुख्तार ने उसे सीने से लगाया।

डार्लिंग ने देखा टीपू ने सीने से लगाए जाते ही इस अन्दाज़ में आंखें बंद कर लीं जैसे मालिक से मिलते प्यार पर इतरा रहा हो।

"आप तो इससे यूं बातें कर रहे हैं जैसे आपकी हर बात समझता हो?" डार्लिंग ने टीपू के मामले में दिलचस्पी गाढ़ी करते हुए कहा।

"यह वाकई मेरी हर बात समझता है...।" मुख्तार बोला—"देखिए मैं दिखाता हूं...।" कहते हुए उसने टीपू को गोद से नीचे उतारा। झुककर उससे सम्बोधित हुआ—

"टीपू...पहचानो, हमारे बीच नया मेहमान कौन है...सलाम करो नये महेमान को...।"

मालिक का आदेश पाते ही टीपू ने मुंह उठा झट डार्लिंग की ओर भौंका—"भौं...भौं...भौं...ऽऽ।" वह पीछे सरक रहा था...। जमीन से सटा जा रहा था—दुम हिला रहा था...।

डार्लिंग मुस्करायी...।

फिर, टीपू..., पेट के बल आगे सरकता-सरकता डार्लिंग के कदमों की ओर बढ़ा...। ठहरकर अपना अगला धड़ उठाया और अगले पैरों को जोड़कर खड़ा हो गया।

"यह आपको सलाम कर रहा है मिस डार्लिंग...।" मुख्तार ने हर्षित स्वर में टीपू की वफादारी का बखान किया।

"हां...हां...। यह तो वाकई सब कुछ समझता है...।" डार्लिंग खुशी से रोमांचित होकर बोली—"मैं इसके सलाम का क्या इनाम दूं...?"

"इसे इनाम नहीं प्यार चाहिए...। यह अपना शिकार खुद ही पहाड़ियों में कर लेता है...। इसे मैं गोद में लेकर सहलाता हूं...प्यार करता हूं...बस इतने से ही यह मुझ पर जान छिड़कने को तैयार रहता है...।"

"क्या मैं भी इसे गोद में उठा सकती हूं...?" डार्लिंग ने जरा झिझक भरे स्वर में पूछा।

"हां...हां...क्यों नहीं...। इसने आपको सलाम किया है तो

बदले में आपका प्यार तो चाहेगा ही और बेझिझक गोद में उठा लें...। चुमकारें, पुचकारें...। यह आपसे भी मेरे जितना ही प्यार करने लगेगा...। आप कहीं भी आइए-जाइएगा, यह चाहे मील भर दूर हो, हवा में गंध सूंघकर आपके पास भागा चला आयेगा और आपके साथ लग जाएगा...।"

डार्लिंग का जी चाह उठा था कि कुत्ते को गोद में उठाकर प्यार करे...। पर उसके स्वभाव से अनजान थी। मुख्तार ने उसकी झिझक दूर की तो वह उसे गोद में लेने को झुक गयी।

टीपू की प्रसन्नता का पारावार न रहा।

डार्लिंग के गोद में आते ही मुख्तार से भी कहीं ज्यादा वह दुलार और प्यार दिखाने लगा। वह उसके हाथों, बांह, कांधे को...अंग-अंग को चाटने के लिए जैसे बावला हो गया था, और तो और, जब उसने डार्लिंग के गाल को चाटा तो मुख्तार खिलखिलाकर हंस पड़ा।

डार्लिंग ने घबराकर उसे छोड़ दिया।

लेकिन टीपू था कि उछल-उछलकर उसकी गोद में आने के लिए मचला जा रहा था।

"अब तो इसे तुम्हें सम्भालना होगा मुख्तार...।" डार्लिंग घबराकर दो कदम पीछे हटती हुई बोली।

"आप कहिए—टीपू, शराफत से रहो...देखिए, खुद कहना मान जाएगा...।" मुख्तार ने कहा।

डार्लिंग ने मुख्तार के शब्द टीपू के लिए दोहराये।

टीपू ने आदेश पाते ही उछल-कूद रोक दी।

"अब आप गोद में उठाएं...। यह शान्त ही रहेगा।" मुख्तार ने मशविरा दिया।

डार्लिंग ने उसे गोद में ले लिया। वह अब एकदम शान्त था।

डार्लिंग को कुत्ते पर प्यार आ रहा था...। वह वाकई समझदार था..,साथ ही वफादार भी।

और फिर,

मुख्तार, वहां से कुछ फासले पर मौजूद घुड़साल की ओर अपने आदमियों के हमराह बातचीत करते हुए धीरे-धीरे बढ़ने लगा।

टीपू को गोद में उठाए डार्लिंग उनके पीछे हो ली।

घुड़साल में पहुंचे मुख्तार ने सात घोड़े निकलवाए।

डार्लिंग टीपू को गोद में लिये-लिये लपककर मुख्तार के करीब पहुंचती हुई बोली—

"मैं भी इनके साथ अपनी सहेली रेशमा की तलाश में जाना चाहती हूं...अगर आपको एतराज न हो तो...?"

"मुझे कोई एतराज नहीं...।" मुख्तार ने झट कहा—"मामला आपकी सुरक्षा का है...। मुझे खबर मिली है कि मुरसलीन के जासूस आपकी खोज में गंध सूंघते फिर रहे हैं...। उन्होंने उस इलाके को भी टटोला है जहां आपको हमारे आदमियों ने पाया था। मुरसलीन की ओर से आप पर बीस लाख का इनाम घोषित किया हुआ है। अभी तक वे आपकी लाश पाने की टोह में भटक रहे हैं...। जीवित अवस्था में आपके देख लिए जाने पर उनकी सरगर्मियां बढ़ जायेंगी...।"

"वह इलाका किसका है, जहां मुझे आपके आदमियों ने पाया था?" डार्लिंग ने मुख्तार की आशंकाओं को दरकिनार करते हुए पूछा।

"इलाका मेरा ही है...।"

"फिर तो मेरे देखे या न देखे जाने का डर न होना चाहिए...।" डार्लिंग ने निडरता से कहा—"जो बात कल मालूम होने वाली है, यदि वह आज ही मालूम हो जाए तो क्या फर्क पड़ता है...।"

"डर नाम मुख्तार की जिन्दगी में नहीं...।" उसने निडरता भरे स्वर में कहा। फिर बोला—"मेरे आदमी आपकी सहेली को खोजने का अच्छा काम करने आ सकते हैं। साथ ही वे इस बात की टोह भी ले सकेंगे कि आसपास के किसी कबीले वालों के हाथ आपकी सहेली तो नहीं पड़ गयी है...।"

"टोह लेने वाला मामला बाद का है...।" डार्लिंग ने तेजी से बात काटी—"पहला मामला उस स्पॉट पर पहुंचने का है जहां जीप पलटी है...। पहले वहां पहुंचकर रेशमा, जीप और जीप चालक को खोजना है...।" वह कहती रही—"मुझे याद आता है, जिस तरह मैं उलटती हुई जीप से टपककर खड्ड में गिरी, उस हालत में जीप ऊपर ही कहीं रह गयी है। अगर जीप मिल जाती है तो टीपू भी हमारे लिए कारआमद साबित हो सकता है। कुत्ते की सूंघने की शक्ति बहुत तेज होती है। जीप मिल जाती है तो

कुत्ते को उस सीट को सुंघाकर, जिस पर रेशमा बैठी हुई थी, हम टीपू से उसकी खोज में मदद ले सकते हैं...। टीपू तो यूं भी बहुत समझदार है आपका...।"

पता नहीं डार्लिंग के वजनदार तर्क से मुख्तार की दुविधा खत्म हुई थी या फिर टीपू के कारआमद और उसके समझदार होने की प्रशंसा से वह खुश हुआ—उसने कहा—

"ठीक है...। मैं भी आपके साथ चलता हूं...।" उसने पहले वाले दो में से एक को हुक्म दिया—"तनवीर, भागकर मेरे और मेम साहब के हथियार लेकर आओ...।"

आदेश पाकर तनवीर नामक, मुख्तार का जवान मकान की ओर दौड़ा।

"और तुम हबीब, दो घोड़े और लाओ...।" यह आदेश दूसरे जवान को मुख्तार ने दिया। उसे उसने हबीब नाम से सम्बोधित किया था।

दूसरा जवान दो और घोड़े लाने के लिए अस्तबल की ओर दौड़ा।

"हमारे पास घोड़ों के अलावा कहीं आने-जाने के दूसरे साधन नहीं...।" घूमकर मुख्तार डार्लिंग से सम्बोधित हुआ।

"पहाड़ी और ऊबड़-खाबड़ इलाकों में घोड़े ही बेहतरीन सवारी साबित होते हैं...। मैं अच्छी घुड़सवारी जानती हूं...।"

इस बात को सुनकर मुख्तार के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ी कि वह अच्छी घुड़सवारी जानती है। उसने कहा—

"मुझे इसी बात को कहने में संकोच हो रहा था कि खोज में जाने के लिए घोड़े की सवारी करनी पड़ेगी...और इस बात का मुझे इल्म न था कि आप घोड़े पर बैठना पसंद करेंगी या नहीं...।"

"एक मुद्दत के बाद मुझे अपनी मनपसंद सवारी का मौका आपकी वजह से मिलने जा रहा है मिस्टर मुख्तार...।" डार्लिंग बोली।

घुड़साल में जाने वाला हबीब दो घोड़ों की बाग थामे हुए उन्हें बाहर ले आया।

उसी समय तनवीर, हथियारों के साथ मकान से बाहर आता डार्लिंग को नजर आ गया था।

हबीब और तनवीर, मुख्तार के उन जवानों में से थे जो डार्लिंग को अचेतावस्था में खाई से उठाकर लाए थे।

इस प्रकार जाहिर था कि वे ही उस स्थान की सही जानकारी रखते थे जहां वह मिली थी। मुख्तार ने हबीब को अपने साथ रखना पसन्द किया था। उसका घोड़ा हबीब के घोड़े के साथ सबसे आगे था। तनवीर का घोड़ा एक अन्य सवार के साथ पीछे। इसके अलावा दो-दो घुड़सवार दाहिने-बायें लगाए गये थे...इस तरह आठ घुड़सवारों के रक्षा कवच के बीच डार्लिंग के घोड़े को रखा गया था।

चट्टानों, पहाड़ियों और खाइयों को पार करते हुए नौ लोगों की यह टुकड़ी तेजी से पहाड़ियों का सीना चीरती हुई सफर कर रही थी।

इसके साथ ही डार्लिंग ने बड़ी कुशलता से अपने घोड़े की लगाम साध रखने के साथ-साथ दूसरे हाथ से टीपू को भी अपने साथ सम्भाल रखा था।

उसकी घुड़सवारी की कला की मुख्तार ने प्रशंसा भी की थी और हैरत भी जाहिर की थी।

उस समय सूर्य करीब-करीब सिर के ठीक ऊपर पहुंच चुका था। धूप भली लग रही थी। वातावरण में चारों ओर वीराना था।

जल्द ही हबीब की निशानदेही पर उस जगह पर मुख्तार की टुकड़ी पहुंच गयी जहां से नीचे खाई में डार्लिंग, हबीब और तनवीर को अचेतावस्था में मिली थी...उसकी चीख सुनकर वे उस तक पहुंचे थे और बेहोशी की अवस्था में उसे उठाकर वे अपने सरदार के पास ले गये थे...।

"यही वह इलाका है...।" हबीब ने घोड़े की रफ्तार धीमी करते हुए अपने सरदार मुख्तार से कहा।

मुख्तार ने घोड़े की रास ढीली छोड़ी। उसकी गरदन थपथपायी और अपना बायां हाथ उठा देते हुए पीछे आने वालों को घोड़े रोकने का इशारा किया।

घोड़ों के रुकते ही मुख्तार ने जवानों को हुक्म दिया—

"चारों ओर फैल जाओ और होशियारी के साथ मिस डार्लिंग की सहेली की तलाश करो...।"

आदेश पाते ही घुड़सवार फैल गये।

डार्लिंग, मुख्तार के करीब घोड़ा बढ़ाकर आयी। उसकी खोजपूर्ण दृष्टि, व्यग्रता के भाव में लिपटी हुई, चारों ओर का जायजा लेने लगी फिर मुख्तार के साथ-साथ वह भी घोड़े की पीठ से नीचे उतरी।

हबीब और तनवीर के पीछे-पीछे मुख्तार उस ओर बढ़ने लगा जहां के बारे में हबीब और तनवीर को अनुमान था कि वहां से नीचे खाई में उन्होंने डार्लिंग को पाया था।

डार्लिंग ने टीपू को गोद से उतारा।

टीपू ने उसकी गोद से उतरते ही मुंह उठा, चारों ओर हवा में गंध सूंघी।

डार्लिंग ने टीपू के हाव-भाव को देखा। वह अब न दुलार दिखा रहा था ना ही, चंचलता। वह पूरी तरह से शिकारी मुद्रा अख्तियार किये हुए था...।

डार्लिंग उसके हाव-भाव को समझ रही थी।

उसके देखते ही देखते, अचानक ही टीपू एक ओर हवा में मुंह उठाकर भौंका। फिर वह डार्लिंग की ओर भौंकने के स्वर के साथ घूमा...और कदमों को पीछे सरकाने लगा।

मुख्तार का ध्यान कुत्ते की ओर घूमा।

उसका भाव समझते उसे पल भर की भी देर न लगी। उसने कहा—

"मिस डार्लिंग...टीपू ने किसी किस्म की ऐसी गंध पा ली है जिसमें आपकी गंध शामिल है...यह आपको पीछे आने को कह रहा है...।" और फिर डार्लिंग से मुखातिब होने के बाद उसने टीपू से कहा—"शाबाश टीपू...आगे जाओ...।"

मालिक का आदेश पाते ही टीपू भौंकता हुआ एक ओर को दौड़ने लगा।

वह खाई की ऊपर की चट्टान की ओर, किनारे-किनारे तेजी के साथ दौड़ता जा रहा था।

लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ मुख्तार, कुत्ते के पीछे था और

डार्लिंग जैसे टीपू की रफ्तार को पछाड़ने के उद्देश्य से उसके साथ दौड़ रही थी।

अपने साथ दौड़ती डार्लिंग को देख टीपू को जैसे बल मिल गया था। वह अधिक जोश में भरा और भी ज्यादा लम्बी-लम्बी छलांगें मारने लगा। वह रह-रहकर चेहरा घुमाकर डार्लिंग को देखना न भूल रहा था कि वह उसके साथ आ रही है या नहीं। उसका अन्दाजा खासा जोशीला था।

कोई पचास मीटर तक बेतहाशा दौड़ने के बाद कुत्ता रुका। वह कुछ आगे बढ़ गया था। वह बिजली की चमक के साथ पलटा। पलटकर धीमे कदमों से जमीन को सूंघता हुआ वापस हुआ।

"भौं...भौं...भौं...।" एक स्थान पर रुककर, उसने नीचे घाटी की ओर मुंह उठाकर भौंकना आरम्भ किया।

तब तक मुख्तार भी वहां आ गया था।

उसने कुत्ते को पुचकारा।

वह जगह खड़ी चट्टान थी...।

कुत्ता आगे बढ़ा...।

मुख्तार को कदम बढ़ाने में काफी सतर्कता बरतनी पड़ रही थी।

डार्लिंग उसके साथ थी।

कुत्ता रह-रहकर भौंक रहा था। अब वह आगे न बढ़कर पंजों से चट्टान को खुरचने लगा था।

मुख्तार ने हबीब को आगे बढ़ाया—उसका एक हाथ थाम खड़ी चट्टान पर पैर जमाकर उसे नीचे झांकने को कहा।

हाथ थामे जाने से सहारा पाकर, हबीब ने एक कदम आगे बढ़ा, झुककर नीचे देखा।

और नीचे देखते ही—पहली नजर में ही चमकती धूप में उसे वह चीज नजर आ गयी, जिसे टीपू दिखाना चाहता था।

वह जीप थी।

उलटी हुई जीप—जो खाई में जाती-जाती तंग जगह के कारण अटक गयी थी।

"जीप है...।" हबीब ने जोश और हर्ष मिश्रित स्वर में कहा।

"मुझे देखने दो...।" डार्लिंग उतावली होकर बढ़ी।

मुख्तार ने उसे भी हाथ का सहारा दिया।

वह जगह ऐसी ही थी कि बगैर पीछे से सहारा पाये कदम आगे बढ़ाकर नीचे देखा जाना मुमकिन न था...।

डार्लिंग ने झांका...। उसने भी वही देखा जो हबीब ने बताया था।

थ्रिल क्वीन का दिल धड़का। उसके दिल की आवाज उभरी—कहीं उसे इस बात का भ्रम तो नहीं हुआ है कि रेशमा जीप से उछल गयी थी...। ख्याल उभरा—कहीं ऐसा न हुआ हो कि उछलने के बाद ही वह जीप के किसी हिस्से में अटकी रह गयी हो...।

फिर हबीब और डार्लिंग, दोनों ने पैर पीछे खींच लिये।

थ्रिल क्वीन ने रेशमा के मामले में अपनी शंका मुख्तार के सामने व्यक्त की।

"फिक्र न कीजिए...।" मुख्तार ने कहा।

उसने घूमकर अपने इधर-उधर बिखरे घुड़सवारों को आवाज दी।

पहाड़ी इलाके में दूर-दूर तक आवाज कौंधी।

आनन-फानन में घोड़ों की वापस आती टापें गूंजने लगीं। एक मिनट के अन्दर सबके सब वहां जमा थे।

टीपू को गोद में उठाए, उसे पुचकारता, जीप की खोज कर लेने की शाबाशी देता हुआ मुख्तार, अपने आदमियों से खाई में धंसी जीप को बाहर निकालने के बाबत परामर्श करने लगा।

वह खाई लगभग सौ फुट गहरी थी...। अच्छी बात यह थी कि नीचे की जमीन कच्ची, घास तथा पहाड़ी पेड़ों के सूखे पत्तों से अटी पड़ी थी। यही वजह थी कि नीचे गिरने के बाद डार्लिंग का जिस्म टूट-फूट से बचा रह गया था।

लेकिन, गहराई के कारण, बगैर मजबूत सहारे के रिस्क नहीं लिया जा सकता था।

"अच्छी बात यह है कि हर घोड़े के साथ रस्सी के छल्लों का भी इन्तजाम है...।" डार्लिंग ने घोड़ों पर नजर डालकर उत्साहित स्वर में कहा।

"हां। पहाड़ियों में घोड़ों के सहारे रहने वाले हम सभी कबीलाई लोग घोड़ों के साथ हमेशा ही दो चीजें जरूर रखते हैं—

सौ फुट का रस्सियों का छल्ला और पानी से भरी मशक...। इन इलाकों में घुड़सवार एक बार हथियार के बगैर तो निकल सकते हैं मगर रस्सी के छल्ले और पानी से भरी मशक के बगैर नहीं...।

रस्सी खाइयों से निकलने में मदद पहुंचाती है और पानी की मशक राह भटकने पर जिन्दगी की हिफाजत करती है। ये दोनों चीजें घोड़े के जीन के साथ हमेशा कसी रहती हैं।"

मुख्तार ने बताया। वह खुद भी डार्लिंग के कथन का आशय समझ चुका था।

"रस्सियां खोली जाएं...।" डार्लिंग ने कहा—"दो लोगों को रस्सियों के सहारे नीचे उतारा जाए—चट्टानों से रस्सियों का एक सिरा बंधा होना चाहिए और दूसरा सिरा उतरने वाले की कमर में कसा होना चाहिए...।

उसके साथ दो-दो अतिरिक्त रस्सी भी चाहिए जिसके सहारे वह उतरें और फिर जीप तक पहुंचने के बाद चार रस्सियों से जीप को बांध आने का कार्य करें...।"

"हां...ऐसा ही किया जाएगा...।" मुख्तार ने उसका परामर्श स्वीकार करके कहा—"जीप से रस्सियां बांधने के बाद, उसे घोड़ों की सहायता से ऊपर खींच लिया जाएगा। इन सबके साथ इस बात पर भी निगाह रखी जाएगी कि आपकी सहेली किसी भी अवस्था में जीप में, या जीप के आस-पास कहीं मिलती है तो उसको भी लाने का इन्तजाम हो...।"

"मैं सन्तुष्ट हूं...।" डार्लिंग ने कहा।

व्यवस्था होने लगी।

रस्सियां बांधी जाने लगीं।

दो नहीं तीन लोगों को नीचे उतारे जाने की योजना अमल में लायी गयी। तीसरे आदमी को रेशमा की खोज में लगाया गया—जिसे जीप के आसपास के साथ-साथ खाई में उतरकर खोज कार्य में लगना था।

पहाड़ियों में रहने वाले कबीलाई लोग जहां हृष्ट-पुष्ट, दिलेर थे, वहीं खाइयों में उतरने के कार्य में अभ्यस्त भी।

कार्य होने लगा।

थ्रिल क्वीन रेशमा के लिए बेताब और बेचैन थी।

खाई में, जीप तक रस्सी के सहारे पहुंचने वाले लोगों की

ओर से पहली सूचना आयी—

"जीप की चालक सीट पर जख्मी चालक, सीट और स्टेयरिंग के बीच फंसा हुआ मृत है। चालक के अलावा जीप में, जीप के आसपास, उभरी चट्टानों या नीचे खाई में कोई और नहीं है...।"

नीचे से आयी सूचना को सुनकर डार्लिंग ने व्यग्रता और अधीरता के साथ कहा—

"मुझे खुद उनके साथ नीचे जाना चाहिए था...। मैं जानना चाहती हूं कि सिर्फ मुझे एक रस्सी की आवश्यकता पड़ेगी...।"

"मिस डार्लिंग...।" मुख्तार ने उसके कांधे पर हाथ रखकर कहा—"क्या आपको मुझ पर, मेरे आदमियों पर भरोसा नहीं...?" वह कहता रहा—"मैं यह तो नहीं कहूंगा कि वे आपसे बेहतर काम कर सकते हैं...। लेकिन यह जरूर कहूंगा कि आपकी जिन्दगी हमारे लिए हमारे आदमियों के मुकाबले हज़ार गुना मूल्यवान है। अगर हमारे आदमी कामयाब नहीं होते तो आपकी जगह मैं नीचे जाऊंगा...। मगर कुछ देर आपको धैर्य रखकर प्रतीक्षा करनी पड़ेगी...।"

डार्लिंग बेचैन रही...। उस मंजिल पर आकर रेशमा के लिए उसकी बेचैनी में पल-पल बढ़ोत्तरी होती रही...। वह उसे देखना चाहती थी...। उसकी कुशलता की कामना कर रही थी। पर मुख्तार के परामर्श को मानना भी जरूरी था। उसने मन पर पत्थर रखा। उसी समय, नीचे से अगली सूचना आयी—

"जीप के अगले और पिछले हिस्सों में रस्सियां मजबूती से बांधी जा चुकी हैं...। जीप को खींचा जा सकता है...।"

"ठीक है...। जीप खींचने के काम में घोड़ों को लगाया जा रहा है...।" मुख्तार ने बुलन्द आवाज में कहा—"और हबीब।"

उसकी आवाज पर हबीब की खाई से आवाज आयी—"हुक्म सरदार...।"

"तुम नीचे उतर जाओ खाई में...। रेशमा की तलाश में जरा भी कोताही मत बरतो...।"

"मैं ऐसा ही करने जा रहा हूं सरदार...।" हबीब का स्वर उभरा।

और फिर,

मुख्तार ने पलटकर आगे बढ़ते हुए घोड़ों को एक सीध में

खड़े करने का हुक्म दिया। फिर चट्टानों में बंधी रस्सियों के सिरों को खोलकर, घोड़ों की पीठ में बांधे जाने का काम किया जाने लगा।

रस्सियां मजबूत थीं—घोड़े भी हृष्ट-पुष्ट थे...।

नौ अश्व शक्ति और सुल्तान व डार्लिंग सहित छः ऊपर मौजूद लोगों की सूझबूझ काम करने लगी। रस्सियों को सहारा देने के बाद, आवाज देकर एक साथ घोड़ों को जीप खींचने के कार्य पर लगाया गया।

नीचे जीप के करीब, खाई में मौजूद दो लोग भी इस काम में लगे थे कि जीप के खिंचते समय कोई छोटा-मोटा अवरोध आये तो वे उसे हटा सकें।

घोड़ों का जोर लगाने तथा इन्सानी सूझबूझ का परिणाम सामने आना शुरू हुआ।

जीप खिंचती हुई ऊपर आने लगी। उसी के साथ ऊपर आने लगा...जीप चालक नवेद असलम सूडानी का स्टेयरिंग और सीट के बीच भिंचा हुआ मृत शरीर...।

जीप चट्टान के ऊपर आकर घिसटी।

मुख्तार प्रसन्नता के जोश में चीखा—

"शाबाश मेरे शेरों...।"

उसकी यह शाबाशी, अपने जवानों और घोड़ों के लिए थी।

चट्टान के डेंजर प्वाइण्ट से जीप के ऊपर आते ही, डार्लिंग आगे को दौड़ी। सेकण्डों में स्टेयरिंग और सीट के बीच फंसे सूडानी के पास पहुंच गयी। उसने उसके हाथ को छूकर देखा—हाथ ठण्डा था और जिस्म भी। उसे मरे हुए कई घण्टे हो गये थे। उसकी आंखें खुली हुई थीं। चेहरे पर पीड़ा की कष्टदायक परछाइयां थीं।

अगली नजर में स्पाई क्वीन की निगाह चालक सीट पर पड़ी—जिस पर खून की मोटी परत जमी हुई थी...। सूडानी के कमर के नीचे के वस्त्र रक्त से भीगे हुए थे। बाएं कांधे से छः इंच नीचे से खून बहता वस्त्र भिगोता हुआ सीट पर जा जमा होता गया था।

यह चोट का जख्म था या कुछ और—इस बात को जानने के लिए स्पाई क्वीन आतुर हुई।

उसने दोनों हाथ बढ़ा सूडानी के जिस्म को बाहर खींचना चाहा...लेकिन यह काम आसान न था।

मुख्तार आगे बढ़कर आया। उसने अपने आदमियों को हुक्म दिया—

"ड्राइवर की लाश बाहर निकालो...। स्टेयरिंग मोड़ दो...सीट तोड़ दो...।"

उसका आदेश पाते ही चार आदमी इस काम में लग गये।

तभी खाई के नीचे से आवाज आयी—

"सरदार...इधर कुछ नहीं है...।" आवाज हबीब की थी।

डार्लिंग को अब यकीन आया कि रेशमा के मामले में उसका भ्रम ही था कि वह कूदते समय जीप के किसी हिस्से में फंस गयी होगी। उसने मुख्तार से कहा—

"अपने आदमियों को ऊपर आ जाने के लिए कहो...।" उसने रुककर बताया—"मैं इस मामले में अब श्योर हूं कि जीप उलटने से पहले रेशमा जीप से कूद गयी थी...। अगर इस बात की जानकारी हो जाए कि चट्टान के किस हिस्से से जीप टकराकर उछली थी तो मैं उस स्थान का अनुमान लगा सकती हूं जहां रेशमा कूदी थी। समय के अनुमान के सहारे वहां से उस स्थान की दूरी का अन्दाजा लगाया जा सकता है।"

अपनी बात उसने पूरी की ही थी कि तभी टीपू को उसने अपने पैरों के करीब 'कूं...कूं' करते हुए देखा।

टीपू ने जीप खोज निकाली थी—डार्लिंग के मस्तिष्क में उम्मीद की तेज किरण चमकी थी—वह रेशमा की खोज में भी मददगार हो सकता है...।

पर कैसे...?

इस सवाल के उभरते ही उसके कम्प्यूटरीकृत मस्तिष्क में बात कौंधी जिस्म की गंध सूंघकर।

टीपू ने उसकी गंध सूंघकर, जीप में बसी उसकी गंध के कारण, जीप तलाश कर ली थी...वह जीप की सीट पर मौजूद रेशमा की गंध को सूंघकर उसका भी पता लगाने की कोशिश कर सकता है।

इस ख्याल के आते ही उसकी आंखों में आशा भरी तेज चमक पैदा हुई। उसने फुर्ती के साथ झुककर टीपू को उठाया। गोद

में लिए हुए, उसके सिर पर सहलाव करते हुए वह जीप की ओर बढ़ी।

उसने जीप के दाईं ओर सीट की ओर टीपू को इशारा किया...। अंगुली के इशारे से छूकर इस बात को समझाने की चेष्टा की कि वह रेशमा की गंध सूंघे।

रेशमा उसी सीट पर बैठी हुई थी...और वह खुद उसके सामने वाली सीट पर थी जब जीप का सन्तुलन बिगड़ा था।

टीपू ने बाईं ओर की सीट सूंघ-सूंघ कर दो-तीन बार उसके हाथ को चाटा। भौंका...। इस बात को बताने की शायद चेष्टा की कि वातावरण में उसकी गंध बसी हुई है।

"हां...हां...टीपू तुम ठीक समझ रहे हो...।" डार्लिंग रेशमा वाली सीट पर बार-बार अंगुली से इशारा करती हुई भावुक स्वर में बोली—"इस पर मेरी सहेली रेशमा थी टीपू...। रेशमा...मुझसे खो गयी है...बिछुड़ गयी है...। मेरी रेशमा को तलाश करने में मदद करो टीपू...।"

टीपू ने सूंघने की क्रिया रोकी। उसने चेहरा उठा दाईं ओर अपना मुंह मोड़ा। वह धीरे से भौंका और गोद से उतरने को मचलने लगा।

"मिस डार्लिंग...टीपू को छोड़ दो...। यह आपकी सहेली की गंध को पा चुका है...। यह इस बात को भी समझ चुका है कि आप क्या चाहती हैं, यह अपना प्रयास करने को बेचैन हो गया है...।"

अपने कुत्ते के स्वभाव को जानकर मुख्तार ने कहा।

स्पाई क्वीन खुद भी यही सब समझ रही थी। उसने टीपू को जीप की सीट से नीचे उतारा।

उतारे जाते ही टीपू इधर-उधर फुर्ती से भागा...।

फिर कुछ आगे जाकर वह चट्टान सूंघने लगा। वह सीध में कुछ दूर आगे बढ़ा।

स्पाई क्वीन...मुख्तार और उसके कुछ जवान उत्सुकता में भरे हुए टीपू के पीछे-पीछे बढ़े।

कुछ दूर आगे-बढ़ने पर टीपू एक स्थान पर ठहरा। उसने वहां का चक्कर काटा।

डार्लिंग और मुख्तार ने उस स्थान पर पहुंचने के बाद

देखा, वहां के चट्टान की एक परत टूटकर उखड़ी हुई थी।

चट्टान के उस हिस्से पर जीप के टकराव का निशान साफ नजर आ रहा था।

"यही वह जगह है...।" डार्लिंग ने द्रुतगति से निर्णय लेते हुए मुख्तार से कहा—"जहां से जीप टकराकर हवा में उछली थी...। यहां से बीस-तीस मीटर पहले, किसी स्थान पर रेशमा ने जीप के दुर्घटनाग्रस्त होने की आशंका से घबराकर बाहर जम्प मारी थी।"

इससे पहले कि मुख्तार कुछ कहता, टीपू एक ओर को तेजी से भौंकता हुआ दौड़ पड़ा।

उसके दौड़ने की आवाज ठीक वैसी ही थी जैसे वह जीप तलाश करने के लिए दौड़ा था।

थ्रिल क्वीन टीपू के पीछे-पीछे दौड़ पड़ी।

कुत्ते ने कोई भी धोखा न खाया था। वह छलांगें मारता हुआ डार्लिंग के अनुमान के ठीक अनुसार, तीस मीटर के आसपास के फासले पर, एक घनी, सूखी झाड़ियों के बीच जा ठहरा। फिर उस स्थान पर घूम-घूमकर, चक्कर काटते हुए, मुंह उठा भौंकने लगा।

वह दो उभरी हुई चट्टानों के बीच समतल...और मटियाली जगह थी। वहां हरी-सूखी वनस्पतियां और ऊंची झाड़ियां थीं।

उस जगह पहुंचते ही थ्रिल क्वीन की निगाह घनी झाड़ियों के बीच वस्त्रों और इन्सानी जिस्म पर पड़ी।

वह झाड़ियों में, घुसती हुई लगभग भागती अवस्था में आगे बढ़ गयी। उसके दिल की धड़कनें बुरी तरह बढ़ी हुई थीं...उसकी प्रसन्नता सागर की लहरों की तरह उछालें ले रही थी।

उसकी रेशमा मिल गयी थी। उसने रेशमा को खोज लिया था।

मुख्तार के वफादार टीपू ने रेशमा की तलाश में उसे भरपूर मदद दी थी।

और इससे पहले कि वह रेशमा पर झुकती...उसका मन उल्लास के हिण्डोले पर झूल उठा...।

रेशमा की हल्की कराह उसके कानों में पड़ी।

वह झपटकर रेशमा पर झुकी।

रेशमा की सांसें चल रही थीं।

वह जीवित थी...। अचेत थी...।

उसके कपड़े अस्त-व्यस्त थे...। जगह-जगह से झाड़ में उलझने के कारण उसके हाथ-पैरों में, और न जाने कहां-कहां खरोंचे थीं।

खेरोंचों के कारण उसके गोरे, यौवन की तरुणाई से आभायुक्त अंगों से खून की सुर्खी झलकी पड़ रही थी।

डार्लिंग का दिल हिला...। लेकिन, वह जिन्दा थी...इस बात से बढ़कर उसे और खुशी क्या मिल सकती थी।

ब्यूटी क्वीन ने झुककर अपने जिस्म का उस पर परदा किया। उसके ऊपरी वसन के, उन हिस्सों को, नजाकत और नफासत के साथ ढंका, जो कपड़े फट जाने के कारण नुमाया हो रहे थे।

उसकी जवानी—आकाश पर खिले चन्द्रमा की तरह झांक रही थी...। चन्द्रमा की चांदनी का दीदार कोई मर्द करे, यह डार्लिंग को मंजूर न था।

उसके वसन को सही कर ब्यूटी क्वीन ने उसे कांधों से थामकर हिलाया। धीमे से प्यार भरे स्वर में आवाज दी—

"रेशमा...रेशमा मेरी जान...। आंखें खोलो...देखो मैं तुम्हें ढूंढते-ढूंढते यहां आ गयी हूं...।"

रेशमा ने हिलाने-डुलाने से भी आंखें न खोलीं।

मुख्तार सहित उसके सभी आदमी उसके गिर्द गोल घेरे में आ खड़े हुए थे।

"शुक्र है खुदा का कि तुमने अपनी सहेली को ढूंढ निकाला मिस डार्लिंग...।" मुख्तार ने प्रसन्नता भरे स्वर में कहा।

"मैं शुक्रिया अदा करती हूं टीपू का...जिसने मेरी सहेली को खोज निकालने में मेरी मदद की मुख्तार...।" डार्लिंग ने हर्षित स्वर में कहा।

और फिर, उसने रेशमा को बांहों से थामकर उठाया। उसके अचेत जिस्म को कांधे पर लाद लिया।

उसका बोझ वह बहुत आराम से उठाकर चल सकती थी। फिर, उन्हें वापस जीप तक पहुंचते देर न लगी।

उस समय तक जीप से नवेद असलम सूडानी को बाहर निकाला जा चुका था।

उसे मुंह के बल लिटा रखा गया था। उसकी शर्ट मुख्तार के आदमियों ने उलट रखी थी।

डार्लिंग ने सूडानी के करीब पहुंचते ही पहली नजर में देखा—पीठ की ओर से, बाएं कंधे से छः इंच नीचे, पसलियों के करीब जिस्म में बुलेट होल था...।

उसी बुलेट होल से उबलकर उसके जिस्म का खून बाहर आता हुआ उसके कपड़े और सीट को भिगो गया था।

डार्लिंग ने बुलेट होल देखा—सोचपूर्ण भाव में उसकी आंखें सिकुड़ीं और वह सोचने लगी—नवेद असलम सूडानी को गोली कैसे लगी और किसने मारी...?

वह इस बात को समझ गयी थी गोली लगने के बाद ही सूडानी का हाथ स्टेयरिंग से बहका था...स्टेयरिंग बहकने की वजह से ही गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हुई थी।

फिर उसने सोचा—अभी इस बात पर विचार करने का वक्त नहीं। जो मर गया उसे लौटाया नहीं जा सकता।

वह रेशमा को जल्द से जल्द होश में लाने की फिक्र में जुट गयी। उसे आराम से समतल चट्टान पर लिटाया।

रेशमा के लिटाए जाते ही टीपू ने उसे भी अपने बीच के सदस्य के रूप में स्वीकार कर लिया। वह दौड़-दौड़कर उसके चारों ओर चक्कर काटने लगा। उसके तलुए और हथेलियां चाटीं। उसके कपोल और माथा चाटा।

परन्तु रेशमा होश में न आयी।

"पानी लाओ...।" डार्लिंग ने कहा। वह खुद रेशमा के प्राथमिक उपचार क्रिया में जुटी हुई उसे होश में लाने का प्रयास कर रही थी। मुख्तार ने पानी की जरूरत डार्लिंग के कहने से पहले ही समझ ली थी। वह अपने घोड़े से पानी की मशक खोलकर कांधे पर टांगे खड़ा था। डार्लिंग के पानी लाने की बात कहते ही उसने आगे बढ़कर कहा—

"पूरी मशक हाजिर है मिस डार्लिंग...।"

डार्लिंग ने आभार भाव से उसे देखा। उसने उस समय रस्सी के अलावा घोड़े के साथ मशक की मौजूदगी की महत्ता को सही प्रकार से समझा। उसने मशक लेकर उसका मुंह खोला। गोद में मशक को रखकर मशक के खुले मुंह से, एक हाथ की अंजुली

में पानी लेकर रेशमा के चेहरे पर छींटे मारे।

मशक में होने के कारण पानी ठण्डा था। पहला छींटा मारते ही रेशमा का जिस्म कुनमुनाया। उसके होंठ खुले। हल्की कराह भरी आवाज उसके लबों से फूटी—

"पानीऽऽऽ।"

डार्लिंग हर्ष से गद्‌गद् हो उठी। दूसरी बार अंजुली भरी। रेशमा के होंठों के पास अंजुली ले जाकर उसके मुंह में पानी डाला।

उसने तीन बार अंजुली भर-भरकर पानी पिलाया।

रेशमा ने आंखें खोल दीं।

उसने पहचानने वाले भाव में इधर-उधर दृष्टि घुमायी। उसकी निगाह चारों ओर घेरा बनाए अजनबी, हथियारबन्द चेहरों पर पड़ीं।

इससे पहले कि उसके चेहरे पर, उन अजनबी लोगों के लिए डर का भाव उभरता, डार्लिंग ने प्यार से अपने दोनों हाथ उसके कपोलों पर रखकर कहा—

"मैं भी हूं रेशमा...तुम्हारी डार्लिंग...।"

उसकी आवाज खुशी से कांप रही थी।

रेशमा की निगाहें उससे मिलीं। उसकी आंखों में हर्ष की चमक उभरी।

"शुक्र खुदा का...।" उसके होंठों से स्वर फूटा।

फिर उसने उठ बैठने की चेष्टा की।

"आराम से...।" ब्यूटी क्वीन ने उसे सहारा देते हुए कहा। उसके उठते ही सीने से लगा लिया।

"मैं तुम्हारी नई जिन्दगी के लिए ईश्वर का धन्यवाद अदा करती हूं रेशमा...।" वह उसे लिपटाए रही। थपकियां देती रही। हर्ष से भरी भर्राई आवाज में कहती रही—"मैंने तो तुम्हारी जिन्दगी की उम्मीद ही छोड़ दी थी रेशमा...। दिल बार-बार इस ख्याल से धड़कता था कि कहीं मैंने तुम्हें हमेशा-हमेशा के लिए खो तो नहीं दिया है...। तुम्हें टीपू का शुक्रगुजार होना चाहिए। जिसने तुम्हें खोज निकालने में हम सबकी मदद की...। मैं दिल से शुक्रगुजार हूं सरदार मुख्तार और उनके साथियों का, जिन्होंने मेरी जिन्दगी बचायी...तुम्हें खोजने में सबने मदद की...।"

रेशमा ब्यूटी क्वीन के सीने से अलग हटी। उसने अपने आपको सम्भाल लिया था। उसने टीपू की ओर प्यार भरी नजरों से देखा।

प्यारा-वफादार कुत्ता करीब खड़ा 'कूं...कूं' करता दुम हिला रहा था। रेशमा ने उसकी ओर प्यार भरी नजरों से देखा तो वह प्यार का जवाब दुलार से देने के लिए उसकी गोद में उछल आकर उसका मुंह चाटने के लिए उसने अपना मुंह लपकाया।

उसके स्वभाव से अनजान रेशमा ने घबराकर चेहरा पीछे कर लिया।

डार्लिंग ने हँसते हुए टीपू को अपने हाथों में उठा लिया उसका सिर सहला, दुलराती हुई बोली—

"टीपू...जब रेशमा पूरी तरह ठीक हो जायेगी तब जी भरकर तुम इससे प्यार कर लेना।"

रेशमा की निगाहें सरदार मुख्तार और उसके आदमियों की ओर उठ रही थीं। फिर वह भी उठ खड़ी हुई।

डार्लिंग के बताने पर उसने जीप चालक नवेद असलम की लाश की ओर देखा। उसकी आंखों में चौंकने के भाव आये।

"नहीं रेशमा...।" रेशमा का कांधा थपककर थ्रिल क्वीन पूरी गम्भीरता से बोली—"तुम्हारा ख्याल गलत था कि सूडानी हमें मार डालना चाहता था, हकीकत यह है कि इसे मार डाला गया है। गोली लगने के बाद इसका जिस्म स्टेयरिंग पर गिर गया था...गाड़ी इसी वजह से बहकी...। गोली खाने की पीड़ा में डूबने के कारण इसका पैर एक्सीलेटर पर बेतहाशा दबा, जिसकी वजह से गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त होने के लिए बेकाबू हुई...। इस ढंग से गोली लगी कि पीठ की ओर से पसलियों में उतरती दिल को टच कर गयी...जिसकी वजह से यह न चीख सका, ना ही मौत से संघर्ष करने के लिए तड़प सका...। इसने हमें मार डालने की चाहत करने की गद्दारी नहीं बल्कि वफादारी की। रेशमा! इसकी वफादारी को मैं सलाम करती हूं...।"

कहते हुए डार्लिंग का हाथ नवेद असलम सूडानी के लिए सलाम करने की मुद्रा में माथे तक पहुंच गया।

और फिर,

सरदार मुख्तार के काफिले के साथ वापसी पर जहां डार्लिंग

के घोड़े पर रेशमा उसके साथ थी, वहीं मुख्तार ने अपने घोड़े पर सूडानी के मृत शरीर को संभाल लिया था।

तुगलई बस्ती,

जिसे ईरान की धरती के सरहदी इलाके में स्थित, छोटे-छोटे कबीलों की बस्ती के रूप में जाना जाता है।

वहां की घाटियों और पहाड़ियों के बीच, कटोरे जैसे आकार की समतल भूमि पर पिछले कुछ दिनों से बस्ती वाले नये किस्म की हलचल देख रहे थे। आये दिन नई मशीनें वहां लायी जा रही थीं...। खुदाई के काम में मशीनों को लगाया जा रहा था। सरकारी वर्दीधारी लोगों ने तार की घेराबंदी करके, बस्तियों के लोगों को घेरे में आने से रोक लगा दी थी। इन सब के बावजूद बस्तियों के लोग खुश थे। उनकी खुशी की वजह यह थी कि उनकी आय के साधन यकायक बढ़ गये थे। उन्हें अच्छी मजदूरी पर काम पर लगाया जाने लगा था। छोटे-छोटे होटल, रेस्टोरेन्ट खुल गये थे जहां हर समय ग्राहकों की अच्छी खासी भीड़ आती-जाती रहती थी।

बस्ती वालों को यह तो न मालूम था कि वहां क्या हो रहा है, मगर इस बात का जरूर पता था कि जो कुछ था, वह हथियारबंद वर्दीधारियों की देख-रेख में हो रहा था...। और इस सबसे उन्हें खासा आर्थिक लाभ मिल रहा था।

उसी तुगलई बस्ती के एक हिस्से में, एक ऊंची चट्टान पर खड़ा, आंखों पर दूरबीन चढ़ाए बारूद अली, कटोरे जैसे आकार वाले स्थान पर निगाहें गड़ाए पूरी बारीकी से वहां की भौगोलिक स्थिति का निरीक्षण कर रहा था।

जिस चट्टान पर वह खड़ा था—उसके पीछे के समतल बस्ती वाले मैदान में उसका टू सीटर छोटा हेलीकॉप्टर खड़ा था।

धूप सिर पर चढ़ी हुई थी...। दूरबीन सम्भाले बारूद अली की तन्द्रा, पीछे से उभरती घोड़ों के टापों से भंग हुई।

वह घूमा।

दूरबीन आंखों पर चढ़ी रहने दी। पर घूमते ही उसने

अन्दाज किया कि दूरबीन की आवश्यकता नहीं रह गयी है, क्योंकि घुड़सवार काफी नजदीक आ चुके थे।

घुड़सवारों की संख्या पांच थी। पांचों हथियारों से लैस थे।

घोड़े, पहाड़ियों का घुमावद्रार रास्ता तय करके तेजी के साथ उसी दिशा में बढ़े चले आ रहे थे, जहां बारूद अली खड़ा था। उसने आने वालों को पहचान लिया था। वे उसके कबीलाई मिलिटेण्ट थे। वे उसके प्रति पूरी वफादारी का जज्बा रखते थे।

पांचों के तेजी से आने के अन्दाज से बारूद अली समझ गया था कि उनके पास इस समय कोई बहुत जरूरी संदेश है।

वह चट्टान से पहाड़ी पर, घुड़सवारों के बढ़कर आने की दिशा में तेजी से उतरने लगा।

पांचों घुड़सवार उसके करीब पहुंचते ही उतर पड़े। उसे सलाम बजाते हुए उसके सामने पहुंचे।

"क्या खबर लाए हो साथियों...?" बारूद अली ने व्यग्रता के स्वर में एक से पूछा।

"हमारे जासूसों ने खबर दी है कि आपकी ओर से वितरित करायी गयी फोटो वाली खूबसूरत युवती, जिसका नाम आपने डार्लिंग भटनागर और जिसका परिचय इण्डियन स्पाई के रूप में दिया था, उसकी लाश नहीं खोजी जा सकी, वह मुसल्लम...टूट-फूट के बगैर देख ली गयी है...। वह जीवित अवस्था में देख ली गयी है...।" बारूद अली यूं चौंका जैसे उसके बारूद बनाने का कोई फार्मूला गड़बड़ाकर फट गया हो। उसने झट पूछा—"कब, कहां, कैसे...?"

"उसे सामी कबीले के सरदार मुख्तार के साथ हमारे आदमी ने देखा था...।" दूसरे घुड़सवार ने बताया—"वह खुद भी घोड़े पर थी...। उसके साथ सामी कबीले का सरदार मुख्तार तथा उसके अन्य सात घुड़सवार थे...। अपने आदमी से खबर पाते ही मैं उस ओर गया। मैंने छुपकर उनकी सारी गतिविधियां दूर से मगर दूरबीन से बहुत साफ-साफ देखीं...।"

"तुमने क्या देखा?" बारूद अली ने इस अन्दाज में पूछा जैसे वह मारे व्यग्रता के मरा जा रहा हो। जल्दी से कहा—"सरदार हसन मिर्जा जल्दी से जानकारी दो...।"

दूसरा वाला, जिसे बारूद अली ने सरदार हसन मिर्जा

कहकर सम्बोधित किया था—वह जल्दी-जल्दी रिपोर्ट देने लगा।

उसकी रिपोर्ट जीप के खाई से निकलने तथा रेशमा को खोज निकालने की जानकारियों से सम्बन्धित थीं।

"ओह!" अधीरता के साथ सरदार हसन मिर्जा की रिपोर्ट सुनने के बाद, बारूद अली अपने हाथों की मुट्ठियां भींचकर बुदबुदाया—"हरामजादी कुतिया...। इस बार भी बच गयी...।"

बारूद अली के दाएं हाथ की बांह में बैण्डेज उस समय भी था, मगर गले में हाथ को सहारा देने वाली पट्टी अब न रह गयी थी।

बांह में बंधी बैण्डेज का वजन भी अब पहले से काफी हल्का हो गया था।

"और, ताज्जुब इस बात का भी है कि उसे सामी कबीले के सरदार मुख्तार का साथ मिल गया है। सामी सरदार ने इण्डियन स्पाई को संरक्षण दे दिया है।" पहले वाले ने जानकारी दी—"सरहदी कबीले में सामी सरदार की हैसियत सबसे बड़े सरदारों में है। सामी सरदार को हम अपनी नीतियों के साथ अभी तक जोड़ नहीं पाये हैं। वह हमारी नीतियों का कट्टर मुखालिफ है...।" पहले वाले ने बारूद अली को जानकारी दी।

सरदार हसन मिर्जा को, डार्लिंग के जीवित होने की खबर सुनकर कुछ देर के लिए उत्तेजना और बौखलाहट का शिकार होने वाला बारूद अली अब धीरे-धीरे शान्त होता जा रहा था।

उसने कहा—

"हमें सरदार मुख्तार की नीतियों की न तो कोई परवाह है ना ही उसकी हैसियत से हमें कोई सरोकार है। क्योंकि हम उसके विरुद्ध एलाने-जंग नहीं करने जा रहे हैं...।"

"फिर...?"

"सरदार हसन मिर्जा, तुम्हारी पूरी रिपोर्ट सुनने के बाद मैं इस बात के लिए इत्मीनान कर चुका हूं कि इण्डियन स्पाई अपनी मौत अपने आप मरेगी...।"

"कैसे और क्योंकर?" सरदार हसन मिर्जा ने उत्सुकता के साथ पूछा।

"देखो और इन्तजार करो...।" बारूद अली ने इत्मीनान के साथ कहा—"यह खबर सुबह तक हमारे पास आ जाएगी कि इण्डियन स्पाई इस दुनिया में नहीं रही...।"

कहकर बारूद अली आगे बढ़ा।

वह पांचों घुड़सवारों के साथ पहाड़ी ढलवान का रास्ता धीरे-धीरे पैदल तय करता हुआ नीचे उतरने लगा था। उसके होठों पर चिंता के बजाय संतोष भरी मुस्कान थी।

रात की स्याही में लिपटा पहाड़ी बस्तियों का सन्नाटा सांय-सांय कर रहा था।

सरदार मुख्तार की, एक बड़े भूभाग में निर्मित इमारत के एक आरामदेह कक्ष में रात की रौनक कुछ ज्यादह ही रंगीन और मदहोश होकर सिमट आयी थी, इसकी वजह यह थी कि ब्यूटी क्वीन डार्लिंग के पहलू में गुलबदन, जाफरान की बूटी जैसी रंगत वाली रेशमा थी।

सरदार मुख्तार ने, झाड़-झंकाड़ों में उलझने के कारण रेशमा की पोशाक की जगह-जगह से फटे होने की अवस्था देख ली थी—अतः उसके लिए पोशाक की व्यवस्था, खुद करा दी थी।

पोशाक कबीलाई थी। रंग-बिरंगी, ढीली-ढाली थी—ईरानी कबीलाई युवतियों की वह पसंदीदा पोशाक थी। वह नीचे से मैक्सी आकार की थी। ऊपर से टाइट फिटिंग...बांहें ढीली-ढाली और फुल थीं। गले के आखिरी छोर तक चेन खिंचकर गले को ढंकती थी।

उस पोशाक के साथ नकाबनुमा स्कार्फ था—जिससे माथा और नाक तक का भाग ढंकता था—उसकी जरूरत कबायली युवतियों को घर से बाहर निकलने पर पड़ती थी—बावजूद इसके ब्यूटी क्वीन ने डार्लिंग रेशमा को स्कार्फनुमा नकाब भी पहना दिया था। वह इस बात को देखना चाहती थी कि स्याह बादलों के बीच झांकता महताब कैसा दिल को मोहने वाला लगता है।

पोशाक के अलावा मुख्तार ने जड़ी-बूटियों के लेप तथा पौष्टिक पेय पदार्थों की व्यवस्था भी करायी थी। लेप इसलिए थे क्योंकि उसने रेशमा के जिस्म पर खरोंचों को भी देखा था...खरोंचों के जख्म को जल्द से जल्द अच्छा कर देने की खूबी लेप रखते थे। पौष्टिक पेय पदार्थ, दर्द निवारण और चैन की नींद सोने के

लिए कारआमद थे...। उनसे सुकून आता था, नींद आती थी।

डार्लिंग और रेशमा को मेहमान खाने के रूप में जिसकी व्यवस्था मुख़्तार ने करायी थी वह काफी लम्बा-चौड़ा था। बिस्तर आरामदेह था। वहां खाने-पीने की चीजों की सुविधा भी मुहैया थी। एक कोने में कांच के लैम्प में जलती हुई शमा की लौ हल्के-हल्के थरथरा रही थी।

बैड के एक ओर खिड़की थी—जिस पर फोल्डिंग पल्ला इस तरह जड़ा हुआ था जिसे आवश्यकतानुसार हवा आने के लिए सरिये का स्टैण्ड लगाकर खड़ा किया जा सकता था। जरूरत न होने पर पल्ले को बन्द कर सरिये को अटकाकर उसे मजबूती प्रदान की जा सकती थी।

पहाड़ी हवाओं के ताजगी भरे मस्त झोंकों का आवागमन कमरे में रहे, इस बात को ध्यान में रखते हुए डार्लिंग ने उस समय खिड़की के पल्ले को स्टैण्ड के सहारे टिका रखा था।

शमां थरथरा रही थी—रात की मदहोशी कक्ष के वातावरण में गमक रही थी। फूलों की घाटियों को छूकर, गुजरकर आती हवाओं की ताजगी, कमरे के वातावरण में भीनी-भीनी सुगन्ध घोल रही थी। और, इन सबसे कहीं ज्यादा रोमांसिकता इस बात में थी कि ब्यूटी क्वीन के बगल में, उसके पहलू से लगी रेशमा का महताबी चेहरा था।

रेशमा के कांधे के नीचे एक हाथ डाले, उसका चेहरा अपनी ओर झुकाए हुए ब्यूटी क्वीन, उससे ढेरों बातें कर रही थी। उसकी बातें इस बात को जानने की जिज्ञासा में भरी हुई थीं कि उसको अपहृत करने के बाद दहशत गर्दों ने उसके साथ वैसा बर्ताव किया था।

डराने, धमकाने, आतंकित करने वाली बातें तो साधारण थीं। उसकी जिज्ञासा इस बात को जानने की सबसे ज्यादा थी कि वहशी दरिन्दों ने उसके फूल से जिस्म को कैसे-कैसे रौंदा था।

रेशमा इस मामले को सिरे से नकारते हुई बोली—"उन्होंने मुझे तमाचे जड़े, रस्सियों से कसा, जंजीरों से बांधा लेकिन ऐसा-वैसा कुछ न किया...।" कहते हुए रेशमा की रेशमी पलकें शर्मो-हया से झुककर थरथरायीं।

ब्यूटी क्वीन के दिल की धड़कनों को इस बात को सुन

सुकून आया—लेकिन यकीन नहीं। फिर सोचा—भला उसे इस मामले में झूठ बोलने की जरूरत क्या है...? वह उसे सहेली मानकर पूछ रही थी, उसकी सबसे हमदर्द होकर जानकारी ले रही थी...उसे तो सब कुछ बता जाना चाहिए था। अपने ऊपर हुए वहशियाने जुल्म की दास्तां बयान कर उससे हमदर्दी पाना चाहिए था।

पर रेशमा ऐसा कुछ बयान न कर रही थी।

उसके निकटता की रसभीनी मादकता में हिचकोले खाती ब्यूटी क्वीन ने अपनी जान के चेहरे पर धीरे से अंगुली लगा उसके नकाब का बन्धन अलग किया। उसका दमकता चेहरा सामने आया। वह चेहरा, जिसमें जमाने भर के कौमार्य की ताजगी समायी हुई थी—जैसे ताजे खिले गुलाब की सुगन्ध को पवन के झोंकों ने भी न चुरायी हो। उसका मुखड़ा इतना ही हसीन, ताजगी से भरपूर, कौमार्य की खुशबू से लबरेज था।

ब्यूटी क्वीन ने उसके कपोल पर धीरे से अंगुली फिरायी। प्यार की मदहोशी में डूबी आवाज में बोली—"उफ्...! इन गालों पर तुम्हें तमाचे खाने पड़े हैं जान! मेरे खातिर...। इसलिए कि वह तुमसे मेरे बारे में पूछ रहे थे...।"

रेशमा की नशीली पलकों में ब्यूटी क्वीन की अंगुलियों की सरसराहट मात्र से खुमार उतर आया—मानो उसमें इस बात का एहसास जग उठा कि डल झील के उसके शिकारे पर डार्लिंग ने कैसे धीरे-धीरे उसे अपनी मंजिल के करीब समेटा था...।

उसका रोम-रोम मदहोशी के उस पुलकन में उड़ान भरने लगा, जिससे डार्लिंग उसे गुजार चुकी थी। खिले फूल के, चटखती कली से लिपटकर उसे बेदार करने का दृश्य जेहन में साकार हो उठा।

कपोल से अंगुली की सरसराहट को आगे बढ़ाती हुई ब्यूटी क्वीन पंखुड़ियों को खोलती, खिलती कली की हसीन ग्रीवा तक ले आयी...फिर गले में अटकी मैक्सी की चैन धीरे-धीरे नीचे सरकाने लगी।

और ग्रीवा के नीचे, कांधे के उस स्थान पर डार्लिंग की अंगुली जाकर ठहर गयी जहां लंबी खरोंच का निशान था—यह खरोंच कुछ ऐसी थी जैसे खिसियानी बिल्ली ने पंजा मारा हो—

जख्म से खून न छलका था मगर खरोंच की लाली ने गोरे तन पर अपना वजूद पूरा-पूरा बना लिया था।

खरोंच का वह दाग झाड़ के किसी कांटे का था, जिससे रेशमा को सामना करना पड़ा था।

खरोंच पर डार्लिंग ने अंगुली का स्पर्श किया ही था कि टीस में डूबी हल्की सीत्कार छोड़ी रेशमा ने।

"उफ्...।" डार्लिंग विह्वल होकर बोली—"जख्म हरे हैं अभी...। मुख्तार ने कहा था—"हर चार घण्टे पर लेप लगाना पड़ेगा। ऐसा करने पर ही चौबीस घण्टों में जख्म सही हो पायेंगे, वरना इनके पक जाने का भी अंदेशा है...। कुछ पहाड़ी झाड़ियां विषैली भी होती हैं...। और मैंने दोपहर को एक बार तुम्हारे जिस्म पर लेप लगाने के बाद, दूसरी बार लेप लगाने की बात, समय पर सोची ही नहीं....।"

कहते हुए ब्यूटी क्वीन तेजी से घूम पड़ी।

उसने साइड तिपाई पर रखा मिट्टी का कटोरा उठाया—जिसमें चिकनाई युक्त, जख्मों पर लगाने वाला लेप था।

कटोरा उठाते ही उसने अंगुली की पोर लेप में डुबाई और धीरे से जख्म पर लेप की गाढ़ी-गाढ़ी लाइन खींच दी।

लेप की चिकनाई से रेशमा हल्की-गुदगुदी में भरकर बोली—

"कुछ देर की ठण्डक पड़ जाती है, मगर मैं नहीं समझती चौबीस घण्टों में जख्म सही हो जायेंगे...।"

"पहाड़ी—जंगली जड़ी-बूटियां अपना चमत्कारिक प्रभाव रखती हैं...इसलिए इन पर अविश्वास न करो रेशमा...। पूरे जिस्म की खरोंचों पर लेप का सेवन कर लेने दो...।"

"तुम लेप लगाने के लिए हाथों को जब सरसराती हो तो...मेरे रोम-रोम में मीठा-मीठा नशा घुल जाता है...।"

"इस मामले में मजबूरी है—लेप तो मुझे ही लगाना होगा, क्योंकि इस मामले में किसी मर्द के हाथ का इस्तेमाल तो मैं कराने से रही...।"

"लेकिन लेप के बहाने तुम जो शरारत करती हो...।"

"मैं कोई शरारत नहीं करूंगी...।" डार्लिंग गम्भीर हुई, पर मन ही मन मुस्करायी।

"तुम अगर कहती हो तो मान लेती हूं...।"

डार्लिंग ने दोनों हाथों से लेप लगाया। खरोंचों और चोटों के निशान अधिकतर पिण्डलियों, जांघों और कूल्हों पर थे...। ब्यूटी क्वीन का हाथ मैक्सीनुमा वस्त्र के अन्दर सरका। पिण्डलियों पर धीरे-धीरे फिसलकर आगे बढ़ने लगा...और फिर जब कूल्हों पर जाकर छाया तो रेशमा के होठों से मीठी-मीठी ऊष्मा खारिज होने लगी।

वह ब्यूटी क्वीन के आवारगी करते हाथों को थामकर मदहोशी के स्वर में बुदबुदायी—

"प्लीज...इस तरह आगे न बढ़ो...।"

"चलो, इस तरह न बढ़कर और किसी तरह से बढ़ती हूं...।" कहते हुए ब्यूटी क्वीन ने आगे से चैन खींच दी।

खिंची हुई चैन नाभि तक पहुंचकर रुकी।

रेशमा एकदम बेहाल हो गयी...। आंखों में पूरी बोतल शैम्पियन का नशा मानो भर आया।

उसकी कमर के पास, ब्यूटी क्वीन के हाथों के स्पर्श से मीठी-मीठी गुदगुदी हो रही थी, नाभि के करीब सरसराहट हो रही थी—ऐसी सरसराहट जो रोम-रोम में मादकता से भरपूर सनसनाहट का जादू जगाती चली जा रही थी।

उसका जाफरान की बूटी की गोरी-गोरी रंगत में रचा-बसा तन इस तरह थरथराया जैसे सावन की पवन का झोंका पूरे तन को ठण्ड के थपेड़ों से सराबोर करता चला जा रहा था।

उसकी कमलिनी-सी लोचदार बांहें बेसाख्ता उठीं और ब्यूटी क्वीन के कांधों पर जकड़ गयीं। उसकी स्वप्नीली झील-सी आंखों में खुमार की वादियों में उतर जाने का आमंत्रण सिमट आया।

ठण्ड से कांपते जिस्म की जूड़ी-बुखार का असर न हो जाए, इस अंदेशे से ब्यूटी क्वीन ने उसी डबल बैड पर इस्तेमाल होने वाले टर्किश कम्बल से, अपनी जान को आवरण में ले लिया, जिसके आवरण में मुख्तार ने खुद उसे ले रखा था, जब वह अचेत थी।

रेशमा के मामले में दृश्य वही था जो मुख्तार ने उसके होश में आने व आंखें खोलने पर उसे बताया था। वह उसकी ठण्ड भगाने के लिये उसके साथ लेट गया था...और सफाई देते हुए

बताया था कि उसके साथ उसने कुछ न किया था।

मुख्तार ने उसे वस्त्रावरण से मुक्त इस उद्देश्य से किया था ताकि उसके जिस्म के टूट-फूट के बारे में जानकारी पा सके...।

और डार्लिंग ने इसलिए, ताकि अपनी जान के खरोंचों से युक्त तन पर लेप लगा सके।

"ओह...।" रेशमा ने कम्बल के आवरण में मदहोशी भरी सीत्कार छोड़ी....।

निचला होठ अपनी धवल दंत पंक्तियों के बीच दबाकर गहरी सांसों की ज्वाला में धधकती, चूल्हे पर चढ़ी हांडी की तरह भाप छोड़ती हुई बुदबुदायी—"तुमने वही किया न जिसका अंदेशा था...।"

वह उसके कांधों को दबोचे खींच रही थी।

उसके चेहरे को अपने तन के करीबतर ला रही थी।

और ब्यूटी क्वीन सोच उठी थी—उसने अभी ऐसा कुछ तो न किया था कि वह ज्वार-भाटा की लहरों की तरफ उछालें लेने लगती।

लेकिन, वे क्षण उसकी जिन्दगी के लिए सबसे मादक थे...उसका चेहरा झुका और थरथराहटों में भरी रेशमा की ग्रीवा पर जम गया। उसके होठ, ग्रीवा की उभरी हुई नीली बारीब नस पर चिपककर यौवन का हलाहल चूसने लगे।

रेशमा और भी ज्यादा तड़पी। उसकी पिण्डलियां ब्यूटी क्वीन की पिण्डलियों के बीच नागपाश-सी कसकर रगड़ खाने लगीं...।

वह डाल्फिन मछली बनकर सागर की लहरों में किलोल करने के लिए जैसे गोते खाने लगी।

बांहें लिपट रही थीं।

जिस्म सिमट रहा था।

भावनाओं का जोश बढ़ रहा था।

सांसों की कम्पन्न लहरों की आवारगी भरे शोर का आभास करा रही थी।

वह उसके कपोलों पर हथेलियां जमाए उसका चेहरा एक-एक सूत नीचे खींच रहा था...कांधे की हंसुली पर, ब्यूटी क्वीन के होठों ने यौवन के रस पराग चुराने आरम्भ किये...। फिर हंसुली

से उतरे और धीरे-धीरे चन्द्र गोलाइयों पर मोहक अंगड़ाइयां तोड़ने के उद्देश्य से बढ़े।

आतुरता...जबर्दस्त व्याकुलता!

रेशमा की सांसें जैसे ठहर गयीं...। उसके हाथों का प्रयास, चन्द्र खिलौने के शीर्ष पर होंठों की छाप रखने की बेताबी में भरा हुआ, बढ़ता रहा।

ब्यूटी क्वीन के दोनों हाथ, चन्द्र द्वै खिलौनों पर स्केटिंग का धीरे-धीरे सफर तय करने लगे। पर वह पाने लगी, नसों में भरपूर तनाव नहीं, बल्कि ढीलापन है। शीर्ष शिखरों में वह अकड़न नहीं जिसमें चुटकी मारने पर ऐसा संगीतमय सुर निकलता है जैसे एकतारा के तार को छेड़ दिया गया हो।

वे अंकुरित होने के लिए बेताब, चनों की तरह अभी फूल न पाये थे...। उनकी सुर्खी में वह सिन्दूरी रंगत की जवानी अभी न सिमटी थी, जिन्हें वह डल झील के शिकारे पर, रेशमा को बांहों की कैद में लेने पर देख चुकी थी।

और रेशमा थी कि उसके चेहरे को उनके करीब से करीब करती चली जा रही थी।

ब्यूटी क्वीन एक अजीब से एहसास में भरी।

उसकी आंखों के सामने अपनी जिन्दगी की सबसे हसीन, दिलकश, वासना उन्माद का खजाना अपने पोर में समेटे गजाला की आकृति खिंची।

गजाला, जो उसके थके हुए मस्तिष्क की बेहतरीन टॉनिक साबित हुआ करती थी। बैड पर गजाला की मस्ती तोड़ती अंगड़ाइयों की आकृतियां उसकी आंखों के सामने, जेहन में थरथराने और हलचल मचाने लगीं।

गजाला की हर अंगड़ाइयों का नक्शा अपने जेहन में गुजारने के बाद डार्लिंग ने पाया—गजाला कभी भी इस तरह निम्फोनिक अन्दाज में उसके सम्मुख खुद को पेश न कर पायी थी—जैसा रेशमा खुद को पेश कर रही थी।

जेहन में सवाल उभरा—क्या रेशमा निम्फोनिक है? विवेक ने फौरन जवाब दिया—नहीं, बिल्कुल नहीं।

डल झील के शिकारे पर, कई घण्टे, पूरे मूड के साथ, बैड की समीपता में वह रेशमा को परख चुकी थी। उसमें षोडशी वाला

की झिझक और शर्मीले अंदाज का पूरा बांकपन था।

उसी बांकपन को पाने की ब्यूटी क्वीन ख्वाहिश रखती थी।

लेकिन, उस दिन की रेशमा और उस समय की रेशमा के व्यवहार में आकाश-पाताल का अन्तर था। ब्यूटी क्वीन, नारी के व्यवहार की इस सत्यता को कैसे झुठला सकती थी कि कामोद्दीपन अवस्था में नारी के व्यवहार में सदा एकरूपता होती है। जो व्यवहार उसका एक बार सामने आता है, उसी व्यवहार को हर बार सामने लाती है—उसमें बदलाव लाना अस्वाभाविकता होती है।

रेशमा में यह अस्वाभाविकता क्यों...? जेहन में बार-बार बजती घण्टियों के स्वर की तरह प्रश्न उभरे ब्यूटी क्वीन के।

"प्लीज...मैं जल विहीन मछली की-सी तड़प रही हूं...।" रेशमा ने व्याकुलता के साथ अपने ऊपर पड़ा शर्मो-हया का आवरण उतार फेंका। उसका तन कम्बल के परदेदारी से आजाद हो गया। उसने अपनी बलखाती कमर पर पूरी तरह लोच पैदा करते हुए अपना ऊपरी अंग खिंची हुई कमान की तरह तान दिया। हाथों को बैड पर पीछे टेका। यौवन के उन्नत शिखरों को डार्लिंग के चेहरे के करीब लाकर गहरी-गहरी सांसों की ऊष्मा छोड़ती हुई बुदबुदायी—"इन्हें अपने होंठों से प्यार करो...तुमने न जाने कैसी आग भड़का दी है...।"

कहते-कहते उसने हाथ डार्लिंग के सिर पर रखा और हल्के से आगे दबाव दिया।

ब्यूटी क्वीन के होंठ आगे बढ़ते-बढ़ते यकायक ठहर गये।

वजह यह थी कि थ्रिल क्वीन जिसे निम्फोनिक बाला समझ रही थी उसकी आंखों में उसने क्लियोपैट्रा-सी चमक देख ली थी...नील की नागिन की चमक...।

थ्रिल क्वीन की आंखों में, खतरे की घण्टियां बजीं। उसने एक झटके से अपना इरादा बदल दिया—उसकी एक्स-रे-सी करती आंखें रेशमा के ब्रेस्ट के अग्र शिखरों पर पड़ीं। और इसी के साथ अग्र शिखरों पर कृत्रिम चमक निगाहों में आने से रह न सकी।

"धोखा—सरासर धोखा...फरेब...हसीन फरेब...।" छठी इन्द्रिय ने जैसे चीख-चीखकर कहा।

अस्वाभाविक की गूंज जो देर से मस्तिष्क में उथल-पुथल मचाए हुए थी—उसकी हकीकत साकार होकर सामने आ गयी।

मस्तिष्क में बिजली की चमक-सा प्रश्न कौंधा—'रेशमा,...अधर पान कराने के लिए क्यों आतुर थी?'

झटके से झूझ उभरी कि असलियत को सामने आ ही जाना चाहिए...।

"यस...यस...जान...इतनी उतावली क्यों होती हो...।" थ्रिल क्वीन उसके टोस, गोलाकार, यौवन उपत्यकाओं पर हाथ फिसलाकर प्यार से बोली।

साथ ही वह सच्चाई को सामने लाने के उद्देश्य से घूम पड़ी।

खुली खिड़की की ओर निगाह जमा उसने ऊंचे स्वर में आवाज लगायी—"टीपू...ऽऽ टीपू ऽऽ टीपूऽऽ...।"

उसकी बुलन्द आवाज रात के वीराने में, पवन वेग के घोड़े पर सवार होकर, वादियों में दूर तक अपनी प्रतिध्वनि कम्पित करती चली गयी।

आवाज बेकार न गयी...विश्वास व्यर्थ न गया। यकीन था कि मुख्तार का प्यारा वफादार टीपू करीब ही कहीं होगा। यकीन अपने आपमें खरा उतरा।

अगले सेकण्ड, खुली खिड़की से छलांग मारता टीपू का साया अन्दर कूदा।

हवा के झोंके की तरह, लहराकर, उछलता हुआ टीपू सीधे बिस्तर पर आया।

और रेशमा! उसने बहुत तेजी से समझने की चेष्टा की। अपने तन को झट सीधा करते हुए उसने वक्ष ढंकने की जल्दबाजी दिखानी चाही।

"नहीं...।" थ्रिल क्वीन ने झपट्टा मारकर रेशमा की दोनों बांहें पीठ पीछे से कस लीं—"मुझे हकीकत की परख कर लेने दो...।"

रेशमा के चेहरे पर जबर्दस्त विरोध के भाव उभरे—उसने बांहों को छुड़ाने के लिए बल लगाया।

लेकिन, जकड़न थ्रिल क्वीन डार्लिंग की थी—जिसने, उसके एक हाथ से जकड़ी उसकी बांहों पर कोहनी का ऐसा दबाव डाला

कि रेशमा का तन एक बार पुनः डोर से खींचे हुए धनुष आकार में हो गया। दूसरे हाथ से उसने, उसके लिबास की चेन झटके से नीचे सरका दी।

बिस्तर पर कूदकर आथा हुआ टीपू 'कू-कूऽऽ' करता हुआ डार्लिंग का मुंह और बांहें चाटने लगा। उस समय थ्रिल क्वीन को उसके हर दुलार से प्यार था, लेकिन उसने खुद उसे बुलाया था—वह उसके दुलार और प्यार की आखिरी मंजिल देखना चाहती थी।

थ्रिल क्वीन ने कोहनी के दबाव के सहारे रेशमा के तने सीने की ओर टीपू को इशारा किया—जहां खिले हुए चन्द्र द्वै का दिलकश नजारा था।

"तुम क्या करती हो...?" रेशमा के होंटों से जबर्दस्त विरोध भरा स्वर फूटा। उसकी आंखों में फन काढ़े नागिन-सी चमक और चेहरे पर पसीने की छलछलाहट उभर आयी।

"डार्लिंग इस बात को परखना चाहती है कि उसकी जिन्दगी का तजुर्बा झूठा है और तुम सच्ची हो जान...।"

रेशमा ने कसमसाने की भरपूर चेष्टा की, मगर थ्रिल क्वीन की पकड़ इतनी भरपूर थी कि वह अपने आपको टस से मस न कर सकी।

यौवन की तरुणाई और चिकनाहट से भरपूर, रेशमा के खिले तन की ओर इशारा पाते ही टीपू ने रेशमा के कपोलों को चाटा...फिर सेकण्ड के दसवें हिस्से में उसने गोलाकार, तनी हुई मांसपेशियों के पिण्डों पर मुंह मारा।

"डार्लिंग...क्या करती हो...?" रेशमा खुद को छुड़ाने के लिए मचली। उसने जबर्दस्त अवरोध पैदा करने के लिए बांहें सिकोड़ीं...। तड़प भरी आवाज में चीखी।

लेकिन डार्लिंग का कसाव उसकी बांह पर भरपूर था।

"मैं तुम्हारी तड़पती वासना की ज्वाला को खुद शान्त नहीं कर सकती जान...इसलिए कुत्ते को इस बात का मौका दे रही हूं कि वह तुम्हारी छातियों को चाटकर तुम्हें शान्त कर सके...।"

"क्या मूर्खता है...तुम पागल हो गयी हो...।" रेशमा पूरी ताकत लगाकर छटपटायी।

"नहीं मैं होश में आ गयी हूं...।"

टीपू की लपलपाती जिह्वा उस समय तक अपना काम कर गयी थी...। उसने सेकण्ड के अन्दर बीसियों बार उसके सीने को चाट डालने का कार्य कर डाला था।

रेशमा छूटने के लिए छटपटाती रही, विरोध करती रही...लेकिन थ्रिल क्वीन की पकड़ में लेशमात्र भी कमी न आयी थी।

और अगले सेकण्ड।

टीपू जबर्दस्त रूप से बेड से उछला...।

'कूं...कूं...कूं...ऽऽऽ।' की कष्टदायक आवाज उसके कंठ से खारिज हुई...।

वह कक्ष में इधर से उधर छटपटाता हुआ नाचा। तीन-चार बार चकराया और फिर गिरकर लम्बी जिह्वा निकाल बैठा।

उसके मुंह से नीला झाग उबल पड़ा था।

वह ठण्डा पड़ गया था। मर गया था।

मुख्तार के प्यारे-दुलारे टीपू के प्राण पखेरू उड़ गये थे।

थ्रिल क्वीन विस्फारित् नेत्रों से कुत्ते को प्राण त्यागते देख रही थी। वह विषैले स्वर में बुदबुदायी—

"माई गुडनेस...! साबित हो गया...डार्लिंग का तजुर्बा झूठा नहीं है...।" उसने शोलों-सी सुलगती दृष्टि घुमायी रेशमा की ओर डाली—"साबित हो गया कि तुमने विषकन्या बनकर मुझे डस जाना चाहा था। क्यों...किसलिए रेशमा? इतना बड़ा धोखा...फरेब...और विश्वासघात...! तुमने डार्लिंग का ही अस्त्र डार्लिंग पर चलाने की चेष्टा की...। किसके लिए...? किसके कहने पर...? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था...? मैं तुम्हारी जिन्दगी के लिए डल झील से लेकर मरी की पहाड़ियों तक दुश्मनों से जूझती रही...कदम-कदम पर मौत के मुंह में खुद को झोंकती रही...। और तुम...! तुम रेशमा...!! तुमने मुझे...अपने वक्षों पर तीक्ष्ण विष का लेप लगा, उस पर प्रेमक्रीड़ा के लिए उकसाकर, मार डालने का प्लान तैयार किया...?"

वह विश्वाघात की तड़प की ज्वाला में सुलगती हुई रेशमा की पीठ पर घुटने का दबाव डाल, उसे अधिक से अधिक बेबस कर दिया था। उससे सच उगलवाने की बेताबी में भरती चली जा रही थी।

रेशमा छूटने के लिए फड़फड़ा रही थी।

"तू नागिन है...नागिन...।" डार्लिंग उसका मुंह बैड पर रगड़ती रोष के तूफान में भरी हांफती हुई फुंफकार उठी—

"तूने मेरे साथ दगाबाजी की। मेरे साथ दगाबाजी जिसने तुझे बचाने के लिए एक नहीं हजार बार अपनी जान की बाजी पूरे मुरसलीन संगठन के मुकाबले में लगा दी...। इतना बड़ा विश्वासघात। जिसके लिए शहबाज खां, अल्ला मेहर, हैदरबख्श, शकील और वकील, तथा शहबाज के सौ से अधिक वफादार साथियों ने अपनी जानें कुर्बान कर दीं...। जिसे बचाने के लिए मुरसलीन के हेडक्वार्टर पर धावा बोल हम सबने एक खूनी जंग लड़ी। पहाड़ी को लहूलुहान किया।

मुरसलीन वालों के हेडक्वार्टर को कब्रगाह में तब्दील कर दिया...। किसके लिए...? सिर्फ तेरे लिए रेशमा! नील की नागिन! हरामन कुतिया...। तूने मुझे विषकन्या बनकर डस जाना चाहा।"

तूने मेरे ही हथियार से मुझे मौत की नींद सुला देना चाहा।

उस डार्लिंग को मौत की नींद सुला देना चाहा जो न जाने देश के कितने दुश्मनों के लिए अपने हसीन जिस्म को अस्त्र बन मौत के आगोश में सुला चुकी है। तूने मुझे एक झटके से मौत की कब्र में सुला देने का षड्यन्त्र रचा।

भूल गयी थी कि डार्लिंग...डार्लिंग है...तू मेरे सामने एक अदना-सी छोकरी। बोल...क्यों किया था, ऐसा? किसके कहने पर किया था, किस लालच में फंसी थी...? बोल जल्दी बक कुतिया, वरना मैं तुझे इतना कुरूप कर दूंगी कि तुझे अपने आपसे नफरत हो जायेगी...।

कश्मीर की बेटी, जाफरान की बूटी की सारी खूबसूरती बदसूरती में बदल जायेगी।"

रेशमा कराह रही थी, छटपटा रही थी। छूटने के लिए हाथ-पैर मार रही थी। संघर्षरत थी। मचल रही थी और अपनी इस कोशिश में उसे यकायक उस समय कामयाबी मिल गयी जब डार्लिंग ने उसकी बांहें थाम बालों पर हाथ डाला। उसका प्रयास था कि वह बालों से जकड़ उसे उठा पटकेगी...।

जकड़ी हुई बांहों में ढील पाते ही रेशमा ने निहायत गजबनाक तरीके से, अपनी दोनों कोहनियां एक झटके से डार्लिंग की पसलियों

में 'टाक' से मारीं।

'हॉक' की आवाज, थ्रिल क्वीन के कंठ से फूटी जैसे चलती सांस फेफड़ों में अटक गयी हो...।

रेशमा की कोहनियों का प्रहार इतना जोरदार था कि थ्रिल क्वीन बैड से उछल गयी...।

न सिर्फ रेशमा के बालों की जकड़न बल्कि हर किस्म की पकड़ छूट गयी।

डार्लिंग उलटकर बैड से नीचे गिरी।

रेशमा बिजली की चमक के साथ उछलकर खड़ी हो गयी।

उसने जबर्दस्त फुर्ती का प्रदर्शन करते हुए अपनी साइड के बैड के सिरहाने के गद्दे को पलटा।

वहां नन्हा-सा पिस्टल मौजूद था...। झटके से पिस्टल उठा डार्लिंग पर तान दिया। उसके चेहरे पर रणचण्डी का रूप था—आंखों में खून उतरा हुआ था।

उसके पिस्टल उठा लेने तक डार्लिंग चमककर उठ खड़ी हो चुकी थी। पर पिस्टल का रुख अपनी ओर पा उसके कदम अपने स्थान पर जहां के तहां ठहर गये। उसने पिस्टल की नाल पर साइलेंसर फिट हुआ देखा। उस पर जैसे, एक के बाद एक, हैरत के झटके पड़ रहे थे।

"बस...।" रेशमा चिंघाड़ी—"बहुत हुआ! इसकी मैगजीन से सिर्फ एक गोली खर्च हुई है...इसमें अभी छः गोलियां बाकी हैं...।

एक गोली जो खर्च हुई है इण्डियन स्पाई...उसके बारे में भी तुझे अब मालूम हो जाना चाहिए कि उसे मैंने सूडानी जीप चालक पर उस समय खर्च की है जब वह ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों और घाटियों के बीच, मेरी ही योजना के अनुसार जीप दौड़ा रहा था। मैंने तेरी नजर बचा उसकी पसलियों में इसलिए गोली उतार दी थी ताकि जीप का सन्तुलन वह खो बैठे और जीप चट्टानों से टकराकर उलटे और तेरी जिन्दगी दूसरी दुनिया के लिए परवाज कर जाए...। मैं तुझे धक्का देते हुए कूद गयी थी। जीप टकरायी भी और उलटी भी। पर इसे तेरी अच्छी किस्मत का खेल कहूंगी कि जीप खाई में ऊपर ही फंस गयी और तू नीचे जा टपकी। मैं वहां भी तुझ पर ऊपर से गोली चला खत्म कर देती,

पर अब इस इत्तफाक को क्या कहा जाए कि सरदार मुख्तार के आदमियों के कानों में तेरी चीख पड़ गयी थी। वे हथियारबंद थे। तुझ तक पहुंच गये। मेरे लिए बेहतर यही था कि मैं नये नाटक की रचना करती। झाड़ियों के बीच, मुझे अचेतावस्था में पाया जाना, मेरे नाटक का दूसरा भाग था...और उस दूसरे भाग का खेल खेलते हुए मैं तुझे दोबारा मौत की नींद सुलाने तुझ तक आ पहुंची।"

रेशमा रोष की ज्वाला में धधकती बोलती रही—थ्रिल क्वीन शॉक्ड अवस्था में, आंखें फाड़े रेशमा को देखती और उसकी बातें सुनती रही।

उसे अब भी जैसे यकीन न आ रहा था कि जाफरान की बूटी इतनी खतरनाक विष वाला हो सकती है। पर उसकी हकीकत की परतें-दर-परतें खुलती जा रही थीं। अब उसके वास्तविक रूप के यकीन न करने का सवाल ही न पैदा होता था।

"तुम इतनी पहुंची हुई, ऊंची चीज हो सकती हो रेशमा मुझे स्वप्न में भी आशा न थी।" डालिंग विस्मय के सागर में गोते लगाते हुए बुदबुदायी।

"मैं इसी दिन के लिए तैयार की गयी थी मैडम डालिंग...।" वह विषैले स्वर में बोली—"जहां एक ओर मुरसलीन की पूरी संभावित हथियारबंद शक्ति तेरे मामले में बेकार हो चुकी है, वहां मैंने यह काम अपने जिम्मे लिया कि अकेले तुझे मौत के घाट उतार सकूं...। और अब तू मरने जा रही है..."

"डालिंग का विश्वास जबर्दस्त रूप में छला गया है...। मैं यह जानना चाहती हूं किन हालात ने तुम्हें मिलिटेण्ट बनाया...कौन-सी परिस्थिति आयी जिसमें तुमने हाथों में हथियार उठा जिन्दगी और मौत का खेल खेलना आरम्भ कर दिया...?"

"हां, मैं जरूर बताऊंगी...।" प्रतिशोध की तिलमिलाहट में भरी रेशमा ने कहा—"तेरी इण्डियन पुलिस ने मेरे भाई को मिलिटेण्ट मानते हुए मार दिया...। मेरे भाई रेहान पर मिलिटेण्ट का संदेह करते हुए उसे घर से उठाया और ले जाकर एनकाउण्टर दिखा दिया...। मेरे मां-बाप की आंखों का तारा, उनके बुढ़ापे का सहारा और मेरी अस्मत का रखवाला मेरा बेगुनाह भाई मारा गया तो उसकी खून से सनी लाश पर मैंने कसम खाई कि भाई के

कातिलों से बदला लूंगी। मेरा भाई मिलिटेण्ट न था...पर मैं मिलिटेण्ट बन गयी...संगठन में भर्ती होकर हाथों में चूड़ियों के बजाय हथियार उठा लिये...। मुजाहदीन बन, हथियार उठाने को मौत से डर नहीं लगता। शहादत देना ही उसकी जिन्दगी का मकसद होता है...।

मुझे तसल्ली है कि मैंने अपने भाई के कातिलों का बदला ले लिया। मैंने मिलिटेण्टों को साथ लेकर उस थाने पर धावा बोला, अंधाधुंध फायरिंग और धमाके कर उन सबकी लाशें छितरा दीं, जो मेरे भाई के क़ातिल थे, या कत्ल में शामिल होने के गुनाहगार थे। भाई की मौत का मेरा प्रतिशोध पूरा हो चुका है...मगर उन सैकड़ों-हजारों कश्मीरी भाइयों की मौत का प्रतिशोध पूरा करने की भी मैंने कसम खाई है...जो पिछले पांच दशक से भी ऊपर समय से, कश्मीर की आजादी के लिए अपनी जानें कुर्बान कर रहे हैं...। आजादी की मांग करने वालों के सीनों में इण्डियन पुलिस ने गोलियां उतारी हैं...बहनों से भाई, मांओं से लाल छीने हैं।

मैंने कश्मीर की आजादी का संकल्प लिया है। जल्द ही कश्मीर आजाद होगा...भारत सरकार खुद घुटने टेककर कहेगी...मैंने कश्मीर को आजाद किया...। जब आगरा से दिल्ली तथा लाखों इन्सानों की लाशों से सड़कें पटी होंगी तो भारत की जनता त्राहि-त्राहि कर उठेगी...न ताजमहल रहेगा न ही लाल किला, उस समय भारत सरकार की आंखें खुलेंगी कि जम्मू-कश्मीर को आजादी देनी क्यों जरूरी है...?"

"हराम की जनी...!" डार्लिंग चिंघाड़ उठी—"चींटी के पंख निकल आयें तो खुद को परिन्दा मान उड़ने की भूल उसे मौत के मुंह में डाल देती है।"

"और ऐसी चींटी तू है, मेरी नजरों में डार्लिंग भटनागर...।" रेशमा गुर्रायी—"तेरे हाथ में, भारत की सबसे बड़ी खुफिया एजेन्सी के टॉप वन एजेण्ट की पावर क्या आयी, तू कश्मीर की आजादी चाहने वाले मिलिटेण्टों पर क़यामत बनकर टूटती रही। मुरसलीन ने एक राय में फैसला लिया कि तू हमारे मिशन के मकसद में सबसे बड़ी बाधा है। तेरे लिए ब्लैक वारण्ट जारी किया गया...और उसे अन्जाम तक मैं पहुंचाने जा रही हूं...।"

"भारत मां की बेटी होने के नाते, देश की धरती की

इंच-इंच की हिफाजत करना मेरा फर्ज है जाफरान की बूटी...। अपने इस अजीम मकसद के लिए मैं एक नहीं हजार बार अपनी जान कुर्बान करने में फख्र महसूस करूंगी...।"

"और कश्मीर की आजादी हमारा अजीम मकसद है...। हम भी उसकी आजादी के लिए हजार क्या लाख बार अपनी जान कुर्बान करने के लिए फख्र करेंगे...।" रेशमा गर्वीले स्वर में बोली।

थ्रिल क्वीन की फोकस दृष्टि, रेशमा के हाथ में थमे पिस्टल पर जमी हुई थी। चेहरे पर जरा भी भय या चिंता के भाव नहीं। उसने भारी-भरकम स्वर में कहा—"तेरा मकसद, तेरा रूप अब मेरी समझ में आया है जाफरान की बूटी...। अब मैं समझ गयी हूं कि डल झील के तट पर जब मैं पर्यटक के रूप में वहां पहुंची थी तब तूने मेरे सामने आकर अपनी जलवा अफरोजी सोची समझी योजना के अन्तर्गत बिखेरी थी। अवश्य ही तुझे अपना मोहरा बनाने वालों ने इस बात की तुझे जानकारी दे दी थी कि मैं कमसिन हुस्न की पुजारिन हूं...।

मेरी समझ में यह भी साफ हो चुका है कि शिकारे पर खिड़की के नीचे माइक्रोफान लगाने का सबसे अधिक अवसर तेरे ही पास था, और वह काम तूने ही किया था, ताकि मेरे दुश्मनों तक मेरा प्रोग्राम पहुंचता रहे।

जब मैं डल झील में नौका विहार के लिए तेरे साथ निकली थी तो तेरे यार लोग मेरी जान लेने को पहले से तैयार थे।

अब मैं यह भी समझ गयी रेशमा कि दशहतगर्दों ने डल झील के तेरे शिकारे से तुझे अपहृत नहीं किया बल्कि तू उनकी साथी बनकर उनके साथ गयी...और यह भी कि जंजीरों में जब तू जकड़ी हुई मुझे मिली तो कमरे के द्वार पर बाहर से ताला तक न लगा था, दरवाजे को इस तरह छोड़ रखा गया था ताकि तुझे आसानी से खोजती हुई मैं वहां पहुंच जाऊं...।

यह भी रेशमा कि जंजीरों से जकड़ा होना तेरा नाटक था...तूने सब कुछ खत्म होता देख खुद को ही जंजीरों में जकड़ लिया था ताकि मैं समझूं कि तुझ पर बड़े जुल्म टूटे हैं।

मैं तुझे प्यार से, सीने से लगाकर निकली...तेरे प्यार में...प्यार की भावुकता में मैं मरी जा रही थी। मैं तो समझ रही थी कि तुझे बचाने के लिए, मौत के हजार हाथों से मैं तुझे खींच

लायी हूं...पर तू तो उन्हीं की साथी निकली।

तू विषकन्या बनते समय, यह सोच-सोचकर मुस्करा रही थी कि जिस डार्लिंग को हजार मिलिटेण्टों की शक्ति न मार सकी...उसे तू अपने एक कातिल इशारे पर मार देगी...। पर डार्लिंग खुद मौत है...। अपने दुश्मनों के लिए मौत! ट्रेगर पर से अंगुली हटाकर खुद को कानून के हाथों में सौंप दे रेशमा...।"

"रेशमा...खुद को सौंप दे...कानून के हाथों...! भारतीय कानून के हाथों...थू...।" उसने नफरत के साथ चेहरा घुमा थूका।

और वही पल था,

जबकि थ्रिल क्वीन ने बिजली की चमक-सी हवा में जम्प मारी...वह आसमानी बला की तरह रेशमा पर लहरायी...।

'पिट्...पिट्...पिट्...।'

एक के बाद एक दो शोले चमके...।

लेकिन, हवा में लहरायी हुई डार्लिंग को शोले छू न सके।

दरअसल, उसे जम्प मारते देख रेशमा ने बौखलाहट में उस पर फायर झोंक मारे थे...। एक के बाद एक दो फायर...।

रेशमा पर आसमानी बला की तरह लहरायी हुई थ्रिल क्वीन सीधी रेशमा के सिर के ऊपर से उछलती उसके पीछे जा कूदी...।

रेशमा फिरकनी के से अन्दाज में घूमी...लेकिन थ्रिल क्वीन की लात उसी समय उछली...।

अचूक निशाना!

उछली हुई लात की ठोकर रेशमा की उस कलाई पर पड़ी—जिसमें पिस्टल थी।

चोट खाते ही पिस्टल हाथ से उछली...।

थ्रिल क्वीन ने पिस्टल पर अधिकार पाने की बजाय झपट्टा मार जाफरान की बूटी के बालों पर हाथ डाला।

जैसे बिगड़ैल घोड़ी की लगाम कस ली हो। कुछ ऐसा ही अन्दाज उसके बालों को मुट्ठी में जकड़कर आजमाया डार्लिंग ने...। खींचकर उसका चेहरा झुका लिया अपनी ओर। खूंखारता भरी आवाज में गुर्रायी।

"तुझ जैसी नौटंकीबाज लड़की इससे पहले मैंने कभी नहीं देखी रेशमा! तूने अपने शिकारे पर अपने भाई रेहान की मौत का

जिक्र करते हुए कहा था कि वह आतंकवादियों के हाथों मारा गया। आज तू कहती है इण्डियन पुलिस ने उसे आतंकवादी मानते हुए एनकाउण्टर कर दिया...इन दोनों बातों में तेरी किस बात को सच माना जाए...?"

"मेरी इस समय की बात सच है...।" पीड़ा की तड़प में भरी, गहरी-गहरी सांसें लेती हुई रेशमा गुर्रायी।

"और उस दिन की बात...?"

"फ़रेब थी...।" उसने निर्भीकता से कहा—"तेरी हमदर्दी हासिल करने के लिए मैंने फरेब खेला था—क्योंकि अगर मैं ऐसा न करती, तो तू मेरे फरेब में कैसे फंसती...?"

"मेरे साथ फरेब क्यों...?" डार्लिंग का स्वर पहले की अपेक्षा कम सख्त था।

"क्योंकि मुझे हर इण्डियन से नफरत है...।" रेशमा छटपटाकर बोली—"और तुझसे सबसे ज्यादा, क्योंकि मैं बता चुकी हूं कि तुम इण्डियन गवर्नमेन्ट मशीनरी, सीक्रेट सर्विस की टॉप वन स्पाई हो। तुम्हारे हाथों दर्जनों मिलिटेण्ट आर्गनाइजेशन और सैकड़ों मिलिटेण्टों का खून हुआ है...। भारत की तबाही की हमारी योजना उस समय तक पूरी नहीं हो सकती जब तक कि तुम जिन्दा हो...।"

"सचमुच तुम्हारी योजना पूरी नहीं होगी...। और योजना नहीं यह तो शेखचिल्लियों के ख्वाब हैं...। ऐसे ख्वाब जो कभी पूरे नहीं होते। यह इसलिए भी असम्भव है क्योंकि डार्लिंग...मां भारती की बेटी जिन्दा है...जो तुम जैसी भारत मां को डसने की चेष्टा करने वाली नागिनों और नागों का मुंह अच्छी तरह कुचलती रहेगी, जैसा मैं तेरा कुचलूंगी...। मगर उससे पहले मैं तुझसे अपनी बातों का जवाब पाऊंगी...।"

"तू मुझसे कुछ भी जवाब न पा सकेगी डार्लिंग...।" बालों की जकड़ने की पीड़ा में बिलबिलाई हुई रेशमा फुंफकारी—"मरकर भी नहीं...।"

"मुझे तरस आता है तुम्हारी अक्ल पर...।" डार्लिंग यकायक स्वर में हमदर्दी समेट लायी—"कमसिन दिमागों में मज़हबी जहर, कौम परस्ती का जुनून भरकर वे लोग नौजवानों को गलत रास्तों पर डालते हैं। मुरसलीन के शकील और वकील नामक दो नौजवानों

की दास्तान भी कुछ ऐसी ही थी...। जो मेरे साथ लड़ते हुए मुरसलीन वालों के हाथों मारे गये...।"

"हां, मुझे मालूम है। वे दोनों अभी ट्रेनीज थे—इसलिए तुम्हारा साथ देने को तैयार हो गये थे...।"

"साथ तो तुम भी दोगी मेरा, जानेमन...।"

"मरकर भी नहीं...।"

"मरने की बात कौन करता है...मैं तो तुम्हें जिन्दा रखूंगी...और जिन्दा रखकर सहयोग पाऊंगी...।"

"कभी नहीं...।"

"सुनो जान!" डार्लिंग सपाट स्वर में बोली—"तुमने मरी से सामी कबीलाई इलाके के बीच आते हुए, और अभी कुछ देर पहले मुरसलीन वालों के बारे में बहुत सारी जानकारियां दीं...। मगर, इन जानकारियों में काफी कुछ गुजरी हुई जानकारियां हैं...तो कुछ सच्चाई से दूर हैं। तुमने बारूद अली के बाबत मुझे जो जानकारियां दीं वे सही नहीं हो सकतीं...। यह बात तुमने खुद साबित कर दी है...। तुम खुद को मेरे सामने मिलिटेण्ट साबित कर चुकी हो। मौत के लिए सिर पर कफन बांधकर निकला हुआ मिलिटेण्ट भला अपने सबसे महत्वपूर्ण मोहरे के पते-ठिकाने और उसके मिशन की योजना की जानकारी क्योंकर सही दे सकता है...? मैं गलत तो नहीं कर रही हूं...?"

रेशमा कसमसाकर रह गयी। दृष्टि घुमाकर आग्नेय नेत्रों से डार्लिंग को घूरा—बोली कुछ नहीं।

"तुगलई इलाके में बारूद अली अपने मिशन को सफल बनाने आया होगा, यह बात पूरी तरह से गलत है। उधर तो मेरे लिए मौत का जाल बिछा होगा, ताकि मैं उधर जाऊं और मारी जाऊं...।"

"हां...।" रेशमा खूंखार जंगली बिल्ली के से अन्दाज में गुर्राकर बोली—"यह तब होता जब मेरे हाथों तुम किसी तरह बच जाती तब अगले चक्रव्यूह में जाकर फंसती...।"

"और मैं बच गयी हूं। साथ ही अगले चक्रव्यूह का भेद पा चुकी हूं...।" डार्लिंग ने कहा—"अब तुम्हें यह बताना होगा कि वह असली जगह और असली मिशन कौन है जहां बारूद अली पहुंचा हुआ है...।"

"तुम मुझसे उतना ही जान सकोगी जितना बताने की मेरी मर्जी होगी। बिना मेरी मर्जी के तुम एक शब्द भी न जान सकोगी...।"

"जो मैंने पूछा है, उस बारे में बताने की तुम्हारी मर्जी है या नहीं...?"

"मरकर भी नहीं...।"

"फिर वही बात...।" डार्लिंग के होठों पर विषैली मुस्कान थिरकी—"तुम्हें मारने की बेवकूफी मैं क्यों करूंगी? मैं तो तुम्हारे हसीन जिस्म में एक-एक करके नश्तर लगाऊंगी। उसमें नमक-मिर्च भरकर तड़पाऊंगी। जिस्म के ऐसे हिस्सों में बुलेट होल बनाऊंगी, जो तुम्हारे मौत के कारण न बनेंगे, बल्कि जिस्म के हिलते-डुलते ऐसी पीड़ा देंगे कि तुम चीख-चीख पड़ोगी...। मौत-मौत पुकारोगी मगर मौत नजदीक न आयेगी...तुम मुंह खोलने को विवश हो जाओगी...। वह सब बताओगी जो मैं जानना चाहूंगी। बोलो, कौन-सा है असली ठिकाना, जहां बारूद अली पहुंचा हुआ है? जहां से भारत के विरुद्ध साजिशी योजना पर कार्य हो रहा है, और उस योजना का असली रूप क्या है....?"

कहते-कहते थ्रिल क्वीन ने इस अन्दाज में उसके बालों पर जकड़न मजबूत की कि रेशमा की चीखें उबल पड़ीं।

उसकी आंखें आंसुओं से भर उठीं। असीम पीड़ा के भाव उसके चेहरे से उजागर हुए। कंठ फाड़कर वह चीखी—

"कुछ न जान पाएगी तू मुझसे कुतिया...।"

"अब तुझ पर डार्लिंग अपना हथकंडा अपनायेगी...जाफरान की बूटी...।"

थ्रिल क्वीन ने कहा और अपनी पैर की पिण्डली में बंधी कटार खींचने के लिए झुकी।

रेशमा की आंखें उस कटार की चमक का जलवा पहले ही देख चुकी थीं। उसका रोम-रोम सिहरन से भर उठा।

कटार खींचती हुई थ्रिल क्वीन का विषैला स्वर उभरा—

"अब मैं इससे, पहले तेरे हुस्न के उस हथियार को काटकर फेंकूंगी...जिसके बल पर तूने मुझसे फरेब खेलने का दुःसाहस भरा खेल खेला...विषकन्या बनकर मुझे डस जाना चाहा...।"

और अभी,

डार्लिंग पूरी तरह सीधी भी न हो पायी थी कि रेशमा ने

उसके एक हाथ में जकड़े बालों की परवाह न करते हुए एकदम अपने जिस्म को हवा में उछाला...।

जबर्दस्त उछाल...। किसी एक्रोबेट गर्ल की तरह धनुषाकार रूप में उछाल मारती हुई उसने अपनी एड़ियों की चोटें डार्लिंग के सिर पर मारीं।

जबर्दस्त चोट...।

डार्लिंग के हाथ से बालों की पकड़ न सिर्फ झटके से छूटी...बल्कि उसके कंठ से चीख भी कौंध गयी।

पकड़ छूटते ही रेशमा उसके पीठ पीछे कूदी थी...साथ ही उसने हिरणी की तरह अगली जम्प मारी, सीधे उस जगह पहुंची जहां छिटका हुआ पिस्टल पड़ा था।

पिस्टल उठाते ही उसने जबर्दस्त फुर्ती का प्रदर्शन करते हुए फायर झोंकने आरम्भ कर दिये।

एक के बाद एक चार शोले चमके।

जिस्म में रोशनदान बना डालने वाले शोले।

यदि डार्लिंग ने उसका इरादा जान संग आर्ट का इस्तेमाल करते हुए फायर बचाने की कुशलता न दिखाई होती तो निःसन्देह उसका जिस्म गोलियों से बिंध गया होता।

जिस्म में चार-चार बुलेट होल हो जाने के कारण वह फर्श पर खून से लथपथ तड़पती नजर आती।

'पिट्!' पांचवीं बार उसने ट्रेगर दबाया।

इस बार शोला न चमका। पिस्टल खाली हो चुका था।

रेशमा ने उसे चोट पहुंचाने के लिए उसकी कनपटी को लक्ष्य करके पिस्टल खींच मारा।

डार्लिंग ने निहायत फुर्ती से बचाव करते हुए हवा में पिस्टल कैच किया।

उसके बाएं हाथ में पिस्टल था तो दाएं हाथ में कटार। उसकी मुस्कान बड़ी जहरीली थी। रेशमा पर कटार खींच मारने का अन्दाज अपनाकर वह गुर्रायी—

"खबरदार, अगर एक इंच भी अपने स्थान से हिलने की तुमने चेष्टा की जाफरान की बूटी तो मेरे हाथ से छूटी हुई कटार सीधे तेरी हसीन गरदन को चूमेगी और पार हो जायेगी...।"

रेशमा के हाथ यूं उठे जैसे वह सब कुछ हारकर आत्मसमर्पण

करने जा रही हो।

डार्लिंग ने, पिण्डली में बंधी गेटिस से, जहां से उसने कटार खींची थी, रिवॉल्वर वाला हाथ बढ़ा पिस्टल की मैगजीन खींची।

फिर रेशमा पर निगाहें जमाए रखते हुए पिस्टल की खाली हो चुकी मैगजीन को अलग कर उसकी जगह नई मैगजीन फिट कर दी।

"अब यह फिर लोड हो चुकी है जाफरान की बूटी। इस बार इसमें छः के बजाय पूरी सात गोलियां हैं। अब कोई भी गलत हरकत करके तुम अपनी मौत को दावत दोगी...।"

डार्लिंग की धमकी पूरी हुई ही थी कि रेशमा के सिर के ऊपर उठे हाथों ने ऐसी जबर्दस्त हरकत की कि कहा जा सकता था थ्रिल क्वीन हैरत से उछल पड़ी।

उसने दोनों हाथों को एकदम किसी पंखे की तरह गतिशील कर, चक्राकार रूप में घुमाते हुए जबर्दस्त हुंकार भरी थी। उसका अन्दाज पूरी तरह दुःसाहसी था।

हाथों को चक्राकार घुमाती हुई उसने हवा के झोंके की तरह डार्लिंग पर चील की तरह झपट्टा मारा।

उसके झपट्टे का शिकार डार्लिंग के हाथ में थमा पिस्टल बना। वह पिस्टल, जिसमें नयी मैगजीन फिट कर डार्लिंग ने समझा था कि रेशमा को वह अब आगे की हरकत से रोक लेगी। पर, रेशमा ने उसके हाथ से पिस्टल झपट लिया था।

हाथ से पिस्टल निकल जाने के बाद डार्लिंग ने जाना कि उसके हाथों को पंखे की गति से चक्राकार घुमाने का अन्दाज, मार्शल आर्ट की एक क्रिया थी। हमलावर और बचाव की क्रिया!

हाथों के तेज गति से घुमाने के उस आर्ट के फलस्वरूप सामने वाले की ओर से चलायी गोली या चाकू-कटार का वार जिस्म के मनचाहे हिस्से को छूने के बजाय हर कीमत पर हाथों को छूता। रेशमा ने रिवॉल्वर झपटने तक ही बस न किया उसके घूमते हाथ का जबर्दस्त वार इलेक्ट्रिक शॉक के रूप में थ्रिल क्वीन के चेहरे पर पड़ा।

वार इतना सधा हुआ था कि थ्रिल क्वीन का जिस्म हवा में उछला। उसके मुंह से चीख कौंधी।

रेशमा के जिस्म में प्राकृतिक रूप से इलेक्ट्रिक का बहाव

था या फिर उसके आक्रमण प्वाइण्ट का कमाल था इस बात को डार्लिंग समझ न सकी।

उसने पूरे शरीर में तेज झनझनाहट महसूस की थी।

वह शॉक गर्ल से शॉक खा, तेज गति से उछली, गिरी...और तुरन्त सम्भल न सकी।

फलस्वरूप,

जब तक थ्रिल क्वीन सम्भल पाती, हवा के झोंके की तरह, हाथों को उसी गति से लहराती हुई रेशमा खुली विण्डो तक पहुंच गयी।

शॉक खायी डार्लिंग ने सम्भलते-सम्भलते रेशमा को समुद्र में गोताखोरी करती डाल्फिन का-सा अन्दाज अपनाते हुए देखा।

और, इससे पहले कि हाथ में सधी कटार को रेशमा पर फेंक, उसे रोकने की वह चेष्टा कर पाती, रेशमा डाइव मारती खिड़की के पार जा कूदी थी।

थ्रिल क्वीन डार्लिंग शॉक से उबरते ही विण्डो की ओर दौड़ पड़ी।

वह तूफ़ानी गति से विण्डो से बाहर खुले मैदान में जा कूदी।

उसके मस्तिष्क की झनझनाहट अभी भी बाकी थी।

उसके हाथ में कटार अब भी सम्भली हुई थी—और वह सोच रही थी शायद कटार का ही भय था, जिसने रेशमा को कदम पीछे सरकाने को मजबूर कर दिया था। डार्लिंग का मस्तिष्क, रेशमा की विचित्र अनोखे व्यक्तित्व पर झटके खा रहा था।

वह शॉक गर्ल थी, यह बात उसने उसके निकल जाने के अंतिम प्रयास के समय जाना था—वह विषकन्या थी, उसे बैड पर अंतिम मौके पर उसने परखा था। वह जाफरान की बूटी नहीं, मिलिटेण्ट की यह बात सबसे अन्त में उसने जाना था।

उसकी निगाहें उसे खोज रही थीं, पर वातावरण का अंधेरा बाधक बन रहा था।

रेशमा के चरित्र और व्यक्तित्व को लेकर उसके मस्तिष्क

में अब जो सोच उभर रही थी उसके अनुसार वह अफ्रीका के जंगलों में खिलने वाले जीवभक्षी पुष्प की तरह थी।

ऐसा जीवभक्षी पुष्प, जो अपने आकर्षण और सुगन्ध में जीवों को बांधकर अपनी ओर खींचता है, उसके अपनी निकटता में आने पर, जीव का जीवन चट कर उससे अपनी खुराक हासिल करता है। कुछ ऐसे ही जीवभक्षी पुष्प के समान थी रेशमा।

और फिर अगले ही क्षण, अंधकार में देखने की अभ्यस्त हुई आंखों के सामने रेशमा का चेहरा आ गया। वह अस्तबल तक जा पहुँची थी। थ्रिल क्वीन ने तेज दौड़ लगा दी। वह उसे अस्तबल से बाहर आने से पूर्व घेर लेना चाहती थी।

लेकिन,

उसकी हर सोच से कहीं ज्यादा, अब तक रेशमा तेज साबित होती आयी थी। उस मौके पर भी उसकी तेजी सामने आयी।

थ्रिल क्वीन अभी अस्तबल से कोई पच्चीस मीटर दूर थी कि रेशमा घोड़े पर सवार, आंधी-तूफान की तरह बाहर निकलती नजर आयी।

डार्लिंग ने दोनों हाथों को फैलाकर उसे घेरना चाहा। सेकण्ड के सौवें हिस्से में उसके मस्तिष्क में बात कौंधी कि यह उसकी भूल है...। रेशमा घोड़े का रुख मोड़ने के बजाय उसकी ओर घोड़े को दौड़ाकर उसे रौंद डालना चाहती है।

मस्तिष्क में विचार कौंधने की देर थी कि थ्रिल क्वीन एकदम से, अपने स्थान से उछाल भर गयी...।

वह बाल-बाल बची थी।

उसने लगाम पर हाथ लपकाया था—लेकिन, रेशमा ने सधे हुए घुड़सवार का परिचय देते हुए घोड़े की बाग मोड़ दी थी...।

थ्रिल क्वीन का हाथ खाली गया।

घोड़ा सरपट दौड़ा जा रहा था...थ्रिल क्वीन के दौड़ पड़ने की रफ्तार फर्राटा धाविका की तरह थी...। कुछ पिछड़ने के बाद वह घोड़े के साथ दौड़ की होड़ लेने लगी।

रेशमा ने एक हाथ से घोड़े की बाग सम्भाल रखी थी...दूसरे हाथ से उसने जीन से बंधी रस्सी का छल्ला खोल लिया था...।

हर निगाह उसकी डार्लिंग पर थी...हर कोशिश थी कि वह आफत की परकाला को अपने तक पहुंचने से दूर रखे।

'टपाऽऽ टपऽऽ टपाट्पऽऽ।' दौड़ते घोड़े की टापें रात के वीराने में, चट्टानों पर गूंज रही थीं। साथ ही उसने पीछे पलटकर उस पर एक के बाद एक दो फायर झोंके।

इस बार भी थ्रिल क्वीन फायरों से खुद को कुशलता के साथ बचा गयी। पर फायरों से बचने के प्रयास में वह घोड़े की रफ्तार से पिछड़ गयी। बावजूद इसके उसके पीछे दौड़ना न छोड़ा। उसने चिंघाड़ते स्वर में कहा—"जाफरान की बूटी...मैं तुझे अपने हाथों से निकलकर जाने नहीं दूंगी...।"

'सांयऽऽऽ सड़ाक...ऽऽऽ।' रेशमा ने रस्सी के छल्ले को पूरी ताकत से डार्लिंग पर उछाला। उसने एक नया दांव उस पर फेंका था। रस्सी के छल्ले में उसे फंसा—दौड़ते घोड़े के साथ घसीटती चली जाना चाहती थी।

थ्रिल क्वीन ने झुकाई लेकर वार बचाया और अगले झटके में, वार को बाईं कलाई पर रोका, तथा दाएं हाथ से रस्सी थाम ली। उसने देख लिया था एक हाथ से घोड़े की लगाम रेशमा ने थाम रखी है। रस्सी को संभालने के लिए दूसरा हाथ खाली करने के लिए पिस्टल कमर में खोंस ली है।

डार्लिंग ने यह भी पाया कि उसके द्वारा रस्सी थामे जाते ही रेशमा ने जोरदार झटका खाया। अब घोड़ा अपने वेग से दौड़ा चला जा रहा था...डार्लिंग पूरी ताकत से दौड़ रही थी। रेशमा के मामले में डार्लिंग को लगा, वह अब घोड़े से नीचे आयी, तब आयी।

लेकिन उसके घुड़सवारी की कला को डार्लिंग भी मान गयी—जबकि उसने घोड़े के पेट से चिपकाए अपने पैरों के सहारे अपना सन्तुलन साधे रखा। वह पूरे पैंतालीस डिग्री घोड़े की पीठ से झुक आयी थी...बावजूद इसके खुद को सम्भाले हुए थी।

उसके साथ दौड़ती थ्रिल क्वीन ने हवा में जम्प मारी...। और इस जम्प में उसके दाएं पैर की एड़ी का प्रहार रेशमा के कंधे पर पड़ा।

इस चोट पर उसके कंठ से जोरदार चीख कौंधी। उसके हाथ से घोड़े की रास छूटी। जिस्म ढीला पड़ा और हाथ-पैर फैलाए

हुए वह चारों खाने चित्त जमीन पर आयी।

डार्लिंग ने बाज की तरह उस पर झपट्टा मारा।

लेकिन,

रेशमा ने बेहद फुर्ती से कलाबाजी खायी। विस्मयजनक रूप से उसने खुद को थ्रिल क्वीन के झपट्टे से बचाया। साथ ही वह इस बात को देखकर काफी हद तक आश्वस्त हुई कि आफत की परकाला के हाथ से कटार छूटकर काफी पीछे रह गयी है।

और फिर,

अगले पल, उसने पैरों को जमीन पर मारा और स्प्रिंग गर्ल के रूप में खड़ी हो गयी।

थ्रिल क्वीन ने जबर्दस्त एक्शन मुद्रा में उठने के लिए उछाल मारी।

उस समय डार्लिंग के सामने रेशमा का एक विस्मयजनक रूप आया जबकि रेशमा, कुंग-फू फाइटर का एक्शन अपनाकर खुद को वार्म अप करते हुए धीरे-धीरे उछाल लेने लगी।

"मैं तुम्हारी कब्र बना दूंगी इण्डियन स्पाई...।"

संघर्ष उत्तेजना की चरम ऊंचाइयों पर पहुंची हुई रेशमा चीखती आवाज में बोली। उसकी आवाज जैसे पहाड़ियों का सीना थर्राने के प्रयास में उभर रही थी—"सुनो, तुमने जो-जो बातें कहीं डार्लिंग सब ठीक कहीं। मैंने कश्मीर की डल झील से लेकर यहां तक तुम्हारे लिए मौत का जाल बिछाया, पर तुम न जाने किस बेशर्म मिट्टी की बनी हो कि बार-बार कोशिशों के बाद भी अभी तक मौत के आगोश में न पहुंच सकीं...। तुमने कुछ बातें नहीं बतायीं—उसे मैं बताती हूं आफत की परकाला डार्लिंग...।

डल झील के हमले से बच जाने के बाद योजनाबद्ध रूप में तुम्हारे सामने हमारी ओर से यह स्थितियां पैदा की गयीं कि तुम भारत छोड़ पाकिस्तान की धरती इस्लामाबाद, पहुंचो। हमारे संगठन को तुम्हारी कार्य पद्धतियों की जानकारी थी, इसलिए मीडिया को ऐसे माध्यम दिये गये जिसके जरिये तुम तक जानकारी पहुंच सके कि तुम्हारी रेशमा को मुजाहदीन मुरसलीन अगुवा करके किस रास्ते से मरी पहुंच चुके हैं।

हमें मालूम था कि तुम मरी पहुंचने को व्याकुल हो जाओगी। हमने मरी में अपने आदमी फैलाए। तुमने शहबाज खां के

जुआघर में कदम रक्खा और हमें खबर हो गयी।

हमने शहबाज पर इस बात का दबाव बढ़ाया कि वह तुम्हें हमें सौंप दे, उसके इनकार करने पर उसके रिहाइशगाह पर राकेट लांचर से हमला करके तुम्हें मटियामेट करने का मिशन पूरा किया गया...। मगर फिर भी तुम बच गयीं।

उसके बाद जो हुआ, वह एक खुली जंग में बदल गया...। बहुत कुछ नुकसान हमें उठाना पड़ा। मगर इसके साथ यह योजना बनी कि हमारे मुख्य ठिकाने की ओर तुम्हारे बढ़ने के रास्ते खोल दिये जाएं।

तीन ओर से घेराबन्दी करके जबर्दस्त हमले की योजना भी अमल में लायी गयी...पर तुम फिर भी बचती हुई हमारे मुख्य ठिकाने तक पंहुच गयीं...। तुमने हमारे कमाण्डर को खत्म कर दिया...। लेकिन अभी मैं जीवित हूं आफत की परकाला...मैं...जिसने मुरसलीन की सबसे अहम और खुफिया चेयरमैन की पोस्ट सम्भाल रखी है...। तू मेरे हाथों मौत पायेगी...और संगठन की योजना जैसी की तैसी चलती रहेगी...क्योंकि भारत के विरुद्ध तबाही व बर्बादी लाने का योजनाकार, हमारे संगठन का सबसे अहम मोहरा, बारूद अली अभी जिन्दा है...।

बारूद अली एटमी फार्मूला तैयार करने में लगा हुआ है, और मैं तुझे मौत के घाट उतारने के मिशन को अंजाम देने जा रही हूं...।"

"खूब...बहुत खूब जाफरान की बूटी...।" थ्रिल क्वीन विषैले स्वर में बोली—"यह तो कुछ ऐसी ही बात हुई कि कोई उड़ता हुआ पतंगा इस बात का दावा करे कि वह चांद को छूने जा रहा है।"

डार्लिंग के स्वर में जहां विष भरा हुआ था, वहीं उपहास उड़ाने का अन्दाज भी शामिल था।

"पतंगे और इन्सान में बहुत फर्क होता है डार्लिंग...। पतंगे के पास पंख होते हैं मगर अक्ल नहीं। इन्सान के पंख नहीं होते मगर अक्ल होती है। अपने अक्ल के बल पर उसने सिर्फ चांद को नहीं चांद से भी अधिक ऊंचाइयों को छू लिया है और लगातार और भी ऊंचाइयों पर बढ़ते जाने की कोशिशों में लगा हुआ है।"

"वाऊ...।" डार्लिंग ने खूंखार शेरनी के से अन्दाज में गुर्राकर कहा—"ऊंचाइयों पर पहुंचने का शौक तेरा पूरा हो गया।

अब तुझे धरती की नीचाइयां छूनी होंगी। तुझे इस बात को हर हाल में बकना होगा कि बारूद अली के एटमी ठिकाने की भौगोलिक स्थिति क्या है और भारत के विरुद्ध क्या साजिशी योजना है...?"

"ख्वाबों में उड़ना छोड़ दो मिस डार्लिंग...। अब रेशमा आज़ाद है। तेरी मौत देखने की तलबगार है। मैं देख चुकी हूं कि गोलियों से बचने के आर्ट में तू सिद्ध हस्त है। इसलिए मैंने भी अब तय कर लिया तुझ पर गोलियां व्यर्थ करने के बजाय मैं...फाइटिंग आर्ट से तेरे जिस्म से तेरी रुह को अलग करूंगी।" कहती हुई रेशमा, हुंकार भरती हुई अपने स्थान से उछली।

हल्के-फुल्के जिस्म और फूल-सी काया वाली षोडशी बाला रेशमा, हवा में उड़ती हुई सीधे आकर थ्रिल क्वीन से टकरायी।

उसका बर्मीज बॉक्सिंग का जबर्दस्त पंच डार्लिंग के चेहरे पर पड़ा।

कारगर आक्रमण!

एक क्षण के लिए लगा डार्लिंग के कदम उखड़ गये हैं।

वह अपने स्थान पर लड़खड़ा गयी है।

निःसन्देह, इस बात का यकीन न आया डार्लिंग को कि पतंगा चांद की ऊंचाइयों को छू लेने का प्रयास कर सकता है।

लेकिन,

यह पलक झपकने भर की बात थी।

इससे पहले कि रेशमा का उसी अन्दाज का अगला वार, डार्लिंग के चेहरे पर पड़ता, लड़खड़ा उठी थ्रिल क्वीन का हाथ अपने चेहरे पर बचाव मुद्रा में आ गया।

'टाक...।' रेशमा का कुंग-फू घूंसे का अगला प्रहार थ्रिल क्वीन ने कलाई पर रोका। साथ ही इससे पहले कि रेशमा अपना हाथ उसकी कलाई से हटा पाती, थ्रिल क्वीन बेहद फुर्ती से घूम गयी।

इस क्रिया में रेशमा के हाथ को झटका लगा...इस बार रेशमा के लड़खड़ाने की बारी थी।

थ्रिल क्वीन को बस इतना ही वक्त चाहिए था...सामने वाले की जरा-सी चूक का भरपूर लाभ उठा लेने वाली डार्लिंग ने उसके दूसरे हाथ पर हाथ डाल, उसे हवा में किसी गुड़िया की तरह उछाल दिया।

यह कुंग-फू का काउण्टर अटैक दांव था जिसे डार्लिंग ने अपनी जाफरान की बूटी पर आजमा डाला था।

रेशमा उछलकर गिरी।

"अब मेरी बारी है रेशमा...।" हुंकार गुंजाती डार्लिंग ने हवा में जम्प ली...। उसका मुड़ा हुआ घुटना, रेशमा की पसलियों से टकराने के लिए झपटा।

लेकिन, सचमुच ही रेशमा ने फाइटिंग आर्ट में जबर्दस्त रूप से महारत हासिल कर रखी थी। डार्लिंग के घुटने के प्रहार से बचने के लिए वह बिजली की तरह चमककर अपने स्थान से हट गयी...।

डार्लिंग का वार खाली गया।

रेशमा ने पलटकर कैरेट चाप का प्रहार डार्लिंग की गरदन पर लहराया...। डार्लिंग एकदम पलटी...। उसकी लातें उठीं।

हमलावर मुद्रा अपनाए, अपने ही झोंक में हवा की गति-सी बढ़ चुकी रेशमा के पेट से डार्लिंग ने दोनों लातें पूरे वेग से टकरा दीं।

जबर्दस्त प्रहार था वह।

रेशमा यूं उड़ी जैसे डी प्वाइण्ट पर फुटबाल को लाकर फुटबालर ने भरपूर किक जड़ दी हो...।

कई फुट हवा में उछली हुई रेशमा गिरी।

गिरकर सम्भल भी न पायी थी कि उसके हाथ और पांव फिसल पड़े।

उसकी क्रन्दनकारी लम्बी चीख गूंजी...और लुप्त होती चली गयी।

थ्रिल क्वीन उस स्पॉट की ओर तेजी से दौड़ लगाकर पहुंची, जहां उसने लातों के प्रहार से फुटबाल की तरह रेशमा को उछाल फेंका था।

और उस स्थान पर पहुंचते ही क्षणेक के लिए उसके खुद के होश उड़ गये। वह बदहवाशी भरे स्वर में बुदबुदा उठी—

"नहीं रेशमा...नहीं...तुम मर नहीं सकतीं।"

दरअसल, वह स्थान, जहां पर रेशमा गिरी थी—फिसलनदार कगार थी।

कगार के नीचे पहाड़ी नदी वेगवती धारा में बहती थी।

गिरने के साथ रेशमा ने कगार को थामा था...मगर झटका खाए जिस्म के कारण हाथों को साध न सकी थी। परिणामतः हाथ फिसल गया था...चीख कौंध उठी थी रेशमा की।

अगली नजर में थ्रिल क्वीन ने रेशमा के जिस्म को बहती धारा पर देखा। नदी की धारा का बहाव तेज था...। ऊंचाई और नीचाइयों पर बलखाती नदी की लहरें, पलक झपकते रेशमा को बहाती हुई, उसकी नजरों से दूर ले गयीं।

थ्रिल क्वीन घूमी।

उसके होंठों पर उस शिकारी बाज-सा संतोष था, जिसने शिकार के लिए उड़ान भरी हो और उड़ते हुए कबूतर को पंजे में दबोच लिया हो।

जल्दी ही उसे मुख्तार का वह घोड़ा नजर आ गया, जिसे रेशमा ने अस्तबल से ले भागने का प्रयास किया था।

वह घोड़े की ओर बढ़ी।

कुछ पलों के बाद, घोड़े पर सवार डार्लिंग अपने आरामगाह की ओर लौट रही थी।

घने जंगलों और बीहड़ जैसे नजर आने वाले सीमावर्ती इलाके में छोलदारियां लगी हुई थीं। छोलदारियों में चारों ओर हथियारबन्द मिलिटेण्ट चाक-चौबन्द थे।

उस इलाके में राडार की भी व्यवस्था थी, रेडियो वायरलेस और ट्रांसमीटर सेट भी लगे थे। इनके अलावा टी० वी० और रेडियो का भी इन्तजाम था।

इस तरह वे अपनी सुरक्षा का ध्यान रखते हुए दुनिया की खबरों से भी खुद को जोड़े हुए थे।

छोलदारी के अन्दर, आधुनिक इलेक्ट्रानिक संसाधनों से युक्त बारूद अली आतुरता के साथ हाई फ्रीक्वेन्सी वाले ट्रांसमीटर पर किसी से सम्बन्ध बनाने के लिए प्रयासरत था।

जल्द ही दूसरी ओर से सम्बन्ध स्थापित हुआ—

"यस चीफ...रज्जब ओवर।" दूसरी ओर से कहा गया। स्वर उत्साह से भरा हुआ था।

"प्रोग्रेस...। ओवर...।" बारूद अली ने आतुरता से कहा।

"इस समय जिस स्थान पर पाक प्रमुख वैज्ञानिक की अध्यक्षता में इस्लामिक देशों के सुरक्षा संगठन के जिम्मेदार लोगों की खुफिया मीटिंग चल रही है उस जगह लगाया गया, हमारा गुप्त ट्रांसमीटर रिसीवर सेट सही तरह से काम करने लगा है...ओवर...।"

"गुड...।" बारूद अली पूरे उत्साह से उछल-सा पड़ता हुआ बोला—"क्या वहां की खुफिया मीटिंग कार्रवाई रिकार्ड की गयी ओवर...।"

"यस चीफ...हमने कार्रवाई रिकार्ड भी की...और अब भी रिकार्ड की जा रही है...ओवर...।"

"रिकार्ड की गयी कार्रबाई की संक्षिप्त रिपोर्ट दो...। ओवर...।"

"हमारी आशा के ठीक अनुरूप, इस्लामिक देशों के सुरक्षा संगठन के सदस्यों के बीच ठीक उसी विषय पर बातचीत हुई, जिसके लिए यह खुफिया मीटिंग जोड़ी गयी थी।

पाक प्रमुख वैज्ञानिक ने अपने विचार करते हुए लोगों के बीच इस बात की खुले दिल से घोषणा की है कि वे इस्लाम की हिफाजत के लिए, अपनी जान, इज्जत और ओहदे की परवाह न करते हुए पूरे दुनिया के मुसलमानों के सम्मान की रक्षा के लिए, एटामिक टैक्नोलॉजी और यूरेनियम के संसाधन को इस्लामी मुल्कों के उपहार के रूप में देने का फैसला कर चुके हैं, जो इस समय अमेरिका की दादागीरी और गुण्डागर्दी के शिकार होने के कगार पर हैं। ओवर...।"

"गुड...वैरी गुड...। बारूद अली ने फैसले के बाबत मिली जानकारी के प्रति हर्ष भाव व्यक्त करते हुए कहा—"अब मीटिंग की टेप की गयी प्रमुख बातों को सीधे मुझे सुनाओ....ओवर...।"

"यस चीफ...मैं संचार व्यवस्था को सीधे टेप के प्रमुख अंशों से जोड़ता हूं...ओवर...।" दूसरी ओर से कहा गया।

बारूद अली के दिल की धड़कनें बढ़ गयीं।

सामने मौजूद ट्रांसमीटर पर कुछ सेकण्ड 'सूं...ऽऽ सूंऽऽ' की हल्की ध्वनि उभरती रही।

फिर आवाज आनी शुरू हुई—

"...दोस्तो, हम यहां, पूरी दुनिया के इस्लाम पर मंडराते

खतरे की फिक्र को लिए जुटे हैं...। खुशी की बात है कि हमारे बीच यह बात राय इत्तफाक से तय पायी गयी है कि ईरान और लीबिया जैसे प्रमुख इस्लामिक कन्ट्रीज को एटमी ताकत से पूरी तरह मजबूत किया जाए।

इन दो मुल्कों को, एटामिक टेक्नोलॉजी तथा यूरेनियम की उपलब्धता कराकर, यू० एन०. ओ० की जानकारी में लाए बगैर, छोटे-छोटे मुस्लिम कन्ट्रीज को इस्लामिक यूनिटी के लिए लामबन्द किया जाए तथा उन सभी को चोरी-छुपे एटामिक शक्ति से लैस किया जाए...।

इन गोपनीय तैयारियों में इस बात की ओर पूरी तरह से ज़ोर दिया गया है कि सिर्फ पकिस्तान ही एक मात्र इस्लामिक देश है जिसे कुदरत की मेहरबानी से एटामिक ताकत की मजबूती मिली है। मिली हुई इस ताकत को सभी छोटे-बड़े इस्लामिक मुल्कों में बांटना उनका मजहबी फर्ज बनता है।

यह फर्ज, आज के हालात में सबसे ज्यादा अहम इसलिए भी हो जाता है क्योंकि अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रेलिया तथा इनके सहयोगी ईसाई धर्म प्रधान देश हैं। ये सभी अमेरिका की शक्ति के आधीन एकत्र होकर इस्लाम को मिटा देने, क्रिश्चियनिटी को पूरे विश्व में फैला देने के लिए एक मत हो चुके हैं। अपनी इस्लाम विरोधी योजना पर अमल करने के लिए इन्होंने अल-कायदा को मिटाने के नाम पर अफगानिस्तान पर जबर्दस्त सैन्य शक्ति का इस्तेमाल कर, काबुल में अपनी कठपुतली सरकार का गठन्न कर दिया। सद्दाम हुसैन की ताकत को खत्म करने के लिए इराक पर हमला करके बगदाद में कठपुतली सरकार गठित कर दी गयी। फिलीस्तीन को मिटाने के लिए इस्राईल को खुलेआम कत्ल और दहशतगर्दी फैलाने की छूट दे रक्खी गयी है।

ईरान को अमेरिका आंख दिखा रहा है कि उसका हस्र इराक जैसा कर दिया जाएगा, लीबिया को धमकाया जा रहा है कि अपनी बरबादी के लिए तैयार रहे। ईरान और लीबिया को नहीं बचाया जाता तो फिर तो कोई भी इस्लामिक देश क्रिश्चियनिटी के प्रभाव से बच न सकेगा। अरब देश यूं भी पहले भी अमेरिका की गोद में खेल रहे हैं, उनके पास तो अपनी फौजी ताकत तक नहीं।

इन हालात में ईरान और लीबिया को खासतौर पर एटामिक

रिसर्च टेक्नोलॉजी और यूरेनियम भण्डार का दिया जाना आवश्यक है...। बेशक इसके लिए हमें किसी भी हद तक जाना पड़े...।"

कुदरत ने हमें तेल के कुएं बख्शे हैं...यूरेनियम के भंडार इनायत किये हैं...। खनिज सम्पदा से लैस किया है...गैस भण्डार का नजराना दिया है...। फिर भी हम क्रिश्चियनिटी के दबाव में आयें...।"

"नहीं...।" एक नई आवाज उभरी—"हमने दबाव में न आने की कसम उठायी है...। जो बात तय पा ली गयी है, उस पर फौरन अमल किया जाना जरूरी हो गया है। ईरान, लीबिया, मिस्र, सूडान और जोर्डन के अपने संगठन के सदस्यों को सूचना दे दी जाए कि वे रिसर्च सेण्टर पर पहुंच जाएं...।"

"यस...।" एक और आवाज उभरी। उस आवाज को बारूद अली बहुत अच्छी तरह पहचानता था। उसने आगे कहा—"ताकि उन्हें एटामिक फार्मूला और यूरेनियम सौंप दिया जाए...।"

और फिर,

आवाज आनी रुक गयी। जो आवाज उभरी थी उसे बारूद अली टेप करता रहा था। उसने कुछ देर प्रतीक्षा की। फिर उसने कहा—

"रज्जब...! इससे आगे की रिपोर्ट दो...ओवर...।"

"यस चीफ...।" दूसरी ओर से कहा गया और आगे की रिपोर्ट दी जाने लगी।

दूसरी ओर से मिलने वाली रिपोर्ट को सुन बारूद अली की आंखों में उत्साह की चमक बढ़ती चली गयी।

उत्साह की उस चमक के साथ-साथ वह अपने उन मोहरों के बारे में भी तेजी से योजना बनाने लगा था, जिन्हें शतरंजी बिसात पर उसे सजाना था।

सूर्य की रश्मयां पहाड़ियों पर फैलकर वातावरण को खुशनुमा बना रही थीं। उस समय काराकोरस कबीलाई इलाके की पहाड़ी बस्ती के चप्पे-चप्पे पर मिलिटेण्टों द्वारा सख्त निगरानी रखी जा रही थी।

जाफरान की बूटी, रेशमा ने पहाड़ियों के बीच जैसे ही सिर उभारा, वातावरण में जबर्दस्त हलचल खिल उठी। मिलिटेण्टों के चेहरों पर हर्ष की रेखाएं फैलती चली गयीं।

वॉकी-टॉकी एवं ट्रांसमीटर द्वारा आनन-फानन एक से दूसरे तक सूचनाओं का आदान-प्रदान होने लगा।

और तब,

जबकि रेशमा उछाल लेकर एक समतल चट्टान पर जा खड़ी हुई उसके सम्मान में, एक दर्जन मिलिटेण्टों की टुकड़ी के हाथ, सैल्यूट की मुद्रा में आते चले गये।

उन्होंने हर्ष के जोश में भर हवाई फायरिंग द्वारा अपनी प्रसन्नता का इस तरह प्रदर्शन किया मानो वे उसे गार्ड ऑफ ऑनर दे रहे हों।

"मैडम चेयरमैन...।" एक जोशीला नारा गूंजा।

"जिन्दाबाद...।" हाथ बुलन्द कर अन्य ग्यारह ने अपनी वफादारी का इजहार किया।

रेशमा ने हाथ में थमी पिस्टल हवा में बुलन्द कर फायर दागते हुए जोशीली आवाज में कहा।

"मुजाहदीनों की जंगे-आजादी...जिन्दाबाद...।"

उसके होटों पर दिलकश मुस्कान उभरी। उसने मन ही मन सोचा—'काश इण्डियन स्पाई, आफत की परकाला कहलाने वाली डार्लिंग उसके इस सम्मान का रूप देखती। देखकर चौंके बिना न रहती। वह शायद मारे विस्मय के अपने सिर के बाल इस बात के लिए नोच डालती कि मेरा एक रूप यह भी है...। मुरसलीन संगठन के चेयरमैन का पद मैंने सम्भाल रखा है।'

लेकिन, अगले ही पल उसने मन में आये डार्लिंग के प्रति विचारों को झटक दिया। उसने दबंग आवाज में एक मिलिटेण्ट से सवाल दागा—

"कैम्प तक पहुंचने का क्या इन्तजाम है जाबिर बख्त...?"

"घुड़सवारों को खबर कर दी गयी है मैडम। वे मिनट दो मिनट के अन्दर यहां पहुंच आने वाले हैं...। इस समय यहां से कैम्प तक सिर्फ घुड़सवारी द्वारा ही पहुंचा जा सकता है...।" सम्बोधित मिलिटेण्ट ने सिर झुकाकर सम्मानजनक स्वर में बताया।

"हां, मैं भी इसी व्यवस्था की आशा करती थी।" रेशमा ने

कहा। और फिर वह इत्मीनान के साथ आगे के लिए अपने कदम बढ़ाने लगी। उसके दोनों साइडों में छः-छः मिलिटेण्ट की टुकड़ी उसके क़दम-से-कदम मिलाकर चलने लगी।

एक मिनट का भी वक्त न गुजरा था कि निचली पहाड़ी पर उभरती घोड़ों की टापें सुनाई देने लगीं। अगले ही पल रेशमा ने पहाड़ी के घुमावदार रास्ते से घोड़ों के सरपट दौड़ लगाते हुए उसकी ओर आने की झलक पायी।

चार घोड़ों पर उसके हथियारबन्द नौजवान सवार थे...। एक घोड़े की पीठ खाली थी। सवारविहीन घोड़े की लगाम चार में से एक घुड़सवार ने अपने घोड़े की जीन से बांध रखी थी।

देखते-ही-देखते घुड़सवारों के चेहरे साफ हुए। रेशमा ने उनमें से दो के चेहरे खासतौर पर पहचाने। उसके होठों पर गर्वीली मुस्कान आयी। खासतौर पर पहचान में आने वाले दोनों घुड़सवार मुरसलीन के सेकेण्ड रैंक के ओहदेदार थे।

घोड़े और घुड़सवार रेशमा के सामने पहुंचे। वे दो, जिन्हें रेशमा ने दूर से पहचान लिया था, वे दोनों उसके सामने पहुंचते ही तेजी से घोड़े की पीठ से नीचे आये। उन्होंने घोड़े छोड़े। आगे बढ़े। अभिवादन करते हुए सम्मानजनक स्वर में बोले—

"मैडम, हम आपकी खिदमत में हाजिर हैं।"

रेशमा आगे बढ़ी।

उसने खाली घोड़े की पीठ थपथपायी। उछलकर घोड़े पर सवार हुई।

आने वाले चारों मिलिटेण्टों से कहा—

"चलो...।"

खास पहचान वाले दोनों मिलिटेण्टों ने अपने घोड़े आगे रखे...रेशमा का घोड़ा बीच में रहा। चार में से शेष दोनों पीछे घोड़े लगाए। और फिर, देखते-ही-देखते पांचों घुड़सवार पहाड़ी से नीचे उतरने के लिए घोड़ों को ऐड़ लगा दी।

अपनी मैडम चेयरमैन का सम्मान करने वाले बारहों मिलिटेण्ट पीछे, पूर्व की तरह इलाके की निगरानी के लिए वहीं रह गये।

कुछ देर बाद,

घने जंगलों और बीहड़ रास्तों को पार कर जिस स्थान पर वे पहुंचे वहां सख्त पहरा था। वही वह जगह थी जहां मुरसलीन

का मौजूदा, अस्थायी चीफ बारूद अली था।

मुख्य छोलदारी तक पहुंचने के बाद घोड़े रुके। रेशमा अपने घोड़े से फुर्ती के साथ नीचे आयी।

उसने अपने दोनों खास पहचान वाले चेहरों से बात की और फिर छोलदारी की ओर अकेली बढ़ने लगी।

उसकी चाल में खासी फुर्ती थी।

रेशमा को छोलदारी में दाखिल होते देख, उसे वहां तक पहुंचाने आने वाले चारों घुड़सवार वापस लौटे।

छोलदारी के अन्दर कदम रखते ही रेशमा ने देखा—उसके दाखिल होने की तस्वीर वहां रखे एक बड़े से टी० वी० सेट की स्क्रीर पर उभर रही है। उसकी उभरती वह तस्वीर इस बात की द्योतक थी कि वहां क्लोज सर्किट कैमरों का भी इन्तजाम है। अवश्य ही वह इन्तजाम काफी फासले से रखा गया था।

रेशमा के दाखिल होते ही बारूद अली सामने आ गया।

"खुशआमदीद...।" बारूद अली ने स्वागतमय स्वर में कहा—"आपके वापस आने की मुबारकबाद देता हूं मैडम चेयरमैन...।"

"यहां का इन्तजाम तो खासा अच्छा है मिस्टर बारूदअली...।" रेशमा ने छोलदारी के चारों ओर घूमती निगाहें दौड़ाकर कहा।

"न सिर्फ यहां का इन्तजाम ही बहुत अच्छा है मैडम...।" बारूद अली ने शिष्ट स्वर में कहा—"बल्कि हम अपनी योजना की सफलता के अंतिम पड़ाव पर भी पहुंचने की तैयारी कर चुके हैं...।" बारूद अली के स्वर में प्रसन्नता छलकी पड़ रही थी।

"गुड...।" कहते हुए रेशमा ने बढ़कर सोफे पर स्थान सम्भालते हुए कहा—"आप भी स्थान सम्भालें मिस्टर बारूद अली।"

बारूद अली ने सामने मौजूद सोफे पर स्थान सम्भालते हुए कहा—"उम्मीद है, आप जिस मिशन के लिए गयी थीं, उसे सफलता के साथ पूरा कर आयी होंगी...।"

"नो।" रेशमा सपाट स्वर में बोली—"आफत की परकाला डार्लिंग, दो बार मेरे हाथों से मौत के मुंह में जाते-जाते बच निकली...।" कहने के साथ रेशमा संक्षिप्त रूप से अपने और डार्लिंग के संघर्ष की जानकारी बारूद अली को देने लगी।

पूरी बात सुनकर बारूद अली का चेहरा फीका पड़ा।

इससे पहले कि वह अपने दिल में आयी बात होंठों तक लाता, छोलदारी के पिछले हिस्से का परदा हटा। कुछ कबीलाई स्त्रियों ने अन्दर कदम रखा। वे एक बड़ी-सी मेज सम्भाले हुए अन्दर दाखिल हो रही थीं। मेज के ऊपर बड़ी-सी परांत में नानवेज भुनी हुई डिश थी...जिससे गरमागरम भाप निकल रही थी।

और उस डिश के साथ व्हिस्की की बोतल, गिलास, सोडा तथा मिनरल वाटर का भी इन्तजाम था।

दोनों के सामने मेज लगाकर स्त्रियां इस तरह सिर झुकाए वापस बाहर चली गयीं, जैसे वे गूंगी और बहरी हों।

"शुरू हो जाइए...आपके आने की खबर पाते ही मैंने आपके पसन्दीदा लजीज खाने और पीने का इन्तजाम करने का ऑर्डर दे दिया था।" बारूद अली ने कहा।

"वाकई...इसकी मुझे सख्त जरूरत थी। वह इण्डियन कुतिया डार्लिंग खाने-पीने के नाम पर मुझे जंगली जड़ी-बूटियों से तैयार पेय पदार्थ ही देती रही। उससे थके हुए जिस्म को आराम, स्फूर्ति और घण्टों-घण्टों के लिए गहरी नींद तो आती रही...मगर खाने का मामला तो उन सबसे अलग चीज होता है...।" कहते हुए रेशमा कई वक्त के भूख-प्यास से व्याकुल इन्सान के रूप में, डिश और व्हिस्की पर टूट पड़ी।

खाने और पीने के साथ ही उसके रूप की ताजगी में निखार और हुस्न के जलवों में चमक आती चली गयी।

मगर, उसके रूप की ताजगी के निखार और हुस्न के जलवों की चमक से बेपरवाह बारूद अली इस मामले में पत्थर की मूरत-सी भावना रखता हुआ भावहीन बैठा रहा। कुछ देर के बाद, वह बेचैनी भरे स्वर में बुदबुदाया—

"उसका बच जाना इतना ही खतरनाक है, जैसे कि चोट खाई नागिन का अपने बिल में दाखिल हो जाना...। उसका मरना जरूरी है...। मैंने अपने हर मिलिटेण्ट के खून के छींटों को देखकर बार-बार इस बात की कसम खाई है कि आफत की परकाला डार्लिंग को बहुत बुरी मौत दी जाएगी...।"

"बस, बहुत हुआ...।" रेशमा ने, एक हाथ उठा, संगठन के चेयरमैन के अधिकार का इस्तेमाल करते हुए पूरी गम्भीरता के

साथ कहा—"हम उसके लिए पागल कुत्ते बन गये थे बारूद अली...।" काश्मीर की डल झील से लेकर मरी और फिर इन कबीलाई सरहदी इलाकों तक उसे मौत के घाट उतारने की बार-बार कोशिशें कीं। हमें क्या हासिल हुआ? वह अभी तक बची हुई है और हम अपने संगठन की आधी से ज्यादा शक्ति गंवा चुके हैं। अब हमें अपना पूरा-पूरा ध्यान उस मिशन पर लगा देना चाहिए जो सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है...।"

बारूद अली गम्भीर होना चाहता था, लेकिन निगाह बांह के बैण्डेज पर गयी। रोम-रोम में जैसे तिलमिलाहट समा गयी। वह दांत भींचकर बोला—

"मैं अपने इस जख्म को भूल नहीं सकता...।"

"और न अपने लोगों की मौतें भुलायी जा सकती हैं...।" रेशमा जैसे शोलों की गरमी समेटकर बोली—"लेकिन, वक्त का तकाजा है कि पहले अपनी असली ताकत समेटी जाए...उसके बाद हम पूरी शक्ति झोंक देंगे उस कुतिया को खत्म करने में। किस्मत हर बार किसी पर मेहरबान नहीं होती। मरना तो उसे है ही...अब उसकी जब मौत आयेगी तो उसके जिस्म के इतने चीथड़े होंगे कि एक बोटी कहीं होगी तो दूसरी कहीं...। इसके लिए हमें चाहे उस अकेली के लिए एटमिक मिसाइल का इस्तेमाल करना पड़ जाए...।"

"यस मैडम चेयरमैन...।" बारूद अली यकायक जैसे सही राह पर आ गया—"मैं समझ गया आप किस बातचीत पर आना चाहती हैं।"

"फिर तो उसी मकसद पर आ जाओ...।"

"ताजा-तरीन इत्तला यह है कि पाक एटामिक रिसर्च सेण्टर के प्रमुख वैज्ञानिक ने अपनी ओर से इस बात की गोपनीय तैयारी पूरी कर ली है कि ईरान, लीबिया, सूडान, मिस्र, जोर्डन के प्रतिनिधियों को एटामिक टेक्नोलॉजी और यूरेनियम की खेप सौंप दी जाए...।" बारूद अली ने रिपोर्ट दी।

"गुड...।" रेशमा के चेहरे पर हर्षोल्लास की चमक आयी—"हमें इसी दिन की प्रतीक्षा थी...। इस बाबत पूरी रिपोर्ट दो...।"

"मैंने उनकी खुफिया मीटिंग कार्रवाई के कुछ अंश सीधे तौर पर टेप किये हैं तथा कुछ इत्तला हमारे एजेण्ट ने दी है...।

एजेण्ट की इत्तला भी टेप की शक्ल में हैं...।"

"मुझे टेप सुनने में दिलचस्पी है...।" रेशमा ने कहा।

बारूद अली ने अपना स्थान छोड़ा।

उसने टेप ऑन कर दिया।

आवाज उभरने लगी—वह आवाज, जो रेशमा के वहां पहुंचने से पहले बारूद अली ने रज्जब से ट्रांसमीटर पर सम्बन्ध बनाकर रिपोर्ट के रूप में टेप की थी।

रेशमा ध्यान से सुनती रही। वह उत्साह के जोश में भरी पहलू बदलती रही।

टेप की आवाज पूरी होने पर उसने बारूद अली से कहा—

"इस्लामिक देशों को एटमी शक्ति से लैस करने की इन इस्लामिक यूनिटी वाले मुल्लाओं की सोच के बाबत आपकी क्या राय है मिस्टर बारूद अली?"

"मेरी राय...।" बारूद अली होठों पर उपहासात्मक भाव लाकर बोला—"मेरी राय तो वही है, जो हमारे पेशवा ओसामा बिन लादेन की है...। पेशवा की राय है—जंगल के शेर की ताकत को सैकड़ों गीदड़ मिलकर नहीं पा सकते। पेशवा ने शेर का दिल रखते हुए अकेले दम पर अमेरिका को थर्रा दिया हैं। टुविन्स टावर और पेंटागन के हमलों ने इस बात को दिखा दिया है कि मुल्कों की ताकत से नहीं बल्कि मुजाहदीनों की ताक़त के बल पर ईसाइयत, अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी और उनके सहयोगी देशों को तबाह किया जा सकता है। हमें मुजाहदीन पैदा करते रहना चाहिए, आत्मघातियों को संगठित करते रहना चाहिए। सत्तावन सालों की फौजी कार्रवाइयों में पाकिस्तान, काश्मीर का मसला कहां हल कर पाया...। हमें काश्मीर को अपनी ताकत से आजाद कराना है। इसके लिए सिंह जैसी ताकत हमें हासिल करनी है...।" बारूद अली का स्वर जज्बाती था।

"ठीक...।" रेशमा ने जोशीले स्वर में कहा—"हमें और हमारे संगठन को फिलहाल सिर्फ यह बात याद रखनी है कि हमारा पहला उद्देश्य भारत से काश्मीर को आजाद कराना है। यह आजादी हमें अपनी ताकत के बल पर हासिल करनी है...। यह आजादी आगरा से दिल्ली तक भयानक तबाही और बर्बादी फैला देने पर हमें खुद-ब-खुद हासिल हो जानी है। हमें वह करना है जो

सत्तावन वर्षों में पाकिस्तान की कोई सरकार नहीं कर सकी। हमें एटामिक मिसाइल का इस्तेमाल आगरा से दिल्ली तक करके भारत को थर्रा देना है...भारत के एक-एक आवाम के मुंह से कहलवा देना है—हमें और तबाही नहीं चाहिए...हमें कश्मीर नहीं चाहिए...। आगरा से दिल्ली तक हीरोशिमा और नागासाकी जैसा तबाही और बर्बादी का नजारा देखकर भारत का आवाम चीख उठेगा—हम और बर्बादी नहीं चाहते...।" अपनी बात कहते-कहते रेशमा का चेहरा उत्तेजना के जोश से और भी ज्यादा सुर्ख होकर तमतमा उठा।

"मैडम चेयरमैन...आपका जोश काबिले तारीफ है।"

"सिर्फ तारीफ से मैं खुश नहीं होना चाहती बारूद अली...मैं योजना को अमली जामा पहनाना चाहती हूं...।"

"योजना का अमल भी तैयार है मिस चेयरमैन और जामा भी...।" बारूद अली ने बताया—"हमारी योजना, इन पेपरों पर बन चुकी है...। इन्हें आप देखिए...। इस योजना के हर पहलू को मैं समझाता हूं...। इस पर यदि आपको तसल्ली होती है तो हम अगले चौबीस घण्टों के अन्दर योजना को अमली जामा पहना देंगे...।"

बारूद अली के सामने फैले प्लान पेपर पर ध्यान जमाने के लिए रेशमा झुक गयी।

बारूद अली पूरे जोश के साथ उसे प्लान पेपर के मुख्य बिन्दुओं को समझाने लगा था।

स्पाई क्वीन डार्लिंग की दृष्टि रिस्टवॉच की उन निचली सुइयों पर जमी हुई थी, जो घण्टा, मिनट, सेकण्ड की सुइयों से अलग थीं।

वे अतिरिक्त सुइयां थिरकती हुई उस दिशा और दूरी की सही जानकारी दे रही थीं।

रिस्टवॉच के ही एक हिस्से पर दबाव डालकर डार्लिंग ने एक छोटी पिन निकाल रखी थी। घड़ी से निकली वह पिन एण्टीना का काम दे रही थी। उस पिन को उसने हेडफोन के बारीक तार से जोड़ रखा था।

वह पूरे मनोवेग से हेडफोन के जरिये कानों में पड़ती बारीक से बारीक आवाज को सुन रही थी।

उसने दूसरी ओर से उभरती रेशमा की तथा उससे सम्बोधित होने वाले शख्स की बहुत साफ आवाज सुनी।

उस आवाज को सुनते ही स्पाई क्वीन के होंठों पर विषैली मुस्कान थिरकी। वह बुदबुदायी—

"वाकई, मैं मान गयी जाफरान की बूटी...कि तू बड़ी ऊंची चीज है। तूने तो दहशतगर्दों के संगठन मुरसलीन में सबसे महत्वपूर्ण स्थान बना रखा है...। तुझे तो मुरसलीन के सदस्य मैडम चेयरमैन कहकर सम्बोधित कर रहे हैं...।" फिर वह बुदबुदायी—"लेकिन तू डाल-डाल तो मैं पात-पात, तू और मुरसलीन के बचे हुए लोग, कहां तक मेरे हाथों से बचकर भागेंगे...। मुझे भी देखना है तू कहां तक जाती है...।"

और फिर,

वह रिस्टवॉच की दिशा और दूरी की जानकारी लेने वाली सुइयों के आधार पर सामने फैले पेपर पर रेखाएं खींचने लगी।

दिशा और दूरी के आधार पर खींची गयी रेखाओं का उसने सामने मौजूद नक्शे पर मिलान करना आरम्भ किया।

वह नक्शा, पाक-ईरान सीमा पर स्थित कबीलाई इलाके का था।

उस नक्शे को सामी कबीले के सरदार मुख्तार ने उसकी मांग पर उसे उपलब्ध कराया था।

मुख्तार, जो अपने वफादार कुत्ते टीपू की लाश देखकर अफसोस कर चुका था। जो ब्यूटी क्वीन डार्लिंग को उसकी नई जिन्दगी की मुबारकबाद दे चुका था। जिसकी जानकारी में डार्लिंग रेशमा के वास्तविक रूप को ला चुकी थी। और मुख्तार ने कुछ देर हैरत के भूचाल से गुजरते हुए उस पर लम्बी चर्चा चलायी थी।

स्पाई क्वीन अभी सामने फैले नक्शे के साथ, पेपर पर अलग से खींची रेखाओं का मिलान करना जारी किये हुए थी कि उसी समय मुख्तार ने अन्दर आने की इजाजत चाही।

डार्लिंग ने दृष्टि घुमाकर देखा। हल्के से सिर हिलाकर मुख्तार को अन्दर आने की इजाजत दे दी।

मुख्तार के पीछे उसके दो आदमियों ने नाश्ते के सामानों

सहित प्रवेश किया। सरदार मुख्तार ने डार्लिंग के हाव-भाव में जहां व्यस्तता देखी, वहीं सफलता की चमक को पढ़े बगैर न रहा।

नाश्ता मेज पर सामने लगाकर मुख्तार के आदमी चले गये, तब मुख्तार ने कुर्सी पर स्थान सम्भालते हुए मुंह खोला—

"इस समय की आपकी व्यस्तता से मैं महसूस कर रहा हूं मिस डार्लिंग कि आपको आशातीत सफलता मिल रही है...।"

"यस मिस्टर मुख्तार...।" डार्लिंग के स्वर में जोश था—"अब मैं कह सकती हूं कि जाफरान की बूटी उर्फ जहर की पुड़िया के लिए मैंने बहुत जल्दी में योजना तैयार की थी—जिस योजना पर कार्य करते हुए मैंने उसे इस बात का अवसर दिया था जिसमें वह विश्वास करे कि वह मुझे पछाड़कर निकल गयी है, वह योजना अब पूरी तरह से सफलता की मंजिल छू रही है।"

"कैसे...क्योंकर...?" मुख्तार ने उत्सुकता के साथ पूछा।

"जहर की पुड़िया इस समय काराकोरस के इलाके में पहुंची हुई है।"

"काराकोरस...।" सजगता के साथ मुख्तार के कान खड़े हुए—"वह पाकिस्तान की ही सीमा पर स्थित एकदम बीहड़, कबीलाई इलाका है। काराकोरस पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों का पूर्णरूपेण प्रभावित इलाका है। काराकोरस के बारे में कहा जाता है कि वहां सिर्फ दहशतगर्दों की हुकूमत चलती है...।"

"यही मेरा भी ख्याल है...।" डार्लिंग ने कहा—"और अब मेरे सामने यह बात भी साबित हो गयी है कि तुगलई बस्ती वाले इलाके के बाबत रेशमा ने पूर्व में मुझे जो जानकारी दी थी वह पूरी तरह फर्जी थी...मुझे भटकाने और उस ओर ले जाकर मौत के मुंह में झोंकने की उसकी चाल थी...।"

"जी हां...इसके अलावा और क्या सोचा जा सकता है...।" मुख्तार ने कहा—"वह अदना-सी, बेपनाह खूबसूरत लड़की, सचमुच जहर की पुड़िया साबित हुई।"

"साथ ही विषकन्या भी...।" डार्लिंग ने गम्भीरता के साथ कहा। रुककर ट्रांसमीटर सिस्टम से जुड़ी, हेडफोन पर उभरती आवाज पर ध्यान देकर वह बोली—"वह इस समय घोड़े पर सवार, कुछ रक्षकों के साथ, बारूद अली के पास पहुंच रही है। बारूद अली को इस समय संगठन में चीफ का दरजा हासिल

है...जहर की पुड़िया को चेयरमैन का...। कमाण्डर विहीन मुरसलीन संगठन पर, रेशमा और बारूद अली ने पदों की आपसी बन्दर बांट कर ली है...।"

अपनी बात पूरी करते हुए स्पाई क्वीन के होठों पर विषैली मुस्कान थिरकी।

"यदि आपके ध्यान में व्यवधान भी पड़े मिस डार्लिंग तो कृपया नाश्ता कर लीजिए...।" मुख्तार ने आग्रहपूर्ण स्वर में कहा।

"फिलहाल मैं व्यवधान नहीं महसूस करती...।" डार्लिंग ने कहा।

मुख्तार के साथ वह नाश्ते में लगकर ध्यान ट्रांसमीटर पर आती आवाज और दिशा और दूरी की जानकारी देने वाली सुइयों पर भी लगाए रही।

नाश्ते के दौरान स्पाई क्वीन ने मुख्तार को इत्तला दी—

"वह बारूद अली के ठिकाने पर पहुंच गयी है...बारूद अली उसका स्वागत कर रहा है...। कुशलता का समाचार और मेरे बारे में बातें की जा रही हैं...।" स्पाई क्वीन के रसीले अधरों पर सरल मुस्कान उभरी।

जबकि मुख्तार के चेहरे पर तनिक सोचपूर्ण और उत्सुकता के भाव थे। उसने कहा—

"लेकिन मिस डार्लिंग, आप यहां बैठे-बैठे जो बातें रेशमा और मुरसलीन वालों के बारे में कर रही हैं और यह बता रही हैं कि इस समय वह काराकोरस की पहाड़ियों में पहुंची हुई है और अब बारूद अली के ठिकाने पर पहुंच चुकी है...इसकी जानकारी आपको क्योंकर हो रही है—तथा इस कागज पर आड़ी-तिरछी रेखाएं नक्शे के रूप में बनाकर जो आप अपनी जानकारी का केन्द्र बना रही हैं, वह कैसे हो रहा है?"

"हां, इसे मुझे आपकी जानकारी में ले आना चाहिए था मुख्तार...।" डार्लिंग ने गम्भीर स्वर में कहा। फिर अपनी रिस्टवॉच उसकी ओर कर नीचे की थिरकती सुइयों की ओर इशारे करके बताया—"ये दो सुइयां मुझे इस बात की जानकारी दे रही हैं कि इस समय रेशमा मुझसे कितनी दूरी पर है तथा उसकी दिशा क्या है...।"

"ओह...।" मुख्तार की आंखों में हैरतभरी चमक उभरी।

"और ये जो सुई के रूप में रिस्टवॉच में निकली हुई पिन है, यह ट्रॉसमीटर एण्टीना का काम दे रही है...जिससे अटेच्ड हेडफोन मैंने कान में खोस रखा है। यह मुझे रेशमा से बात करने वाले व्यक्ति की आवाज तथा रेशमा जिस किसी से जो बात कर रही है, उसका एक-एक शब्द मुझ तक पहुंच रहा है..."

मुख्तार की आंखें विस्मय से चौड़ी हुईं।

डार्लिंग कहती रही—

"यह सब, इस तरह और इसलिए हो रहा है क्योंकि मैंने उसकी पिस्टल में जो नई कारतूस मैगजीन फिट की थी, उसके साथ मैंने, माइक्रोचिप्स ट्रांसमीटर, मैगजीन के अन्दरूनी हिस्से में इस तरह फिक्स कर दिया था जिसकी जानकारी उसे न हो सके। वह माइक्रोचिप्स ट्रांसमीटर का रिसीविंग सिस्टम मेरी रिस्टवॉच के साथ सम्बद्ध है, जिससे रेशमा की दिशा-दूरी और आवाज मुझ तक पहुंच रही है...।"

"ओह...।" मुख्तार के चेहरे पर प्रसन्नता के भाव उभरे। उसने कहा—"और वह जहर की पुड़िया रेशमा समझ रही है कि वह आपको पछाड़कर निकल गयी, जबकि हकीकत यह है कि आपने उसे जान-बूझकर निकल जाने का अवसर दिया।"

"हां, तभी तो मैंने आपसे कहा था कि रेशमा के मामले में मैंने बहुत जल्दी से जो योजना तैयार की थी—वह योजना अब सफलता की मंजिलें छू रही है।"

"जी! अब मैं आपके उस कथन का अर्थ सही प्रकार से समझ सका हूं...।" मुख्तार ने प्रशंसा भरे स्वर में कहा—"इस तरह तो वह जहां-जहां तक जाएगी तथा जो-जो बातें किसी से कहती रहेगी उसकी जानकारी आप पाती रहेंगी।"

"हां, बशर्ते कि वह पिस्टल को अपने पास से अलग न करे...।" डार्लिंग ने विश्वासपूर्ण स्वर में कहा—"और वह अपने साथ पिस्टल रखने के स्वभाव के कारण उसे अपने पास रखेगी ही। इस तरह, प्रिस्टल में मौजूद वह माइक्रो चिप्स ट्रांसमीटर उस समय तक काम देता रहेगा जब तक वह पिस्टल में मौजूद आखिरी गोली खर्च कर उसकी मैगजीन नहीं बदलती।"

"ओह...।" डार्लिंग की सब कुछ बात समझता हुआ मुख्तार उत्साहित स्वर में बोला—"इस तरह जब वह वहां से आगे बढ़ेगी तब भी इसकी खबर आपको हो जाएगी...तथा वह आगे की जो योजना बनायेगी, उसे भी आप जान जाएंगी...।"

"यस...।" डार्लिंग ने हाथ उठा मुख्तार को रुकने का इशारा करते हुए कहा—"उसके और बारूद अली के बीच इस समय मामले की सबसे महत्त्वपूर्ण योजना पर बातचीत हो रही है। मिस्टर मुख्तार...मुझे उनकी बात पर पूरा ध्यान लगाना होगा।"

मुख्तार, उत्सुकता समेटे अपनी जगह झील के पानी की तरह ठहरा खड़ा रहा।

डार्लिंग, बारूद अली और रेशमा के बीच होने वाली बातें सुनती रही।

कुछ देर बाद,

उन दोनों के बीच होने वाली गम्भीर वार्ता को सुन उसका चेहरा न सिर्फ पूरी तरह गम्भीर बल्कि तनावपूर्ण भावों से भरता चला गया।

यह वह समय था जबकि रेशमा को बारूद अली, इस्लामिक देशों के सुरक्षा संगठन के बीच चलने वाली खुफिया मीटिंग की टेप की हुई कार्रवाई सुना रहा था।

और फिर, वह खुद को शेर और मुल्कों की ताकत को गीदड़ों की जमात बता रहा था।

उसके बाद,

वह क्षण स्पाई, क्वीन के लिए बेहद सनसनीखेज और रोमांच की झुरझुरी से भर देने वाला साबित हुआ जबकि उसने रेशमा को बारूद अली के साथ, टेबुल वार्ता पर, भारत पर एटामिक मिसाइल हमले की योजना बनाते हुए सुना...।

"शैतान की खाला...।" थ्रिल क्वीन मुट्ठियां भींचकर बुदबुदा उठी—उसका चेहरा मारे उत्तेजना के आरक्त हो उठा। उसके होंठों से विषैली फुंफकार उभरी—

"भारत की बेटी डार्लिंग जब तक जिन्दा है, तेरी योजना कभी परवान नहीं चढ़ सकती...। तूने मेरे ही अस्त्र का मुझ पर इस्तेमाल कर मुझे मौत की गोद में सुला देने की चेष्टा की...तेरी

चेष्टा तो व्यर्थ गयी जाफरान की बूटी, पर अब जब तेरी ही योजना पर मेरा ब्रह्मास्त्र चलेगा तो तुझे दुनिया की कोई भी ताकत, मौत की गोद में जाने से न रोक पायेगी...।"

फिर उसने एक झटके से अपनी सीट छोड़ दी।

मुख्तार करीब ही खड़ा था।

मेज पर फैले नक्शे और अपनी योजना से तैयार की गयी दिशा और दूरी वाले प्वाइण्ट पर, प्वाइण्टर रख स्पाई क्वीन ने मुख्तार से कहा—

"यह स्थान काराकोरस के अलावा और कोई नहीं हो सकता मिस्टर मुख्तार जहां इस समय शैतान की खाला रेशमा और ओसामा को अपना पेशवा मानने वाला नाजायज औलाद बारूद अली मौजूद है। और मैं आपकी जानकारी में सर्वप्रथम यह बात लाना चाहती हूं कि शैतान की खाला रेशमा और ओसामा की नाजायज़ औलाद बारूद अली के बीच इस समय किस मामले की तथा कितनी विध्वंसक शैतानी योजना बनी है...।"

कहकर डार्लिंग मुख्तार को जल्दी-जल्दी, रेशमा और बारूद अली के बीच की बातचीत तथा उनकी शैतानी योजना की जानकारी देने लगी।

सुनकर मुख्तार के दिल की धड़कनें बढ़ गयीं। उसकी रगों में दौड़ते खून का उबाल बढ़ गया। वह उत्तेजित स्वर में कहने लगा—

"इन हरामजादों की इतनी बड़ी साजिश...। ये इस्लामिक देशों की सुरक्षा को पाक की ओर से दिये जाने वाली एटमी टेक्नालॉजी पर खुद काबिज होकर उसे मानवता के संहार में इस्तेमाल करने जा रहे हैं...। ये तो बस, 'इस्लाम खतरे में है' का नारा लगाकर भोले-भाले लोगों की भावनाओं को भड़का सकते हैं। ये तो अपने बाप के भी सगे नहीं हो सकते...। देखने वाली बात ये है कि इन कोबरा नस्ल की औलादों को आई० एस० आई० बरसों-बरस दूध पिलाकर पालने का जो कार्य करती रही है, उन्हें भी समय-समय पर चूना लगाते रहे हैं। ये इतने हरामजादे हैं कि कारगिल युद्ध के समय जिस पाक राष्ट्रपति ने अपनी सैन्य शक्ति से इनकी भरपूर मदद कर, दुनिया के सामने अपनी थू-थू कराई

अपने उसी राष्ट्रपति पर दो-दो बार आत्मघाती हमले कराकर उनकी जीवन लीला समाप्त करने की चेष्टा की...। ये तो पूरे के पूरे सिरफिरे हैं...ये कुछ नहीं अल-कायदा के हाथों खेलने वाले कठपुतली रूपी खिलौने हैं...। मैं इनकी खसलत बहुत दिनों से जानता हूं, इसीलिए इनसे नफरत करता हूं...। इनके वजूद को नेस्तनाबूद देखना चाहता हूं।"

"तुम्हारी सोच अपनी जगह पूरी तरह दुरुस्त है मुख्तार। अब वक्त आ गया है कि ये पूरी तरह से नेस्तनाबूद हो जायेंगे। इनकी कम-से-कम तीन-चौथाई शक्ति और संख्या मरी की पहाड़ियों में तबाह हो चुकी है...। इन बचे हुए पच्चीस प्रतिशत सिरफिरों का वक्त भी पूरा हो चुका है...। इनकी शैतानी योजना का मेरे सामने पर्दाफाश हो चुका है...मैं जब तक इनमें से एक-एक को मौत के घाट न उतार दूंगी, कसम मां जननी जन्मभूमि की, कदम पीछे न सरकाऊंगी...।"

थ्रिल क्वीन डार्लिंग, मुख्तार से कहीं अधिक जोश और रोष में थी।

"मैं इस नेक काम में, हर कदम पर आपके साथ हूं मिस डार्लिंग...।"

"मुझे एक दर्जन अच्छी नस्ल के घोड़े और उन पर जाने वाले जांबाज जवान चाहिए...।"

"मिनटों में इन्तजाम हो जाएगा।"

"इसके अलावा जरूरी गोला-बारूद तथा दूसरे अच्छे किस्म के हथियार...।"

"इसका भी इन्तजाम हो जाएगा मिस डार्लिंग...। मेरे पास जितने भी बेहतरीन हथियार हैं, सबके सब आपके काम आ जाएं तो मैं इसे अपने लिए फख्र की बात समझूंगा...।"

"फिर तो जल्द से जल्द इन्तजाम कराइए...क्योंकि इन हरामजादों का अगला निशाना मकरान स्थित, पाक एटामिक रिसर्च सेण्टर का खुफिया ठिकाना है...।"

"मकरान...।" मुख्तार चौंका—"मकरान में तो सुनने में आया है कि यूरेनियम की प्राकृतिक खनिज सम्पदा पाकिस्तान को हाथ लगी है...वहां पिछले कुछ समय से खुदाई एवं अनुसंधान

कार्य चल रहा है।"

"हां, उनकी वहीं की योजना बनी है...और उनकी योजना में शतरंज की बिसात पर मोहरे फिट करने की बात मेरे सामने आयी है...।" डार्लिंग ने जल्दी से कहा—"और, वे वहां के लिए रवाना हो रहे हैं।"

"मैं अभी व्यवस्था करता हूं...।" कहता हुआ मुख्तार शीघ्रता से बाहर जाने के लिए झपटा।

घोड़ों की टापों से पहाड़ियां और मैदानी इलाका गूंज रहा था।

आगे-आगे दो जीपें भी दौड़ रही थीं जिन पर मुरसलीन के कुछ हथियारबन्द थे। जीपों पर असलाह, गोला-बारूद तथा दूसरे जरूरी उपकरण थे।

दो जीपों में से एक की अगली सीट पर रेशमा, बारूद अली तथा पीछे तीन गोरिल्ला जंग में खास ट्रेनिंग याफ्ता गार्ड थे। गार्डों के हाथों में मशीनगनें थीं। जीप की स्टेयरिंग रेशमा के हाथ में थी।

जीप के पीछे दौड़ने वाले घोड़ों की संख्या दस थी। सभी घुड़सवार ए० के० 47 और ए० के० 56 गनों से लैस थे।

मैदानी इलाका आरम्भ होने के कुछ देर बाद ही बड़ी-बड़ी घासों से ढंका इलाका शुरू हुआ तो बारूद अली ने अपने सामने फैले नक्शे पर निगाह डालते हुए रेशमा से कहा—

"आदमकद घास से ढंके मैदान का इलाका शुरू होना इस बात का संकेत है कि हम मकरान के इलाके में दाखिल हो चुके हैं...मैडम...। हम अगर इसी रफ्तार से चलते रहे तो पन्द्रह मिनट के अन्दर एटामिक रिसर्च सेण्टर के अपनी मंजिल पर पहुंच जायेंगे...मेरा मशविरा है कि अब वहां के हाइड्रो इलेक्ट्रिक स्टेशन पर कब्जा जमा चुके अपने आदमियों से ट्रांसमीटर पर सम्बन्ध बनाकर पोजीशन मालूम कर ली जाए....।"

"क्या यह बात जरूरी है...?" रेशमा ने जीप की रफ्तार कम करते हुए बारूद अली की ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखा। अपनी बात जारी रखी—"अपने कैम्प से रवाना होने से पहले ही

हमने इस बात की तसल्ली कर ली थी कि मकरान के हाइड्रो इलेक्ट्रिक स्टेशन पर तैनात सभी गार्डों, टेक्नीशियन और पावर इन्जीनियर, जिनकी कुल मिलाकर संख्या एक दर्जन थी, उन पर हमारे आदमियों का कब्जा हो चुका है तथा सरकारी आदमियों को आराम के साथ ले जाकर कैद कर दिया गया है जहां उनके लिए खाने-पीने की सभी सुविधाएं हैं...और वे हमारे आदमियों द्वारा निकाले जाये बगैर उस स्थान से खुद से बाहर नहीं आ सकते...।"

"उनसे इस बात की जानकारी हासिल करनी है कि देशों के प्रतिनिधियों के पहुंचने की क्या पोजीशन है तथा इस समय एटामिक रिसर्च सेण्टर पर कितने लोग मौजूद हैं...?" रेशमा ने कहा।

"एटामिक रिसर्च सेण्टर पर चूंकि स्वयं देश के प्रमुख वैज्ञानिक और उनके सलाहकारों की स्पेशल विजिट का आज प्रोग्राम है, इसलिए वहां आम दिनों की ड्यूटी करने वालों को सुरक्षा कारणों की बात कहकर छुट्टी कर दी गयी है...सिर्फ कुछ विशिष्ट टेक्नीशियनों और गार्डों को ही वहां रखा गया है...।"

"और उन पर हमारे आदमियों को काबू पाने में कितना समय लग सकता है...?" रेशमा ने पूरी गम्भीरता के साथ पूछा।

"हाइड्रो इलेक्ट्रिक स्टेशन पर कब्जा जमाए हमारे आदमी एक सेकण्ड में एटामिक रिसर्च सेण्टर की विद्युत व्यवस्था भंग कर सकते हैं। विद्यतु व्यवस्था भंग होते ही एटामिक रिसर्च सेण्टर में जो कुछ जहां है वहां ठहर जाएगा। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए हमारे ग्यारह आदमी रिसर्च सेण्टर में मौजूद समस्त लोगों को मिनटों में अपने काबू में कर लेंगे...ऐसा पूरा इन्तजाम है...। उन्हें इस समय सिर्फ आपकी ओर से सिगनल मिलने और आदेश पाने का इन्तजार है मैडम...।"

"ऑल राइट...आने वाले वी० आई० पीज की पोजीशन मालूम करो...।" रेशमा ने अंतिम निर्णय दिया।

आदेश पाते ही बारूद अली किसी से जल्दी-जल्दी रेडियो वायरलेस पर सम्बन्ध स्थापित करने लगा।

दूसरी ओर से फौरन सम्बन्ध बना।

"पोजीशन...ओवर...?" बारूद अली ने कहा।

"पोजीशन ओ० के० ओवर...।"

"वी० आई० पीज लोकेशन ओवर...।"

"दो हेलीकॉप्टरों के अभी-अभी हेलीपैड पर उतरने की लोकेशन मिली है...हमारा आदमी उन्हें लैण्ड पोजीशन दे, पांच मिनट के अन्दर वे लैण्ड कर जायेंगे...ओवर...।"

"मैडम चेयरमैन से बात करो...ओवर...।" कहते हुए बारूद अली ने रेडियो वायरलेस रिसीवर रेशमा की ओर बढ़ा दिया।

रेशमा ने रिसीवर सम्भालते ही प्रभावशाली और रोबीली आवाज में कहा—"हैलो...रज्जब...आप्रेशन फ्लाई बर्ड...के लिए घड़ी की सुइयां मिलाओ...आठ चालीस ओवर...।"

"यस मैडम चेयरमैन...आठ चालीस...ओवर...।"

"आठ पचपन पर आप्रेशन शुरू कर दो...अब से ठीक पन्द्रह मिनट बाद। सबसे पहले तुम्हारी टीम के आधे सदस्य वी० आई० पीज को कवर करेंगे...उन्हें कवर करने के ठीक एक मिनट बाद एटामिक सेण्टर को शेष आधे सदस्य अपने अधिकार में ले आयेंगे...ओवर...।"

"आल राइट मैडम...। हम पूरी तरह तैयार हैं...ओवर...।"

"राइट...दोनों ओर की स्थिति को अपने कण्ट्रोल में लेने के तुरन्त बाद कंटीले तारों की बाढ़ का रास्ता साफ करने के कार्य पर दो आदमियों को लगाया जाएगा...ओवर...।"

"बेहतर...। यह भी हो जाएगा...ओवर...।" दूसरी ओर से रज्जब नामक व्यक्ति ने कहा।

"इस बात का ध्यान रहे, किसी तरह की झड़प या खून बहाए जाने की स्थिति को टाला जाएगा...। आप्रेशन को इस तरह हैण्डल किया जाएगा जैसे सब कुछ सरकारी ड्यूटी के लोग ही अपने ढंग से काम को अंजाम दे रहे हों...ओवर...।"

"ऐसा ही होगा मैडम चेयरमैन...ओवर...।"

"आठ पचपन लास्ट मिनट ओवर एण्ड आल...।" रेशमा ने कहा।

सम्बन्ध विच्छेद कर उसने रेडियो वायरलेस सेट का रिसीवर बारूद अली की ओर बढ़ा दिया।

थ्रिल क्वींन ने घोड़े की रास खींचते हुए बायां हाथ उठाया।

उसके हाथ उठाते ही लम्बी-लम्बी घास के मैदान के बीच से दौड़ते घोड़ों की रासें खिंचती चली गयीं।

डार्लिंग ने अपना घोड़ा रोकने का कार्य इतनी द्रुतगति से किया था कि पीछे आने वाले कुछ घोड़ों को रुकने की चेष्टा में हिनहिनाते हुए अपने अगले दोनों पैर को उठाकर बैलेंस बनाना पड़ा था।

थ्रिल क्वीन डार्लिंग के साथ कांधे से कांधा मिलाकर चलने की कहावत चरितार्थ कर रहा था मुख्तार।

"शैतान की खाला इन्हीं रास्तो से करीब दस मिनट पहले गुजरी है...।" डार्लिंग ने अपने बराबर में घोड़ा लगाए मुख्तार से बताया। उसका आशय रेशमा से था।

मुख्तार की आंखों में चमक और चेहरे पर जोश था।

वह उस समय भी डार्लिंग के कान से लगा हेडफोन देख रहा था।

डार्लिंग की दृष्टि अपनी रिस्टवॉच की सुइयों पर केन्द्रित हुई।

यकायक वह चौंकी—दिशा और दूरी बताने वाली सुइयां स्थिर हो गयी थीं।

"उसका काफिला रुक गया है...।" थ्रिल क्वीन ने मुख्तार कहा।

और फिर,

उसके कानों में रेशमा और बारूद अली के वार्तालाप के पड़े।

उसके हाव-भाव में शिकार को निकली भूखी नागिन की-सी सतर्कता उभरती चली गयी।

रिस्टवॉच के ट्रांसमीटर से युक्त, हेडफोन के माध्यम से शमा और बारूद अली—फिर बारूद अली के अपने मिलिटेण्ट रिपोर्ट लेने वाले एक-एक शब्द डार्लिंग की जानकारी में आते गये।

उसने मन-ही-मन सोचा—'अच्छी बात यह है कि बारूद अली की, अपने मिलिटेण्ट से होने वाली बातचीत का माध्यम रेडियो वायरलेस है, जिसकी वजह से दोनों ओर की स्पष्ट बातचीत उस तक पहुंच रही है।'

वह ज्यों-ज्यों उनके बीच बातचीत सुनती गयी—उसकी भाव-भंगिमा में जहां सख्ती आती चली गयी वहीं मन, उत्साह के सागर-सा हिलौरे लेने लगा।

और फिर,

उसने रेशमा की रौबीली और प्रभावशाली आवाज सुनी।

रेशमा खुद मास्टर माइण्ड प्लान मेकर के रूप में आदेश देकर, मिशन को अंजाम तक पहुंचाने के जोश में भरी हुई थी।

रेशमा की बातचीत पूरी होते ही, तीखे तेवरों में भरी थ्रिल क्वीन बुदबुदायी—

"मैं तेरे सारे उत्साह और जोश की हवा निकाल दूंगी शैतान की खाला...तू अब देखेगी डार्लिंग नाम किस काली आंधी का है।"

और फिर,

उसने घोड़े की रास को ढील देते हुए मुख्तार से कहा—"वह आगे बढ़ने लगी है। आप लोगों को उसी दिशा में बढ़ना है, जिस-जिस ओर मेरे घोड़े की रास मुड़नी है...।"

कहने के साथ डार्लिंग ने घोड़े को ऐड़ लगायी...।

ठहरे हुए घोड़ों की टापों से घास के मैदान का सीना छिलने-सा लगा।

प्याले से आकार वाले इलाके में स्थित एटामिक सिर्च सेण्टर था। वह चारों ओर करेण्ट दौड़ते तारों से घिरा था। उसके विशालकाय कम्पाउण्ड के हेलीपैड पर एक के बाद एक दो हेलीकॉप्टर उस समय लैण्ड कर रहे थे।

पहले लैण्ड होने वाला हेलीकॉप्टर, पाकिस्तान एअरफोर्स के चिन्ह से युक्त था।

हेलीकॉप्टर से लगने वाली सीढ़ी के सहारे कदम नीचे

उतारने वाली पहली हस्ती थी पाकिस्तान के मुख्य वैज्ञानिक तथा उनके तीन सहयोगी।

और दूसरे हेलीकॉप्टर से उतरने वाले, ईरान, लीबिया, सूडान, मिस्र और जोर्डन के, राजनयिक का दर्जा रखने वाली हस्तियां थीं।

दोनों हेलीकॉप्टरों से उतरने वाली शख्सियतें एक दूसरे की ओर स्वागत और आभार भरे भाव से बढ़ना आरम्भ ही हुई थीं कि अचानक हेलीपैड के चारों ओर मौजूद हथियार बन्द सुरक्षा घेरा, दौड़ती अवस्था में उनकी ओर लपक पड़ा।

"हाल्ट...।" फिजा में एक गरजदार आवाज उभरी—"कोई भी एक कदम भी आगे न बढ़ाएगा...जो जहां है वहीं रुका रहेगा अन्यथा लाशें बिछ जायेंगी...।"

इस आदेश के साथ ही उन्होंने इस बात को भी देखा कि दोनों हेलीकॉप्टरों के पायलट और को-पायलट की ओर भी गनें तन चुकी हैं। उन्हें नीचे आने का हुक्म दिया जा रहा है।

इस कार्रवाई के साथ एक-दूसरे की ओर स्वागत और आभार भरे भाव रखकर बढ़ने वाले अपने-अपने स्थान पर एकदम शॉक्ड हो गये।

दिमाग चकरघिन्नी की तरह घूम गया।

एकदम ऐसा नक्शा उनके सामने उभरा—जैसे देश के राष्ट्रपति शासन में किसी सैनिक तानाशाह द्वारा तख्ता पलट की घटना सामने आ गयी हो। कम-से-कम पाकिस्तान के प्रमुख वैज्ञानिक और उनके सहायकों ने ऐसा ही महसूस किया। पाकिस्तान बनने के बाद इस तरह की तख्ता पलट की एक नहीं बार-बार घटनाएं सामने आती रही हैं...ऐसे अवसर आने पर सत्ता से जुड़ी हर हस्ती को संगीनों के सायों का सामना करना और फिर कुछ देर बाद ही नये हुक्मरां के सामने अपनी वफादारी का इजहार करना पड़ा है।

उनकी ओर हथियार तानकर दौड़ पड़ने वालों के तेवर पूरी तरह सख्त थे। हथियारबन्दों के जिस्मों पर सरकारी वर्दियां थीं। उनकी संख्या छः थी। उनके हाथों में तनी हुई मशीनगनें थीं।

एक ने आगे बढ़कर कड़कदार आवाज में कहा—

"सबके सब हाथों को ऊपर उठा लें...।"

आदेश का पालन हुआ।

"आप सब, एक सीध में लाइन से लगकर खड़े हो जाएं...और चेहरा घुमा लें...। तलाशी लेकर हम इस बात का इत्मीनान करेंगे कि आपमें से किसी के पास हथियार तो नहीं है? हथियार मिलने पर उसे कब्जे में लिया जाएगा। फिर आराम के साथ आप लोगों को हम अपने इत्मीनान की जगह पहुंचायेंगे। किसी के साथ कोई गलत सलूक न किया जाएगा। शर्त सिर्फ इतनी है कि हमारी कार्रवाई के बीच कोई अपनी टांग घुसेड़ने की चेष्टा न करे...।"

आठों हस्तियां यंत्रचालित मानवों की तरह आदेश देने वाले के आदेश का पालन करने में पूरी शराफत का परिचय देने लगीं।

तलाशी के उपरांत उन्हें अगला आदेश हाथ नीचे कर, पीठ की ओर करने का दिया गया।

उस हुक्म को उन्होंने पूरा किया ही था कि कलाई पर कलाई रखकर रुमाल से बांधा जाने लगा।

हाथों के बन्धन के बाद उन्हें आंखों पर पट्टियां बंधवानी पड़ीं। और फिर दो-दो को एक-एक हथियारबन्द, बांहों से थामकर अपनी मनचाही दिशा में लेकर बढ़ने लगा।

इस सारी कार्रवाई को पूरी करने में मुश्किल से पांच मिनट का समय लगा।

इस पांच मिनट के अन्दर कम्पाउण्ड के चारों ओर फैले करेण्ट युक्त तारों से न सिर्फ करेण्ट सप्लाई खत्म कर दी गयी थी...बल्कि एक बड़े भू-भाग से तारों की बाढ़ को काटकर खुला कर दिया गया था।

तारों के बाढ़ से विहीन हो चुके खुले स्थान से, तेज रफ्तार से आती दो जीपें और घुड़सवारों की टुकड़ी प्रविष्ट हुई।

जीपों में ब्रेक लगे।

जीप से कूदकर नीचे उतरी रेशमा।

उसने पलक झपकने के समय में उन आठों हस्तियों पर निगाह दौड़ायीं—जिनकी आंखों पर पट्टियां थीं और हाथ पीछे बंधे हुए थे।

"किसी किस्म के विरोध का सामना तो नहीं करना पड़ा

रज्जब...?" रेशमा ने बुलन्द आवाज में कहा।

"नो मैडम चेयरमैन...मैं इस बात के लिए इनकी प्रशंसा करूंगा कि दोनों हेलीकॉप्टरों से आने वालों ने हमारे साथ पूर्ण सहयोगात्मक रवैया अपनाया है...।" रज्जब नामक मिलिटेण्ट ने कहा।

वह उन आठों के आगे-आगे था।

"और, दोनों हेलीकॉप्टरों के पायलट और को-पायलट को भी हमारे आदमियों ने इन्हीं की तरह काबू में कर लिया मैडम...।" बारूद अली ने कहा।

रेशमा के पीछे, बारूद अली भी जीप से उतरकर उनके करीब पहुंच चुका था।

रेशमा ने दृष्टि उठाकर देखा—सामने मौजूद आठों बन्दियों की ही तरह, दोनों पायलट और को-पायलट भी उन्हीं की तरह बंधी अवस्था में लाये जा रहे थे।

"गुड...।" चारों ओर निगाह दौड़ा—स्थिति को अपने कन्ट्रोल में कर रेशमा ने सन्तुष्ट स्वर में कहा। फिर उसने आदेशात्मक स्वर में कहा—

"दोनों जीपों पर छः-छः लोगों को बिठाया जाए...। और मिस्टर रज्जब आप इन सबको गुफा के मेहमानखाने में पहुंचाने के लिए छः हथियारबन्द घुड़सवारों के साथ फौरन रवाना हो जाएं...। मैं और बारूद अली...यहां की व्यवस्था अपने कन्ट्रोल में लेते हैं।"

"यस मैडम...।" रज्जब ने सिर झुकाकर कहा।

वह लम्बे कद का चालीस वर्ष के आसपास का कबीलाई व्यक्ति था। बारूद अली के बाद वहां रज्जब की खास अहमियत थी।

रेशमा के आदेश के साथ ही बन्दी बनाए गये बारहों लोगों को, गनधारियों ने जीप में बिठाए जाने की जल्दी-जल्दी कार्रवाई पूरी की। फिर देखते-ही-देखते छः घुड़सवारों के साथ दोनों जीपें एक नयी मंजिल के लिए रवाना हो गयीं।

रज्जब के जीपों और घुड़सवारों की टुकड़ी के साथ रवाना होकर आंखों से ओझल हो जाने के बाद, रेशमा बारूद अली की ओर घूमी। उसके चेहरे पर विजेता सेनानायक से जीत के भाव थे।

"यहां तक का मामला, बगैर किसी अवरोध के निपट गया मैडम...।" बारूद अली ने इत्मीनान भरी सांस छोड़ते और फेफड़ों में ताजी हवा भरते हुए कहा।

"कम ऑन...।" रेशमा उत्साहित स्वर में बोली—"अब वह मंजिल भी हमारे करीब है जिसके लिए हमने इतने पापड़ बेले हैं...। मिशन डेथ आगरा टू दिल्ली...। हमें बगैर किसी विलम्ब के उसे आज और अभी ही पूरा करना है...।"

कहते हुए रेशमा तेज कदमों से आगे बढ़ने लगी। उसके साथ-साथ उत्साह में भरा बारूद अली भी कदम बढ़ाने लगा था।

उसकी रगों में बारूदी जुनून ज्वार-भाटा की तरह हिचकोले खा रहा था।

बारूद से खेलने का शौकीन बारूद अली, मन-ही-मन सोच रहा था...उसका बचपन का शौक आज उसे उस मुकाम पर ले आया है...जहां से वह दस-बीस या सौ-पचास इन्सानी जिन्दगियों को कब्रिस्तान में सुला सकता है।

वह सोच रहा था—पांच देशों के प्रतिनिधियों को, एटमी टेक्नालॉजी और यूरेनियम का भण्डार सौंपने के लिए वहां पाक वैज्ञानिकों ने बुलाया था—कम से कम पांच देशों की तबाही का सामान तो वहां जरूर ही मौजूद होगा।

दुनिया की तबाही, कयामत., प्रलय लाने का उसका उन्माद हर क्षण जोश मारता चला जा रहा था।

वह स्थान एक लम्बी-चौड़ी प्राकृतिक गुफा थी...। विशाल पहाड़ियों के बीच स्थित वह गुफा काफी विशालकाय थी। गुफा में रोशनी की भी व्यवस्था थी, खाने-पीने, सोने, उठने-बैठने का भी खासा इन्तजाम था।

गुफा के अन्दर दो दर्जन से ऊपर सरकारी वर्दीधारी तथा एटमी अनुसंधानशाला के शीर्ष अधिकारी गण कैदी अवस्था में अपनी जिन्दगी के प्रति चिन्तित और बुरी तरह हैरान थे।

उन्हें गुफा के मजबूत शटर का गेट खुलने की आहट मिली।

सभी दम साधकर इस बात की प्रतीक्षा करने लगे कि आने वाले उनके दोस्त हैं या दुश्मन...।

गेट खुलते ही उनकी रूहें कांप उठीं...क्योंकि उन्हें दोस्त के बजाय उन्हीं शैतानी की शक्लें नजर आयीं—जिनके हाथों में आग उगलने वाले घातक हथियार थे—वे वही लोग थे जो उन्हें बन्दी बनाकर आदिम काल के जानवरों की तरह वहां ठूंस गये थे।

उनके देखते-ही-देखते—एक दर्जन और लोगों को गेट के सामने बन्दी अवस्था में लाकर खड़ा किया गया। उनके भी हाथ बंधे हुए थे, आंखों पर पट्टियां चढ़ी हुई थीं।

एक-एक को गरदन थामकर अन्दर धकियाते हुए भेजा जा रहा था। कहा जा रहा था—

"दोस्तो...हमारे वापस जाने के बाद आंखों से पट्टियां भी उतरवा लेना और बंधे हाथ भी खुलवा लेना। आंखों से पट्टियां खुलने के बाद तुम पाओगे कि अपनों के ही बीच हो...।

यहां एटमी अनुसंधानशाला के रक्षक भी हैं और गार्ड भी...। यहां आप वैज्ञानिक गण, और दूसरे देशों के आये प्रतिनिधिगण भी हैं। आप सब पूरे आराम के साथ बैठकर एटमी टेक्नालॉजी के लेन-देन के मामले का तबादला ख्याल कीजिएगा। हमें तो तैयारशुदा एटमी माल की जरूरत है। उसे हम हासिल करने और इस्तेमाल करने जा रहे हैं दोस्तो...। अलविदा...।"

कहने वाला रज्जब था। उसके कथन की भाषा पूरी तरह खिल्ली उड़ाने और संहारक इरादों से भरपूर थी।

'अलविदा' कहने के साथ ही—गुफा का शटर गिरा दिया गया।

फिर उसे बाहर से लॉक करने की आवाज उभरी।

अन्दर पहले से कैदी अवस्था में मौजूद लोग नये आये कैदियों की आंखों पर से पट्टी और हाथों के बंधन खोलने के कार्य में तेजी से जुट गये। ऐसा करने की उन्हें इजाजत मिल चुकी थी।

अपने बीच देश के प्रमुख वैज्ञानिक, उनके सहयोगियों, पांच देशों के प्रतिनिधियों तथा हेलीकॉप्टरों के पायलट—को-पायलट को पाकर उनके हैरत की इन्तहा न थी...।

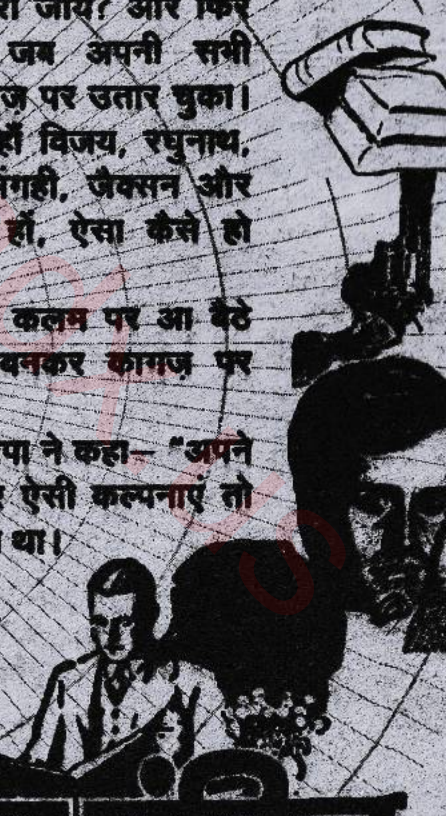
गुन शर्मा ने कहा—

नहीं समझता, दूसरा कानून की धाराओं में सुरंग बनाने में माहिर है। क्या हो—अगर ये दोनों टकरा जायें? और फिर चैन तभी मिला जब अपनी सभी कल्पनाओं को कागज़ पर उतार चुका। जहाँ विकास हो वहाँ विजय, रघुनाथ, रैना, अलफांसे, सिंगही, जैक्सन और टुम्बकटू आदि न हों, ऐसा कैसे हो सकता है?

अतः सभी मेरी कलम पर आ बैठे और फिर स्याही बनकर कागज़ पर बिखरते चले गये।

पढ़ने के बाद पापा ने कहा— "अपने किरदारों को लेकर ऐसी कल्पनाएं तो मैं भी नहीं कर सका था। नाम क्या रखोगे इस उपन्यास का?"

मैं बस इतना ही कह सका—



केशव पंडित

उस विशालकाय इलेक्ट्रानिक एवं एटामिक उपकरणों और संसाधनों से युक्त एटामिक रिसर्च सेण्टर में, रेशमा बारूद अली के साथ यूं उल्लास और उत्साह भरी, इधर से उधर दौड़ती फिर रही थी जैसे अलीबाबा को चालीस चोरों का खजाना हाथ लग गया हो।

चूंकि हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन की व्यवस्था भंग थी। इसलिए वहां की सारी इलेक्ट्रानिक व्यवस्था ठहरी हुई थी। इस ठहराव का फायदा उठाते हुए रेशमा और बारूद अली को वहां खुलकर भाग-दौड़ करने का अवसर मिल रहा था।

कुछ देर की हर्षोल्लास भरी भाग-दौड़ के बाद वे एक विशालकाय हॉल में घुसे जहां के चारों ओर की दीवारें कांच की थीं। हॉल के बीचों-बीच विशालकाल स्टैण्ड पर एटमी मिसाइल रखा हुआ उनके सामने आया।

"यही है...यही है...।" बारूद अली जोश के साथ चीखा— "यही है पाकिस्तानी एटमी वैज्ञानिक कादिर अली के वर्षों के एटमी अनुसंधान का परिणाम। यही है गौरी एटामिक मिसाइल...। यही है वह जिसकी परीक्षण सफलता के बाद पाकिस्तान द्वारा दावा किया गया है कि वह अपनी गौरी एटमी मिसाइल की मार, भारत में आगरा से दिल्ली तक कर सकता है...।"

"हां...हां...यही है...।" गौरी एटमी मिसाइल के बाबत वहां मौजूद लिखित विवरणों और दीवारों पर अंकित दस्तावेजों पर निगाह डालती हुई रेशमा हर्षोल्लास से बांहें फैलाकर चीखी— "जिसे पाकिस्तान सरकार ने यहां, ऐसी जगह सुरक्षित करके रखा है, जिसके बारे में दुश्मन देश के जासूसों को खबर न हो सके...। मगर...हमने, हमारे संगठन के प्रयासों ने इसे खोज निकाला...।"

और फिर,

बारूद अली, अपने विज्ञान क्षमताओं और योग्यताओं का पूरा-पूरा इस्तेमाल करते हुए एटमी मिसाइल को छोड़े जाने सम्बन्धित कम्प्यूटर उपकरणों पर दिमाग खपाने लगा। कुछ देर की कोशिशों

के बाद उसने हर्षित स्वर में कहा—

"इसे हम अभी और इसी समय इस्तेमाल कर सकते हैं...मैडम चेयरमैन...। यद्यपि हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन की व्यवस्था इस समय हमारे ही आदेश पर भंग है...मगर कम्प्यूटर यू० पी० एस० की सहायता से हम इतना काम ले सकते हैं कि इसकी दिशा और दूरी आगरा से दिल्ली तक कर दें...।"

"करो...जल्दी करो मिस्टर बारूद अली...तुम इन मामलों के जानकार हो, दक्षता प्राप्त हो...। इसकी दिशा और दूरी का टार्गेट आगरा से दिल्ली तक निश्चित करो...। जल्दी...इसके बाद हम रिसर्च सेण्टर के बाहर दूसरे हिस्सों में मौजूद वह एटामिक टेक्नालॉजी और यूरेनियम हासिल करेंगे, जिसे पांच देशों के प्रतिनिधियों को सौंपने, पाक वैज्ञानिक यहां आये थे। हम पूरी की पूरी टेक्नालॉजी और यूरेनियम का जखीरा समेटेंगे। यहां से बाहर निकलेंगे...। तुम कम्प्यूटर पर मिसाइल को सेट कर 'यस' का बटन पुश कर दो...।

हम यहां से बाहर निकलने के बाद हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन का स्विच ऑन कर देंगे ! यहां की इलेक्ट्रानिक प्रणाली पूर्व की तरह कार्य करने लगेगी...। 'यस' का बटन दबा होने के कारण एटामिक मिसाइल अपना स्थान छोड़ेगा...। अपने लक्ष्य पर जाकर फटेगा...तबाही फैलाएगा...।"

"मैंने दिशा व दूरी निर्धारित कर दी मैडम...मैंने 'यस' का बटन पुश कर दिया...।" मिसाइल कन्ट्रोल कम्प्यूटर से फुर्ती के साथ खेलता हुआ बारूद अली जोशीले स्वर में बोला।

"अच्छा...।" रेशमा की आवाज हर्ष की अधिकता से कांप रही थी। उसने कहा—"अब रज्जब से कान्टेक्ट करो...। उसे हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन पर पहुंचने के लिए कहो...। और निर्देश दो कि हमारे ओ० के० करते ही वह पावर स्टेशन की सप्लाई ऑन कर दे...।"

"अब यह न हो सकेगा...शैतान की खाला...।" अचानक धमाकेदार आवाज वहां उभरी।

यह आवाज थ्रिल क्वीन की थी।

रेशमा और बारूद अली, उस आवाज को सुनते ही यूं

उछले जैसे उनके ठीक पैरों के पास हैण्ड ग्रेनेड का धमाका हुआ हो।

उनकी दृष्टि आवाज की दिशा में उठी। दोनों ने आफत की परकाला डार्लिंग को द्वार पर खड़े पाया।

"यह इसलिए न हो सकेगा क्योंकि रज्जब हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन का स्विच ऑन करने के काबिल नहीं रहा...। पावर स्टेशन पर अब हमारे आदमियों का कब्जा है...। सिर्फ रज्जब नहीं बल्कि तुम्हारे एक-एक मिलिटेण्ट हमारे आदमियों के कब्जे में आकर मौत के मुंह में समा गये हैं...।" डार्लिंग ने ओजस्वी स्वर में कहा। साथ ही उसने उसी बुलन्द आवाज में कहा—"रज्जब की लाश सामने लायी जाये...।"

डार्लिंग के आदेश के साथ ही मुख्तार के दो साथी—रज्जब की दोनों बांहें थामे उसे लेकर डार्लिंग की ओर बढ़े...।

डार्लिंग तनिक घूमी।

उसी क्षण,

शोले की चमक उभरी...।

थ्रिल क्वीन ने बिजली की चमक के साथ रज्जब को ढाल के रूप में आगे कर दिया।

शोले की चमक रज्जब के सीने पर पड़ी...। साथ ही रज्जब के होंठों से क्रन्दनकारी चीख कौंधी।

वह सीने को दबाए आगे को झुकता चला गया।

"हा...हा...हा...।" डार्लिंग का उन्मादी ठहाका कौंधा—"कैसी रही शैतान की खाला...। मैंने तुम्हारे ही हाथों तुम्हारे आदमी को मरवा दिया।"

रेशमा के हाथ में थमा पिस्टल कांप गया।

वह पिस्टल जिसे उसने बेहद फुर्ती से कमर से खींच अपनी ओर से डार्लिंग पर फायर झोंका था और उसके कांपे हुए हाथ पर, अगले क्षण, थ्रिल क्वीन के हाथ में थमी रिवॉल्वर अपनी गरज छोड़ गयी।

"धांय...।" अचूक निशाना।

रेशमा की कलाई के बीच गोली बुलेट होल बना गयी।

और फिर,

'धांय...धांय...धांय...धांय...धांय...।' थ्रिल क्वीन एक के बाद एक पांच गोलियां खर्च करती चली गयी।

वे गोलियां उसने रेशमा की दोनों टांगों, बायीं बांह, तथा बारूद अली की दोनों टांगों को लक्ष्य करके दागी थीं।

दोनों जख्मों से चूर होकर फर्श पर औंधे मुंह गिर पड़े थे।

डार्लिंग बढ़ी।

उसने रेशमा के हाथ से छूटकर एक ओर पड़ी पिस्टल उठाते हुए रेशमा के चेहरे पर पैर की ठोकर जड़कर कहा—"तेरी इस पिस्टल से मुझे बहुत प्यार है जाफरान की बूटी...क्योंकि इसकी मैगजीन में फिट माइक्रो ट्रांसमीटर चिप्स के जरिये ही मुझे तेरे हर कदम, हर बात की इत्तला मिलती रही है...।"

कहते हुए डार्लिंग ने पिस्टल की बची हुई गोली बारूद अली की बांह पर खर्च कर उसकी चीख गुंजाई। खाली हो चुकी पिस्टल की मैगजीन निकाली और जेब के हवाले कर ली।

और फिर,

पिस्टल खून से लथपथ, कराहती पड़ी रेशमा के चेहरे के पर फेंक कर बोली—

"सुन जाफरान की बूटी...मैंने पहले भी कहा था—पंख पाकर पतंगा ऊंची उड़ान भर चांद को छूने की तमन्ना करे तो उसकी मूर्खता उसे सीधे मौत के मुंह में ले जाती है...चींटी के पर निकल आयें और वह परिन्दे की तरह उड़ने की चेष्टा करे तो समझा यही जाना चाहिए कि उसकी जिन्दगी के दिन पूरे हो गये हैं...।"

वह मुड़ी।

क्योंकि रेशमा और बारूद अली, हाथ-पैरों से पूरी तरह बेकार हो चुके थे...। कुछ भी कर पाने से नाकारा हो चुके थे। वे उठकर खड़े होने लायक भी न रह गये थे।

मुड़कर कम्प्यूटर के करीब डार्लिंग पहुंची।

उसने शीघ्रता से एटमी मिसाइल की दिशा मोड़ी। कम्प्यूटर पर उसका नया लक्ष्य निर्धारित्त किया।

पलटकर द्वार की ओर बढ़ती हुई बोली—

"आगरा से दिल्ली तक तबाही का ख्वाब देखने वाली शैतान

की खाला...और तू इस जाफरान की बूटी का आशिक बारूद अली...। तुम दोनों को बारूदी खेल देखने का बहुत शौक था...। अब तुम दोनों जीवित अवस्था में अपनी जिन्दगी का और इस दुनिया का सबसे बड़ा बारूदी खेल देखोगे...। मैंने इस एटामिक मिसाइल का लक्ष्य इसी ठिकाने पर, ठीक तुम्हारे सिर पर निर्धारित किया है। मैं जाते हुए दरवाजा बन्द करके जाऊंगी ताकि तुम दोनों बारूद के खेल देखने से खुद को अलग करने के प्रयास में, घिसटते हुए इस कक्ष के बाहर न निकल सको...।"

कहते हुए डार्लिंग ने बाहर की ओर कदम बढ़ा दिये।

उसका चेहरा रोष से तमतमा रहा था...। मगर दिल में हल्की टीस भरी लहर भी उभर रही थी...। टीस, जाफरान की बूटी के हुस्न की उस दिलकशी से भरी हुई थी, जिसे उसने डलि झील के शिकारे पर हासिल की थी।

रोष की तमतमाहट, उस विष के ताण्डव से भरी हुई थी जिसे भारत के विरुद्ध रेशमा और बारूद अली रचाने जा रहे थे। उसने अपने पीछे हथियार बन्द खड़े मुख्तार के साथियों से कहा—

"दरवाजा बन्द कर दो...।"

आदेश पर उन्होंने उस हॉल का दरवाजा बाहर से बन्द कर दिया जिसके अन्दर रेशमा और बारूद अली थे।

और फिर,

डार्लिंग बाहर निकलती चली गयी।

उसके पीछे मुख्तार सहित उसके साथी बाहर आ गये।

उसने बढ़कर घोड़े की पीठ थपथपाई। उछाल भरी...। सवारी गांठते हुए घोड़े की रास सम्भाली। सारे घुड़सवार पीछे लग गये।

"पावर स्टेशन पर ड्यूटी सम्भाले, अपने आदमी को आदेश दो...सरदार मुख्तार।" डार्लिंग के साथ-साथ घोड़ा बढ़ाए चले आ रहे मुख्तार से कहा—"अब से ठीक पांच मिनट बाद वह पावर स्टेशन की सप्लाई चालू कर दे...।"

डार्लिंग के परामर्श का पालन करने के लिए मुख्तार ने वॉकी-टॉकी सम्भाला और हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन पर मौजूद अपने आदमी से डार्लिंग का निर्देश दोहरा दिया।

डार्लिंग, मुख्तार और उसके घुड़सवार...के घोड़ों की टापों से वादियां कंपित होने लगीं।

और फिर,

पांच मिनट बाद, आकाश में गगनभेदी धमाका कौंधा।

डार्लिंग ने पलटकर, गरदन घुमा आसमान की ओर देखा—गौरी मिसाइल अग्नि लपटों का पुंज छोड़ता सीधा ऊपर जा रहा था।

डार्लिंग ने घोड़े की रफ्तार बढ़ायी...। तेज...तेज...और तेज...। मिसाइल पलटकर लौटने लगा था...।

और फिर,

प्रलय का दृश्य साकार हो उठा डार्लिंग की आंखों के सामने...। वादियां कांप उठीं...पहाड़ियां रूई के गालों की तरह आसमान में उड़ने लगीं।

हर ओर आग ही आग...आग की प्रचण्ड लपटें...।

धमक से दहलती हुई धरती ज्वालामुखी का दहाना बनती जा रही थी...।

लेकिन,

उस प्रलय के प्रभाव से डार्लिंग, मुख्तार और उसके साथी लगातार दूर होते चले जा रहे थे।

समाप्त